

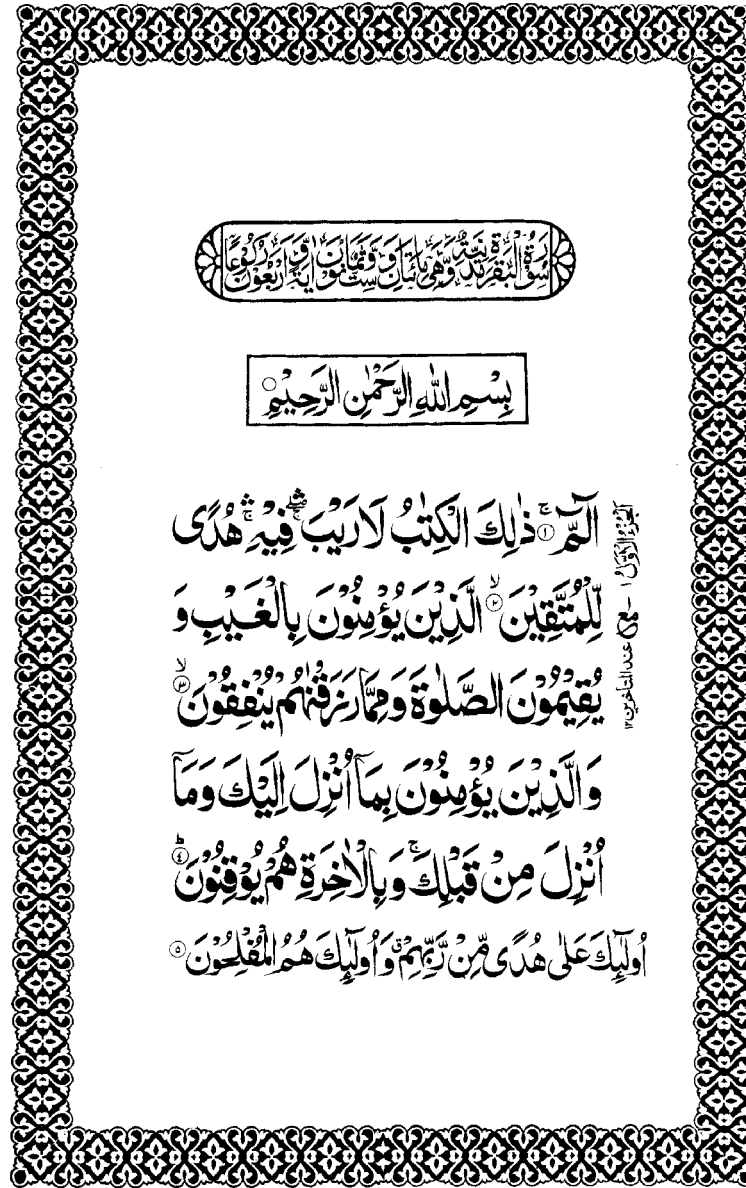
शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहमवाला है। सब तारीफ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का मालिक है। बहुत महरबान निहायत रहम वाला है। इंसाफ के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं। हमें सीधा रास्ता दिखा। उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फजल किया। उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न उन लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए।

बंदे के लिए किसी काम की सबसे बेहतर शुरूआत यह है कि वह अपने काम को अपने रब के नाम से शुरू करे। वह हस्ती जो तमाम रहमतों का खज़ाना है और जिसकी रहमतें हर वक्त उबलती रहती हैं। उसके नाम से किसी काम को प्रारम्भ करना गोया उससे यह दुआ करना है कि तू अपनी अपार रहमतों के साथ मेरी मदद पर आ जा और मेरे काम को ख़ैर व ख़ूबी के साथ मुकम्मल कर दे। यह बंदे की तरफ से अपनी बंदगी (दासता) का एतराफ है और इसी के साथ उसकी कामयाबी की इलाही (ईश्वरीय) ज़मानत भी।

कुरआन की यह विशेषता है कि वह मोमिन के दिली एहसासात के लिए सबसे सही अल्फाज़ प्रयुक्त करता है। 'बिस्मिल्लाह' और सूरह फातिहा इस प्रकार के दुआ के कलाम हैं। सच्चाई को पा लेने के बाद फ़ितरी तौर पर आदमी के अंदर जो जज्बा उभरता है उसी जज्बे को इन लफ्ज़ों में मुजस्सम (साक्षात) कर दिया गया है।

आदमी का वजूद उसके लिए अल्लाह की एक बहुत बड़ी देन है। इसकी अजमत (महानता) का अंदाज़ा इससे किया जा सकता है कि अगर किसी आदमी से कहा जाए कि तुम अपनी दोनों आँखों को निकलवा दो या दोनों पैरों को कटवा दो, इसके बाद तुम्हें मुल्क की बादशाही दे दी जाएगी। तो कोई भी व्यक्ति इसके लिए तैयार न होगा। गोया कि ये प्रारंभिक कुदरती देन भी बादशाह की बादशाही से ज्यादा कीमती हैं। इसी तरह जब आदमी अपने आसपास की दुनिया को देखता है तो यहाँ हर तरफ खुदा की मालकियत (स्वामित्व) और रहीमियत (दयालुता) उबलती हुई दिखाई देती है। उसे हर तरफ असाधारण व्यवस्था और एहतमाम नज़र आता है। उसे दिखाई देता है कि दुनिया की तमाम चीज़ें हैरतअंगेज़ तौर पर इंसानी ज़िंदगी के अनुकूल बना दी गई हैं। यह अवलोकन उसे बताता है कि कायनात की यह विशाल कारख़ाना बेमक्सद नहीं हो सकती। लाज़िमी तौर पर ऐसा दिन आना चाहिए जब नाशुक्रों से उनकी नाशुक्रगुज़ार ज़िंदगी की बाज़पुर्स (पूछगछ) की जाए और शुक्रगुज़ारों को उनकी शुक्रगुज़ार ज़िंदगी का इनाम दिया जाए। वह बेइख़्तियार कह उठता है कि खुदाया तू फैसले के दिन का मालिक है। मैं अपने आपको तेरे आगे डालता हूँ और तुझसे मदद चाहता हूँ। तू मुझे अपने साए में ले ले। खुदाया हमें वह रास्ता दिखा जो तेरे नज़दीक सच्चा रास्ता है। हमें उस रास्ते पर चलने की तौफ़ीक दे, जो तेरे मकबूल (प्रिय) बंदों का रास्ता है। हमें उस रास्ते से बचा जो भटके हुए लोगों का रास्ता है या उन लोगों का जो अपने डिठाई की वजह से तेरे ग़ज़ब (प्रकोप) का शिकार हो जाते हैं।

अल्लाह का मलूब (अपेक्षित) बंदा वह है जो इन एहसासात और कैफियतों के साथ दुनिया में जी रहा हो। सूरह फातिहा इस मोमिन बंदे की छोटी तस्वीर है और बाकी कुरआन इस मोमिन बंदे की बड़ी तस्वीर।



शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।
अलिफ० लाम० मीम०। यह अल्लाह की किताब है। इसमें कोई शक नहीं। राह दिखाती है उर रखने वालों को। जो यकीन करते हैं बिन देखे और नमाज़ कायम करते हैं। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। और जो ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतरा और जो तुमसे पहले उतारा गया। और वे आखिरत (परलोक) पर यकीन रखते हैं। इन्हीं लोगों ने अपने रब की राह पाई है और वही कामयाबी को पहुँचाने वाले हैं। (1-5)

इसमें शक नहीं कि कुरआन हिदायत (मार्गदर्शन) की किताब है। मगर वह हिदायत की किताब उसके लिए है जो वाकई हिदायत को जानने के मामले में संजीदा हो, जो इसकी परवाह और खटक रखता हो। सच्ची तलब (चाहत) जो फितरत (सहज प्रकृति) की ज़मीन पर उगती है वह खुद पाने ही की एक शुरूआत होती है। सच्ची चाहत और सच्ची प्राप्ति दोनों एक ही सफर के पिछले और अगले मरहले हैं। यह गोया खुद अपनी फितरत के बंद पन्नों को खोलना है। जब आदमी इसका सच्चा इरादा करता है तो फौरन फितरत की अनुकूलता और अल्लाह की मदद उसका साथ देने लगती है। उसे अपनी फितरत की अस्पष्ट पुकार का स्पष्ट जवाब मिलना शुरू हो जाता है।

एक आदमी के अंदर सच्ची तलब का जागना आलमे ज़ाहिर के पीछे आलमे बातिन (छुपे) को देखने की कोशिश करना है। यह तलाश जब प्राप्ति के मरहले में पहुँचती है तो वह ईमान विलगीब (अप्रकट, अदृश्य पर ईमान) बन जाती है। वही चीज़ जो इब्तिदाई मरहले में एक बरतार हकीकत के आगे अपने को डाल देने की बेकारी का नाम होता है वह बाद के मरहले में अल्लाह का नमाज़ी बनने के रूप में ढल जाता है। वही जज्बा जो शुरू में अपने को ख़ैरे आला (परम कल्याण) के लिए वक़फ कर देने के समानार्थी होता है वह बाद के मरहले में अल्लाह की राह में अपनी सम्पत्ति खर्च करने का रूप धार लेता है। वही खोज जो ज़िंदगी के हंगामों के आगे उसका आखिरी अंजाम मालूम करने की सूरत में किसी के अंदर उभरती है, वह आखिरत पर यकीन की सूरत में अपने सवाल का जवाब पा लेती है।

सच्चाई को पाना गोया अपने शुऊर (चेतना) को हकीकते आला (परम सत्य) के समस्तर कर लेना है। जो लोग इस तरह हक (सत्य) को पा लें वे हर प्रकार की मनोवैज्ञानिक गुत्थियों से आज़ाद हो जाते हैं। वे सच्चाई को उसके विशुद्ध रूप में देखने लगते हैं। इसलिए सच्चाई जहाँ भी हो और जिस खुदा के बंदे की ज़बान से भी उसका एलान किया जा रहा हो, वे फौरन उसे पहचान लेते हैं और उस पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कहते हैं। कोई जुमूद (जड़ता) कोई तकलीद (अनुसरण), कोई तअस्सुबाती (विद्वेषवादी) दीवार उनके लिए हक के एतराफ (स्वीकार) में रुकावट नहीं बनती। जिन लोगों के अंदर यह विशेषताएँ हों, वे अल्लाह के साए में आ जाते हैं। अल्लाह का बनाया हुआ निज़ाम (विधान) उन्हें कुबूल कर लेता है। उन्हें दुनिया में उस सच्चे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक मिल जाती है जिसकी आखिरी मंज़िल यह है कि आदमी आखिरत की अबदी (चिरस्थायी) नेमतों में दाखिल हो जाए।

हक को वही पा सकता है जो इसे ढूँढ़ने वाला है। और जो ढूँढ़ने वाला है वह ज़रूर इसे पाता है। यहाँ ढूँढ़ने और पाने के दर्मियान कोई फासला नहीं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أُنذِرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ خَمَّ اللَّهُ
عَلَى قُلُوبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ وَعَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

जिन लोगों ने इंकार किया, उनके लिए समान है डराओ, या न डराओ, वे मानने वाले नहीं हैं। अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है। और उनकी आँखों पर पर्दा है। और उनके लिए बड़ा अज़ाब है। (6-7)

एक व्यक्ति अपनी आँख को बंद कर ले तो आँख रखते हुए भी वह सूरज को नहीं देखेगा। कोई व्यक्ति अपने कान में रुई डाल ले तो कान रखते हुए भी वह बाहर की आवाज़ को नहीं सुनेगा। ऐसा ही कुछ मामला हक (सत्य) का भी है। हक का एलान चाहे कितनी ही वाज़ेह सूरत में हो रहा हो मगर किसी के लिए वह कबिले फहम या कबिले कुबूल उस वक्त बनता है जबकि वह इसके लिए अपने दिल के दरवाज़े खुले रखे। जो शख्स अपने दिल के दरवाज़े बंद कर ले उसके लिए कायनात में खुदा की खामोश पुकार और दाओ (आह्वानकती) की ज़बान से उसका लफज़ी एलान दोनों निरर्थक साबित होंगे।

हक की दावत (आह्वान) जब अपने विशुद्ध रूप में उठती है तो वह इतनी ज़्यादा हकीकत पर आधारित और इतनी स्वाभाविक होती है कि कोई व्यक्ति उसकी नौइयत को समझने में असमर्थ नहीं रह सकता। जो शख्स भी खुले ज़ेहन से उसे देखेगा उसका दिल गवाही देगा कि यह ऐन हक है। मगर उस वक्त अमली सूरतेहाल यह होती है कि एक तरफ वक्त का ढँचा होता है जो सदियों के अमल से एक ख़ास शकल में कायम हो जाता है। इस ढँचे के तहत कुछ मज़हबी या ग़ैर मज़हबी आसन बन जाते हैं जिन पर कुछ लोग बैठे हुए होते हैं। कुछ इज़ज़त और शोहरत की सूरतें राइज हो जाती हैं जिनके झंडे उठा कर कुछ लोग वक्त के बड़े लोगों का मक़ाम हासिल किए हुए होते हैं। कुछ कारोबार और मफ़दात (हित) कायम हो जाते हैं, जिनके साथ अपने को जोड़ कर बहुत-से लोग इत्मीनान की ज़िंदगी गुज़ार रहे होते हैं।

इन हालात में जब एक अपरिचित कोने से अल्लाह अपने एक बंदे को खड़ा करता है और उसकी ज़बान से अपनी मज़ी का एलान कराता है तो अक्सर ऐसा होता है कि इस किस्म के लोगों को अपनी बनी बनाई दुनिया भंग होती नज़र आती है। हक के पैग़ाम की तमामतर सदाकत (सच्चाई) के बावजूद दो चीज़ें उनके लिए इसे सही तौर पर समझने के लिए रुकावट बन जाती हैं। एक किब्र (अहं, बड़ाई) दूसरे दुनियापरस्ती। जो लोग प्रचलित ढँचे में उच्च स्थान पर बैठे हुए हों उन्हें एक 'छोटे आदमी' की बात मानने में अपनी इज़ज़त ख़तरे में पड़ती हुई नज़र आती है। यह एहसास उनके अंदर घमंड की नफ़िसयात जगा देता है। दाओ (आह्वानकती) को वह अपने मुकाबले में हकीर (तुच्छ) समझ कर उसके आह्वान को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। इसी तरह दुनियावी हितों का सवाल भी हक को कुबूल करने में रुकावट बन जाता है। क्योंकि हक का दाओ राइज ढँचे का नुमाइंदा नहीं होता। वह एक नई और अपरिचित आवाज़ को लेकर उठता है। इसलिए उसे मानने की स्थिति में लोगों को अपने हितों का ढाँचा टूटना हुआ नज़र आता है।

यही वह बाधक कैफ़ियत है जिसे कुरआन में मुहर लगाने से परिभाषित किया गया है। जो लोग दावते हक के मामले को संजीदा मामला न समझें जो घमंड और दुनियापरस्ती की नफ़िसयात में मुत्तला हों उनके ज़ेहन के ऊपर ऐसे ग़ैर महसूस पर्दे पड़ जाते हैं जो हक बात को उनके ज़ेहन में दाख़िल नहीं होने देते। किसी चीज़ के बारे में आदमी के अंदर मुख़ालिफ़ाना (विरोधपरक) नफ़िसयात जाग उठे तो इसके बाद वह इसकी माकूलियत को समझ नहीं पाता। चाहे इसके पक्ष में कितनी ही स्पष्ट दलीलें पेश की जा रही हों।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَيَالَيْئُمُ الْآخِرُ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ۚ
يُخَدِّعُونَ اللَّهَ وَالدِّينَ آمَنُوا وَمَا يُخَدِّعُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۖ فِي
قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ ۖ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَكُونُونَ
وَلِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۚ أَلَا أَنْتَهُمُ
الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن لَّا يَشْعُرُونَ ۚ وَلِذَا قِيلَ لَهُمُ امْكُفُوا أَمِّنَ النَّاسِ قَالُوا
أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا أَنُفَكُّمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۚ وَلِذَا لَقُوا الَّذِينَ
آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَؤُونَ
اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا
الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتِ ثِمَارُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝

और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं। वे अल्लाह को और मोमिनों को धोखा देना चाहते हैं। मगर वे सिर्फ अपने आपको धोखा दे रहे हैं और वे इसका शुज़र नहीं रखते। उनके दिलों में रोग है तो अल्लाह ने उनके रोग को बढ़ा दिया और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। इस वजह से कि वे झूठ कहते थे। और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर फ़साद (उपद्रव, बिगाड़) न करो तो वे जवाब देते हैं हम तो सुधार करने वाले हैं। जान लो, यही लोग फ़साद करने वाले हैं, मगर वे नहीं समझते। और जब उनसे कहा जाता है तुम भी उसी तरह ईमान ले आओ जिस तरह अन्य लोग ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि क्या हम उस तरह ईमान लाएँ जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाए हैं। जान लो, कि मूर्ख यही लोग हैं, मगर वे नहीं जानते। और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, और जब अपने शैतानों की बैठक में पहुँचते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे महज हंसी करते हैं। अल्लाह उनसे हंसी कर रहा है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दे रहा है। वे भटकते फिर रहे हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (मार्गदर्शन) के बदले गुमराही ख़रीदी तो उनकी

तिजारत फायदेमंद नहीं हुई, और वे न हुए राह (सन्मार्ग) पाने वाले। (8-16)

जो लोग फायदों और मस्तेहतों को अव्वलीन अहमियत दिए हुए होते हैं उनके नज़दीक यह नादानी की बात होती है कि कोई शख्स निःसंकोच अपने आपको पूरे तौर पर हक के हवाले कर दे। ऐसे लोगों की हकीकी वफ़ादारियाँ अपने दुनियावी मफ़ादात (हितों) के साथ होती हैं। अलबत्ता इसी के साथ वे हक से भी अपना एक ज़ाहिरी रिश्ता कायम कर लेते हैं। इसे वे अक्लमंदी समझते हैं। वे समझते हैं कि इस तरह उनकी दुनिया भी महफूज़ है और इसी के साथ उन्हें हक़परस्ती का तमगा भी हासिल है। मगर यह एक ऐसी खुशफ़हमी है जो सिर्फ़ आदमी के अपने दिमाग़ में होती है। उसके दिमाग़ के बाहर कहीं इसका वजूद नहीं होता। आजमाइश का प्रत्येक अवसर उन्हें सच्चे दीन (धर्म) से कुछ और दूर और अपने स्वार्थपरक दीन से कुछ और करीब कर देता है। इस तरह गोया उनके निफ़क (पाखंड) का रोग बढ़ता रहता है। ऐसे लोग जब सच्चे मुसलमानों को देखते हैं तो उन्हें एहसास यह होता है कि वे व्यर्थ में सच्चाई की ख़ातिर अपने को बर्बाद कर रहे हैं। इसके मुकाबले अपने तरीके को वह इस्लाह (सुधार) का तरीका कहते हैं। क्योंकि उन्हें नज़र आता है कि इस तरह किसी से झगड़ा मोल लिए बग़ैर अपने सफ़र को कामयाबी के साथ तै किया जा सकता है। मगर यह सिर्फ़ बेशुऊरी की बात है। यदि वे गहराई के साथ सोचें तो उन पर यह प्रकट होगा कि इस्लाह (सुधार) यह है कि बंदे सिर्फ़ अपने रब के हो जाएँ। इसके विपरीत फ़साद (उपद्रव, बिगाड़) यह है कि खुदा और बंदे के संबंध को दुरुस्त करने के लिए जो तहरीक चले उसमें रोड़े अटकाए जाएँ। उनका यह बज़ाहिर फ़ायदे का सौदा हकीकत में घाटे का सौदा है। क्योंकि वे विशुद्ध सत्य को छोड़ कर मिलावटी सत्य को अपने लिए पसंद कर रहे हैं जो किसी के कुछ काम आने वाला नहीं है। अपने दुनियावी मामलों में होशियार होना और आख़िरत के मामले में सरसरी उम्मीदों को काफी समझना गोया खुदा के सामने झूठ बोलना है। जो लोग ऐसा करें उन्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि इस किस्म की झूठी ज़िंदगी आदमी को अल्लाह के यहाँ अज़ाब के सिवा किसी और चीज़ का हक़दार नहीं बनाती।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ اٍلَّا يَبْصُرُونَ صُمٌّ بَكْمٌ عُمًى فهُمْ لَا يُرْجَعُونَ ۝ اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ وَّ رَعْدٌ وَّ بَرْقٌ يَجْعَلُونَ اَصَابِعَهُمْ فِي اْاُذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللَّهُ مُخِيبٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ ۖ وَاِذَا اظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ اَنَّ شَاءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख्स ने आग जलाई। जब आग ने उसके इर्द-गिर्द

को रोशन कर दिया तो अल्लाह ने उनकी आँख की रोशनी छीन ली और उन्हें अंधे में छोड़ दिया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ता। वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं। अब ये लौटने वाले नहीं हैं। या उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से बारिश हो रही हो, उसमें अंधकार भी हो और गरज-चमक भी। वे कड़क से डर कर मौत से बचने के लिए अपनी उंगलियाँ अपने कानों में ठूस रहे हों। हालाँकि अल्लाह इन्कार करने वालों को अपने घेरे में लिए हुए है। करीब है कि बिजली उनकी निगाहों को उचक ले। जब भी उन पर बिजली चमकती है उसमें वे चल पड़ते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कान और उनकी आँखों को छीन ले। अल्लाह यकीनन हर चीज़ पर क़ादिर है। (17-20)

किसी कमरे में काली और सफ़ेद चीज़ें हों तो जब तक अंधेरा है वे अंधेरे में गुम रहेंगी। मगर रोशनी जलाते ही काली चीज़ काली और सफ़ेद चीज़ सफ़ेद दिखाई देने लगेगी। यही हाल अल्लाह की तरफ से उठने वाली नुबुव्वत की दावत (आह्वान) का है। यह खुदाई रोशनी जब ज़ाहिर होती है तो उसके उजाले में हिदायत और ज़लालत (पथभ्रष्टता) साफ-साफ़ दिखाई देने लगती हैं। नेक अमल क्या है और उसके समरात (प्रतिफल) क्या हैं, बुरा अमल क्या है और उसके समरात क्या हैं, सब खुल कर ठीक-ठीक सामने आ जाता है। मगर जो लोग अपने आपको हक (सत्य) के ताबेअ (अधीन) करने के बजाए हक को अपना ताबेअ बनाए हुए थे वे इस सूरतेहाल को देखकर घबरा उठते हैं। उनका छुपा हुआ हसद (ईर्ष्या) और घमंड जीवंत होकर उन्हें अपनी लपेट में ले लेता है। खुदाई आइने में अपना चेहरा देखते ही उनकी नकारात्मक मानसिकता उभर आती है। उनके भीतरी तअस्सुबात (विद्वेष) उनके हवास पर इस तरह छा जाते हैं कि आंख, कान, ज़बान रखते हुए भी वे ऐसे हो जाते हैं गोया कि वे अंधे, बहरे और गूँगे हैं। अब वे न तो किसी पुकारने वाले की पुकार को सुन सकते हैं, न उसकी पुकार का जवाब दे सकते हैं। न किसी किस्म की निशानी से रहनुमाई हासिल कर सकते हैं। उनके लिए सही रवैया यह था कि वे पुकारने वाले की पुकार पर ग़ौर करते। मगर इसके बजाए उन्होंने इससे बचने का सादा इलाज यह खोजा है कि उसकी बात को सिर से सुना ही न जाए, उसे कोई अहमियत ही नहीं दी जाए।

इसी तरह एक और नपिसयात (मानसिकता) है जो हक को कुबूल करने में रुकावट बनती है। यह डर की नपिसयात है। बारिश अल्लाह तआला की एक बहुत बड़ी नेमत है। मगर बारिश जब आती है तो अपने साथ कड़क और गरज भी ले आती है जिससे कमज़ोर लोग भयभीत हो जाते हैं। इसी तरह जब अल्लाह की तरफ से हक की दावत उठती है तो एक तरफ़ अगर वह इंसानों के लिए अज़ीम कामरानियों (कामयाबियों) के इमकानात खोलती है तो दूसरी तरफ़ इसमें कुछ वक़्ती अंदेश भी दिखाई देते हैं। इसे मान लेने की स्थिति में अपनी बड़ाई का ख़ात्मा, ज़िंदगी के बने बनाए नक्शे को बदलने की ज़रूरत, परम्परागत ढाँचे से टकराव की समस्याएँ, आख़िरत (परलोक) के बारे में ख़ुशख़ालियों के बजाए हकीकतों पर भरोसा करना। इस किस्म के अंदेशों को देख कर वे भी रुक जाते हैं और कभी दुविधा के साथ कुछ कदम आगे बढ़ते

हैं मगर ये एहतियातें उनके कुछ काम आने वाली नहीं हैं क्योंकि खुदाई पुकार के लिए अपने को खुले दिल से पेश न करके वे ज्यादा शदीद तौर पर अपने को खुदा की नज़र में काबिले सज़ा बना रहे हैं।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ۚ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنْزَلَ مِنَ
السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَى عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ
وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا
وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ
لِلْكَافِرِينَ ۚ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا
مِنْ قَبْلُ وَأَتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَنْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ
وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं ताकि तुम दोज़ख़ (नर्क) से बच जाओ। वह जात जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया, और उतारा आसमान से पानी और उससे पैदा किए फल तुम्हारी गिज़ा के लिए। पस तुम किसी को अल्लाह के बराबर न ठहराओ, हालांकि तुम जानते हो। अगर तुम इस कलाम के संबंध में शक में हो जो हमने अपने बंदे के ऊपर उतारा है तो लाओ इस जैसी एक सूरह और बुला लो अपने हिमायतियों को भी अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर तुम यह न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे आदमी और पत्थर। वह तैयार की गई है हक़ (सत्य) का इंकार करने वालों के लिए। और खुशख़बरी दे दो उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए, इस बात की कि उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। जब भी उन्हें इन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा, तो वे कहेंगे : यह वही है जो इससे पहले हमें दिया गया था। और मिलेगा उन्हें एक-दूसरे से मिलता-जुलता। और उनके लिए वहां साफ-सुथरी औरतें होंगी। और वे इसमें हमेशा रहेंगे। (21-25)

इंसान और उसके अलावा जो कुछ ज़मीन व आसमान में है सबका पैदा करने वाला सिर्फ अल्लाह है। उसने पूरी कायनात को निहायत हिक्मत (तत्त्वदर्शिता, सूझबूझ) के साथ कायम किया है। वह हर क्षण उनकी परवरिश कर रहा है। इसलिए इंसान के लिए सही रवैया सिर्फ यह है कि वह अल्लाह को बग़ैर किसी शिकत (साझेदारी) के ख़ालिक (रचयिता), मालिक और राज़िक (अन्नदाता) तस्लीम करे। वह उसे अपना सब कुछ बना ले। मगर चूँकि खुदा नज़र नहीं आता, इसलिए अक्सर ऐसा होता है कि आदमी किसी नज़र आने वाली चीज़ को अहम समझ कर उसे खुदाई के मक़ाम पर बिठा लेता है। वह एक मख़्तूक (ईश्वरीय रचना) को आंशिक या पूर्ण रूप से ख़ालिक (रचयिता) के बराबर ठहरा लेता है। कभी उसे खुदा का नाम देकर और कभी खुदा का नाम दिए बग़ैर।

यही इंसान की अस्ल गुमराही है। पैग़म्बर की दावत (आह्वान) यह होती है कि आदमी सिर्फ एक खुदा को बड़ाई का मक़ाम दे। इसके अलावा जिस-जिस को उसने खुदाई अज़मत (महानता) के मक़ाम पर बैठा रखा है उसे अज़मत के मक़ाम से उतार दे। जब ख़ालिस खुदापरस्ती की दावत उठती है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर इसकी ज़द (प्रहार) पड़ती हुई महसूस करने लगते हैं जिनका दिल खुदा के सिवा कहीं और अटका हुआ हो। जिन्होंने खुदा के सिवा किसी और के लिए भी अज़मत को ख़ास कर रखा हो। ऐसे लोगों को अपने फज़ी माबूदों (पूज्यों) से जो शदीद ताल्लुक हो चुका होता है इसकी वजह से उनके लिए यह यकीन करना मुश्किल होता है कि वे बेहकीकत हैं और हकीकत सिर्फ उस पैग़ाम की है जो आदमियों में से एक आदमी की ज़बान से सुनाया जा रहा है।

जो दावत (आह्वान) खुदा की तरफ से उठे उसके अंदर लाज़िमी तौर पर खुदाई शान शामिल हो जाती है। इसकी अद्वितीय शैली और इसकी विलक्षण तार्किकता इस बात की खुली अलामत होती है कि वह खुदा की तरफ से है। इसके बावजूद जो लोग इंकार करें उन्हें खुदा के विधान में जहन्नम के सिवा कहीं और पनाह नहीं मिल सकती। अलबत्ता जो लोग खुदा के कलाम में खुदा को पा लें उन्होंने गोया आज की दुनिया में कल की दुनिया को देख लिया। यही लोग हैं जो आख़िरत (परलोक) के बाग़ों में दाख़िल किए जाएंगे।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ
آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا
أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا
الْفَاسِقِينَ ۚ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا
أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أََمْْوَناً فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ تُمَيِّتُهُمْ ثُمَّ يُمْحِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۚ هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَى إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

अल्लाह इससे नहीं शर्माता कि बयान करे मिसाल मच्छर की या इससे भी किसी छोटी चीज़ की। फिर जो ईमान वाले हैं वे जानते हैं कि वह हक (सत्य) है उनके रब की जानिब से। और जो इंकार करने वाले हैं वे कहते हैं कि इस मिसाल को बयान करके अल्लाह ने क्या चाहा है। अल्लाह इसके ज़रिए बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को इससे राह (सम्प्राप्ति) दिखाता है। और वह गुमराह करता है उन लोगों को जो नाफरमानी (अवज्ञा) करने वाले हैं। जो अल्लाह के अहद (वचन) को उसके बांधने के बाद तोड़ते हैं और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं। यही लोग हैं नुक्सान उठाने वाले। तुम किस तरह अल्लाह का इंकार करते हो, हालांकि तुम बेजान थे तो उसने तुम्हें ज़िंदगी अता की। फिर वह तुम्हें मौत देगा। फिर ज़िंदा करेगा। फिर उसी की तरफ लौटाए जाओगे। वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है। फिर आसमान की तरफ तवज्जोह की और सात आसमान दुरुस्त किए। और वह हर चीज़ को जानने वाला है। (26-29)

किसी बंदे के ऊपर अल्लाह का सबसे पहला हक यह है कि वह अब्दियत (दासता, बंदा होने) के उस अहद (वचन) को निभाए जो पैदा करने वाले और पैदा किए जाने वाले के दर्मियान अव्वल रोज़ से कायम हो चुका है। फिर इंसानों के दर्मियान वह इस तरह रहे कि उन तमाम रिश्तों और ताल्लुकात को पूरी तरह निभाए हुए हो जिन्हें निभाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है। तीसरी चीज़ यह कि जब खुदा अपने एक बंदे की ज़बान से अपने पैग़ाम का एलान कराए तो उसके ख़िलाफ बेबुनियाद बातें निकाल कर खुदा के बंदों को उससे बिदकाया न जाए। हक की दावत देना दरअस्त लोगों को हालते फितरी (सहज स्वाभाविक स्थिति) पर लाने की कोशिश करना है। इसलिए जो व्यक्ति लोगों को इससे रोकता है, वह ज़मीन पर फसाद (उपद्रव, बिगाड़) फैलाने का मुजरिम बनता है।

अल्लाह का यह एहसान कि वह आदमी को अदम से वजूद में ले आया। यह अल्लाह का इतना बड़ा एहसान है कि आदमी को पूर्णरूपेण उसके सामने समर्पण कर देना चाहिए। फिर अल्लाह ने इंसान को पैदा करके यू ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि उसे रहने के लिए ऐसी ज़मीन दी जो उसके लिए अत्यंत अनुकूल बनाई गई थी। फिर बात सिर्फ इतनी ही नहीं है बल्कि इससे बहुत आगे की है। इंसान हर वक्त इस नाज़ुक संभावना के किनारे खड़ा हुआ है कि उसकी मौत आ जाए और अचानक वह कायनात के मालिक के सामने हिसाब-किताब के लिए पेश कर दिया जाए। इन बातों का तकाज़ा है कि आदमी पूर्ण रूप से अल्लाह का हो जाए। उसकी

याद और उसकी इताअत (आज्ञापालन) में ज़िंदगी गुज़ारे। सारी उम्र वह उसका बंदा बना रहे। पैग़म्बराना दावत (आह्वान) के सुस्पष्ट और तार्किक होने के बावजूद क्यों बहुत-से लोग इसे कुबूल नहीं कर पाते। इसकी सबसे बड़ी वजह शोशे निकालने (आलोचना) का फितना है। आदमी के भीतर नसीहत स्वीकारने का ज़ेहन न हो तो वह किसी बात को गंभीरता से नहीं लेता। ऐसे आदमी के सामने जब भी कोई दलील आती है तो उसे सतही तौर देखकर एक शोशा निकाल लेता है। इस तरह वह यह ज़ाहिर करता है कि यह दावत कोई माकूल दावत नहीं है। अगर वह कोई माकूल दावत होती तो कैसे मुमकिन था कि उसमें इस किस्म की बेवज़न बातें शामिल हों। मगर जो नसीहत पकड़ने वाले ज़ेहन हैं, जो बातों पर गंभीरता से गौर करते हैं उन्हें हक को पहचानने में देर नहीं लगती, चाहे हक को 'मच्छर' जैसे मिसालों में ही बयान किया गया हो।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلِكِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ قَالُوا سُبْحَنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۖ قَالَ يَادُمُ اسْمُهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۚ

और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक ख़लीफा बनाने वाला हूँ। फ़रिश्तों ने कहा : क्या तू ज़मीन में ऐसे लोगों को बसाएगा जो इसमें फसाद करें और खून बहाएँ। और हम तेरी हम्द (स्तुति, गुणगान) करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने कहा मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते, और अल्लाह ने सिखा दिए आदम को सारे नाम, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन लोगों के नाम बताओ। फ़रिश्तों ने कहा कि तू पाक है। हम तो वही जानते हैं जो तूने हमें बताया। वेशक तू ही इल्म वाला और हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है। अल्लाह ने कहा ऐ आदम उन्हें बताओ उन लोगों के नाम। तो जब आदम ने बताए उन्हें उन लोगों के नाम तो अल्लाह ने कहा : क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि आसमानों और ज़मीन के भेद को मैं ही जानता हूँ। और मुझे मालूम है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (30-33)

...मी मअना हैं किसी के बाद उसकी जगह लेने वाला जानशीन (उत्तराधिकारी)। विरासती इक्तेदार (सत्ता) के ज़माने में यह लफ़्ज़ बहुलता से शासकों के लिए इस्तेमाल हुआ जो एक के बाद दूसरे की जगह सत्तासीन होते थे। इस तरह इस्तेमाली मफहूम में 'खलीफा' लफ़्ज़ 'सत्ताधारी' के समानार्थी हो गया।

अल्लाह तआला ने जब इंसान को पैदा किया तो यह भी फैसला फरमाया कि वह एक बाइख़ियार (साधिकार) मज़्लूक की हैसियत से ज़मीन पर आबाद होगा। फरिशतों को अदेशा हुआ कि इख़्तियार और इक्तेदार पाकर इंसान बिगड़ न जाए और ज़मीन में खूँरेज़ी करने लगे। फरिशतों का यह अदेशा ग़लत नहीं था। अल्लाह को भी इस संभावना का पूरा इल्म था। मगर अल्लाह की नज़र इस बात पर थी कि इंसानों में अगर बहुत-से लोग आज़ादी पाकर बिगड़ेंगे तो एक कबिले लिहाज़ तादाद उन लोगों की भी होगी जो आज़ादी और इख़्तियार के बावजूद अपनी हैसियत को और अपने रब के मक़ाम को पहचानेंगे और किसी दबाव के बग़ैर खुद अपने इरादे से तस्लीम व इताअत का तरीक़ा अपनाएँगे। ये दूसरी किस्म के लोग अगरचे अपेक्षाकृत कम तादाद में होंगे मगर वे फ़सल के दानों की तरह कीमती होंगे। फ़सल में लकड़ी और भुस की मात्रा हमेशा बहुत ज़्यादा होती है। मगर दाने कम होने के बावजूद इतने कीमती होते हैं कि उनकी ख़ातिर लकड़ी और भुस के ढेर को भी उगने और फैलने का मौक़ा दे दिया जाता है।

अल्लाह ने अपनी कुदरत से आदम की सारी संतति को एक ही वक़्त में उनके सामने कर दिया। फिर फरिशतों से कहा कि देखो यह है औलादे आदम। अब बताओ कि इनमें कौन-कौन और कैसे-कैसे लोग हैं। फरिशते अज्ञानतावश बता न सके। अल्लाह तआला ने आदम को उनके नामों, दूसरे शब्दों में शख़्सियतों से आगाह किया और फिर कहा कि फरिशतों के सामने उनका परिचय कराओ। जब आदम ने परिचय कराया तो फरिशतों को मालूम हुआ कि आदम की औलाद में फसादियों और बुरे लोगों के अलावा कैसे-कैसे सुल्हा (सज्जन) और मुत्कीन (ईश परायण) होंगे। इंसान का सबसे बड़ा जुर्म, रब के इंक़ार के बाद, ज़मीन में फसाद (उपद्रव, बिगाड़) करना और रक्तपात है। किसी व्यक्ति या समूह के लिए जाइज़ नहीं कि वह ऐसी कार्रवाइयाँ करे जिसके नतीजे में ज़मीन पर खुदा का कायम किया हुआ फ़ितरी निज़ाम बिगड़ जाए। इंसान, इंसान की जान मारने लगे। ऐसा हर कार्य आदमी को खुदा की रहमतों से महरूम कर देता है। ज़मीन पर खुदा के बनाए हुए फ़ितरी निज़ाम का कायम रहना उसका सुधार है, और ज़मीन के फ़ितरी निज़ाम को बिगाड़ना इसका फसाद।

وَاذْكُرْنَا لِمَلِكِكِ الْجَدِّ وَالْأَدَمَ فَسَجَدُوا لِلْإِبْلِيسَ ۖ ابْنِ ۖ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۖ وَقُلْنَا يَا أَدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۖ فَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۖ فَتَلَقَىٰ آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ

التَّوَابُ الرَّحِيمُ ۖ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا فَأَمَّا إِبْنُكَ فَمِنَ تَبِعِ هَذَا ۖ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ

और जब हमने फरिशतों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया। उसने इंक़ार किया और घमंड किया और मुंकिरों में से हो गया। और हमने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीबी दोनों जन्नत में रहो और उसमें से खाओ खुले रूप में जहां से चाहो। और उस दरख़्त (वृक्ष) के नज़दीक मत जाना वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने उस दरख़्त के ज़रिए दोनों को लगज़िश (ग़लती) में मुल्तला कर दिया और उन्हें उस ऐश से निकलवा दिया जिसमें वे थे। और हमने कहा तुम सब उतरो यहां से। तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठहरना और काम चलाना है एक मुद्दत तक। फिर आदम ने सीख लिए अपने रब से कुछ बोल तो अल्लाह उस पर मुत्वज्जह हुआ। बेशक वह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। हमने कहा तुम सब यहां से उतरो। फिर जब आए तुम्हारे पास मेरी तरफ से कोई हिदायत तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उनके लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग इंक़ार करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलाएँगे तो वही लोग दोज़ख़ (नर्क) वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (34-39)

आदम को अल्लाह तआला ने फरिशतों और इब्लीस के दर्मियान खड़ा किया और सज्दे की परीक्षा के ज़रिए आदम को व्यावहारिक रूप से बताया कि उनके लिए ज़मीन पर दो मुमकिन राहें होंगी। एक, फरिशतों की तरह हुक्मे इलाही के सामने झुक जाना, चाहे इसका मतलब अपने से कमतर एक बंदे के आगे झुकना क्यों न हो। दूसरा, इब्लीस की तरह अपने को बड़ा समझना और दूसरे के आगे झुकने से इंक़ार कर देना। इंसान की पूरी ज़िंदगी इसी परीक्षा का स्थल है। यहां हर वक़्त आदमी को दो रवैयों में से किसी एक रवैये का चुनाव करना होता है। एक मलकूती रवैया यानी दुनिया की ज़िंदगी में जो मामला भी पेश आए, अल्लाह के हुक्म की तामील में आदमी हक और इंसाफ के आगे झुक जाए। दूसरा शैतानी रवैया, यानी जब कोई मामला पेश आए तो आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफिसयात जाग उठे और वह उसके प्रभाव में आकर साहिबे मामला के आगे झुकने से इंक़ार कर दे।

निषिद्ध वृक्ष का मामला भी इसी किस्म का व्यावहारिक सबक है। इससे मालूम होता है कि इंसान के भटकने का प्रारंभ यहां से होता है कि वह शैतान के वरगलाने में आ जाए। और उस हद में कदम रख दे जिसमें जाने से अल्लाह ने मना किया है। 'मना किए हुए फल' को खाते ही आदमी अल्लाह की मदद, दूसरे शब्दों में जन्नत के अधिकार से महरूम हो जाता है।

ताहम यह महरूमी ऐसी नहीं है जिसकी तलाफी (क्षतिपूर्ति) न हो सकती हो। यह संभावना आदमी के लिए फिर भी खुली रहती है कि वह दुबारा अपने रब की ओर लौटे और अपने रवैये को दुरुस्त करते हुए अल्लाह से माफी का तलबगार हो। जब बंदा इस तरह पलटता है तो अल्लाह भी उसकी तरफ पलट आता है और उसे इस तरह पाक कर देता है गोया उसने गुनाह ही नहीं किया था।

किसी इंसानी आबादी में अल्लाह की दावत का उठना भी इसी किस्म की एक सख्त परीक्षा है। हक का दाओ (आह्वानकर्ता) भी गोया एक 'आदम' होता है जिसके सामने लोगों को झुक जाना है। अगर वह अपने घमंड और अपने तअस्सुब (विद्वेष) की वजह से उसका एतराफ न करें तो गोया कि उन्होंने शैतान की पैरवी की। खुदा इस दुनिया में खुले रूप में सामने नहीं आता वह अपने निशानियों के ज़रिए लोगों को जांचता है। जिसने खुदा की निशानी में खुदा को पाया, उसी ने खुदा को पाया और जिसने खुदा की निशानी में खुदा को नहीं पाया वह खुदा से महरूम रहा।

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَآءِیْلُ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاَوْفُوا بِعَهْدِیْ اُوْفِ
بِعَهْدِكُمْ وَاِیَّآیْ فَارْهَبُوْٓا ۚ وَاٰمِنُوْا اِمَّا اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكْفُرُوْا
اَوَّلَ كَافِرٍ ۚ ۝ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ وَاِیَّآیْ فَاتَّقُوْٓا ۚ ۝ وَلَا تَسْـَٔوْا الْحَقَّ
بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۚ وَاَقِمْوْا الصَّلٰوةَ وَاَتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا
مَعَ الرَّاكِعِیْنَ ۚ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۚ وَاَسْتَعِیْزُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ وَاِئِمَّا لِكَبِيْرَةٍ اِلَّا عَلٰی الْخٰشِعِیْنَ ۚ
الَّذِیْنَ یُظْلَمُوْنَ اَنْهُمْ مُّقْتَدِرُوْا رَبِّهِمْ ۚ وَاَنْهُمُ الْبَرُّ رَجِعُوْنَ ۝

ऐ बनी इस्राईल! याद करो मेरे उस एहसान को जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया। और मेरे अहद (वचन) को पूरा करो, मैं तुम्हारे अहद को पूरा करूंगा। और मेरा ही डर रखो। और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है। तस्दीक (पुष्टि) करती हुई उस चीज़ की जो तुम्हारे पास है। और तुम सबसे पहले इसका इंकार करने वाले न बनो। और न लो मेरी आयतों पर मोल थोड़ा। और मुझ से डरो। और सही में ग़लत को न मिलाओ और सच को न छुपाओ हालांकि तुम जानते हो। और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ। तुम लोगों से नेक काम करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो। हालांकि तुम किताब की तिलावत करते हो, क्या तुम समझते नहीं। और मदद चाहो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह भारी है मगर उन लोगों पर नहीं जो डरने वाले हैं। जो गुमान रखते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और वे उसी की तरफ लौटने वाले हैं। (40-46)

किसी समुदाय पर अल्लाह का सबसे बड़ा इनाम यह है कि वह उसके पास अपना पैगम्बर भेजे और उसके ज़रिए उस समुदाय के लिए अबदी फलाह (चिरस्थायी सफलता एवं उद्धार) का रास्ता खोल दे। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बेअसत (अल्लाह के दूत के रूप में प्रकटन) से पहले यह नेमत बनी इस्राईल (यहूदी समुदाय) को दी गई थी। मगर मुददत गुजरने के बाद उनका दीन (धर्म) उनके लिए एक किस्म की तकलीदी रस्म (परम्परागत अनुकरण) बन गया था न कि शुज़री फैसले के तहत अपनाई गई एक चीज़। मुहम्मद (सल्ल०) की बेअसत ने हकीकत खोल दी। इनमें से जिन लोगों का शुज़र ज़िंद था वे फ़ैरन आपकी सदाकत (सत्यवादिता) को पहचान गए और आपके साथी बन गए। और जिन लोगों के लिए उनका धर्म परम्परागत रीति-रिवाज बन चुका था उन्हें आपकी आवाज़ अपरिचित आवाज़ महसूस हुई। वे बिदक गए और आपके विरोधी बन कर खड़े हो गए।

अगरचे मुहम्मद (सल्ल०) की नुबुव्वत (ईशदूतत्व) के बारे में तौरात में इतनी वाज़ेह अलामतें थीं कि यहूद के लिए आपकी सदाकत को समझना मुश्किल न था। मगर दुनियावी मफाद और मस्लेहतों की ख़ातिर उन्होंने आपको मानने से इंकार कर दिया। सदियों के अमल से उनके यहां जो मज़हबी ढांचा बन गया था उसमें उन्हें सरदारी हासिल हो गई थी। वे अपने पूर्वजों के आसनों पर बैठ कर जनसाधारण के नायक बने हुए थे। मज़हब के नाम पर तरह-तरह के नज़राने (चढ़ावे आदि) साल भर उन्हें मिलते रहते थे। उन्हें नज़र आया कि अगर उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) को सच्चा मान लिया तो उनकी मज़हबी बड़ाई खत्म हो जाएगी। मफादात (स्वार्थों) का सारा ढांचा टूट जाएगा। यहूद को चूँकि उस वक्त अरब में मज़हब की नुमाईदगी का मकाम हासिल था, लोग उनसे मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में पूछते। वे मासूमाना अंदाज़ में कोई ऐसी शोशे की बात (आलोचनात्मक बात) कह देते जिससे पैगम्बर का व्यक्तित्व और मिशन लोगों की निगाह में मुशतबह (संदिग्ध) हो जाएं। अपने वअज़ों (प्रवचनों) में वे लोगों से कहते कि हक़परस्त बनो और हक़ (सत्य) का साथ दो। मगर अमलन जब खुद उनके लिए हक़ का साथ देने का वक्त आया तो वे हक़ का साथ न दे सके।

खुदा की पुकार पर लबूबक (स्वीकारोक्ति) कहना जब इस कीमत पर हो कि आदमी को अपनी ज़िंदगी का ढांचा बदलना पड़े, मान-सम्मान के आसनों से अपने को उतारना हो तो यह वक्त उन लोगों के लिए बड़ा सख्त होता है जो इन्हीं सांसारिक वैभवों में अपना धार्मिक स्थान बनाए हुए हों। मगर वे लोग जो खुशूअ (निष्ठा) की सतह पर जी रहे हों उनके लिए ये चीज़ें रुकावट नहीं बनतीं। वे अल्लाह की याद में, अल्लाह के लिए खर्च करने में, अल्लाह के हुक्म के आगे झुक जाने में और अल्लाह के लिए सब्र करने में वे चीज़ें पा लेते हैं जो दूसरे लोग दुनिया के तमाशों में पाते हैं। वे खूब जानते हैं कि डरने की चीज़ अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) है न कि दुनियावी अंदेश।

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَآءِیْلُ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاِنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ۚ
وَاتَّقُوْا یَوْمًا لَا تَجْزِیْ نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا یُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ ۚ وَلَا
یُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ یُنصَرُوْنَ ۚ ۝ وَاِذْ یُنۢجِیْكُمْ مِنْ اِلٍ فِرْعَوْنُ
یَسُوْمُكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ یُذَبِّحُوْنَ اَبْنَاءَكُمْ وَیَسْتَحْیِیْوْنَ نِسَاءَكُمْ وَفِیْ ذٰلِكُمْ

بَلَاءٍ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٍ ۖ وَإِذْ فَرَقْنَا بَيْنَكُمْ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ
وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۚ وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِّن بَعْدِ ۖ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۚ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّن بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۚ
وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۚ وَإِذْ قَالَ مُوسَى
لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِنَّمَا ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِيكُمْ
فَاتَّقُوا أَنْفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِيكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيمُ ۚ وَإِذْ قُلْتُمْ يٰمُوسَىٰ لَنْ نُّؤْمِنَ بِكَ حَتَّىٰ نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً
فَأَخَذَتْكُمُ الصَّعِقَةُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۚ ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَىٰ كُلُوا
مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِن كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۚ

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया वालों पर फज़ीलत दी। और डरो उस दिन से कि कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी। न उसकी तरफ से कोई सिफ़ारिश कुबूल होगी। और न उससे बदले में कुछ लिया जाएगा और न उनकी कोई मदद की जाएगी। और जब हमने तुम्हें फिरऔन के लोगों से छुड़या। वे तुम्हें बड़ी तकलीफ देते थे। तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को जीवित रखते। और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से भारी आजमाइश थी। और जब हमने दरिया को फाड़कर तुम्हें पार कराया। फिर बचाया तुम्हें और डुबा दिया फिरऔन के लोगों को और तुम देखते रहे। और जब हमने मूसा से वादा किया चालीस रात का। फिर तुमने इसके बाद बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ालिम थे। फिर हमने इसके बाद तुम्हें माफ कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और जब हमने मूसा को किताब दी और फैसला करने वाली चीज़ ताकि तुम राह पाओ। और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम! तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपनी जानों पर जुल्म किया है। अब अपने पैदा करने वाले की तरफ मुतवज़ह हो और अपने मुजरिमों को अपने हाथों से कत्ल करो। यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बेहतर है। तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा कुबूल फरमाई। बेशक वही तौबा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला

है। और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हम तुम्हारा यकीन नहीं करेंगे जब तक हम अल्लाह को सामने न देख लें तो तुम्हें बिजली ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे। फिर हमने तुम्हारी मौत के बाद तुम्हें उठाया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और हमने तुम्हारे ऊपर बदलियों का साया किया और तुम पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं और उन्होंने हमारा कुछ नुकसान नहीं किया, वे अपना ही नुकसान करते रहे। (47-57)

यहूद को अल्लाह तआला ने तमाम दुनिया पर फज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी। यानी उन्हें अपने उस ख़ास काम के लिए चुना था कि उनके पास अपनी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजे, और उनके ज़रिए दूसरी कौमों को अपनी मर्ज़ी से बाख़बर करे। फिर इस मंसब (पद) के अनुरूप उन्हें बहुत-सी नेमतें और सहूलतें दी गईं अपने दुश्मनों पर ग़लबा, वक्ती लगज़िशों (ग़लतियों) से दरगुज़र, असाधारण हालात में असाधारण मदद और 'खुदावंद की तरफ से उनके लिए जीविका का इंतज़ाम' आदि। इससे यहूद की अगली नस्लें इस ग़लतफहमी में पड़ गईं कि हम अल्लाह की ख़ास उम्मत (समुदाय) हैं। हम हर हाल में आख़िरत (परलोक) की कामयाबी हासिल करेंगे। मगर खुदा के इस तरह के मामलात किसी के लिए पुश्तैनी (पैतृक) नहीं होते। किसी समुदाय के अगले लोगों का फैसला उनके पिछले लोगों की बुनियाद पर नहीं किया जाता, बल्कि हर फ़र्द का अलग-अलग फैसला होता है। खुदा के इंसफ़ाफ़ा का दिन इतना सख़्त होगा कि वहां अपने अमल के सिवा कोई भी दूसरी चीज़ किसी के काम आने वाली नहीं।

सच्ची दीनदारी यह है कि आदमी अल्लाह के सिवा किसी को माबूद (पूज्य) न बनाए। अल्लाह को देखे बग़ैर अल्लाह पर यकीन करे। आख़िरत के हिसाब से डर कर ज़िंदगी गुज़ारे। पाक रोज़ी से अपनी ज़रूरतें पूरी करे। जिन लोगों पर उसे अधिक इख़्तियार हासिल है उन्हें जुर्म करने से रोक दे।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ وَسَارِزِدِ الْمُحْسِنِينَ ۚ فَبَدَّلَ الَّذِينَ
ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّن
السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۚ وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ
بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ نَضِيبًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ
كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۚ وَإِذْ قُلْتُمْ
يٰمُوسَىٰ لَنْ تَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُثْنِي

الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَآئِهَا فُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصِلِهَا قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ
الَّذِي هُوَ أَذَىٰ بِالْأَذَىٰ هُوَ خَيْرٌ إِمَّا بَطْوَاصٌ مَّصْرًا وَإِن لَّكُمْ تَأْسَلْتُمْ وَصُرِيَتْ
عَلَيْهِمُ الدِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا
يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا

ع

يَعْتَدُونَ ﴿٥٨﴾

और जब हमने कहा कि दाखिल हो जाओ इस शहर में और खाओ उसमें से जहां से चाहो खुले रूप में और दाखिल हो दरवाज़े में सिर झुकाए हुए और कहो कि ऐ रब! हमारी ख़ताओं को बर्ख़िश दे। हम तुम्हारी ख़ताओं को बर्ख़िश देंगे और नेकी करने वालों को ज्यादा भी देंगे। तो उन्होंने बदल दिया उस बात को जो उनसे कही गई थी दूसरी बात से। इस पर हमने उन लोगों के ऊपर जिन्होंने जुल्म किया है उनकी नाफरमानी के सबब से आसमान से अज़ाब (प्रकोप) उतारा। और जब मूसा ने अपनी कौम के लिए पानी मांगा तो हमने कहा अपना असा (डंडा) पत्थर पर मारो तो उससे फूट निकले बारह चश्मे (जलस्रोत)। हर गिरोह ने अपना-अपना घाट पहचान लिया। खाओ और पियो अल्लाह के रिश्के से और न फिरो ज़मीन में फसाद मचाने वाले बन कर। और जब तुमने कहा ऐ मूसा हम एक ही किस्म के खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते। अपने रब को हमारे लिए पुकारो कि वह निकाले हमारे लिए जो उगता है ज़मीन से साग, ककड़ी, गेहूं, मसूर, प्याज़। मूसा ने कहा कि क्या तुम एक बेहतर चीज़ के बदले एक अदना (तुच्छ) चीज़ लेना चाहते हो। किसी शहर में उतरो तो तुम्हें मिलेगी वह चीज़ जो तुम मांगते हो। और डाल दी गई उन पर ज़िल्लत और मोहताजी और वे अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक हो गए। यह इस वजह से हुआ कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते थे और नबियों को नाहक क़त्ल करते थे। यह इस वजह से कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद पर न रहते थे। (58-61)

यहूद पर अल्लाह तआला ने खुसूसी इनामात किए। इसका नतीजा यह होना चाहिए था कि वे खुदा के शुक्रगुज़ार बंदे बनते। मगर उन्होंने इसके विपरीत अमल किया। एक बड़ा शहर उन्हें दे दिया गया और कहा गया कि इसमें दाखिल हो तो फातेहाना तमकनत (विजयी अहंकार) से नहीं बल्कि इज़ज़ (विनम्रता) के साथ और अल्लाह से माफी मांगते हुए। मगर वे इसके बजाए तफरीही बातें कहने लगे। उन्हें 'मन' और 'सलवा' की कुदरती ग़िज़ाएं दी गईं ताकि वे जीविका की ज़दूदेजेहद से मुक्त होकर अल्लाह के हुक्मों के पालन में ज्यादा से ज्यादा मशगूल हों। मगर उन्होंने चटपटे और मसालेदार खानों की मांग शुरू कर दी। उन्होंने दुनिया में जरूरत पर कनाअत (संतोष) न करके लज़ज़त (भोग-विलास) की तलाश की। उनकी बेहिंसी इतनी बढ़ी

कि अल्लाह की खुली-खुली निशानियां भी उनके दिलों को पिघलाने के लिए काफी साबित न हुई। उनकी तंबीह (सचेत करने) के लिए जो अल्लाह के बंदे उठे उनको उन्होंने ठुकराया यहां तक कि मार डाला। यहूद में यह ढिठाई इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने समझ लिया कि वे नजातयाफ़ता (मोक्ष-प्राप्त) समुदाय हैं। मगर खुदा के यहां नस्ल और वर्ण के आधार पर कोई फ़ैसला होने वाला नहीं है। एक यहूदी को भी उसी खुदाई क़ानून से जांचा जाएगा, जिससे एक ग़ैर-यहूदी को जांचा जाएगा। ज़न्नत उसी के लिए है जो ज़न्नत वाले अमल करे, न कि किसी विशेष नस्ल या समुदाय के लिए।

ज़मीन के ऊपर शुक्र, सब्र, तवाज़ोअ (विनम्रता) और कनाअत (संतोष) के साथ रहना ज़मीन की इस्लाह (सुधार) है। इसके विपरीत नाशुक्री, बेसब्री, घमंड और हिर्स के साथ रहना ज़मीन में फसाद बरपा करना है। क्योंकि इससे खुदा का कायम किया हुआ फ़ितरी निज़ाम (सहज-स्वाभाविक व्यवस्था) टूटता है। यह हद से निकल जाना है, जबकि खुदा यह चाहता है कि हर एक अपनी हद के अंदर अमल करे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالشَّكِرَی وَالصَّابِرِينَ مَن آمَنَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٥٩﴾

यूं है कि जो लोग मुसलमान हुए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) और साबी, इनमें से जो श़इस ईमान लाया अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और उसने नेक काम किया तो उसके लिए उसके रब के पास अज़्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे। (62)

आयत में चार समूहों का ज़िक्र है। एक मुसलमान जो मुहम्मद (सल्ल०) की उम्मत (अनुयायी समुदाय) हैं। दूसरे, यहूद जो अपने को मूसा (अलैहिस्सलाम) की उम्मत कहते हैं। तीसरे, नसारा (ईसाई) जो मसीह (अलैहिस्सलाम) की उम्मत होने के दावेदार हैं। चौथे, साबी जो अपने को याहिया (अलैहिस्सलाम) की उम्मत बताते थे और कदीम ज़माने में इराक के इलाके में आबाद थे। वे अहले किताब थे (यानी जिनके पास पहले खुदाई कलाम आ चुका था) और काबे की तरफ रुख करके नमाज़ पढ़ते थे। मगर अब साबी समुदाय ख़त्म हो चुका है। दुनिया में अब इसका कहीं वजूद नहीं।

यहां मुसलमानों को अलग नहीं किया है। बल्कि उनका और दूसरे पैगम्बरों से निस्वत रखने वाली उम्मतों का ज़िक्र एक साथ किया गया है। इसका मतलब यह है कि समूह होने के एतबार से अल्लाह के नज़दीक सब समान दर्जा रखते हैं। समूह के एतबार से एक समूह और दूसरे समूह में कोई फ़र्क नहीं। सबकी नजात (मुक्ति, मोक्ष) का एक ही अटल उसूल है और वह है ईमान और अमले सालेह (सत्कर्म)। कोई समूह अपने को चाहे मुसलमान कहता हो या वह

अपने को यहूदी या मसीही या साबी कहे, इनमें से कोई भी महज़ एक विशेष समूह होने के आधार पर खुदा के यहां कोई विशेष दर्जा नहीं रखता। दर्जे का एतबार इस पर है कि किसने खुदा की मंशा के मुताबिक अपनी अमली (व्यावहारिक) ज़िंदगी को ढाला।

नबी (ईशदूत) के ज़माने में जब उसके मानने वालों का समूह बनता है तो उसकी बुनियाद हमेशा ईमान और अमले सालेह (सत्कर्म) पर होती है। उस वक्त ऐसा होता है कि नबी की पुकार को सुनकर कुछ लोगों के अंदर ज़ेहनी और फ़िक्री (विचारिक) इंकिलाब आता है। उनके भीतर एक नया अज्म (संकल्प) जागता है। उनकी ज़िंदगी का नक्शा जो अब तक ज़ाती ख़्वाहिशों की बुनियाद पर चल रहा था, वह खुदाई तालीमात की बुनियाद पर कायम होता है। यही लोग हकीकी मअनों में नबी की उम्मत होते हैं। उनके लिए नबी की ज़बान से आख़िरत की नेमतों की बशारत (शुभ सूचना) दी जाती है।

मगर बाद की नस्लों में सूरतेहाल बदल जाती है। अब खुदा का दीन (धर्म) उनके लिए एक किस्म की कौमी रिवायत (जातीय परम्परा) बन जाता है। जो बशारतें ईमान और अमल की बुनियाद पर दी गई थीं उन्हें महज़ गिरोही (समूहगत) ताल्लुक का नतीजा समझ लिया जाता है। वे गुमान कर लेते हैं कि उनके गिरोह का अल्लाह से कोई खास रिश्ता है जो दूसरे गिरोहों से नहीं है। जो व्यक्ति इस विशेष गिरोह से संबंध रखे चाहे अकीदा (आस्था, विश्वास) और अमल के एतबार से वह कैसा ही हो बहरहाल उसकी नजात (मुक्ति) होकर रहेगी। जन्मत उसके अपने गिरोह के लिए और जहन्नम दूसरे गिरोहों के लिए है।

मगर अल्लाह का किसी गिरोह से विशेष रिश्ता नहीं। अल्लाह के यहां जो कुछ एतबार है वह सिर्फ़ इस बात का है कि आदमी अपनी सोच और अमल में कैसा है। आख़िरत में आदमी के अंजाम का फैसला उसके हकीकी किरदार (चरित्र-आचरण) की बुनियाद पर होगा। न कि गिरोही संबंधों के आधार पर।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۝ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝

और जब हमने तुमसे तुम्हारा अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया। पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुम्हें दी है मज़बूती के साथ, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो ताकि तुम बचो। इसके बाद तुम इससे फिर गए। अगर अल्लाह का

फ़ज्र और उसकी रहमत न होती तो ज़रूर तुम हलाक हो जाते। और उन लोगों का हाल तुम जानते हो जो सन्न (सनीचर) के मामले में अल्लाह के हुक्म से निकल गए तो हमने उनको कहा कि तुम लोग ज़लील बंदर बन जाओ। फिर हमने इसे इबरात बना दिया उन लोगों के लिए जो उसके रूबरू थे और उन लोगों के लिए जो इसके बाद आए। और इसमें हमने नसीहत रख दी डर वालों के लिए। (63-66)

बाइबल की रिवायतें बताती हैं कि मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में जब यहूद से यह अहद (वचन) लिया गया कि वे खुदाई तालीमात (शिक्षाओं) पर ठीक-ठीक अमल करेंगे तो खुदा ने पहाड़ को उनके ऊपर उलट कर औंधा कर दिया और उनसे कहा कि तौरात को या तो कुबूल करो वरना यहीं तुम सब को हलाक कर दिया जाएगा। (तालमूद) यही मामला हर उस शख्स का है जो अल्लाह पर ईमान लाता है। ईमान लाना गोया अल्लाह से यह अहद करना है कि आदमी का जीना और मरना खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक होगा। यह एक बेहद गंभीर इकरार है। इसमें एक तरफ़ आजिज़ बंदा होता है और दूसरी तरफ़ वह खुदा होता है जिसके हाथ में ज़मीन व आसमान की ताकतें हैं। अगर बंदा अपने अहद पर पूरा उतरे तो उसके लिए खुदा की लाज़वाल नेमतें हैं। और अगर वह अहद करके उससे फिर जाए तो उसके लिए यह शदीद ख़तरा है कि उसका खुदा उसे जहन्नम में डाल दे जहां वह इस तरह जलता रहे कि इससे निकलने का कोई रास्ता उसके लिए बाकी न हो।

ईमानी अहद (वचन) के वक्त मूसा (अलैहि०) की कौम पर जो कैफ़ियत गुज़री थी वही हर मोमिन बंदे से मल्लूब (अपेक्षित) है। हर शख्स जो अपने आप को अल्लाह के साथ ईमान की रस्सी में बांधता है, उसे इसकी संगीनी से इस तरह कांपना चाहिए गोया कि उसने अगर इस अहद के ख़िलाफ़ किया तो ज़मीन और आसमान उसके ऊपर गिर पड़ेंगे।

एक गिरोह जिसे अल्लाह की तरफ से शरीअत दी जाए उसकी गुमराही की एक सूरत यह होती है कि वह अमलन उसके ख़िलाफ़ चले और तावीलों (हीलों-बहानों) के ज़रिए यह ज़ाहिर करे कि वह ऐन खुदा के हुक्म पर कायम है। यहूद को यह हुक्म था कि वे सनीचर के दिन को रोज़ा और इबादत के लिए मखसूस रखें। इस दिन किसी किस्म का कोई दुनियावी काम न करें। मगर उन्होंने इस हुरमत (मनाही) को बाकी नहीं रखा। वे दूसरे दिनों की तरह सनीचर के दिन भी अपने दुनियावी कारोबार करने लगे। अलबत्ता वे तरह-तरह की लफ़्ज़ी तावीलों से ज़ाहिर करते कि वे जो कुछ कर रहे हैं वह ऐन खुदा के हुक्म के मुताबिक है। उनकी यह ढिठाई अल्लाह को इतनी नापसंद हुई कि वे बंदर बना दिए गए। जब भी आदमी शरीअत से हटता है तो वह अपने आपको जानवरों की सतह पर ले जाता है जो किसी अख़्लाकी ज़ाव्ते (नैतिक विधान) के पाबंद नहीं हैं। इसलिए जो लोग शरीअत के साथ इस किस्म का खेल करें उन्हें डरना चाहिए कि खुदा का कानून उन्हें उसी हैवानी ज़िल्लत में मुब्तला न कर दे जिसमें यहूद अपने इसी किस्म के फ़ेअल (कृत्य) की वजह से मुब्तला हुए।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَكُنُّنَا
 هُزُؤًا قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ
 لَنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ ۖ عَوَانٌ بَيْنَ
 ذَلِكَ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَهَا قَالَ
 إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءٌ فَاقِعَةٌ لَوْ نُفِصَ مِنْهُ الطَّرِيفُ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا
 رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۖ إِنَّ الْبَقَرَ تَشْبَهُ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ
 لَمُهْتَدُونَ ۝ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَذْلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي
 الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شَيْءَ فِيهَا قَالُوا لَئِنْ جِئْتَ بِالْحَقِّ فَدِّبْ بِهَا وَمَا كَادُوا
 يَفْعَلُونَ ۝ وَإِذْ قَاتَلْتُمْ نَفْسًا فَادْرَأْتُمْ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ
 تَكْتُمُونَ ۝ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَذَلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَى وَيُرِيكُمْ
 آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

ج

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो। उन्होंने कहा : क्या तुम हमसे हंसी कर रहे हो। मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ कि मैं ऐसा नादान बनूँ। उन्होंने कहा, अपने रब से दरखास्त करो कि वह हमसे बयान करे कि वह गाय कैसी हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फरमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा, उनके बीच की हो। अब कर डालो जो हुक्म तुमको मिला है। उन्होंने कहा, अपने रब से दरखास्त करो, वह बयान करे कि उसका रंग कैसा हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फरमाता है वह सुनहरे रंग की हो, देखने वालों को अच्छी मालूम होती हो। उन्होंने कहा, अपने रब से दरखास्त करो कि वह हमसे बयान कर दे कि वह कैसी हो। क्योंकि गाय में हमें शुबह पड़ गया है और अल्लाह ने चाहा तो हम राह पा लेंगे। मूसा ने कहा अल्लाह फरमाता है कि वह ऐसी गाय हो कि महनत करने वाली न हो, ज़मीन को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो। वह सालिम हो, उसमें कोई दाग न हो। उन्होंने कहा : अब तुम स्पष्ट बात लाए। फिर उन्होंने उसे ज़बह किया। और वे ज़बह करते नज़र न आते थे। और जब तुमने एक शख्स को मार डाला फिर एक-दूसरे पर इसका इल्ज़ाम डालने लगे। हालांकि अल्लाह को ज़ाहिर करना मंज़ूर था जो कुछ तुम

छुपाना चाहते थे। पस हमने हुक्म दिया कि मारो उस मुर्दे को इस गाय का एक टुकड़ा। इस तरह ज़िंदा करता है अल्लाह मुर्दों को। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है ताकि तुम समझो। (67-73)

मूसा (अलैहि०) के ज़माने में बनी इस्राईल में कत्ल की एक घटना घटी। कातिल का पता लगाने के लिए अल्लाह तआला ने नबी के वास्ते से उन्हें यह हुक्म दिया कि एक गाय ज़बह करो। और उसका गोश्त मृतक पर मारो। मृतक अल्लाह के हुक्म से कातिल का नाम बता देगा। यह एक मौजज़ाती (चमत्कारपूर्ण) तदबीर थी जो निम्न उद्देश्यों के लिए अपनाई गई।
 1. मिश्र में लंबी मुद्दत तक कयाम करने की वजह से बनी इस्राईल मिश्री तहज़ीब (सभ्यता) और रीति-रिवाजों से प्रभावित हो गए। मिश्री कौम गाय को पूजती थी। अतः मिश्रियों के असर से बनी इस्राईल में भी गाय के मुकद्दस (पवित्र) होने का ज़ेहन पैदा हो गया। जब उक्त घटना घटी तो अल्लाह ने चाहा कि इस घटना के माध्यम से उनके ज़ेहन से गाय की पवित्रता की धारणा को तोड़ा जाए। अतः कातिल का पता लगाने के लिए गाय के ज़िह्व की तदबीर अपनाई गई।

2. इसी तरह बनी इस्राईल ने यह गलती की थी कि फिक्ह (आचार-शास्त्र) की बारीकियों और बहस के नतीजों में खुदा के सादा दीन को एक बोझल दीन बना डाला था। अतः उक्त घटना के माध्यम से उन्हें यह सबक दिया गया कि अल्लाह की तरफ से जो हुक्म आए उसे सादा अर्थों में लेकर फौरन उसकी तामील में लग जाओ। खोद-कुरेद का तरीका न अपनाओ। अगर तुमने ऐसा किया कि हुक्म की तफसील जानने और उसकी हदों को सुनिश्चित करने के लिए मुशिगाफियां (कुतक) करने लगे तो सख्त आजमाइश में पड़ जाओगे। इस तरह एक सादा हुक्म शर्तों का इज़ाफा होते-होते एक सख्त हुक्म बन जाएगा जिसकी तामील (पालन) तुम्हारे लिए बेहद मुश्किल हो।

3. इस वाक्य के ज़रिए बनी इस्राईल को बताया गया है कि दूसरी ज़िंदगी उसी तरह एक मुमकिन ज़िंदगी है जैसे पहली ज़िंदगी। अल्लाह हर आदमी को मरने के बाद ज़िंदा कर देगा और उसे दुबारा एक नई दुनिया में उठाएगा।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنْ مِنَ
 الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَخَرَّجُ مِنْهُ الْآخَرُ وَإِنْ مِنْهَا لَأَيْسَرُ يُخْرَجُ مِنْهُ الْآخَرُ وَإِنْ
 مِنْهَا لَأَيْسَرُ يُخْرَجُ مِنْهُ الْآخَرُ وَإِنْ مِنْهَا لَأَيْسَرُ يُخْرَجُ مِنْهُ الْآخَرُ ۝

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख्त हो गए। पस वे पत्थर की तरह हो गए या इससे भी ज्यादा सख्त। पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं। कुछ

पत्थर फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है। और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह इससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

खुदा के हुक्म के बारे में जो लोग बहसों और तावीलें करें उनके अंदर धीरे-धीरे बेहिंसा (सवेदनहीनता) का मर्ज़ पैदा हो जाता है। उनके दिल सख्त हो जाते हैं। खुदा का नाम सबसे बड़ी हस्ती का नाम है। आदमी के अंदर ईमान ज़िंदा हो तो खुदा का नाम उसे हिला देता है। बोलने से ज्यादा उसे चुप लग जाती है। मगर जब दिलों में जुमूद (जड़ता) और बेहिंसा आती है तो खुदा की बातों में भी उसी किस्म की बहसों और तावीलें शुरू कर दी जाती हैं जो आम इंसानी कलाम में की जाती हैं। इस किस्म का अमल उनकी बेहिंसा में और इज़ाफ़ा करता चला जाता है। यहां तक कि उनके दिल पत्थर की तरह सख्त हो जाते हैं। अब खुदा का तसव्वुर (अवधारण) उनके दिलों को नहीं पिघलाता, वह उनके अंदर तड़प नहीं पैदा करता। वह उनकी रूह के भीतर कंपन पैदा करने का सबब नहीं बनता।

पत्थरों का ज़िक्र यहां तमसील (उदाहरण) के रूप में किया गया है। खुदा ने अपनी कायनात को इस तरह बनाया है कि वह आदमी के लिए इबरत और नसीहत का सामान बन गई है। यहां की हर चीज़ ख़ामोश मिसाल की ज़बान में उसी रब की मर्ज़ी का अमली निशान है जो रब की मर्ज़ी कुरआन में अल्फ़ाज़ (शब्दों) के ज़रिए बयान की गई है।

पत्थरों के ज़रिए खुदा ने अपनी दुनिया में जो तमसीलात कायम की हैं उनमें से तीन चीज़ों की तरफ़ इस आयत में इशारा किया गया है।

पहाड़ों पर एक चीज़ यह देखने को मिलती है कि पत्थरों के अंदर से पानी के स्रोत बहते रहते हैं जो अंततः मिलकर नदी का रूप अपना लेते हैं। यह उस इंसान की तमसील है जिसके दिल में अल्लाह का डर बसा हुआ हो और वह आंसुओं के रूप में उसकी आंखों से बह पड़ता हो।

दूसरी मिसाल उस पत्थर की है जो बज़ाहिर सूखी चट्टान मालूम होता है। मगर जब तोड़ने वाले उसे तोड़ते हैं तो मालूम होता है कि उसके नीचे पानी का बड़ा ज़ख़ीरा (भंडार) मौजूद था। ऐसी चट्टानों को तोड़कर कुवें बनाए जाते हैं। यह उस इंसान की तमसील है जो बज़ाहिर खुदा से दूर मालूम होता था। इसके बाद उस पर एक हादसा गुज़रा। इस हादसे ने उसकी रूह को हिला दिया। वह आंसुओं के सैलाब के साथ खुदा की तरफ़ दौड़ पड़ा।

पत्थरों की दुनिया में तीसरी मिसाल भू-स्खलन (Landslide) की है। यानी पहाड़ों के ऊपर से पत्थर के टुकड़ों का लुढ़क कर नीचे आ जाना। यह उस इंसान की तमसील है जिसने किसी इंसान के मुकाबले में ग़लत रवैया अपनाया। इसके बाद उसके सामने खुदा का हुक्म पेश किया गया। खुदा का हुक्म सामने आते ही वह ढह पड़ा। इंसान के सामने वह झुकने के लिए तैयार न था। मगर जब इंसान का मामला खुदा का मामला बन गया तो वह आजिज़ाना तौर पर (समर्पण भाव से) उसके आगे गिर पड़ा।

اَفَتَطْمَعُونَ اَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْعَوْنَ كَلَامِ اللَّهِ
ثُمَّ يَحِرُّونَ مَنْ بَعْدَ مَا عَقِلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَاِذْ اَلَقْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
اٰمَنًا وَاِذْ اَخْلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِآفَاتِهِ ۖ اَللّٰهُ عَلَيْهِمْ
لِيَحْجُوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ
يَعْلَمُ مَا يُّسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾

क्या तुम यह उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएंगे। हालांकि इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि वे अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसे बदल डालते थे समझने के बाद, और वे जानते हैं। जब वे ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हुए हैं। और जब आपस में एक-दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं : क्या तुम उन्हें वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं कि वे तुम्हारे रब के पास तुमसे हुज्जत करें। क्या तुम समझते नहीं। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह को मालूम है जो वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं। (75-77)

मदीने के लोग जो मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाए थे, उनके इतने जल्दी आप को पहचान लेने और आपको मान लेने का एक सबब यह था कि वह अपने यहूदी पड़ोसियों से अक्सर सुनते रहते थे कि एक आखिरी नबी आने वाले हैं। इस कारण मुहम्मद (सल्ल०) के आने की खबर उनके लिए एक मानूस (परिचित) खबर थी। ये मुसलमान स्वाभाविक रूप से इस उम्मीद में थे कि जिन यहूदियों की बातें सुनकर उनके दिल के अंदर इस्लाम कुबूल करने का इत्तिदाई जज्बा उभरा था, वे यकीनन खुद भी आगे बढ़कर इस पैगम्बर का साथ देंगे। अतः वे पुरजोश तौर पर इन यहूदियों के पास इस्लाम का पैग़ाम लेकर जाते और उनका आह्वान करते कि वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाकर आप (सल्ल०) का साथ देने वाले बनें।

मगर मुसलमानों को उस वक़्त सख्त धक्का लगता जब वे देखते कि उनकी उम्मीदों के विपरीत यहूद उनके आह्वान को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। इसके नतीजे में एक और नज़ाकत पैदा हो रही थी। जो लोग मुहम्मद (सल्ल०) से दुश्मनी और द्वेष रखते थे वे मुसलमानों से कहते कि पैगम्बर इस्लाम का मामला इतना यकीनी नहीं जितना तुम लोगों ने समझ लिया है। यदि वह इतना यकीनी होता तो ये यहूदी उलेमा (विद्वान) ज़रूर उनकी ओर दौड़ पड़ते। क्योंकि वे आसमान की किताबों (दिव्य ग्रंथों) के बारे में तुमसे ज्यादा जानते हैं।

मगर किसी बात को कुबूल करने के लिए उस बात का जानना काफ़ी नहीं है। बल्कि उस बात के बारे में गंभीर होना ज़रूरी है। यहूद का हाल यह था कि उन्होंने खुद अपने पास की उन किताबों में तब्दीलियां कर डालीं जिन्हें वे आसमानी किताबें मानते थे। अपनी

मुकद्दस किताबों (धर्म ग्रंथों) में वे जिस बात को अपनी ख्वाहिश के खिलाफ देखते उसमें संशोधन या परिवर्तन करके उसे अपनी ख्वाहिश के मुताबिक बना लेते। वे अपने दीन (धर्म) को अपने सांसारिक हितों के अधीन बनाए हुए थे। जो लोग अपने अमल से इस किस्म की ग़ैर-संजीदगी का सुबूत दे रहे हों, वे अपने से बाहर किसी हक को मानने पर कैसे राज़ी हो जाएंगे।

कोई बात चाहे कितनी ही बरहक (सत्यवादी) हो अगर आदमी उसका इंकार करना चाहे तो वह इसके लिए कोई न कोई तावील (हीला-बहाना) ढूँढ लेगा। इस तावील के आखिरी रूप का नाम तहरीफ (संशोधन परिवर्तन) है। इस तर्जेंअमल का नतीजा यह होता है कि अल्लाह के मामले की संगीनी आदमी के दिल से निकल जाती है। वह खुदा के हुक्म को सुनता है मगर लफ्ज़ी तावील करके मुतमइन (संतुष्ट) हो जाता है कि उसका अपना मामला इस हुक्म की ज़द में नहीं आता। वह खुदा को मानता है मगर उसकी बेहिंसी (संवेदनहीनता) उसे ऐसे कामों के लिए ढीठ बना देती है जो कोई ऐसा आदमी ही कर सकता है जो न खुदा को मानता हो और न यह जानता हो कि उसका खुदा उसे देख रहा है और उसकी बातों को सुन रहा है।

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَخْتَبُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمْلًا وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٦٠﴾
قَوْلِ الَّذِينَ يَكْتَبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ
اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا قَوْلِ لَهُمْ مِمَّا كُتِبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ
مِمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٦١﴾ وَقَالُوا لَنْ تَسْتَأْذِنَنَا إِلَّا بِكَمَالٍ مَعْدُودَةٍ قُلْ أَتُخَذُكُمْ
عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ كَلًا
تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ بَلَى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٦٣﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٦٤﴾

और उनमें अनपढ़ हैं जो नहीं जानते किताब को मगर आरज़ुएं। इनके पास गुमान के सिवा और कुछ नहीं। पस ख़राबी है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है। ताकि इसके ज़रिए थोड़ी-सी पूंजी हासिल कर लें। पस ख़राबी है उस चीज़ की बदौलत जो उनके हाथों ने लिखी। और उनके लिए ख़राबी है अपनी इस कमाई से। और वे कहते हैं हमें दोज़ख़ की आग नहीं छुएगी मगर गिनती के कुछ दिन। कहो क्या तुमने अल्लाह के

पास से कोई अहद (वचन) ले लिया है कि अल्लाह अपने अहद के खिलाफ नहीं करेगा। या अल्लाह के ऊपर ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते। हां जिसने कोई बुराई की और उसके गुनाह ने उसे अपने घरे में ले लिया। तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। और जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए, वे जन्नत वाले लोग हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। (78-82)

आरज़ुओं (अमानी) से आशय वे झूठे किस्से-कहानियां हैं जो यहूद ने अपने धर्म के बारे में गढ़ रखी थीं और जो अपनी ज़ाहिर फरेबी की वजह से अवाम में खूब फैल गई थीं। इन किस्से कहानियों का खुलासा यह था कि जहन्नम की आग यहूद के लिए नहीं है। उनमें अपने पूर्वजों से जोड़कर ऐसी बातें मिलाई गई थीं जिससे यह साबित हो कि बनी इस्राईल अल्लाह के ख़ास बंदे हैं। वे जिस धर्म को मानते हैं उसमें ऐसे जादुई गुण छुपे हुए हैं कि उसकी मामूली-मामूली चीज़ें भी आदमी को जहन्नम की आग से बचाने और जन्नत के बाग़ों में पहुंचा देने के लिए काफी हैं।

सस्ती नजात (मुक्ति) के ये पवित्र नुस्खे अवाम के लिए बहुत कशिश रखते थे। क्योंकि इसमें उन्हें अपनी इस खुशख़्वाली की तस्दीक मिल रही थी कि उन्हें अपनी ग़ैर-ज़िम्मेदाराना ज़िंदगी पर रोक लगाने की ज़रूरत नहीं। वे किसी ज़द्दोज़ेहद के बग़ैर मात्र टोने-टोटके की बरकत से जन्नत में पहुंच जाऐंगे। अतः जो यहूदी विद्वान पूर्वजों के हवाले से यह खुशकुन कहानियां सुनाते थे उन्हें लोगों के बीच ज़बरदस्त मकबूलियत हासिल हुई। आखिरत (परलोक) के मामले को आसान बनाना उनके लिए शानदार दुनियावी तिजारात का ज़रिया बन गया। उनके पास अवाम की भीड़ जमा हो गई। उनके ऊपर नज़रानों (चढ़ावों) की बारिश होने लगी। वे लोगों को मुफ्त जन्नत हासिल करने का रास्ता बताते थे। लोगों ने इसके बदले में उनके लिए अपनी तरफ से मुस्त दुनिया फ़ाहम कर दी।

यही हर दौर में धर्म-ग्रंथों की धारक कौमों का रोग रहा है। जो लोग इस किस्म के लज़ीज़ ख़्वाबों में जी रहे हों, जो यह समझ बैठे हों कि कुछ रस्मी आमाल (कर्मकांडों) के सिवा उन पर किसी ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं है, जो इस खुशगुमानी में मुत्तला हों कि उनके सारे हुक्क़ खुदा के यहां हमेशा के लिए महफूज़ हो चुके हैं, ऐसे लोग सच्चे दीन के आह्वान को कभी गवारा नहीं करते। क्योंकि ऐसी बातें उन्हें अपनी मीठी नींद को ख़राब करती हुई नज़र आती हैं। वे उन्हें ज़िंदगी की खुली हकीकतों के सामने खड़ा कर देती हैं।

وَإِذَا خُذْنَا بِنِشَاقِ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَيَالِ الَّذِينَ إِحْسَانًا
وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٦٥﴾

और जब हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे और नेक सुलूक करोगे मां-बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ,

यतीमों और मस्कीनों के साथ। और यह कि लोगों से अच्छी बात कहो। और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो। फिर तुम इससे फिर गए सिवा थोड़े लोगों के। और तुम इकार करके इससे हट जाने वाले लोग हो। (83)

इंसान के ऊपर अल्लाह का पहला हक यह है कि वह अल्लाह का इबादतगुज़ार बने और उसके साथ किसी को शरीक न करे। दूसरा हक बंदों के साथ हुस्ने सुलूक (सद्ब्यवहार) है। इस हुस्ने सुलूक का आगाज़ अपने मां-बाप से होता है और फिर रिश्तेदारों और पड़ोसियों से गुज़रकर उन तमाम इंसानों तक पहुंच जाता है जिनसे अमली ज़िंदगी में संबंध बनते हैं। एक इंसान और दूसरे इंसान के दर्मियान जब भी कोई मामला पड़े तो वहां एक ही बर्ताव अपने भाई के साथ दुरुस्त है। और वह वही है जो ईसाफ और खैरख्वाही (परहित) के मुताबिक हो।

इस मामले में आदमी का अस्ल इम्तहान 'यतीमों और मस्कीनों' या दूसरे शब्दों में कमज़ोर लोगों के साथ होता है। क्योंकि जो ताकतवर है उसका ताकतवर होना खुद इस बात की ज़मानत है कि लोग उसके साथ हुस्ने सुलूक करें। मगर कमज़ोर आदमी के साथ हुस्ने सुलूक के लिए इस किस्म का कोई अतिरिक्त प्रेरक नहीं है। इसलिए सबसे ज्यादा हुस्ने सुलूक जहां अपेक्षित है वे कमज़ोर लोग हैं। हकीकत यह है कि जहां हर चीज़ की नफ़ी (अभाव) हो जाती है वहां खुदा होता है। ऐसे आदमी के साथ वही शख्स हुस्ने सुलूक करेगा जो वाकई अल्लाह की खुशनूदी के लिए ऐसा कर रहा हो। क्योंकि वहां कोई दूसरा मुहरिक (प्रेरक) मौजूद ही नहीं।

जब मामला कमज़ोर आदमी से हो तो विभिन्न कारणों से हुस्ने सुलूक का शुज़र दब जाता है। कमज़ोर आदमी को मदद दी जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि पाने वाले के मुकाबले में देने वाला अपने को कुछ ऊंचा समझने लगता है। यह नपिस्यात कमज़ोर आदमी की इज़्ज़ते नफ़्स (स्वाभिमान) को मलहूज़ रखने में रुकावट बन जाती है। कमज़ोर की तरफ से अपेक्षित विनम्रता प्रकट न हो तो फौरन उसे अयोग्य समझ लिया जाता है और इसका प्रदर्शन विभिन्न तकलीफदेह सूरतों में होता रहता है। एक-दो बार मदद करने के बाद यह ख्याल होता है कि यह शख्स मुस्तकिल तौर पर मेरे सर न हो जाए। इसलिए उससे छुट्टी पाने के लिए उसके साथ ग़ैर-शरीफ़ाना अंदाज़ अपनाया जाता है। वग़ैरह

भली बात बोलना तमाम आमाल का खुलासा (सार) है। एक हकीमी खैरख्वाही का कलिया (बोल) कहना आदमी के लिए हमेशा सबसे ज्यादा दुश्वार होता है। आदमी अच्छी-अच्छी तफ़र्रों करता है। मगर जब एक अच्छी बात किसी दूसरे के एतराफ (स्वीकार) के समानार्थी हो तो आदमी ऐसी अच्छी बात मुंह से निकालने के लिए सबसे ज्यादा कंजूस होता है। सामने का आदमी यदि कमज़ोर है तो उसके लिए शराफ़त के अल्फ़ाज़ बोलना भी वह ज़रूरी नहीं समझता। अगर किसी से शिकायत या नाराज़गी पैदा हो जाए तो आदमी समझ लेता है कि वह ईसाफ के हर खुदाई हुक्म से उसे मुस्तसना (अपवाद) करने में हक बजानिब है।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تَحْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۚ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰؤُلَاۤءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ تَحْرِجُوْنَ فَرِيقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُوْنَ عَلَيْهِم بِالْاِثْمِ وَالْعُدَاۤءِ ۚ وَاِنْ يَأْتُوْكُمْ اُسْرٰى تُفْدُوْهُمْ وَهُوَ مُحْرَمٌ عَلَيْكُمْ ۚ اِخْرَاجُهُمْ اَتَتْوُمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ فَبَاۤجِزًاۗءٍ مِّنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِّنْكُمْ اِلَّا اِخْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلَى اَشَدِّ الْعَذَابِ ۚ وَاَلَاۤءِ اللّٰهِ بِعَآفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوْا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يَخَفَتْ عَنْهُمْ الْعَذَابُ ۚ وَلَا هُمْ يُنصَرُوْنَ ۝

وَالْعَذَابُ

और जब हमने तुमसे यह अहद (वचन) लिया कि तुम अपनों का खून न बहाओगे। और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से नहीं निकालोगे। फिर तुमने इकार किया और तुम इसके गवाह हो। फिर तुम ही वे हो कि अपनों को कत्ल करते हो और अपने ही एक गिरोह को उनकी बस्तियों से निकालते हो। इनके मुकाबले में इनके दुश्मनों की मदद करते हो गुनाह और ज़ुल्म के साथ। फिर अगर वे तुम्हारे पास कैद होकर आते हैं तो तुम फिदया (अर्थदण्ड) देकर उन्हें छुड़ते हो। हालांकि खुद इनका निकालना तुम्हारे ऊपर हाराम था। क्या तुम किताबे इलाही के एक हिस्से को मानते हो और एक हिस्से का इंकार करते हो। पस तुममें से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुस्वाई हो और कियामत के दिन इन्हें सज़ा अज़ाब में डाल दिया जाए। और अल्लाह उस चीज़ से बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो। यही लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी। पस न इनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न इन्हें मदद पहुंचेगी। (84-86)

प्राचीन मदीने के चारों तरफ यहूद के तीन कबीले आबाद थे बन्नूज़ीर, बन्नूकैज़ा और बन्नूकैनुकाज़। ये सब मूसवी शरीअत को मानते थे। मगर उनके जाहिली तअस्सुवात (विद्वेष) ने उन्हें अलग-अलग गिरोहों में बांट रखा था। अपनी दुनियावी सियासत के तहत वे मदीने के मुशरिक (बहुदेववादी) कबीलों औस और खज़रज के साथ मिल गए थे। बन्नूज़ीर और बन्नूकैज़ा ने कबीला औस का साथ पकड़ लिया था। बन्नूकैनुकाज़ कबीला खज़रज का सहयोगी बना हुआ था। इस तरह दो गिरोह बन कर वे आपस में लड़ते रहते थे। जंग बिआस इसी किस्म की एक जंग थी जो हिज़रते नबवी (हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मदीना प्रस्थान) से पांच साल पहले हुई थी। इन लड़ाइयों में यहूद मुशरिक कबीलों के साथ मिल कर दो मोर्चे बना लेते। एक

मोर्चे में शामिल होने वाले यहूदी दूसरे मोर्चे में शामिल होने वाले यहूदियों को कत्ल करते और उन्हें उनके घरों से बेघर कर देते। फिर जब जंग खत्म हो जाती तो वे तौरात का हवाला देकर अपने सहधर्मियों से चंदे की अपीलें करते ताकि अपने गिरफ्तार भाइयों को, फिदया (हर्जाना) देकर मुशरिक कबीलों के हाथ से छुड़ाया जा सके। ईसान के जान व माल के एहताराम के बारे में वे खुदा के हुक्म को तोड़ते और फिर अपनी ज़ालिमाना सियासत का शिकार होने वालों के साथ दिखावटी हमदर्दी करके ज़ाहिर करते कि वे बहुत धार्मिक हैं।

यह ऐसा ही है जैसे एक शख्स को नाहक कत्ल कर दिया जाए और उसके बाद शरअी तरीके पर उसकी नमाज जनाजा पढ़ी जाए। शरीअत के अस्ली और असासी (आधारभूत) अहकाम आदमी से जाहिली ज़िंदगी छोड़ने के लिए कहते हैं। वह उसकी ख़्वाहिशे नफ्स (मनोइच्छाओं) से टकराते हैं। वह उसकी दुनियादाराना सियासत पर रोक लगाते हैं। इसलिए आदमी इन अहकाम को नजरअंदाज करता है। वह हकीकी दीनदारी के जुए में अपने को डालने को तैयार नहीं होता। अलबत्ता कुछ मामूली और नुमाइशी चीजों की धूम मचाकर यह जाहिर करता है कि वह खुदा के दीन पर पूरी तरह कायम है। मगर वह खुदा के दीन का खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) एडिशन तैयार करना है। यह दीन के उखरवी (परलोकवादी) पहलू को नजरअंदाज करना है और दीन के कुछ वे पहलू जो अपने अंदर दुनियावी रैनक और शोहरत रखते हैं उनमें दीनदारी का कमाल दिखाना है। दीन में इस किस्म की जसारत (दुस्साहस) आदमी को अल्लाह के ग़जब का मुस्तहिक बनाती है न कि अल्लाह के इनाम का।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِقْنَا بَيْنَكُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ۖ وَالْأُخْرَىٰ قُلُوبُنَا غُلَّتْ ۖ أُولَٰئِكَ لَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ يُصَدِّقُ لِمَا مَعَهُمْ ۖ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ قَاعَرُوا كَفَرُوا بِهِ ۖ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۚ بِسْمِ اللَّهِ الشُّرُوبِ ۚ أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا ۚ أَلَمْ يَأْتِ الْبَيِّنَاتِ ۚ بَيِّنَاتٍ ۚ أَنْ يُنَزَّلَ اللَّهُ بِغْيَا أَنْ يُنَزَّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ

और हमने मूसा को किताब दी और इसके बाद पे दरपे रसूल भेजे। और ईसा विन मरयम को खुली-खुली निशानियां दीं और रूहे पाक से उसकी ताईद की। तो जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह चीज लेकर आया जिसे तुम्हारा दिल नहीं चाहता था तो तुमने घमंड किया। फिर एक जमाअत को झुठलाया और एक जमाअत को मार डाला।

और यहूद कहते हैं कि हमारे दिल महफूज (सुरक्षित) हैं। नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार की वजह से उन पर लानत कर दी है। इसलिए वे बहुत कम ईमान लाते हैं। और जब आई अल्लाह की तरफ से उनके पास एक किताब जो सच्चा करने वाली है उसे जो उनके पास है और वे पहले से मुंकिरों पर फतह मांगा करते थे। फिर जब आई उनके पास वह चीज जिसे उन्होंने पहचान रखा था तो उन्होंने इसका इंकार कर दिया। पस अल्लाह की लानत है इंकार करने वालों पर। कैसी बुरी है वह चीज जिसमें उन्होंने अपनी जानों का मोल किया कि वे इंकार कर रहे हैं अल्लाह के उतारे हुए कलाम का इस ज़िद की बुनियाद पर कि अल्लाह अपने फज़ से अपने बंदों में से जिस पर चाहे उतारे। पस वे गुस्से पर गुस्सा कमा कर लाए और इंकार करने वालों के लिए जिल्लत का अज़ाब है। (87-90)

तौरात अल्लाह की किताब थी जो यहूद (यहूदी जाति) पर उतरी थी। मगर धीरे-धीरे तौरात की हैसियत उनके यहाँ कौमी तबर्क (जातीय शुभ वस्तु) की हो गई। कौमी अजमत और नजात की अलामत के तौर पर यहूद अब भी उसे सीने से लगाए हुए थे। मगर रहनुमा किताब के मकाम से उसे उन्होंने हटा दिया था। मूसा (अलैहि०) के बाद बार-बार इनके दर्मियान अबिया (ईशदूत) उठते, मसलन यूशअ नबी, दाऊद नबी, जकरिया नबी, याहिया नबी वगैरह। उनके आखिरी नबी ईसा (अलैहि०) थे। ये तमाम अबिया यहूद को यह नसीहत देने के लिए आए कि तौरात को अपनी अमली ज़िंदगियों में शामिल करो। मगर तौरात की पवित्रता पर ईमान रखने के बावजूद यह आवाज उनके लिए तमाम आवाजों से ज्यादा असहनीय साबित हुई। वे खुदा के नबियों को नबी मानने से इंकार करते, यहां तक कि उन्हें कत्ल कर डालते। इसकी वजह यह थी कि तौरात के नाम पर वे जिस ज़िदगी को अपनाए हुए थे वह हकीकत में नफ्सानियत (मनोइच्छाओं) और दुनियापरस्ती की एक ज़िंदगी थी जिसके ऊपर उन्होंने खुदा की किताब का लेबल लगा लिया था। खुदा के नबी जब बेआमेज हक (विशुद्ध सत्य) की दावत पेश करते तो उन्हें नजर आता कि यह दावत उनकी मजहबी हैसियत को नकार रही है। अब उनके अंदर घमंड की नफिसयात जाग उठतीं। वे नबियों के एतराफ के बजाए उन्हें खत्म करने के दरपे हो जाते।

यही मामला अरब के यहूद ने मुहम्मद (सल्ल०) के साथ किया। वे अपनी धार्मिक पुस्तकों में आखिरी रसूल की भविष्यवाणी को देखकर कहते कि जब वह नबी आएगा तो हम उसके साथ मिलकर मुंकिरों और मुशरिकों को परास्त करेंगे। मगर उनकी यह बात महज एक झूठी तकरीर थी जो अपने को धर्म का संरक्षक जाहिर करने के लिए वे करते थे। अतः 'वह नबी' आया तो उनकी हकीकत खुल गई। उनके जाहिली तअस्सुबात (विद्वेष) अपने गिरोह से बाहर के एक नबी का एतराफ करने में रुकावट बन गए। कुरआन में आपकी सदाकत (सच्चाई) के बारे में जो वाज़ेह दलीलें दी जा रही थीं उनके जवाब से वे आजिज थे। इसलिए वे कहने लगे कि तुम्हारी जाहिर-फरेब बातों से प्रभावित होकर हम अपने पूर्वजों का दीन नहीं छोड़ सकते।

وَإِذْ أَقِيلَ لَهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ مِنْ أَوْفَرِ الْعِمَادِ ۚ وَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ ۚ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَاتِنَا تُكْفِرُكُمْ عَنْ أَنْفُسِكُمْ وَلَئِنَّكُمْ لَفِي رَبِّكُمْ لَعَازِلٌ ۚ وَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ ۚ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَاتِنَا تُكْفِرُكُمْ عَنْ أَنْفُسِكُمْ وَلَئِنَّكُمْ لَفِي رَبِّكُمْ لَعَازِلٌ ۚ وَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ ۚ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَاتِنَا تُكْفِرُكُمْ عَنْ أَنْفُسِكُمْ وَلَئِنَّكُمْ لَفِي رَبِّكُمْ لَعَازِلٌ ۚ

और जब उनसे कहा जाता है उस कलाम पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान रखते हैं जो हमारे ऊपर उतरा है। और वे इसका इंकार करते हैं जो इसके पीछे आया है। हालांकि वह हक है और सच्चा करने वाला है उसे जो इनके पास है। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम अल्लाह के पैगम्बरों को इससे पहले क्यों कत्ल करते रहे हो। और मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियां लेकर आया। फिर तुमने उसके पीछे बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम जुल्म करने वाले हो। और जब हमने तुमसे अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर खड़ा किया जो हुक्म हमने तुम्हें दिया है उसे मजबूती के साथ पकड़ो और सुनो। उन्होंने कहा : हमने सुना और हमने नहीं माना। और उनके कुफ्र के सबब से बछड़ा उनके दिलों में रच-बस गया। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो कैसी बुरी है वह चीज जो तुम्हारा ईमान तुम्हें सिखाता है। कहो, अगर अल्लाह के यहां आखिरत का घर ख़ास तुम्हारे लिए है, तो दूसरों को छोड़कर तुम मरने की आरजू करो अगर तुम सच्चे हो। मगर वे कभी इसकी आरजू नहीं करेंगे, इस सबब से वे जो अपने आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह खूब जानता है जालिमों को। और तुम उन्हें जिंदगी का सबसे ज्यादा हरीस (लालसा रखने वाला) पाओगे, उन लोगों से भी ज्यादा जो मुशरिक हैं। इनमें से हर एक यह चाहता है कि हजार वर्ष की उम्र पाए। हालांकि इतना जीना भी उसे अजाब से बचा नहीं सकता। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (91-96)

यहूद जो कुरआन की दावत (आह्वान) को मानने के लिए तैयार न हुए, इसकी वजह उनका यह एहसास था कि वे पहले से हक पर हैं और हकपरस्तों की सबसे बड़ी जमाअत (बनी इस्राईल) से संबंध रखते हैं। मगर यह दरअस्त गिरोहपरस्ती थी जिसे उन्होंने हकपरस्ती के हम-मअना समझ रखा था। वे गिरोही हक को ख़ालिस हक का मक़ाम दिए हुए थे। यही वजह है कि हक (सत्य) जब अपने विशुद्ध रूप में जाहिर हुआ तो वे उसे लेने के लिए आगे न बढ़ सके। अगर ख़ालिस हक उनका मक़सूद होता तो उनके लिए यह जानना मुश्किल न होता कि कुरआन का आना खुद उनकी मुक़द्दस किताब तौरात की भविष्यवाणियों के मुताबिक है। और यह कि कुरआन के नज़ूल (अवतरण) के बाद अब कुरआन ही किताबे हक (दिव्य ग्रंथ) है न कि उनका अपना गिरोही धर्म।

उनका मामला दरहकीकत हकपरस्ती का मामला नहीं। इसका सबूत उनके अपने इतिहास में यह है कि उन्होंने खुद अपने गिरोह के नबियों (मसलन हज़रत ज़करिया, हज़रत याहिया) को कत्ल किया जिन्होंने उनकी जिंदगियों पर तंकीद (आलोचना) की, जो उनके खिलाफ गवाही देते थे ताकि उन्हें खुदा की तरफ बुलाएं। (तहमियाह 26 : 9)। हज़रत मूसा ने जो मौजजे (चमत्कार) पेश किए इसके बाद उनकी नुबुव्वत में कोई शुबह नहीं रह गया था। मगर कोहेतूर के चालीस दिनों के कयाम (वास) के जमाने में जब हज़रत मूसा का शख़्सी दबाव उनके सामने न रहा तो उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया। उनके सर पर पहाड़ खड़ा कर दिया गया, तब भी सिर्फ वक़्ती तौर पर जान बचाने के लिए उन्होंने कह दिया कि हां हमने सुना। मगर इसके बाद उनकी अक्सरियत (बहुलसंख्या) बदस्तूर नाफ़रमानी की जिंदगी पर क़ायम रही। अगर वे सचमुच खुदापरस्त होते तो उनकी सारी तवज्जोह खुदा की उस दुनिया की तरफ लग जाती जो मौत के बाद आने वाली है। मगर उनका हाल यह है कि वे सबसे ज्यादा मौजूदा दुनिया की मुहब्बत में डूबे हुए हैं।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلْجِبْرِيلِ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ۚ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ۚ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ۚ أَوَكَلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا تُبْدَاهُ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ الْكِتَابَ أَنْ يَكْتُبِ اللَّهُ إِلَهُهُمْ وَأُولَٰئِكَ سِوَاهُ خُلُوعِهِمْ كَانَتْهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ

कहो कि जो कोई जिब्रील का मुखालिफ है तो उसने इस कलाम को तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, वह सच्चा करने वाला है उसे जो उसके आगे है और वह हिदायत और खुशखबरी है ईमान वालों के लिए। जो कोई दुश्मन हो अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह ऐसे मुकियों का दुश्मन है। और हमने तुम्हारे ऊपर वाजेह निशानियां उतारीं और कोई इनका इंकार नहीं करता मगर वही लोग जो फासिक (अवज्ञाकारी) हैं। क्या जब भी वे कोई अहद (वचन) बांधेंगे तो उनका एक गिरोह उसे तोड़ फेंकेगा। बल्कि उनमें से अक्सर ईमान नहीं रखते। और जब उनके पास अल्लाह की तरफ से एक रसूल आया जो सच्चा करने वाला था उस चीज का जो उनके पास है तो उन लोगों ने जिन्हें किताब दी गई थी, अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया गया वे इसे जानते ही नहीं। (97-101)

प्राचीन काल में यहूद की सरकशी के नतीजे में बार-बार उन्हें सख्त सजाएं दी गईं। अल्लाह के तरीके के मुताबिक हर सजा से पहले पैगम्बरों की जवान से उसकी पेशगी खबर दी जाती। यह खबर अल्लाह की तरफ से जिब्रील फरिश्ते के जरिए पैगम्बर के पास आती और वह इससे अपनी कैम को आगाह करते। इस किस्म के वाकियात में अस्ली सबक यह था कि आदमी को चाहिए कि वह अल्लाह की नाफरमानी से बचे ताकि वह अजाबे इलाही की जद में न आ जाए। मगर यहूद इन वाकियात से इस किस्म का सबक न ले सके। इसके बजाए वे कहने लगे, जिब्रील फरिश्ता हमारा दुश्मन है वह हमेशा आसमान से हमारे खिलाफ अहकाम लेकर आता है। जब मुहम्मद (सल्ल०) ने एलान किया कि अल्लाह ने जिब्रील के जरिए मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी का उतरना) की है तो यहूद ने कहना शुरू किया जिब्रील तो हमारा पुराना दुश्मन है। यही वजह है कि नुबुव्वत जो सिर्फ इस्लामी गिरोह का हक था, इसे उसने एक अन्य कबीले के व्यक्ति तक पहुंचा दिया।

इस किस्म की निरर्थक बातें सिर्फ वही लोग करते हैं जो फिस्क (उद्धृष्टता) और केंद्री (उन्मुक्ता) की जिंदगी गुजार रहे हों। यहूद का हाल यह था कि वे नफसपरस्ती, आबाई तकलीद (पूर्वजों का अंधानुकरण), नस्ली और कौमी विद्वेष की सतह पर जी रहे थे और कुछ नुमाइशी किस्म के मजहबी काम करके जाहिर करते थे कि वे ऐन दीने खुदावंदी पर कायम हैं। जो लोग इस किस्म की झूठी दीनदारी में मुत्तला हों, वे सच्चे और विशुद्ध धर्म का आह्वान सुन कर हमेशा बिगड़ जाते हैं। क्योंकि ऐसा आह्वान उन्हें उनके गर्व और अहंकार के स्थान से उतारने के समानार्थी नजर आता है। वे उत्तेजनापूर्ण मानसिकता के तहत ऐसी बातें बोलने लगते हैं जो अभिव्यक्ति के एतबार से दुरुस्त होने के बावजूद हकीकत के एतबार से बिल्कुल अर्थहीन होती हैं। जाहिर है कि फरिश्तों का आना और रसूलों का मबऊस होना सब मुकम्मल तौर पर खुदाई मंसूबे के तहत होता है। ऐसी हालत में जब दलीलें यह जाहिर कर रही हों कि पैगम्बरे अरबी (सल्ल०) के पास वही चीज आई है जो इब्राहीम, मूसा और ईसा पर आई थी और वह पिछले आसमानी सहीफों (दिव्य ग्रंथों) की भविष्यवाणियों के ऐन मुताबिक है तो यह स्पष्ट रूप से इस

बात का सबूत है कि वह अल्लाह की तरफ से है। आदमी बहुत-सी बातें यह जाहिर करने के लिए बोलता है कि वह ईमान पर कायम है। हालांकि वे बातें सिर्फ इस बात का सबूत होती हैं कि आदमी का ईमान और खुदापरस्ती से कोई ताल्लुक नहीं है।

وَاتَّبِعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكٍ سُلَيْمٍ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٌ وَلَكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمُونَ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَقَدْ عَلِمُوا لَمَن اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَآتَقَوْا لِمَثُوبَةٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّوْكَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

۱۲
۱۳

और वे उस चीज के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलैमान की सल्तनत पर लगा कर पढ़ते थे। हालांकि सुलैमान ने कुफ्र नहीं किया बल्कि ये शैतान थे जिन्होंने कुफ्र किया वे लोगों को जादू सिखाते थे। और वे उस चीज में पड़ गए जो बाबिल में दो फरिश्तों हारुत और मारुत पर उतारी गई, जबकि उनका हाल यह था कि जब भी किसी को अपना यह फन (कला) सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो आजमाइश के लिए हैं। पस तुम मुकियर न बनो। मगर वे उनसे वह चीज सीखते जिससे मर्द और उसकी औरत के दर्मियान जुदाई डाल दें। हालांकि वे अल्लाह के इज़्ज (आज्ञा) के बगैर इससे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे। और वे ऐसी चीज सीखते जो उन्हें नुक्सान पहुंचाए और नफा न दे। और वे जानते थे कि जो कोई इस चीज का खरीदार हो, आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। कैसी बुरी चीज है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला। काश वे इसे समझते। और अगर वे मोमिन बनते और तकवा (ईशभय) इस्लियार करते तो अल्लाह का बदला उनके लिए बेहतर था, काश वे इसे समझते। (102-103)

आसमानी किताब के धारक किसी गिरोह का बिगाड़ हमेशा सिर्फ एक होता है। आखिरत की नजात जो कि पूरी तरह नेक आमाल पर निर्भर है उसका राज बेअमली में तलाश कर लेना। अल्लाह का कलाम हकीकत में अमल की फुकार है। मगर जब कैम पर ज्वाल आता है तो उसके लोग मुकद्दस (पवित्र) कलाम को लिख लेने या जवान से बोल देने को हर किस्म की

बरकतों का रहस्यमयी नुस्खा समझ लेते हैं। यही वह मनोवैज्ञानिक धरातल है जिसके ऊपर जादू, तंत्र-मंत्र और अमलियात वजूद में आते हैं। फिर तंत्र-मंत्र जैसी चीजों से जन्मत हासिल करने वाले दुनिया को भी छू-मंत्र के जरिए हासिल करने की कोशिश में लग जाते हैं। बुजुर्गों से अक्रीदत (श्रद्धा) को नजात का जरिया समझने वाले रूहों से तअल्लुक कायम करके अपने दुनियावी मसाइल हल करने लगते हैं। विद और वजाइफ (तप-जप आदि) के तिलिस्माती असरात पर यकीन करने वाले सियासी चमत्कार दिखा कर मिल्लत की तामीर और दीन के अह्या (पुनरुत्थान) का मंसूबा बनाते हैं।

यहूद अपने जवाल (पतन) के बाद जब बेअमली और तोहमपरस्ती (अंधविश्वास) की इस कैफियत में मुब्तला हुए तो उनके दर्मियान ऐसे लोग पैदा हुए जो सहर और कहानत (जादू और तंत्र-मंत्र) की दुकान लगा कर बैठ गए। इन जालिमों ने अपने कारोबार को चमकाने के लिए अपने इस फन (कला) को सुलैमान (अलैहि०) की तरफ मंसूब कर दिया। उन्होंने कहना शुरू किया कि सुलैमान को जिन्नों और हवाओं पर जो असाधारण वर्चस्व प्राप्त था वह सब इल्मे सहर की बुनियाद पर था और यह सुलैमानी इल्म कुछ जिन्नों के जरिए हमें हासिल हो गया है। इस तरह सुलैमान की तरफ मंसूब होकर अमलियात का फन यहूद के अंदर बड़े पैमाने पर फैल गया।

लूत (अलैहि०) की कौम समलैंगिकता की बुराई में मुब्तला थी। इसलिए उनके यहां खूबसूरत लड़कों के रूप में फरिश्ते आए। इसी तरह यहूद की आजमाइश के लिए बाबिल में दो फरिश्ते भेजे गए जो दुरवेशों के भेष में अमलियात सिखाते थे। ताहम वे कहते रहते थे कि यह तुम्हारा इम्तहान है। मगर इस तंबीह के बावजूद वे इस फन पर टूट पड़े। यहां तक कि उन्होंने इसे नाजाइज उद्देश्यों में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْمِعُوا لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ
الْكَبِيرِ ۝ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْكُمْ
مِنْ خَيْرٍ مِّنْ رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ۝ مَا نَسْخُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا أَلَمْ تَعْلَمْ
أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ تَرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا
رُسُلَكُمْ كَمَا سَأَلَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۖ وَمَنْ يَتَّبِعْ لِّلْكَفْرِ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ
ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝

ऐ ईमान वाले तुम 'राइना' न कहो, बल्कि 'उंजुरना' कहो और सुनो। और कुफ्र करने वालों के लिए दर्दनाक सजा है। जिन लोगों ने इंकार किया, चाहे अहले किताब हों या मुशरिकीन, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से कोई भलाई उतरे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए चुन लेता है। अल्लाह बड़े फल वाला है। हम जिस आयत को मौमूफ (निस्त) करते हैं या भुला देते हैं तो इससे बेहतर या इस जैसी दूसरी लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और जमीन की बादशाही है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार। क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवालात करो जिस तरह इससे पहले मूसा से सवालात किए गए। और जिस शख्स ने ईमान को कुफ्र से बदल दिया वह यकीनन सीधी राह से भटक गया। (104-108)

किसी को खुदा की तरफ से सच्चाई मिले और वह उसका दाजी (आह्वानकती) बन कर खड़ा हो जाए तो लोग उसके मुखालिफ बन जाते हैं। क्योंकि उसके आह्वान में लोगों को अपनी हैसियत का नकार दिखाई देने लगता है। यहूद के लिए विरोध का यह सबब और भी शिद्दत के साथ मौजूद था। क्योंकि वे पैगम्बरी को अपना कौमी हक समझते थे। उनके लिए यह बात असहनीय थी कि उनके गिरोह के सिवा किसी और गिरोह में खुदा का पैगम्बर आए। यहूद मुहम्मद (सल्ल०) की दावत (आह्वान) के बारे में तरह-तरह की मजहबी बहसें छेड़ते ताकि लोगों को इस शुबह में डाल दें कि आप जो कुछ पेश कर रहे हैं वह महज एक शख्स की अपनी उपज है। वह खुदा की तरफ से आई हुई चीज नहीं है। इनमें से एक यह था कि कुरआन में कुछ कानूनी अहकाम तौरात से भिन्न थे। इन्हें देखकर वे कहते कि क्या खुदा भी हुक्म देने में गलती करता है कि एक बार एक हुक्म दे और इसके बाद उसी मामले में दूसरा हुक्म भेजे। इसी तरह के शुब्हात यहूद ने इतनी अधिकता से फैलाए कि खुद मुसलमानों में कुछ सादा-मिजाज लोग उनके बारे में अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) से सवालात करने लगे। इसके अलावा यह कि, जब यहूद आपकी मजलिस में बैठते तो ऐसे अल्फाज बोलते जिससे आपका बेह्वीकत होना जाहिर होता। मसलन 'हमारी तरफ तवज्जोह कीजिए' के लिए अरबी भाषा में एक खास शब्द 'उंजुरना' था, मगर वे इसे छोड़कर 'राइना' कहते। क्योंकि थोड़ा-सा खीचकर इसे 'राइना' कह दिया जाए तो इसका अर्थ 'हमारे चरवाहे' हो जाता है। इसी तरह कभी अलिफ को दबाकर वे इसे 'राइन' कहते जिसका अर्थ 'अहमक' (मूर्ख) होता है।

हदायत की गई कि (1) गुप्तगू में साफ अल्फाज इस्तेमाल करो। मुशतबह (संदिग्ध) अल्फाज मत बोलो जिसमें कोई बुरा पहलू निकल सकता हो। (2) जो बात कही जाए उसे गौर से सुनो और उसे समझने की कोशिश करो। (3) सवाल की कसरत (बहुलता) आदमी को सीधे रास्ते से भटका देती है। इसलिए सवाल-जवाब के बजाए इबरत और नसीहत का जेहन पैदा करो। (4) अपने ईमान की हिफाजत करो, ऐसा न हो कि किसी गलती की बुनियाद पर तुम अपने ईमान ही से महरूम (वंचित) हो जाओ। (5) दुनिया में किसी के पास कोई खैर देखो

तो हसद (ईर्ष्या) में मुत्तला न हो। क्योंकि यह अल्लाह की एक देन है, जो उसके फैसले के तहत उसके एक बंदे को पहुंचा है।

وَدَلَّيْهِمْ مَنْ أَهْلَ الْكِتَابِ لِيُرِيدُوا مِنْكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا ۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ
أَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۖ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ
بِأَمْرِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا
تَقَدَّرَ مَوْلَا أَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝
وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصْرَىٰ ۚ تِلْكَ أَلْفُئِمَّةٌ مِّنْ قُلُوبِ هَٰؤُلَاءِ
بُرْهَانُكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلَىٰ مَن أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

बहुत से अहले किताब दिल से चाहते हैं कि तुम्हारे मोमिन हो जाने के बाद वे किसी तरह फिर तुम्हें मुंकिर बना दें, अपने हसद (ईर्ष्या) की वजह से, बावजूद यह कि हक उनके सामने वाजे हो चुका है। पस माफ करो और दसगुन करो यहां तक कि अल्लाह का फैसला आ जाए। केस अल्लाह हर चीज पर कुदस्त रखता है। और नमाज कयम करो और जकात अदा करो। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे तुम अल्लाह के पास पाओगे। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह यकीनन उसे देख रहा है। और वे कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ वही लोग जाएंगे जो यहूदी हों या ईसाई हों, यह महज उनकी आरजुए हैं। कहो कि लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। बल्कि जिसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया और वह मुस्लिम भी है तो ऐसे शख्स के लिए अज्र है उसके रब के पास, इनके लिए न कोई डर है और न कोई गम। (109-112)

कुरआन की आवाज़ बहुत-से लोगों के लिए नामानूस (अपरिचित) आवाज थी ताहम इन्हीं में ऐसे लोग भी थे जो इसे अपने दिल की आवाज पाकर इसके दायरे में दाखिल होते जा रहे थे। यह सूरतेहाल यहूद के लिए असहनीय बन गई, क्योंकि यह एक ऐसी चीज की तरक्री के समान थी जिसे वे बेहक्रीकत समझ कर नजरअंदाज किए हुए थे। उन्होंने यह किया कि एक तरफ मुशरिकों को उभार कर उन्हें इस्लाम के खिलाफ जंग पर आमादा कर दिया, दूसरी तरफ वे नए इस्लाम कुबूल करने वालों को तरह-तरह के शुब्हात और मुगालतों (भ्रमों) में डालते, ताकि वे कुरआन और कुरआन पेश करने वाले से बदजन हो जाएं और दुबारा अपने आबाई (पैतृक) मजहब की तरफ वापस चले जाएं। इसके नतीजे में मुसलमानों के अंदर यहूद के खिलाफ

इश्तेआल (आक्रोश) पैदा होना फितरी था। मगर अल्लाह ने इससे उन्हें मना फरमा दिया। हुक्म हुआ कि यहूद से बहस या उनके खिलाफ कोई आक्रामक कार्रवाई मौजूदा मरहले में हरगिज न की जाए। इस मामले में तमामतर अल्लाह पर भरोसा किया जाए और उस वक्त का इंतजार किया जाए जब अल्लाह तआला हालात में ऐसी तब्दीली कर दे कि उनके खिलाफ कोई फैसलाकुन कार्रवाई करना मुमकिन हो जाए। बरवक्त मुसलमानों को चाहिए कि वे सब करें और नमाज और जकात पर मजबूती से कयम हो जाएं। सब आदमी को इससे बचाता है कि वह रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नपिसयात के तहत मनफी (नकारात्मक) कार्रवाइयां करने लगे। नमाज आदमी को अल्लाह से जोड़ती है और अपने माल में से दूसरे भाइयों को हकदार बनाना वह चीज है जिससे आपसी बैरब्राही और इत्तेहाद की फजा पैदा होती है।

नए इस्लाम लाने वालों से वे कहते कि तुम्हें अपना पैतृक धर्म छोड़ना है तो यहूदियत अपना लो या फिर ईसाई बन जाओ। क्योंकि जन्नत तो यहूदियों और ईसाइयों के लिए है जो हमेशा से नबियों और बुजुर्गों की जमाअत रही है। फरमाया कि किसी गिरोह से वाबस्तगी किसी को जन्नत का हकदार नहीं बनाती। जन्नत का फैसला आदमी के अपने अमल की बुनियाद पर किया जाता है न कि गिरोही फजीलत की बुनियाद पर। एहसान के मअना हैं किसी काम को अच्छी तरह करना। इस्लाम में अच्छा होना यह है कि अल्लाह के लिए आदमी की हवालगी इतनी कामिल हो कि हर दूसरी चीज की अहमियत उसके जेहन से मिट जाए। गिरोही तअस्सुबात शखसी वफादारियां और दुनियावी हित-स्वार्थ कोई भी चीज उसके लिए अल्लाह की आवाज की तरफ दौड़ पड़ने में रुकावट न बने।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتْ النَّصْرَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ وَقَالَتِ النَّصْرَىٰ لَيْسَتْ
الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ قَالَ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِیْهَا كَأَنۢ نُّوٰفِیْهِۚ يَخْتَلِفُونَ ۝
وَمَنۢ أَظْلَمُ مِمَّنۢ مَّنَعَ مَسَٰجِدَ اللَّهِ أَنۢ يُذَكَّرَ فِیْهَا اسْمُهُۥ وَسَعَىٰ فِی
خَرَابِہَاۥ ۖ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنۢ يَدْخُلُوهَاۥ ۖ الْخٰفِیْنَ لَهُ لَّهُمْ فِی الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَلَهُمْ فِی الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ۝ وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَیۡنَمَا
تَوَلَّوۡا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ سُبْحٰنَہٗ
بَلۡ لَّہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ كُلِّ لَہٗ قَابِئَتُونَ ۝ بَدِیۡعُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۚ وَإِذَا قَضٰی أَمْرًا فَإِنۢ مَّا یَقُولُ لَہٗ کُنۡ فِیَکُونُ ۝

और यहूद ने कहा कि नसारा (ईसाई) किसी चीज पर नहीं और नसारा ने कहा कि यहूद किसी चीज पर नहीं। और वे सब आसमानी किताब पढ़ते हैं। इसी तरह उन लोगों ने कहा जिनके पास इल्म नहीं, उन्हीं का सा कौल। पस अल्लाह कियामत के दिन इस बात का फैसला करेगा जिसमें ये झगड़ रहे थे। और उससे बढ़कर जालिम और कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों को इससे रोके कि वहां अल्लाह के नाम की याद की जाए और उन्हें उजाड़ने की कोशिश करे। उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि मस्जिदों में अल्लाह से डरते हुए दाखिल हों। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आखिरत में उनके लिए भारी सजा है। और पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के लिए है। तुम जिधर रुख करो उसी तरफ अल्लाह है। यकीनन अल्लाह वुस्तत (ब्यापकता) वाला है, इल्म वाला है। और कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह इससे पाक है। बल्कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है सब उसी का है। उसी का हुक्म मानने वाले हैं सारे। वह आसमानों और जमीन को वुजूद में लाने वाला है। वह जब किसी काम को करना तै कर लेता है तो बस उसके लिए फरमा देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (113-117)

यहूद ने नबियों और बुजुर्गों से वाबस्तगी (संबंध स्थापना) को हक का मेयार (मापदंड) बनाया। इस वजह से उन्हें अपनी कैम हक (सत्य) पर और दूसरी कैम बातिल (असत्य) पर नजर आई। ईसाइयों ने अपने अंदर यह विशिष्टता देखी कि अल्लाह ने अपना 'इकलौता बेटा' उनके पास भेजा। मक्का के मुशरिकीन अपनी यह विशिष्टता समझते थे कि वे अल्लाह के मुकद्दस (पवित्र) घर के पासबान हैं। इस तरह हर गिरोह ने अपने हस्बेहाल हक व सदाकत का एक स्वनिर्मित मेयार बना रखा था और जब इस मेयार की रोशनी में देखता तो लामुहाला उसे अपनी जात बरसरेहक और दूसरों की बरसरे बातिल नजर आती। मगर उनकी अमली हालत जिस चीज का सुकूत दे रही थी वह इसके बिल्कुल बरअक्स (विपरीत) थी। वे गिरोह-गिरोह बने हुए थे। उनमें से किसी को जब भी मौका मिलता, वह इबादत के लिए बने हुए खुदा के घर को अपने गिरोह के अलावा दूसरे गिरोह के लिए बंद कर देता। और इस तरह खुदा के घर की वीरानी का सबब बनता। इबादतखाना तो वह मकाम है जहां इंसान अल्लाह से डरते हुए और कांपते हुए दाखिल हो। अगर ये लोग वाकई खुदा वाले होते तो कैसे मुमकिन था कि वे इबादत के लिए आने वाले किसी बंदे को रोके या उसे सताएं। वे तो अल्लाह की अज्मत के एहसास से दबे हुए होते। फिर उनमें इस किस्म की सरकशी कैसे हो सकती थी।

उन्होंने अल्लाह को इंसान के ऊपर कयास किया। एक इंसान अगर मशरिक में हो तो उसी वक्त वह मगरिब में नहीं होगा। वे समझते हैं कि खुदा भी इसी तरह किसी खास दिशा में मौजूद है। यकीनन अल्लाह ने अपनी इबादत के लिए रुख का निर्धारण किया है मगर वह इबादत की तंजीमी जरूरत की बुनियाद पर है, न इसलिए कि खुदा इसी खास रुख में मिलता है। इसी तरह इंसानों पर कयास करते हुए उन्होंने खुदा का बेटा मान्य कर लिया। हालांकि खुदा इस किस्म की चीजों से बुलंद और बरतर है। जो लोग इस तरह खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) दीन को खुदा का दीन बताएं, उनके लिए खुदा के यहां रुस्वाई और अजाब के सिवा और कुछ नहीं।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَنْزِيلًا آيَةً كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝١١٨ اِنَّا اَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحَابِ الْجَحِيمِ ۝١١٩ وَلَنْ تَرْضَى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَى حَتَّى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ اِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَى وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ اَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝١٢٠ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَةٍ ۝١٢١ اُولَٰئِكَ يُؤْتُونَ بِهٖ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهٖ فَاُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝١٢٢

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने कहा : अल्लाह क्यों नहीं कलाम करता हमसे या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह उनके अगले भी उन्हीं की-सी बात कह चुके हैं, इन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने पेश कर दी हैं निशानियां उन लोगों के लिए जो यकीन करने वाले हैं। हमने तुम्हें ठीक बात लेकर भेजा है, खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर। और तुम से दोख में जाने वालों की बाबत कोई पूछ नहीं होगी। और यहूद और नसारा हरगिज तुमसे राजी नहीं होंगे जब तक कि तुम उनके पंथ पर न चलने लगे। तुम कहो कि जो राह अल्लाह दिखाता है वही अस्ल राह है। और अगर बाद उस इल्म के जो तुम तक पहुंच चुका है तुमने उनकी ख्वाहिशों की पैरवी की तो अल्लाह के मुकाबले में न तुम्हारा कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार। जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इसे पढ़ते हैं जैसा कि हक है पढ़ने का। यही लोग ईमान लाते हैं इस पर। और जो इसका इंकार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं। (118-121)

अल्लाह के वे बंदे जो अल्लाह की तरफ से उसके दीन (धर्म) का एलान करने के लिए आए, उन्हें हर जमाने में एक ही किस्म की प्रतिक्रिया का सामना हुआ। 'अगर तुम खुदा के नुमाइंद हो तो तुम्हारे साथ दुनिया के खजाने क्यों नहीं।' यह शुबह उन लोगों को होता है जो अपने दुनियापरस्ताना मिजाज की वजह से मादूदी (भौतिक) बड़ाई को बड़ाई समझते थे। इसलिए वे खुदा की नुमाइंदगी करने वाले में भी यही बड़ाई देखना चाहते थे। जब हक के दाओ (आवाहक) की जिंदगी में उन्हें इस किस्म की बड़ाई दिखाई न देती तो वे इसका इंकार कर देते। उनकी समझ में न आता कि एक 'मामूली आदमी' क्यों कर वह शख्स हो सकता है जिसे जमीन व आसमान के मालिक ने अपने पैगाम की पैगामरसानी के लिए चुना हो। अल्लाह के इन बंदों की जिंदगी

और उनके कलाम में अल्लाह अपनी निशानियों की सूरत में शामिल होता। दूसरे शब्दों में सार्थक बड़बुदायां पूरी तरह उनके साथ होतीं। मगर इस क्रिम की चीजें लोगों को नजर न आतीं। इसलिए वे उन्हें 'बड़ा' मानने के लिए भी तैयार न होते। दलील अपनी कामिल सूरत में मौजूद होकर भी उनके जेहन का जुज न बनती, क्योंकि वह उनके मिजजी ढंघे के मुताबिक न होती।

यहूद और नसारा (ईसाई) कदीम जमाने में आसमानी मजहब के नुमाइंद थे। मगर ज्वाल का शिकार होने के बाद दीन उनके लिए एक गिरोही तरीका होकर रह गया था। वे अपने गिरोह से जुड़े रहने को दीन समझते और गिरोह से अलग हो जाने को बेदीनी। उनके गिरोह में शामिल होना या न होना ही उनके नजदीक हक और नाहक का मयार बन गया था। जब दीन अपनी बेआमेज सूरत (विशुद्ध रूप) में उनके सामने आया तो उनका गिरोही दीनदारी का मिजाज इसे कुबूल न कर सका। हकीकत यह है कि बेआमेज दीन को वही अपनाएगा जिसने अपनी फितरत को जिंदा रखा है। जिनकी फितरत की रोशनी बुझ चुकी है उनसे किसी क्रिम की कोई उम्मीद नहीं। दीन को ऐसे लोगों के लिए काबिले कुबूल बनाने के लिए दीन को बदला नहीं जा सकता।

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَءٰىلُ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاِنِّيْ فَصَّلْتُكُمْ عَلٰى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزٰى نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَاَلْقِيْلُ مِنْهَا عَذٰبًا وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنصَرُوْنَ ۝ وَاِذْ اَبْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهُۥ بِكَلِمٰتٍ فَاَتٰهِنَّ ۚ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمٰمًا قَالَوْا مِنْ ذُرِّيَّتِيْۤ اَقَالَ لَا يٰۤاَبٰۤى ۝ عَهْدِىَ الظَّٰلِمِيْنَ ۝

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और उस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया की तमाम कौमों पर फजिलत दी। और उस दिन से डरो जिसमें कोई शख्स किसी शख्स के कुछ काम न आयेगा और न किसी की तरफ से कोई मुआवज कुबूल किया जायेगा और न किसी को कोई सिफारिश फायदा देगी और न कहीं से उन्हें कोई मदद पहुंचेगी। और जब इब्राहीम को उसके रब ने कई बातों में आजमाया तो उसने पूरा कर दिखाया। अल्लाह ने कहा मैं तुम्हें सब लोगों का इमाम बनाऊंगा। इब्राहीम ने कहा : और मेरी औलाद में से भी। अल्लाह ने कहा : मेरा अहद (वचन) जालिमों तक नहीं पहुंचता। (122-124)

बनी इस्राईल को इस खास काम के लिए चुना गया था कि वह दुनिया की तमाम कौमों को अल्लाह की तरफ बुलायें और उन्हें इस हकीकत से आगाह करें कि उनके आमाल के बारे में उनका मालिक उनसे सवाल करने वाला है। इस काम की रहनुमाई के लिए उनके दर्मियान मुसलसल पैगम्बर आते रहे। इब्राहीम, याकूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, सुलेमान, जकरिया, याहिया, ईसा,

अलैहिमुस्सलाम वगैरह। मगर बाद के जमाने में जब बनी इस्राईल पर ज्वाल आया तो उन्होंने इस मंसबी फजिलत को नस्ती और गिरोही फजिलत के मअना में ले लिया और इस तरह इस की बाबत अपने इस्तहकाक (पात्रता) को खो दिया। इस्राईली खानदान में नबीए अरबी का आना दरअस्त बनी इस्राईल की फजिलत के मकाम से माजूरी और इसकी जगह बनी इस्राईल की नियुक्ति का एलान था। बनी इस्राईल में जो लोग वाकई खुदापरस्त थे उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) जो कलाम पेश कर रहे हैं वह खुदा की तरफ से आया हुआ कलाम है। मगर जो लोग गिरोही तअस्सुबात (विद्वेष) को दीन बनाए हुए थे उनके लिए अपने से बाहर किसी फजिलत का एतराफ करना मुमकिन न हो सका।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के जरिए उन्हें सचेत किया गया कि याद रखो आखिरत में हकीकी ईमान और सच्चे अमल के सिवा किसी भी चीज की कोई कीमत न होगी। दुनिया में एक शख्स दूसरे शख्स का भार अपने सिर ले लेता है। किसी मामले में किसी की सिफारिश काम आ जाती है। कभी मुआवजा देकर आदमी छूट जाता है। कभी कोई मददगार मिल जाता है जो पुश्तपनाही करके बचा लेता है। मगर आखिरत में इस क्रिम की कोई चीज किसी के काम आने वाली नहीं। आखिरत किसी गिरोह की नस्ती विरासत नहीं, वह अल्लाह के बेलाग ईसाफ का दिन है। इब्राहीम (अलैहि०) को जो फजिलत का दर्जा मिला इसका फैसला उस वक्त किया गया जब वह कड़ी जांच में खुदा के सच्चे फरमांबरदार साबित हुए। अल्लाह की यही सुन्नत उनकी नस्ल के बारे में भी है कि जो अमल में पूरा उत्तरेगा वह इस इलाही वादे में शरीक होगा। और जो अमल की तराजू पर अपने को सच्चा साबित न कर सके उसका वही अंजाम होगा जो इस क्रिम के दूसरे मुजरिमों के लिए अल्लाह के यहां मुकर्र है। हजरत इब्राहीम (अलैहि०) को निहायत कड़ी आजमाइशों के बाद पेशवाई का मकाम दिया गया। इससे मालूम हुआ कि इमामत और कयादत के मंसब का इस्तहकाक (पात्रता) कुनिये के जरिए हासिल होता है। कुनियों की कीमत पर किसी मकसद को अपनाने वाला उस मकसद की राह में सबसे आगे होता है। इसलिए कुदरती तौर पर वही उसका कायद (प्रमुख, नायक) बनता है।

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاٰمَنًا وَاَتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّی وَّعٰهَدْنَا اِلٰى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِیَ لِلطَّٰۤاِفِیْنَ وَاَلْكَافِیْنَ وَالزَّكٰۤىةِ السَّجُوْدِ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَاَرْزُقْ اَهْلَهُۥ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاَمَّتْعُهُۥ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّوْۤا اِلٰى عَذَابِ النَّارِ وَاِیْسَ الْمَصِیْرُ ۝

और जब हमने काबे को लोगों के इज्तिमाज की जगह और अमन का मकाम ठहराया और हुक्म दिया कि मकामे इब्राहीम को नमाज पढ़ने की जगह बना लो। और इब्राहीम

और इस्माईल को ताकीद की कि मेरे घर को तवाफ (परिक्रमा) करने वालों, एतकाफ करने वालों और रुकूअ व सज्दे करने वालों के लिए पाक रखो। और जब इब्राहीम ने कहा के ऐ मेरे रब इस शहर को अमन का शहर बना दे। और इसके वाशियों को, जो इनमें से अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखें, फलों की रोजी अता फरमा। अल्लाह ने कहा जो इंकार करेगा मैं उसे भी थोड़े दिनों फायदा दूंगा। फिर उसे आग के अजाब की तरफ धकेल दूंगा, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (125-126)

सारी दुनिया के अहले ईमान हर साल अपने वतन को छोड़कर बैतुल्लाह (काबा) आते हैं। यहां किसी के लिए किसी जीहयात (जीव) पर ज्यादाती करना जाइज नहीं। हरमे काबा को दाइमी (स्थायी) तौर पर इबादत की जगह बना दिया गया है। इस मकाम को हर किस्म की आलूदगियों (गंदगियों) से पाक रखा जाता है। काबे का तवाफ (परिक्रमा) किया जाता है। दुनिया से अलग होकर अल्लाह की याद की जाती है। और अल्लाह के लिए रुकूअ और सज्दे किए जाते हैं। कद्रीम जमाने में यह दुनिया का सबसे ज्यादा खुश इलाका था, जहां रेतीली जमीनों और पथरीली चट्टानों की वजह से कोई फसल पैदा नहीं होती थी। इसके अलावा यह कि वह इतिहाई तौर पर असुरक्षित था। चार हजार वर्ष पहले हजरत इब्राहीम (अलैहि०) को हुक्म हुआ कि अपने खानदान को इस इलाके में ले जाओ और उसे वहां बसा दो। हजरत इब्राहीम (अलैहि०) ने बिना किसी संकोच के इस हुक्म का पालन किया। और जब खानदान को इस निर्जन स्थान पर पहुंचा चुके तो दुआ की कि खुदाया मैंने तेरे हुक्म की तामील कर दी। अब तू अपने बंदे की पुकार सुन ले और इस बस्ती को अमन व अमान की बस्ती बना दे। और इस खुश जमीन पर इनके लिए खुशी रिज्क का इंजाम फरमा। दुआ कुबूल हुई और इसी का यह नतीजा है कि यह इलाका आज तक अमन और रिज्क की कसरत (बहुलता) का नमूना बना हुआ है।

मोमिन को दुनिया में इस तरह रहना है कि वह बार-बार याद करता रहे कि वह चाहे दुनिया के किसी गोशे में हो उसे बहरहाल लौट कर एक दिन खुदा के पास जाना है। वह जिन इंसानों के दर्मियान रहे बेजर (अहानिकारक) बन कर रहे। वह जमीन को खुदा की इबादत की जगह समझे और इसे अपनी गन्दगियों से पाक रखे। उसकी पूरी जिंदगी खुदा के गिर्द घूमती हो। वह बजाहिर दुनिया में रहे मगर उसका दिल अपने रब में अटका हुआ हो। वह हमहतन (पूर्णरूपेण) अल्लाह के आगे झुक जाये। फिर यह कि दीन जिस चीज का तकाजा करे चाहे वो एक चटयल मैदान में बीवी बच्चों को ले जाकर डाल देना हो, बंदा पूरी वफादारी के साथ इसके लिए राजी हो जाये। और जब हुक्म की तामील कर चुके तो खुदा से मदद की दरख्वास्त करे। अजब नहीं कि खुदा अपने बंदे की खातिर चटयल बयाबान में रिज्क के चश्मे जारी कर दे।

दुनिया की रौनक चाहे किसी को दीन के नाम पर मिले, इस बात का सुबूत नहीं है कि अल्लाह ने उसको इमामत और पेशवाई के मंसब के लिए कुबूल कर लिया है। दुनिया की चीजें सिर्फ आजमाइश के लिए हैं जो सबको मिलती हैं। जबकि इमामत यह है कि किसी बंदे को कौमों के दर्मियान खुदा की नुमाइंदगी के लिए चुन लिया जाये।

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की दीवारें उठा रहे थे और यह कहते जाते थे : ऐ हमारे रब, कुबूल कर हमसे, यकीनन तू ही सुनने वाला जानने वाला है। ऐ हमारे रब हमें अपना फरमांबरदार बना और हमारी नस्ल में से अपनी एक फरमांबरदार उम्मत उठा और हमें हमारे इबादत के तरीके बता और हमको माफ फरमा, तू माफ करने वाला रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब और इनमें इन्हीं में का एक रसूल उठा जो इन्हें तेरी आयतें सुनाये और इन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे और इनका तज्किया (पवित्रीकरण, शुद्धीकरण) करे। बेशक तू जबरदस्त है हिकमत वाला है। (127-129)

अल्लाह का यह फैसला था कि वह हिजाज (अरब) को इस्लाम की दावत का आलमी मर्कज बनाये। इस मर्कज के कयाम और इंजाम के लिए हजरत इब्राहीम और उनकी औलाद को चुना गया। बैतुल्लाह की तामीर के वक्त इब्राहीम (अलैहि०) और इस्माईल (अलैहि०) की जबान से जो कलिमात निकल रहे थे वह एक एतबार से दुआ थे और दूसरे एतबार से वह दो रूहों का अपने आप को अल्लाह के मंसूबे में दे देने का एलान था। ऐसी दुआ खुद मतलूबे इलाही होती है। चुनांचे वह पूरी तरह कुबूल हुई। अरब के खुशक बियाबान से इस्लाम का अबदी चश्मा फूट निकला। बनी इस्माईल के दिल अल्लाह तआला ने खास तौर पर अपने दीन की खिदमत के लिए नर्म कर दिये। उनके अंदर से एक ताकतवर इस्लामी दावत बरपा हुई। इनके जरिये से अल्लाह ने अपने बंदों को वह तरीके बताये जिनसे वह खुश होता है और अपनी रहमत के साथ उनकी तरफ मुतवज्जह होता है। फिर उन्हीं के अंदर से उस आखिरी रसूल की बैअसत हुई जिसने तारीख में पहली बार यह किया कि कारे नुबुव्वत को एक मुकम्मल तारीखी नमूने की सूत में कायम कर दिया।

नबी का पहला काम आयतों की तिलावत है। आयत के मअना निशानी के हैं। यानी वह चीज जो किसी चीज के ऊपर दलील बने। इंसान की फितरत में और बाहर की दुनिया में अल्लाह तआला ने अपनी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) की बेशुमार निशानियां रख दी हैं। ये इशारों की सूत में हैं। पैगम्बर इन इशारों को खोलता है। वह आदमी को वह निगाह देता है जिससे वह हर चीज में अपने रब का जलवा देखने लगे। किताब से मुराद कुरआन है। नबी का दूसरा काम यह है कि वह अल्लाह की 'वही' (ईश्वरीयवाणी) का वाहक बनता है और उसे खुदा से लेकर इंसानों तक

पहुंचाता है। 'हिक्मत' का मतलब है तत्वदर्शिता, सूझबूझ। जब आदमी खुदा की निशानियों को देखने की नजर पैदा कर लेता है, जब वह अपने जेहन को कुरआन की तालीमात (शिक्षाओं) में ढाल लेता है तो उसके अंदर एक फिक्री (वैचारिक) रोशनी जल उठती है। वह अपने आपको हकीकते आला (परम सत्य) के हमशुऊर (समचेतन) बना लेता है। वह हर मामले में उस सही फैसले तक पहुंच जाता है जो अल्लाह तआला को मल्लूब (अपेक्षित) है। 'तज्किया' का मतलब है किसी चीज को प्रतिकूल तत्वों से शुद्ध कर देना ताकि वह अनुकूल वातावरण में अपनी स्वाभाविक उत्कृष्टता तक पहुंच सके। नबी की आखिरी कोशिश यह होती है कि ऐसे इंसान तैयार हों जिनके सीने अल्लाह की अकीदत (श्रद्धा) के सिवा हर अकीदत से खाली हों। ऐसी रूहें वजूद में आएँ जो नफिसयाती पेचीदगियों से आजाद हों। ऐसे अफराद पैदा हों जो कायनात से वह रबानी रिज्क पा सकें जो अल्लाह ने अपने मोमिन बंदों के लिए रख दिया है।

وَمَنْ يَرْغُبْ عَنْ إِلَهِ إِبْرَاهِيمَ الْأَمِنْ سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ ۖ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَوَصَّى بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي ۖ قَالُوا نَعْبُدُ إِلَهِكَ وَإِلَهُ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِلَهِكُمْ وَاحِدًا ۖ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और कौन है जो इब्राहीम के दीन को पसंद न करे मगर वह जिसने अपने आपको अहमक (मूर्ख) बना लिया हो। हालांकि हमने उसे दुनिया में चुन लिया था और आखिरत में वह स्वालेहीन (सत्यवादी लोगों) में से होगा। जब उसके रब ने कहा कि अपने आपको हवाले कर दो तो उसने कहा : मैंने अपने आपको सारे जहान के रब के हवाले किया। और इसी की नसीहत की इब्राहीम ने अपनी औलाद को और इसी की नसीहत की याकूब ने अपनी औलाद को। ऐ मेरे बेटों! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है। पस इस्लाम के सिवा किसी और हालत पर तुम्हें मौत न आए। क्या तुम मौजूद थे जब याकूब की मौत का वक्त आया। जब उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे। उन्होंने कहा : हम उसी खुदा की इबादत करेंगे जिसकी इबादत आप और आपके बुजुर्ग इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक करते आए

हैं। वही एक मावूद है और हम उसके फरमांवरदार हैं। यह एक जमाअत थी जो गुजर गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (130-134)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की दावत ऐन वही थी जो हजरत इब्राहीम (अलैहि०) की दावत थी। मगर यहूद जो इब्राहीम (अलैहि०) का पैरो होने पर फख्र करते थे, आपकी दावत के सबसे बड़े मुखालिफ बन गए। इसकी वजह यह थी कि पैगम्बरे अरबी (सल्ल०) जिस इब्राहीमी दीन की तरफ लोगों को बुलाते थे वह 'इस्लाम' था। यानी अल्लाह के लिए कामिल हवालगी और सुपर्दी (पूर्ण समर्पण)। कुरआन के मुताबिक यही इब्राहीम (अलैहि०) का दीन था और अपनी औलाद को उन्होंने इसी की वसीयत की। इसके विपरीत यहूद ने इब्राहीम (अलैहि०) की तरफ जो दीन मंसूब कर रखा था उसमें हवालगी और सुपर्दी (पूर्ण समर्पण) का कोई सवाल नहीं था। इसमें आजदाना जिद्दी गुज्रते हुए महज घटिया परिकल्पनाओं के तहत जन्नत की जमानत हासिल हो जाती थी। मुहम्मद (सल्ल०) के लिए हुए दीन में निजात का दारोमदार तमामतर अमल पर था। जबकि यहूद ने 'अल्लाह के प्रिय बंदों' की जमाअत से वाबस्ती और अकीदत को नजात के लिए काफी समझ लिया था। मुहम्मद (सल्ल०) के नजदीक दीन आसमानी हिदायत का नाम था और यहूद के नजदीक महज एक गिरोही मज्मूअे का नाम था जो नस्ली रियायतों और कौमी परिकल्पनाओं के तहत एक खास सूत्र में बन गया था।

माजी (अतीत) या हाल के बुजुर्गों से अपने को मंसूब करके यह इत्मीनान हासिल होता है कि हमारा अंजाम भी इन्हीं के साथ होगा। हमारे अमल की कमी इनके अमल की ज्यादाती से पूरी हो जाएगी। यहूद इस खुशफहमी को यहां तक ले गए कि उन्होंने 'नजाते मुतावारिस' (पैतृक मुक्ति) का अकीदा गढ़ लिया। इन्होंने अपनी तमाम उम्मीदें बुजुर्गों की पवित्रता पर कायम कर लीं। मगर यह नफिसयाती फरेब के सिवा कुछ नहीं। हर एक के आगे वही आएगा जो उसने किया। एक से न दूसरे के जुर्मी की पूछ होगी और न एक को दूसरे की नेकियों में से कुछ हिस्सा मिलेगा। हर एक अपने किए के मुताबिक अल्लाह के यहां बदला पाएगा। 'तुम न मरना मगर इस्लाम पर' यानी अपने आपको अल्लाह के हवाले करने में रुकावटें आएंगी। तुम्हारी तमन्नाओं की इमारत गिरेगी, फिर भी तुम आखिरी वक्त तक इस पर कायम रहना।

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَى وَعِيسَى وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ

مُسْلِمُونَ ۝ فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدْ اهْتَدَوْا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۖ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُ عَابِدُونَ ۝ قُلْ أَتُحِبُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ۝ أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى ۚ قُلْ أَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمْرَ اللَّهِ ۖ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे। कहो कि नहीं, बल्कि हम तो पैरवी करते हैं इब्राहीम के दीन की जो अल्लाह की तरफ़ एकसू (एकाग्रचित्त) था और वह शरीक करने वालों में न था। कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ उतारी गई है। और उस पर भी जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब और उसकी औलाद पर उतारी गई और जो मिला मूसा और ईसा को और जो मिला सब नबियों को उनके रब की तरफ़ से। हम इनमें से किसी के दर्मियान फर्क नहीं करते और हम अल्लाह ही के फरमांबरदार हैं। फिर अगर वे ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो वेशक वे राह पा गए और अगर वे फिर जाएं तो अब वे ज़िद पर हैं। पस तुम्हारी तरफ़ से अल्लाह इनके लिए काफी है और वह सुनने वाला जानने वाला है। कहो हमने लिया अल्लाह का रंग और अल्लाह के रंग से किसका रंग अच्छा है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। कहो क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो। हालांकि वह हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी। हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। और हम ख़ालिस उसके लिए हैं। क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और उसकी औलाद सब यहूदी या ईसाई थे। कहो कि तुम ज्यादा जानते हो या अल्लाह। और उससे बड़ा जालिम और कौन होगा जो उस गवाही को छुपाए जो अल्लाह की तरफ़ से उसके पास आई हुई है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। यह एक जमाअत थी जो गुजर गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (135-141)

मुहम्मद (सल्ल०) जिस दीन की तरफ़ बुलाते थे वह वही इब्राहीमी दीन था जिससे यहूद और ईसाई अपने को मंसूब किए हुए थे। फिर वे आपके विरोधी क्यों हो गए। वजह यह थी कि मुहम्मद (सल्ल०) की दावत के मुताबिक दीन यह था कि आदमी अपनी ज़िंदगी को अल्लाह के रंग में रंग ले, वह हर तरफ़ से एकसू होकर अल्लाह वाला बन जाए। इसके विपरीत यहूद के यहां दीन बस एक कौमी फ़ख़ के निशान के तौर पर बाकी रह गया था। मुहम्मद (सल्ल०) की दावत उनकी फ़ख़ की नफ़िसयात पर ज़द पड़ती थी, इसलिए वे आपके दुश्मन बन गए।

जो लोग गिरोही फज़ीलत की नफ़िसयात में मुक्ताल हैं, वे अपने से बाहर किसी सदाक़त (सच्चाई) को मानने को तैयार नहीं होते। वे अपने गिरोह के ख़ुदा के पैग़म्बरों को तो मानेंगे मगर उसी ख़ुदा का एक पैग़म्बर उनके गिरोह से बाहर आए तो वे इसका इंकार कर देंगे। दीन के नाम पर वे जिस चीज से वाकिफ़ हैं वह सिर्फ़ गिरोहपरस्ती है। इसलिए वही शख़्सियतें उन्हें शख़्सियतें नजर आती हैं जो उनके अपने गिरोह से तअल्लुक रखती हैं। मगर जिस शख़्स के लिए दीन ख़ुदापरस्ती का नाम हो वह ख़ुदा की तरफ़ से आने वाली हर आवाज़ को पहचान लेगा और उस पर लब्बैक कहेगा। यहूद के उलमा (विद्वानों) के लिए यह समझना मुश्किल न था कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के आखिरी रसूल हैं। और उनकी दावत (आह्वान) सच्ची ख़ुदापरस्ती की दावत है। मगर अपनी बड़ाई को कायम रखने की खातिर इन्होंने लोगों के सामने एक ऐसी हकीक़त का एलान नहीं किया जिसका एलान करना उनके ऊपर ख़ुदा की तरफ़ से फ़र्ज़िया गया था।

‘पिछले लोगों को उनकी कमाई का बदला मिलेगा और अगले लोगों को उनकी कमाई का।’ इसका मतलब यह है कि हक़ (सत्य) के मामले में विरासत नहीं। यहूद इस ग़लतफ़हमी में मुक्ताल थे कि उनके पिछले बुजुर्गों की नेकियों का सबाब उनके बाद के लोगों को भी पहुंचता है। इसी तरह ईसाइयों ने यह समझ लिया कि गुनाह पिछली नस्ल से अगली नस्ल को विरासतन मुतकिल होता है। मगर इस तरह के अकीदे बिल्कुल निराधार हैं। ख़ुदा के यहां हर आदमी को जो कुछ मिलेगा, अपने जाती अमल की बुनियाद पर मिलेगा न कि किसी दूसरे के अमल की बुनियाद पर।

‘अगर वे इस तरह ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो वे राहयाब हो गए।’ गोया सहाबा किराम (मुहम्मद सल्ल० के साथी) अपने जमाने में जिस ढंग पर ईमान लाए थे वही वह ईमान है जो अल्लाह के यहां असलन मोतबर है। सहाबा किराम के जमाने में सूरतेहाल यह थी कि एक तरफ़ पहले के नबी थे जिनकी हैसियत ऐतिहासिक तौर पर प्रमाणित हो चुकी थी, दूसरी तरफ़ मुहम्मद (सल्ल०) थे जो अभी अपने इतिहास के प्रारंभ में थे। आपकी जात के गिर्द अभी तक तारीख़ी अज़मतें जमा नहीं हुई थीं। इसके बावजूद उन्होंने आपको पहचाना और आप पर ईमान लाए। गोया अल्लाह के नज़दीक हक़ का वह एतराफ़ (स्वीकार) मोतबर है जबकि आदमी ने हक़ को मुजर्द (प्रत्यक्षशः) सतह पर देख कर उसे माना हो। हक़ जब कौमी विरासत बन जाए या तारीख़ी अमल के नतीजे में इसके गिर्द अज़मत के मीनार खड़े हो चुके हों तो हक़ को मानना, हक़ को मानना नहीं होता बल्कि ऐसी चीज को मानना होता है जो कौमी फ़ख़ और तारीख़ी तक़ज बन चुकी हो।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ عَن قِبَلِهِمُ الَّذِينَ كَانُوا عَلَيْهَا فُلُ
لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ وَكَذَلِكَ
جَعَلْنَاهُ آيَةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ
شَهِيدًا ۖ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ
مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى
اللَّهُ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضَيِّعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ

अब वेकूफ लोग कहें कि मुसलमानों को किस चीज ने उनके क़िबले से फेर दिया।

कहो कि पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। और इस तरह हमने तुम्हें बीच की उम्मत बना दिया ताकि तुम हो बताने वाले लोगों पर और रसूल हो तुम पर बताने वाला। और जिस क़िबले पर तुम हो, हमने उसे सिर्फ इसलिए ठहराया था कि हम जान लें कि कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उससे उल्टे पांव फिर जाता है। और बेशक यह बात भारी है मगर उन लोगों पर जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे इमान को जाये (विनष्ट) कर दे। बेशक अल्लाह लोगों के साथ शफ़क़त (स्नेह) करने वाला महरबान है। (142-43)

क़िबले का तअल्लुक मजहिर इबादत (इबादत के प्रतीकों) से है न कि हकीकते इबादत से। क़िबले का अस्ल मक़सद इबादत की तंजीम के लिए एक सामान्य रुख़ का निर्धारण करना है। हर सप्त (दिशा) अल्लाह की सप्त है। वह अपने बंदों के लिए जो सप्त भी मुकर्रर कर दे वही उसकी पसंदीदा इबादती सप्त होगी, चाहे वह मशरिक की तरफ हो या मगरिब की तरफ। मगर लंबी मुद़त तक बैतुल मक़िदस की तरफ रुख़ करके इबादत करने की वजह से क़िबल-ए-अव्वल को तक्दुस (पवित्रता) हासिल हो गया था। अतः सन् 2 हिजरी में जब क़िबले की तब्दीली का एलान हुआ तो बहुत से लोगों के लिए अपने ज़ेहन को उसके मुताबिक बनाना मुश्किल हो गया। यहूद ने इसे बहाना बनाकर आपके (सल्ल०) ख़िलाफ़ तरह-तरह की बातें फैलाना शुरू कर दीं। बैतुल मक़िदस हमेशा से नवियों का क़िबला रहा है। फिर इसका विरोध क्यों, इससे जाहिर होता है कि यह सारी तहरीक यहूद की ज़िद में चलाई जा रही है। कोई कहता कि यह रिसालत के दावेदार ख़ुद अपने मिशन के बारे में संशय और असमंजस में हैं। कभी काबे की तरफ रुख़ करके इबादत करने को कहते हैं और कभी बैतुल मक़िदस की तरफ। किसी ने कहा : अगर काबा ही अस्ल क़िबला है तो इसका मतलब यह है कि इससे पहले जो मुसलमान बैतुल मक़िदस की तरफ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते रहे उनकी नमाज़ें बेकार

गई, वग़ैरह। मगर जो सच्चे ख़ुदापरस्त थे जो मजाहिर (प्रतीकों) में अटके हुए नहीं थे, उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि अस्ल चीज क़िबले की सप्त नहीं अस्ल चीज ख़ुदा का हुक्म है। अल्लाह की तरफ से जिस वक़्त जो हुक्म आ जाए वही उस वक़्त का क़िबला होगा। रिवायतों में आता है कि हिजरात के तकरीबन 17 महीने बाद जब क़िबले की तब्दीली का हुक्म आया तो अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अपने साथियों की एक जमाअत के साथ मदीना में नमाज़ अदा कर रहे थे। हुक्म मालूम होते ही आपने और मुसलमानों ने ऐन हालते नमाज़ में अपना रुख़ बैतुल मक़िदस से काबा की तरफ कर लिया। यानी शुमाल (उत्तर) से जुनूब (दक्षिण) की तरफ।

क़िबले की तब्दीली एक अलामत थी जिसका मतलब यह था कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को इमामत (नेतृत्व) से माज़ूल करके उम्मेते मुहम्मदी को उसकी जगह मुकर्रर कर दिया है। अब क़ियामत तक बैतुल मक़िदस के बजाए काबा ख़ुदा के दीन की दावत और ख़ुदापरस्तों की आपसी एकता का मर्कज़ होगा। 'वस्त' का अर्थ 'मध्य' (बीच) है। इसका मतलब यह है कि मुसलमान अल्लाह के पैग़ाम को उसके बंदों तक पहुंचाने के लिए दर्मियानी वसीला हैं। अल्लाह का पैग़ाम रसूल के जरिए उन्हें पहुंचा है। अब इस पैग़ाम को इन्हें क़ियामत तक तमाम क़ौमों तक पहुंचाते रहना है। इसी पर दुनिया में भी उनका मुस्तक़बिल (भविष्य) निर्भर है और इसी पर आख़िरत भी निर्भर है।

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَئِنْ
آتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ تَاتِعُوا قِبْلَتَكَ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتِهِمْ وَمَا
بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابُ يَعْرِفُونَهُ كَمَا
يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ
مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُنْتَرِكِينَ ۝

हम तुम्हारे मुंह का बार-बार आसमान की तरफ उठना देख रहे हैं। पस हम तुम्हें उसी क़िबले की तरफ फेर देंगे जिसे तुम पसंद करते हो। अब अपना रुख़ मस्जिदे ह़राम (काबा) की तरफ फेर दो। और तुम जहां कहीं भी हो अपने रुख़ को उसी की तरफ करो। और अहले किताब ख़ूब जानते हैं कि यह हक़ है और उनके रब की जानिव से

है। और अल्लाह बेख़बर नहीं उससे जो वे कर रहे हैं। और अगर तुम इन अहले किताब के सामने तमाम दलीलें पेश कर दो तब भी वे तुम्हारे किवले को नहीं मानेंगे। और न तुम उनके किवले की पैरवी कर सकते हो। और न वे खुद एक-दूसरे के किवले को मानते हैं। और इस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करोगे तो यकीनन तुम जालिमों में हो जाओगे। जिन्हें हमने किताब दी है वे उसे इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। और उनमें से एक गिरोह हक़ को छुपा रहा है हालांकि वह उसे जानता है। हक़ वह है जो तेरा ख़ब्र कहे। पस तुम हरगिज शक़ करने वालों में से न बनो। (144-147)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की सुन्नत यह थी कि जिन मामलों में अभी 'वही' (ईशवाणी) न आई हो उनमें आप पिछले नबियों के तरीके की पैरवी करते थे। इसी बुनियाद पर आपने शुरु में बैतुल मक़िदस को किवला बना लिया था जो सुलैमान (अलैहि०) के जमाने से बनी इस्राईल के पैगम्बरों का किवला रहा है। यहूद को जब अल्लाह ने दीन की इमामत और पेशवाई से माजूल किया तो इसके बाद यह भी जरूरी हो गया कि दीन को यहूद की रिवायतों से जुदा कर दिया जाए। ताकि खुदा का दीन हर एतबार से अपनी ख़ालिस शक़ल में नुमायां हो सके। इसी मस्तेहत की बुनियाद पर मुहम्मद (सल्ल०) को किवले की तब्दीली के हुक्म का इंतजार रहता था। अतः हिजरत के दूसरे साल यह हुक्म आ गया। यहूद के अब्बिया जो यहूद को ख़बरदार करने आए, वे पहले ही इस इलाही फैसले के बारे में यहूद को बता चुके थे और उनके उलमा इस मामले को अच्छी तरह जानते थे। ताहम इनमें सिर्फ़ कुछ लोग (जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम और मिख़ीरीक रजि०) ऐसे निकले जिन्होंने आपकी तस्दीक़ की। और इस बात का इक्कार किया कि आपके जरिए अल्लाह ने अपने सच्चे दीन को जाहिर किया है। यहूद के न मानने की वजह महज उनकी ख़्वाहिशपरस्ती थी। वे जिन गिरोही खुशख़्वालियों में जी रहे थे, उनसे वे निकलना नहीं चाहते थे। जो इंकार महज ख़्वाहिशपरस्ती की बुनियाद पर पैदा हो उसे तोड़ने में कभी कोई दलील कामयाब नहीं होती। ऐसा आदमी दलीलों के इंकार से अपने लिए वह रिज्क हासिल करने की कोशिश करता है जो उसके ख़ालिक ने सिर्फ़ दलीलों के एतराफ़ (स्वीकार) में रखा है।

अल्लाह की तरफ़ से जब किसी हक़ के हुक्म का एलान होता है तो वह ऐसी कदाई दलीलों के साथ होता है कि कोई अल्लाह का बंदा इसकी सदाकत (सच्चाई) को पहचानने से आजिज न रहे। ऐसी हालत में जो लोग शुबह में पड़े वे सिर्फ़ यह साबित कर रहे हैं कि वे खुदा से आशना न थे। इसलिए वे खुदा की बोली को पहचान न सके। इसी तरह वे लोग जो हक़ के ख़िलाफ़ कुछ अल्फ़ाज़ बोल कर समझते हैं कि उन्होंने हक़ का एतराफ़ न करने के लिए मजबूत तार्किक सहारे खोज लिए हैं बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा कि वे महज फर्जी सहारे थे जो उनके नफ़स ने अपनी झूठी तस्कीन के लिए गढ़ लिए थे।

وَلِكُلِّ وُجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ أَيْنَ مَا كُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا لِلَّهِ بُعَا فِإِلَّ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۚ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۚ وَلَا تَمْنَحْنِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمُ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝ فَأَذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝

हर एक के लिए एक रुख़ है जिधर वह मुंह करता है। पस तुम भलाइयों की तरफ़ दौड़ो। तुम जहां कहीं होगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा। बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिद हाराम की तरफ़ करो। बेशक यह हक़ है, तुम्हारे ख़ब्र की तरफ़ से है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिद हाराम की तरफ़ करो और तुम जहां भी हो अपना रुख़ को उसी की तरफ़ रखो ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज्जत बाकी न रहे, सिवाए उन लोगों के जो इनमें बेइंसाफ़ हैं। पस तुम उनसे न डरो और मुझसे डरो। और ताकि मैं अपनी नेमत तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूं। और ताकि तुम राह पा जाओ। जिस तरह हमने तुम्हारे दर्मियान एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब की ओर हिकमत (तत्वदर्शिता, सूझबूझ) की तालीम देता है और तुम्हें वे चीजें सिखा रहा है जिन्हें तुम नहीं जानते थे। पस तुम मुझे याद रखो मैं तुम्हें याद रखूंगा। और मेरा एहसान मानो, मेरी नाशुक्री मत करो। (148-152)

कावे को किवला मुकर्र किया गया तो यहूदियों और ईसाइयों ने इस किस्म की बहसों छेड़ दीं कि मगरिब (पश्चिम) की दिशा खुदा की दिशा है या मशरिक (पूर्व) की दिशा। वे इस मसले को बस रुख़बंदी के मसले की हैसियत से देख रहे थे। मगर यह उनकी नासमझी थी। कावे को किवला मुकर्र करने का मामला सादा तौर पर एक इबादती रुख़ मुकर्र करने का मामला नहीं था, बल्कि यह एक अलामत थी कि अल्लाह के बंदों के लिए उस सबसे बड़े ख़ैर

(कल्याण) के उतरने का वक्त आ गया है जिसका फैसला बहुत पहले किया जा चुका था। यह इब्राहीम व इस्माईल (अलैहि०) की दुआ के मुताबिक मुहम्मद (सल्ल०) का जुहूर (प्रकटन) है। अब वह आने वाला आ गया है जो इंसान के ऊपर अल्लाह की अबदी (चिरस्थायी, जीवन्त) हिदायत का रास्ता खोले और उसकी हिदायत की नेमत को आखिरी हद तक कामिल (पूर्ण) कर दे। जो दीन अल्लाह की तरफ से बार-बार भेजा जाता रहा मगर इंसानों की गफलत और सरकशी से जाये (विनष्ट) होता रहा, उसे उसकी पूरी सूरत में हमेशा के लिए महफूज (सुरक्षित) कर दे। खुदा का दीन जो अब तक महजरिवायती अफसाना बना हुआ था, उसे एक हकीमी वाक्या की हैसियत से इंसानी इतिहास में शामिल कर दे। वह दीन जिसका कोई मुस्तकिल नमूना कायम नहीं हो सका था, उसे एक जिंदा अमली नमूने की हैसियत से लोगों के सामने रख दे। यह इलाही हिदायत की तकमील (पूर्णता) का मामला है न कि विभिन्न दिशाओं में से कोई 'पवित्र दिशा' निर्धारित करने का।

काबे की तामीर के वक्त ही यह सुनिश्चित हो चुका था कि आखिरी रसूल के जरिए जिस दीन का जुहूर (प्रकटन) होगा उसका मर्कज काबा होगा। पिछले अबिया मुसलसल लोगों को इसकी खबर देते रहे। इस तरह अल्लाह की तरफ से काबे को तमाम कौमों के लिए कबला मुकर्र करना गोया मुहम्मद (सल्ल०) की हैसियत को साबितशुदा बनाना था। अब जो संजीदा लोग हैं उनके लिए अल्लाह का यह एलान आखिरी हुज्जत है। और जो आखिरत से बेखौफ हैं उनकी जबान को कोई भी चीज रोकने वाली साबित नहीं हो सकती। जो लोग अल्लाह से डरने वाले हैं वही हिदायत का रास्ता पाते हैं। अल्लाह को याद रखना ही किसी को इसका हकदार बनाता है कि अल्लाह उसे याद रखे। अल्लाह से खौफ रखना ही इस बात की जमानत है कि अल्लाह उसे दूसरी तमाम चीजों से बेखौफ कर दे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ١٥٠
تَقُولُوا الْمَن يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِن لَّا تَشْعُرُونَ ١٥١
وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ١٥٢ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ١٥٣ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ١٥٤ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ١٥٥ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ١٥٦

ऐ ईमान वाले, सन्न और नमाज से मदद हासिल करो। यकीनन अल्लाह सन्न करने वालों के साथ है। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा मत कहो बल्कि वे जिंदा हैं मगर तुम्हें खबर नहीं। और हम जरूर तुम्हें आजमाएंगे कुछ डर और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी से। और साबित कदम रहने वालों

को खुशखबरी दे दो जिनका हाल यह है कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो वे कहते हैं : हम अल्लाह के हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके रब की शाबाशियां हैं और रहमत है। और यही लोग हैं जो राह पर हैं। (153-157)

दीन यह है कि आदमी अपने खालिक (रचयिता) को इस तरह पा ले कि उसकी याद में और उसकी शुक्रगुजारी में उसके सुबह व शाम बसर होने लगे। इस किस्म की जिंदगी ही तमाम खुशियों और लज्जतों का खजाना है। मगर ये खुशियां और लज्जतें अपनी हकीमी सूरत में सिर्फ आखिरत में मिलेंगी। मौजूदा दुनिया को अल्लाह तआला ने इनाम के लिए नहीं बनाया बल्कि इस्तेहान के लिए बनाया है, यहां ऐसे हालात रखे गए हैं कि खुदापरस्ती की राह में आदमी के लिए रुकावटें पड़ें ताकि मालूम हो कि कौन अपने ईमान के इज्हार में संजीदा है और कौन संजीदा नहीं। नफस के प्रेरक तत्व, बीबी-बच्चों के तक्राजे, दुनिया की मस्लेहते, शैतान के वसवसे, समाजी हालात का दबाव, ये चीजें फितने की सूरत में आदमी को घेर रही हैं। आदमी के लिए जरूरी हो जाता है कि वह इन फितनों को पहचाने और इनसे अपने आपको बचाते हुए जिन्न व शुक्र के तक्राजे पूरा करे।

इन इस्तेहानी मुश्किलों के मुकाबले में कामयाबी का वाहिद (एक मात्र) जरिया नमाज और सन्न है। यानी अल्लाह से लिपटना और हर किस्म की नाखुशगवारियों को बर्दाश्त करते हुए पक्के इरादे से हक के रास्ते पर जमे रहना। जो लोग प्रतिकूल हालात सामने आने के बावजूद न बिदकें और बजाहिर गैर-अल्लाह में नफा देखते हुए अल्लाह के साथ अपने को बांधे रहें वही वे लोग हैं जो सुन्नते इलाही के मुताबिक कामयाबी की मंजिल तक पहुंचेंगे।

हक की राह में मुश्किलों और मुसीबतों का दूसरा सबब मोमिन का दावती किरदार (आह्वानपरक भूमिका) है। तब्लीग व दावत (आह्वान) का काम नसीहत और तंकीद (आलोचना) का काम है। और नसीहत व तंकीद हमेशा आदमी के लिए भड़काऊ चीज रही है, इनमें भी नसीहत सुनने के लिए सबसे ज्यादा हस्सास (संवेदनशील) वे लोग होते हैं जो अपने दुनिया के कारोबार को दीन के नाम पर कर रहे हैं। दाओ (आह्वानकर्ता) की जात और उसके पैगाम में ऐसे तमाम लोगों को अपनी हैसियत की नफी (नकार) नजर आने लगती है। दाओ का वजूद एक ऐसी तराजू बन जाता है जिस पर हर आदमी तुल रहा हो। इसका नतीजा यह होता है कि दाओ बनना भिड़ के छत्ते में हाथ डालने के समान बन जाता है। ऐसा आदमी अपने माहौल के अंदर बेजगह कर दिया जाता है। उसकी आर्थिक हैसियत तबाह हो जाती है, उसकी तरक्कियों के दरवाजे बंद हो जाते हैं। यहां तक कि उसकी जान तक खतरे में पड़ जाती है। मगर वही आदमी राह पर है जिसे बेराह बता कर सताया जाए। वही पाता है जो अल्लाह की राह में खोए। वही जी रहा है जो अल्लाह की राह में अपनी जान दे दे। आखिरत की जन्नत उसी के लिए है जो अल्लाह की खातिर दुनिया की जन्नत से महरूम (वंचित) हो गया हो।

إِنَّ الصَّفَا وَالْمُرَّةَ مِنَ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَبَّ الْبَيْتَ أَوَاعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرٌ فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّعْنُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنَّا فَاوْلِيكَ أَنْ تُوْبَ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَأْتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ خُلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝

सफा और मरवह बेशक अल्लाह की यादगारों में से हैं। पस जो शख्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे तो उस पर कोई हरज नहीं कि वह इनका तवाफ (परिक्रमा) करे ओर जो कोई शौक से कुछ नेकी करे तो अल्लाह कद्र करने वाला है, जानने वाला है। जो लोग छुपाते हैं हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारी हिदायत को, बाद इसके कि हम इसे लोगों के लिए किताब में खोल चुके हैं तो वही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है और उन पर लानत करने वाले लानत करते हैं। अलबत्ता जिन्होंने तौबा की और इस्लाह कर ली और बयान किया तो उन्हें मैं माफ कर दूंगा और मैं हूं माफ करने वाला, महरबान। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और उसी हाल में मर गए तो वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह की, फरिश्तों की और आदमियों की सबकी लानत है। उसी हाल में वे हमेशा रहेंगे। उन पर से अजाब हल्का नहीं किया जाएगा और न उन्हें ढील दी जाएगी। (158-162)

हजरत इब्राहीम (अले०) का वतन इराक था। अल्लाह के हुक्म से वह अपनी बीवी हाजरा और छोटे बच्चे इस्माईल को लाकर उस मकाम पर छोड़ गए जहां आज मक्का है। उस वक्त यहां न कोई आबादी थी और न पानी। प्यास का तकाजा हुआ तो हाजरा पानी की तलाश में निकलीं। परेशानी के आलम में वह सफा और मरवह नाम की पहाड़ियों के दरमियान दौड़ती रहीं। सात चक्कर लगाने के बाद नाकाम लौटीं तो देखा कि उनके निवास-स्थल के पास एक चश्मा फूट निकला है। यह चश्मा बाद को जमजम के नाम से मशहूर हुआ। यह एक अलामती वाक्या है जो बताता है कि अल्लाह का मामला अपने बंदों से क्या है। अल्लाह का कोई बंदा अगर अल्लाह की राह में बढ़ते हुए उस हद तक चला जाए कि उसके कदमों के नीचे रेगिस्तान और बियावान के सिवा कुछ न रहे तो अल्लाह अपनी कुदरत से रेगिस्तान

में उसके लिए रिक्क के चश्मे जारी कर देगा। हज और उमरा में सफा और मरवाह के दरमियान 'सओ' का मकसद उसी तारीख की याद को ताजा करना है।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की जिंदगी और तालीमात में अल्लाह की निशानियां इतनी स्पष्ट थीं कि यह समझना मुश्किल न था कि आपकी जवान पर अल्लाह का कलाम जारी हुआ है। मगर यहूदी उलमा (विद्वानों) ने आपका इकरार नहीं किया। उन्हें अंदेशा था कि अगर वे मुहम्मद (सल्ल०) को मान लें तो उनकी मजहबी बड़ाई खत्म हो जाएगी। उनकी जमी हुई तिजारतें उजड़ जाएंगी। अपनी कामयाबी का राज उन्होंने हक को छुपाने में समझा। हालांकि उनकी कामयाबी का राज हक के एलान में था। हक की तरफ बढ़ने में वे अपने आपको बेजमीन होता हुआ देख रहे थे। मगर वे भूल गए कि यही वह चीज है जो अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा मल्लूब है। जो बंदा हक की खातिर बेजमीन हो जाए वह सबसे बड़ी जमीन को पा लेता है। यानी अल्लाह रब्बुल आलमीन की नुसरत (मदद) को।

ताहम अल्लाह की रहमत का दरवाजा आदमी के लिए हर वक्त खुला रहता है। इब्तिदाई तौर पर शलती करने के बाद अगर आदमी को होश आ जाए और वह पलट कर सही रवैया अपना ले, वह उस हक का एलान करे जिसे अल्लाह चाहता है कि उसका एलान किया जाए तो अल्लाह उसे माफ कर देगा। मगर जो लोग एतराफ न करने पर अड़े रहें और इसी हाल में मर जाएं तो वे अल्लाह की रहमतों से दूर कर दिए जाएंगे।

وَإِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ الْمُسْتَظَرِّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बड़ा महरबान है, निहायत रहम वाला है। बेशक आसमानों और जमीन की बनावट में और रात और दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो इंसानों के काम आने वाली चीजें लेकर समुद्र में चलती हैं और उस पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे मुर्दा जमीन को जिंदा करे, और उसने जमीन में सब वस्त्र के जानवर फैला दिए। और हवाओं की गर्दिश में और बादलों में जो आसमान और जमीन के दरमियान हुक्म के ताबेअ हैं, उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक्ल से काम लेते हैं। (163-164)

इंसान का खुदा एक ही खुदा है और वही इस काबिल है कि वह इंसान की तवज्जोहात का मर्कज बने। हमारा वजूद और वह सब कुछ जो हमें जमीन पर हासिल है वह इसीलिए है कि हमारा यह खुदा रहमतों और महरबानियों का खजाना है। आदमी को चाहिए कि उसे

मअनों में अपना माबूद बनाये। वह उसी के लिए जिये और उसी के लिए मरे और अपनी तमाम उम्मीदों और तमन्नाओं को हमेशा के लिए उसी के साथ वाबस्ता कर दे। जिस तरह एक छोटा बच्चा अपना सब कुछ सिर्फ अपनी मां को समझता है, इसी तरह खुदा इंसान के लिए उसका सब कुछ बन जाये।

हमारे सामने फैली हुई कायनात अल्लाह का एक अजीमुशान तआरुफ है। जमीन और आसमान की सूरत में एक अथाह कारखाने का मौजूद होना जाहिर करता है कि जरूर इसका कोई बनाने वाला है। तरह-तरह की जाहिरी भिन्नताओं और अन्तर्विरोधों के बावजूद तमाम चीजों का हर दर्जा सामंजस्य के साथ काम करना साबित करता है कि इसका खालिक और मालिक सिर्फ एक है। कायनात की चीजों में नफ़ाबख़शी की सलाहियत (क्षमता) होना गोया इस बात का एलान है कि उसकी मंसूबाबंदी कामिल शुऊर के तहत विलइरादा की गई है। बजाहिर बेजान चीजों में कुदरती अमल से जान और ताजगी का आ जाना बताता है कि कायनात में मौत महज आरजी है, यहां हर मौत के बाद लाजिमन दूसरी जिंदगी आती है। एक ही पानी और एक ही खुराक से किस्म-किस्म के जीवों का अनगिनत तादाद में पाया जाना अल्लाह की बेहिसाब कुदरत का पता देता है। हवा का मुकम्मल तौर पर इंसान को अपने घेरे में लिए रहना बताता है कि इंसान पूरी तरह अपने खालिक (रचयिता) के कब्जे में है। कायनात की तमाम चीजों का इंसानी जरूरत के मुताबिक सधा हुआ होना साबित करता है कि इंसान का खालिक एक बेहद महरबान हस्ती है। वह उसकी जरूरतों का एहतेमाम उस वक्त से कर रहा होता है जबकि उसका वजूद भी नहीं होता।

कायनात में इस किस्म की निशानियां गोया मख़सूक़त (सृष्टि) के अंदर खालिक की झलकियां हैं। वह अल्लाह की हस्ती का, उसके एक होने का, उसके तमाम सिफाते कमाल का जामेअ (परिपूर्ण) होने का इतने बड़े पैमाने पर इज्हार कर रही हैं कि कोई आंख वाला इसे देखने से महरूम न रहे और कोई अक्ल वाला इसे पाने से आजिज न हो। दलीलों को वही शख्स पाता है जो दलीलों पर गौर करता हो। वह सच्चाई को जानने के मामले में संजीदा हो। वह मस्लेहतों से ऊपर उठ कर राय कायम करता हो। वह जाहिरी चीजों में उलझ कर न रह गया हो बल्कि जाहिरी चीजों के पीछे छुपी हुई भीतरी हकीकत को जानने का इच्छुक हो।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ
أُمْنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ۖ إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ
الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ
اتَّبَعُوا لَئِن لَّمْ أَكْرَرَ فَذَنْبُوا مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ
أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ۚ

٢٤

और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसके बराबर ठहराते हैं। उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखना चाहिए। और जो ईमान वाले हैं वे सबसे ज्यादा अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं। और अगर ये जालिम उस वक्त को देख लें जबकि वे अजाब को देखेंगे कि जोर सारा का सारा अल्लाह का है और अल्लाह बड़ा सज़्ज़ अजाब देने वाला है। जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से अलग हो जाएंगे जो इनके कहने पर चलते थे। अजाब उनके सामने होगा और उनके सब तरफ के रिश्ते टूट चुके होंगे। वे लोग जो पीछे चले थे कहेंगे काश हमें दुनिया की तरफ लौटना मिल जाता तो हम भी उनसे अलग हो जाते जैसे ये हमसे अलग हो गए। इस तरह अल्लाह इनके आमाल को उन्हें हसरत बना कर दिखाएगा और वे आग से निकल नहीं सकेंगे। (165-167)

आदमी अपनी फितरत और अपने हालात के लिहाज से एक ऐसी मख़सूक़ है जो हमेशा एक वाह्य सहारा चाहता है, एक ऐसी हस्ती जो उसकी कमियों की तलाफी (क्षतिपूर्ति) करे और उसके लिए एतमाद और यकीन की बुनियाद हो। किसी को इस हैसियत से अपनी जिंदगी में शामिल करना उसे अपना माबूद बनाना है। जब आदमी किसी हस्ती को अपना माबूद बनाता है उसके बाद लाजिमी तौर पर ऐसा होता है कि आदमी के मुहब्बत और अकीदत (श्रद्धा) के जच्चात उसके लिए ख़ास हो जाते हैं। आदमी ऐन अपनी फितरत के लिहाज से मजबूर है कि किसी से हुब्वे शदीद (अति प्रेम) करे और जिससे कोई हुब्वे शदीद करे वही उसका माबूद (पूज्य) है। मौजूदा दुनिया में चूंकि खुदा नजर नहीं आता इसलिए जाहिरपरस्त इंसान आमतौर पर नजर आने वाली हस्तियों में से किसी हस्ती को वह मक़ाम दे देता है जो दरअस्तल खुदा को देना चाहिए। ये हस्तियां अक्सर वे सरदार और पेशवा होते हैं जो किसी जाहिरी विशेषता के आधार पर लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। आदमी की फितरत की रिक्तता जो हकीकत में इसलिए थी कि उसे रब्बुल आलमीन से भरा जाए वहां वह किसी सरदार या पेशवा को बिठा लेता है।

ऐसा इसलिए होता है कि किसी इंसान के गिर्द कुछ जाहिरी रैनक देख कर लोग उसे 'बड़ा' समझ लेते हैं। कोई अपने ग़ैर मामूली शख़्सि औसाफ (गुणों) से लोगों को मुतास्सिर कर लेता है। कोई किसी गद्दी पर बैठ कर सैकड़ों साल की रियायतों (परम्पराओं) का वारिस बन जाता है। किसी के यहां इंसानों की भीड़ देख कर लोगों को ग़लतफहमी हो जाती है कि वह आम इंसानों से बुलंदतर कोई इंसान है। किसी के गिर्द रहस्यमयी कहानियों का हाला तैयार हो जाता है और समझ लिया जाता है कि वह ग़ैर-मामूली कुव्वतों का हामिल (धारक) है। मगर हकीकत यह है कि खुदा की इस कायनात में खुदा के सिवा किसी को कोई ज़र या बड़ाई हासिल नहीं। इंसान को खुदा का दर्जा देने का कारोबार उसी वक्त तक है, जब तक खुदा जाहिर नहीं होता। खुदा के जाहिर होते ही सूरतेहाल इतनी बदल जाएगी कि बड़े अपने छोटों से भागना चाहेंगे और छोटे अपने बड़ों से। वह वाबस्तगी (संबंध) जिस पर आदमी दुनिया में फ़ख़ करता था, जिससे वफ़ादारी और श्रेष्ठगी (स्नेह) दिखा कर आदमी समझता था

कि उसने सबसे बड़ी चट्टान को पकड़ रखा है वह आखिरत के दिन इस तरह वेमअना साबित होगी जैसे उसकी कोई हकीकत ही न हो। आदमी अपनी गुजरी हुई जिंगी को हसरत के साथ देखेगा और कुछ न कर सकेगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۚ إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوْ لَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۚ وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَتَعَقَّبُ مِمَّا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمُّوا عَنْكُمْ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۚ

लोगो! जमीन की चीजों में से हलाल और सुखी चीजें खाओ और शैतान के कदमों पर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। वह तुमको सिर्फ बुरे काम और बेहयाई की तलकीन करता है और इस बात की कि तुम अल्लाह की तरफ वे बातें मंसूब करो जिनके बारे में तुम्हें कोई इल्म नहीं। और जब उनसे कहा जाता है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या उस सूत्र में भी कि उनके बाप दादा न अक्ल रखते हों और न सीधी राह जानते हों। और इन मुंकिरों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख्स ऐसे जानवर के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने के सिवा और कुछ नहीं सुनता। ये बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं। वे कुछ नहीं समझते। (168-171)

शिरक क्या है, उबूदियत (दासता, भक्ति) के जज्बात की तस्कीन के लिए खुदा के सिवा कोई दूसरा मर्कज बना लेना। खुदा इंसान की सबसे बड़ी और लाजिमी जरूरत है। खुदा की तलब इंसानी फितरत में इस तरह बसी हुई है कि कोई शख्स खुदा के बगैर रह नहीं सकता। इंसान की गुमराही खुदा को छोड़ना नहीं है बल्कि असली खुदा की जगह किसी फर्जी खुदा को अपना खुदा बना लेना है। इसलिए शरीअत में हर उस चीज को हराम करार दिया गया है जो किसी भी दर्जे में आदमी की फितरी तलब को अल्लाह के सिवा किसी और तरफ मोड़ देने वाली हो।

बुतपरस्त कीमें बुतों के नाम पर जानवर छोड़ती हैं और इन जानवरों को खाना या इनसे नफा उठाना हराम समझती हैं। जदीद तहजीब (आधुनिक सभ्यता) में भी यह रस्म 'राष्ट्रीय पक्षी' और 'राष्ट्रीय पशु' जैसी सूत्रों में राइज है। इस तरह किसी चीज को अपने लिए हराम कर लेना महज एक सादा कानूनी मामला नहीं है बल्कि यह अल्लाह के साथ शिरक करना है।

क्योंकि जब एक चीज को इस तरह हराम ठहराया जाता है तो इसकी वजह यह होती है कि किसी स्वनिर्मित आस्था की वजह से इसे पवित्र समझ लिया जाता है। यह खुदा के अधिकारों में गैर खुदा को साझी बनाना है, यह सम्मान और पवित्रता के उन फितरी जज्बात को बांटना है जो सिर्फ खुदा के लिए हैं और जिन्हें सिर्फ खुदा ही के लिए होना चाहिए। शैतान इस क्रिस्म के रीति-रिवाज इसलिए डालता है ताकि आदमी के अंदर छुपे हुए सम्मान और पवित्रता के जज्बात को विभिन्न दिशाओं में बांट कर अल्लाह के साथ उसके तअल्लुक को कमजोर कर दे।

एक बार जब किसी गैर अल्लाह को मुकद्दस (पवित्र) मान लिया जाए तो इंसान की तवहमपरस्ती (अंधविश्वास) उसमें नयी-नयी बुराइयां पैदा करती रहती है। एक 'जानवर' को उन रहस्यमयी गुणों का धारक मान लिया जाता है जो सिर्फ खुदा के लिए खास हैं। इसे खुदा की कुरबत (समीपता) हासिल करने का जरिया समझ लिया जाता है। उससे बरकत और काम बनने की उम्मीद की जाती है। यह चीज जब अगली नस्लों तक पहुंचती है तो वह इसे पूर्वजों की मुकद्दस सुन्नत (पवित्र तरीका) समझ कर इस तरह पकड़ लेती हैं कि अब इस पर किसी क्रिस्म का गौर व फिक्र मुमकिन नहीं होता। यहां तक कि वह वक्त आता है जबकि लोग दलील की जवान समझने में इतने असमर्थ हो जाते हैं गोया कि उनके पास न आंख और न कान हैं जिनसे वे देखें और सुनें और न उनके पास दिमाग है जिससे वे किसी बात को समझें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنَّ لَكُمْ لَهُ إِدَاءٌ تَعْبُدُونَ ۚ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْبَيْتَةَ وَالْدَّمَ وَحُمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أَهْلَ بِهِ ۚ لَعَنَ اللَّهُ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابِ بِالْغُفْرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۚ

ऐ ईमान वाले हमारी दी हुई पाक चीजों को खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करने वाले हो। अल्लाह ने तुम पर हराम किया है सिर्फ मुर्दार को और खून को और सुअर के गोشت को। और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए, वह न ख्वाहिशमंद हो और

न हद से आगे बढ़ने वाला हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं। वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। जो लोग उस चीज को छुपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और इसके बदले में थोड़ा मोल लेते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ आग भर रहे हैं। कियामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही का सौदा किया और बख़्शिश के बदले अजाब का, तो कैसी सहार है उन्हें आग की। यह इसलिए कि अल्लाह ने अपनी किताब को ठीक-ठीक उतारा मगर जिन लोगों ने किताब में कई राहें निकाल लीं वे ज़िद में दूर जा पड़े। (172-176)

खाने-पीने की चीजों को इस्तेमाल करते हुए जो एहसासात आदमी के अंदर उभरने चाहिए वे शुक्र और इताअते इलाही (ईश आज्ञापालन) के एहसासात हैं। यानी यह कि 'हम अल्लाह की दी हुई चीज को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक खा रहे हैं।' यह एहसास आदमी के अंदर खुदापरस्ती का जज्बा उभारता है। मगर खुदासाखा (स्वनिर्मित) तौर पर जो अक्रीदे (आस्था, विश्वास) बनाए जाते हैं उसमें यह नफिसयात बदल जाती है। अब इंसान की तवज्जोह चीजों की काल्पनिक विशेषताओं की तरफ लग जाती है। जिन चीजों को पाकर अल्लाह के शुक्र का जज्बा उभरता उनसे खुद इन चीजों के एहताराम और तकद्दुस (पवित्रता) का जज्बा उभरता है। आदमी मक्बूक को ख़ालिक (रचयिता) का दर्जा दे देता है। किसी चीज के हराम होने की बुनियाद उसकी काल्पनिक पवित्रता या उसके बारे में तोहमाती अकाइद (अंधविश्वास) नहीं हैं। बल्कि इसके कारण बिल्कुल दूसरे हैं। यह कि वे चीजें नापाक हों और शरीअत ने उनकी नापाकी की तस्दीक (पुष्टि) की हो। जैसे मुर्दार, खून, सुअर। या खुदा के पैदा किए हुए जानवर को खुदा के सिवा किसी और नाम पर जबह करना आदि। मजबूरी की हालत में आदमी हराम को खा सकता है, जबकि भूख या बीमारी या हालात का कोई दबाव आदमी को इसके इस्तेमाल पर मजबूर कर दे। ताहम यह जरूरी है कि आदमी हराम चीज को राबत (पसंदीदगी) से न खाए और न उसे वाकई जरूरत से ज्यादा ले।

इस किस्म के अंधविश्वास जब अवामी मजहब बन जाए तो उलमा (विद्वानों) का हाल यह हो जाता है कि इसके बारे में अल्लाह का हुक्म जानते हुए भी वे इसके एलान से डरने लगते हैं। क्योंकि उन्हें अंदेशा होता है कि इस तरह वे अवाम से कट जाएंगे जिनके दर्मियान मकबूलियत हासिल करके वे 'बड़े' बने हुए हैं। गुमराह अवाम से मुसालेहत (समझौता) अगरचे दुनिया में उन्हें इज्जत और दौलत देती है मगर अल्लाह की नजर में ऐसे लोग बदतरीन मुजरिम हैं। हक को मस्लेहत (स्वार्थ) की ख़ातिर छुपाना उन ग़लतियों में से नहीं है जिनसे आख़िरत में अल्लाह दरगुजर फरमाए। ये वे जराइम हैं जो आदमी को अल्लाह की इनायत की नजर से महरूम कर देते हैं। इनमें भी ज्यादा बुरे वे लोग हैं जिनके सामने हक पेश किया जाए और वे एतराफ करने के बजाए उसमें बेमअना बहसें निकालने लगे। ऐसे लोगों के अंदर ज़िद की नफिसयात पैदा हो जाती है और अंततः वे हक से इतना दूर हो जाते हैं कि कभी उसकी तरफ नहीं लौटते।

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ
أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَى
حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّادِقِينَ فِي
الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुंह पूर्व और पश्चिम की तरफ कर लो। बल्कि नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और फरिश्तों पर और किताब पर और पैगम्बरों पर। और माल दे अल्लाह की मुहबबत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और मुसाफिरों को और मांगने वालों को और गर्दन छुड़ाने में। और नमाज़ क़यम करे और ज़कात अदा करे और जब अहद कर लें तो उसे पूरा करें। और सन्न करने वाले सख्खी और तकलीफ में और लड़ाई के वक़्त। यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही हैं डर रखने वाले। (177)

यहूद ने पश्चिम को अपना इबादत का किबला बनाया था और ईसाइयों ने पूर्व को। दोनों अपनी-अपनी दिशाओं को पवित्र समझते थे। दोनों को भरोसा था कि उन्होंने खुदा की पवित्र दिशा को अपना किबला बनाकर खुदा के यहां अपना दर्जा महफूज़ कर लिया है। मगर खुदापरस्ती यह नहीं है कि आदमी किसी 'मुकद्दस सुतून' (पवित्र स्तंभ) को थाम ले। खुदापरस्ती यह है कि आदमी खुद अल्लाह के दामन को पकड़ ले। दीनी अमल की अगरचे एक जाहिरी सूरत होती है। मगर हकीकत के एतबार से वह उस अल्लाह को पा लेता है जो जमीन और आसमान का नूर है, जो आदमी की शहराग से ज्यादा करीब है। अल्लाह के यहां जो चीज किसी को मकबूल बनाती है वह किसी किस्म की जाहिरी चीजें नहीं बल्कि वह अमल है जो आदमी अपने पूरे वुजूद के साथ ख़ालिस अल्लाह के लिए करता है। अल्लाह का मकबूल बंदा वह है जो अल्लाह को इस तरह पा ले कि अल्लाह उसकी पूरी हस्ती में उतर जाए। वह आदमी के शुऊर में शामिल हो जाए। वह उसकी कमाइयों का मालिक बन जाए। वह उसकी यादों में समा जाए। वह उसके किरदार पर छा जाए। आदमी अपने रब को इस तरह पकड़ ले कि सख़्ततरीन वक्तों में भी उसकी रस्सी उसके हाथ से छूटने न पाए। अल्लाह का हक उसकी सच्ची वफ़ादारी से अदा होता है न कि महज इधर या उधर रूख़ कर लेने से।

अल्लाह पर ईमान लाना यह है कि आदमी अल्लाह को अपना सब कुछ बना ले। आख़िरत के दिन पर ईमान यह है कि आदमी दुनिया के बजाए आख़िरत को ज़िंदगी का अस्ल मसला समझने लगे। फरिश्तों पर ईमान यह है कि वह खुदा के उन कारिदों को माने जो

खुदा के हुक्म के तहत दुनिया का इतिजाम चला रहे हैं। किताब पर ईमान यह है कि आदमी यह यकीन करे कि अल्लाह ने इंसान के लिए अपना हिदायतनामा भेजा है जिसकी उसे लाजिमन पाबंदी करनी है। पैगम्बरों पर ईमान यह है कि अल्लाह के उन बंदों को अल्लाह का नुमाईदा तस्लीम किया जाए जिन्हें अल्लाह ने अपना पैग़ाम पहुंचाने के लिए चुना। फिर ये ईमानियात आदमी के अंदर इतनी गहरी उतर जाएं कि वह अल्लाह की मुहब्बत और शौक में अपना माल जरूरतमंदों को दे और इंसानों को मुसीबत से छुड़ाए। नमाज कायम करना अल्लाह के आगे हमहतन (पूर्णरूपेण) झुक जाना है। जकात अदा करना अपने माल में खुदा के मुस्तकिल (स्थाई) हिस्से का इकरार करना है। ऐसा बंदा जब कोई अहद करता है तो इसके बाद वह इससे फिरना नहीं जानता। क्योंकि वह हर अहद को खुदा से किया हुआ अहद समझता है। उसे अल्लाह के ऊपर इतना भरोसा हो जाता है कि तंगी और मुसीबत हो या जंग की नौबत आ जाए, हर हाल में वह खुदापरस्ती के रास्ते पर जमा रहता है। ये औसाफ (गुण) जिसके अंदर पैदा हो जाएं वही सच्चा मोमिन है। और सच्चा मोमिन अल्लाह से अंदेशा रखने वाला होता है, न कि किसी झूठे सहारे पर एतमाद करके उससे निडर हो जाने वाला।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ الْحَرْبِ وَالْحَرْبِ وَالْعَبْدِ
بِالْعَبْدِ وَالْأَنْثَى بِالْأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَأِتْبَاءٌ بِالْمَعْرُوفِ
وَأَدَاءٌ لِلْيَدِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَفْصِيلُ مِمَّا رَزَقَكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنْ اعْتَدَى
بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا
إِلَاصِبَةً لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ فَمَنْ
بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَأُولَئِكَ أَثْمُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوَصَّ جَنْفًا أَوْ إِثْمًا فَاصْلَحْ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ
عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

ऐ ईमान वाले तुम पर मक्तूलों (मारे जाने वालों) का कि़सास (समान बदला) लेना फर्ज किया जाता है। आज़ाद के बदले आज़ाद, गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत। फिर जिसे उसके भाई की तरफ से कुछ माफ़ी हो जाए तो उसे चाहिए कि मारुफ (सामान्य तरीका) की पैरवी करे और खूबी के साथ उसे अदा करे। यह तुम्हारे रब की तरफ से एक आसानी और महरबानी है। अब इसके बाद भी जो शज़्स ज़्यादाती करे

उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है। और ऐ अक्ल वाले, कि़सास में तुम्हारे लिए ज़िंदागी है ताकि तुम बचो। तुम पर फर्ज किया जाता है कि जब तुम में से किसी की मौत का वक्त आ जाए और वह अपने पीछे, माल छोड़ रहा हो तो वह मारुफ के मुताबिक वसीयत कर दे अपने मां-बाप के लिए और अपने रिश्तेदारों के लिए। यह जरूरी है खुदा से डरने वालों के लिए। फिर जो कोई वसीयत को सुनने के बाद उसे बदल डाले तो इसका गुनाह उसी पर होगा जिसने इसे बदला, यकीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अलबत्ता जिसे वसीयत करने वाले के बारे में यह अंदेशा हो कि उसने जानिवदारी या हक्कतलफ़ी की है और वह आपस में सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (178-182)

क़त्ल के मामले में इस्लाम में 'कि़सास' का उसूल मुकर्रर किया गया है। यानी क़तिल के साथ वही किया जाए जो उसने मक्तूल (क़त्ल होने वाले) के साथ किया है। इस तरह एक तरफ आइंदा के लिए क़त्ल की हैसलाशिकनी (हतोत्साहन) होती है। क्योंकि अपनी जान का ख़ौफ आदमी को दूसरे की जान लेने से रोकता है और इसके नतीजे में सबकी जानें महफूज़ हो जाती हैं। क़तिल के क़त्ल से पूरे समाज के लिए ज़िंदागी की ज़मानत पैदा हो जाती है। दूसरी तरफ मक्तूल के वारिसों का इंतक़ामी ज़ब्ज़ा ठंडा हो कर समाज में किसी नई तख़रीबी (हिंसक) कार्रवाई के इम्कान को ख़त्म कर देता है। ताहम कि़सास का मामला इस्लाम में क़बिले रज़ीनामा है। मक्तूल के वारिस चाहें तो क़तिल को क़त्ल कर सकते हैं चाहें तो दियत (माली मुआवज़ा) ले सकते हैं और चाहें तो माफ कर सकते हैं। इस गुंजाइश का ख़ास मक़सद यह है कि इस्लामी समाज में एक-दूसरे को भाई समझने की फज़ा बाक़ी रहे, एक-दूसरे को हरीफ (प्रतिरोधी) समझने की फज़ा किसी हाल में पैदा न हो। साथ ही ख़ूनबहा (आर्थिक हर्जाना) के उसूल का एक ख़ास फ़ायदा यह है कि इसके ज़रिये से मक्तूल के वारिसों को अपने चले जाने वाले ख़ानदान के फ़र्द का एक माली बदल मिल जाता है।

जब कोई मर जाता है तो यह मसला भी पैदा होता है कि उसकी विरासत का क्या किया जाए। इस सिलसिले में इस्लाम का उसूल यह है कि उसकी विरासत को उसके रिश्तेदारों में मारुफ़ तरीके से तक्सीम कर दिया जाए। यह गोया माल का तक्वा है। जब मरने वालों के रिश्तेदारों तक हिस्सा ब हिस्सा उसका छोड़ा हुआ माल पहुंच जाए तो इससे समाज में यह फज़ा बनती है कि हक के मुताबिक जिसको जो दिया जाना चाहिए वह दिया जा चुका है। इस तरह ख़ानदान के अंदर छोड़े गये माल और जायदाद को हासिल करने के लिए आपसी विवाद पैदा नहीं होता। ख़ानदान का जो शज़्स कानूनी एतबार से वारिस न करार पाता हो, मगर अज़्ज़ाफ़ी एतबार से वह मुस्तहिक हो तो मरने वालो को चाहिए कि वसीयत के ज़रिए इस ख़ला (रिक्तता) को पुर कर दे। (यहां विरासत के बारे में मारुफ के मुताबिक [समुचित रूप से] वसीयत करने का हुक्म है। आगे सूरह निसा में हर एक के हिस्से को कानूनी तौर पर सुनिश्चित कर दिया गया है।)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَ فَذِيَةُ طَعَامٍ وَمُسْكِينٍ ۖ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ ۖ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

ऐ ईमान वाले तुम पर रोज़ फर्ज किया गया जिस तरह तुम से अंगलों पर फर्ज किया गया था ताकि तुम परहेजगार बनो। गिनती के कुछ दिन। फिर जो कोई तुममें बीमार हो या सफर में हो तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले। और जिनको ताकत है तो एक रोज़े का बदला एक मस्कीन का खाना है। जो कोई मज्बूद (अतिरिक्त) नेकी करे तो वह उसके लिए बेहतर है। और तुम रोज़ा रखो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, अगर तुम जानो। रमजान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया, हिदायत है लोगों के लिए और खुली निशानियां रास्ते की और हक व बातिल के दरमियान फैसला करने वाला। पस तुम में से जो कोई इस महीने को पाए वह इसके रोज़े रखे। और जो बीमार हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख्ती करना नहीं चाहता। और इसलिए कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह की बड़ाई करो इस पर कि उसने तुम्हें राह बताई और ताकि तुम उसके शुक्रगुजार बनो। (183-185)

रोज़ा एक ही वक़्त में दो चीज़ों की तर्बियत है। एक शुक्र, दूसरे तक़्वा। खाना और पीना अल्लाह की बहुत बड़ी नेमतें हैं। मगर आम हालात में आदमी को इसका अंदाजा नहीं होता। रोज़े में जब वह दिन भर इन चीज़ों से रुका रहता है और सूरज डूबने के बाद शदीद भूख प्यास की हालत में खाना खाता है और पानी पीता है तो उस वक़्त उसे मालूम होता है कि यह खाना और पानी अल्लाह की कितनी बड़ी नेमतें हैं। इस तजर्बे से उसके अंदर अपने रब के शुक्र का बेपनाह जब्बा पैदा होता है। दूसरी तरफ यही रोज़ा आदमी के लिए तक़्वा की तर्बियत भी है। तक़्वा यह है कि आदमी दुनिया की ज़िंदगी में खुदा की मना की हुई चीज़ों से बचे। वह उन चीज़ों से रुका रहे जिनसे खुदा ने रोका है। और वही करे

जिसके करने की खुदा ने इजाजत दी है। रोज़े में सिर्फ़ रात को खाना और दिन में खाना-पीना छोड़ देना गोया खुदा को अपने ऊपर निगरां बनाने की मशक़ है। मोमिन की पूरी ज़िंदगी एक क्रिस की रोज़ेदार ज़िंदगी है। रमजान के महीने में वक़्ती तौर पर कुछ चीज़ों को छुड़कर आदमी को तर्बियत दी जाती है कि वह सारी उम्र उन चीज़ों को छोड़ दे जो उसके रब को नापसंद हैं। कुरआन बंद के ऊपर अल्लाह का इनाम है और रोज़ा बंद की तरफ से इस इनाम का अमली पतराफ़। रोज़े के जरिए बंद अपने आपको अल्लाह की शुक्रगुजारी के काबिल बनाता है। और यह सलाहियत पैदा करता है कि वह कुरआन के बताए हुए तरीके के मुताबिक दुनिया में तक्वे की ज़िंदगी गुज़र सके।

रोज़े से दिलों के अंदर नर्मी और शिकस्तगी (कोमलता) आती है। इस तरह रोज़ा आदमी के अंदर यह सलाहियत पैदा करता है कि वह उन कैफियतों को महसूस कर सके जो अल्लाह को अपने बंदों से मलूब हैं। रोज़े की मशक्कत (श्रम) वाली तर्बियत आदमी को इस काबिल बनाती है कि अल्लाह की शुक्रगुजारी में उसका सीना तड़पे और अल्लाह के ख़ौफ से उसके अंदर कपकपी पैदा हो। जब आदमी इस नपिसयाती हालत को पहुंचता है, उसी वक़्त वह इस काबिल बनता है कि वह अल्लाह की नेमतों पर ऐसा शुक्र अदा करे जिसमें उसके दिल की धड़कनें शामिल हों। वह ऐसे तक़वे का तजुर्बा करे जो उसके बदन के रोंगटे खड़े कर दे। वह अल्लाह को ऐसे बड़े की हैसियत से पाए जिसमें उसका अपना वुजूद बिल्कुल छोटा हो गया हो।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِلَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۝ أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَى نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ ۚ لَكُمْ عَلِيمُ اللَّهِ أَنْتُمْ كُنْتُمْ تَخْتَلَتُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالَّذِينَ بَاشَرُوا هُنَّ وَأَبْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتَمُوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوا هُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۚ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ فَلَا تَقْرُبُوهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ

اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تَذَلُّوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

और जब मेरे बंदे तुम से मेरे बारे में पूछें तो मैं नजदीक हूँ, पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जबकि वह मुझे पुकारता है। तो चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझ पर यकीन रखें ताकि वे हिदायत पाएं। तुम्हारे लिए रोजे की रात में अपनी बीवियों के पास जाना जाइज किया गया। वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो। अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आप से ख़ियानत कर रहे थे तो उसने तुम पर इनायत की और तुम्हें माफ़ कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो और चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और खाओ और पियो यहां तक कि सुबह की सफ़ेद धारी काली धारी से अलग जाहिर हो जाए। फिर पूरा करो रोज़ा रात तक। और जब तुम मस्जिद में एतक्राफ़ में हो तो बीवियों से ख़लवत (संभोग) न करो। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनके नजदीक न जाओ। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है ताकि वे बचें। और तुम आपस में एक-दूसरे के माल को नाहक तौर पर न खाओ और उन्हें हाकिमों तक न पहुंचाओ ताकि दूसरों के माल का कोई हिस्सा गुनाह के तौर पर खा जाओ। हालांकि तुम इसे जानते हो। (186-188)

रोज़ा अपनी नौइयत के एतबार से सब्र का अमल है। और सब्र, यानी हुक्मे इलाही की तामील में मुश्किलों को बर्दाश्त करना ही वह चीज है जिससे आदमी उस कल्बी (हार्दिक) हालत को पहुंचता है जो उसे खुदा के करीब करे और उसकी जवान से ऐसे कलिमात निकलवाए जो कुबूलियत को पहुंचने वाले हों। अल्लाह को वही पाता है जो अपने आपको अल्लाह के हवाले करे, अल्लाह तक उसी शख्स के अल्फ़ाज पहुंचते हैं जिसने अपनी रूह के तारों को अल्लाह से मिला रखा हो।

शरीअत आदमी के ऊपर कोई ग़ैर फ़ितरी पाबंदी आयद नहीं करती। रोजे में दिन के वक़्त में इय़दवाजी (वैवाहिक) तअल्लुक मन्मूअ (निषिद्ध) होने के बावजूद रात के वक़्त में इसकी इजाजत, इफ़तार और सहर के वक़्त जानने के लिए जंतरी का पाबंद करने के बजाए आम मुश़ाहिदा (अवलोकन) को बुनियाद करार देना इसी क़िस्म की चीज़ें हैं। अंशों की तपसीलात में बंदों को गुंजाइश देते हुए अल्लाह ने सामान्य हदें स्पष्ट कर दी हैं। आदमी को चाहिए कि वह निर्धारित हदों का पूरी तरह पाबंद रहे और तपसीली अंशों में उस रविश को अपनाए जो तक्वा की रूह के मुताबिक है।

रोज़े के हुक्म के फ़ौन बाद यह हुक्म कि 'नाजाइज माल न खाओ' यह बताता है कि रोज़ा की हकीकत क्या है। रोज़ा का असली मक़सद आदमी के अंदर यह सलाहियत (क्षमता) पैदा करना है कि जहां खुदा की तरफ से रुकने का हुक्म हो वहां आदमी रुक जाए, यहां तक कि हुक्म हो तो जाइज चीज से भी, जैसा कि रोज़ा में होता है। अब जो शख्स खुदा के हुक्म की बुनियाद पर हलाल कमाई तक से रुक जाए वह उसी खुदा के हुक्म की बुनियाद पर हाराम कमाई से क्यों न अपने आपको रोके रखेगा।

मेमिन की ज़िंगी एक क़िस्म की रोज़दार ज़िंदगी है। उसे सारी उम्र कुछ चीज़ें से 'इफ़तार' करना है और कुछ चीज़ों से मुस्तक़िल (स्थायी) तौर पर 'रोज़ा' रख लेना है। रमज़ान

का महीना इसी की तर्बियत है। फिर रोज़ा की मोहतात (एहतियात भरी) ज़िंदगी और उसका पुरमश्रूअत अमल यह सबक देता है कि अल्लाह का इबादतगुज़ार बंद वह है जो तक्वा की सतह पर अल्लाह की इबादत कर रहा हो। अल्लाह को पुकारने वाला सिर्फ़ वह है जो कुर्बानियों की सतह पर अल्लाह की नजदीकी हासिल करे।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْإِهْلَةِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى وَأَتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ١٩٠ وَأَقْتُلُواهُمْ حَيْثُ تَقْبَلُونَهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ فَإِنْ قَتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ١٩١ فَإِنْ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ١٩٢ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنْ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ

वे तुम से चांदों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि वे औकात (समय) हैं लोगों के लिए और हज के लिए। और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ छत पर से। बल्कि नेकी यह है कि आदमी परहेजगारी करे। और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़ो जो लड़ते हैं तुमसे। और ज्यादाती न करो। अल्लाह ज्यादाती करने वालों को पसंद नहीं करता। और क़त्ल करो उन्हें जिस जगह पाओ, और निकाल दो उन्हें जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है। और फ़ितना सख़्ततर है क़त्ल से। और उनसे मस्जिदे हाराम के पास न लड़ो जब तक कि वे तुमसे इसमें जंग न छोड़ें। पस अगर वे तुमसे जंग छोड़ें तो उन्हें क़त्ल करो। यही सजा है इंक़ार करने वालों की। फिर अगर वे बाज़ आ जाएं तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और उनसे जंग करो यहां तक कि फ़ितना बाकी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए। फिर अगर वे बाज़ आ जाएं तो इसके बाद सख़्ती नहीं है मगर ज़ालिमों पर। (189-193)

चांद का घटना बढ़ना तारीख़ जानने के लिए है न कि तवहमपरस्तों के ख़्याल के मुताबिक इसलिए कि बढ़ते चांद के दिन मुबारक (शुभ) हैं और घटते चांद के दिन मंहूस। यह

आसमान पर जाहिर होने वाली कुदरती जंतरी है ताकि इसे देखकर लोग अपने मामलात और अपनी इबादतों का निज़ाम मुक़र्रर करें। इसी तरह बहुत से लोग जाहिरी रस्मों को दीनदारी समझ लेते हैं। प्राचीनकालीन अरबों ने यह मान लिया था कि हज का एहराम बांधने के बाद अपने और आसमान के दर्मियान किसी चीज का हायल (बाधा) होना एहराम के आदाब के खिलाफ है। इस मान्यता के सबब वे ऐसा करते कि जब एहराम बांधकर घर से बाहर आ जाते तो दुबारा दरवाजे के रास्ते से घर में न जाते बल्कि दीवार के ऊपर से चढ़कर सेहन में दाखिल होते। मगर इस किस्म के जाहिरी आदाब का नाम दीनदारी नहीं। दीनदारी यह है कि आदमी अल्लाह से डरे और ज़िंदगी में उसकी मुक़र्रर की हुई हदों की पाबंदी करे।

मोमिन को दीन का आमिल (अमल करने वाला) बनने के साथ दीन का मुजाहिद भी बनना है। यहां जिस जिहाद का जिक्र है यह वह जिहाद है जो मुहम्मद (सल्ल०) के जमाने में पेश आया। अरब के मुशरिकीन हुज्जत पूरी होने के बावजूद रिसालत की दावत (आह्वान) से इंकार करके अपने लिए ज़िंदगी का हक़ खो चुके थे। साथ ही उन्होंने ज़ारिहियत (आक्रमकता) का आगाज करके अपने खिलाफ़ फौजी कार्यवाई को दुरुस्त साबित कर दिया था। इस वजह से उसके खिलाफ़ तलवार उठाने का हुक्म हुआ। 'और उनसे लड़ो यहां तक कि फितना बाकी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए' का मतलब यह है कि अरब की सरजमीन से शिर्क (बहुदेववाद) का ख़ात्मा हो जाए और तौहीद के दीन (एकेश्वरवादी धर्म) के सिवा कोई दीन वहां बाकी न रहे। इस हुक्म के ज़रिए अल्लाह तआला ने अरब को तौहीद का दाइमी (स्थायी) मर्कज़ बना दिया।

अहले ईमान को जंग की इजाजत सिर्फ़ उस वक़्त है जबकि प्रतिपक्ष की तरफ़ से हमला शुरू हो चुका हो। दूसरे यह कि जब अहले ईमान ग़लबा (वर्चस्व) पा लें तो इसके बाद माजी (अतीत) पर किसी के लिए कोई सजा नहीं। हथियार डालते ही माजी के जराइम माफ़ कर दिए जाएंगे। इसके बाद सजा का पात्र सिर्फ़ वह व्यक्ति होगा जो आईदा कोई क़बिले सजा जुर्म करे। आम हालत में क़त्ल का हुक्म और है और जंगी हालात में क़त्ल का हुक्म और।

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتِ قِصَاصٌ فَمَنْ اعْتَدَى عَلَيْكُمْ
فَاعْتَدُوا عَلَيْهِمْ مِثْلَ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ
الْمُتَّقِينَ ١٩ وَاتَّقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ٢٠

हुरमत (प्रतिष्ठा) वाला महीना हुरमत वाले महीने का बदला है और हुरमतों का भी कि़सास (समान बदला) है। पस जिसने तुम पर ज़्यादती की तुम भी उस पर ज़्यादती करो जैसी उसने तुम पर ज़्यादती की है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह परहेजगारों के साथ है। और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और

अपने आपको हलाकत में न डालो। और काम अच्छी तरह करो। बेशक अल्लाह पसंद करता है अच्छी तरह काम करने वालों को। (194-195)

हराम महीनों (मुहर्रम, रजब, जीकअदह, ज़िलहिज्जह) में या हरमे मक्का की हदों में लड़ई गुनाह है। मगर जब इस्लाम विरोधी तुम्हारे खिलाफ़ कार्यवाई करने के लिए उसकी हुरमत को तोड़ दें तो तुम को भी हक़ है कि कि़सास (समान बदला) के तौर पर उनकी हुरमत का लिहाज न करो। मगर दुश्मन के साथ दुश्मनी में तुम्हें अल्लाह से बेवफ़ा न हो जाना चाहिए। किसी हद को तोड़ने में तुम अपनी तरफ़ से इत्तदा न करो और न कोई ऐसा इक़दाम करो जो ज़रूरी हद से ज्यादा हो। अल्लाह की मदद किसी को उसी वक़्त मिलती है जबकि वह इश्तेआल (उत्तेजना) के वक़्त में भी अल्लाह की निर्धारित की हुई हदों का पाबंद बना रहे।

कि़सास और जुम में यह फ़र्क़ है कि कि़सास दूसरे पक्ष की तरफ़ से की हुई ज़्यादती के बराबर होता है। जबकि जुम इन हदबंदियों से बाहर निकल जाने का नाम है। एक शख्स को किसी से तकलीफ़ पहुंचे तो वह दूसरे शख्स को उतनी ही तकलीफ़ पहुंचा सकता है जितनी उसे पहुंची है। इससे ज़्यादा की इजाजत नहीं। नसीहत बुरी लगे तो गाली और मज़ाक से उसका जवाब देना या जबान व कलम की शिकायत के बदले में आक्रमकता दिखाना तक़्वा के सरासर खिलाफ़ है। इसी तरह माली नुक़सान के बदले जानी नुक़सान, मामूली चोट के बदले ज़्यादा बड़ी चोट, एक क़त्ल के बदले बहुत से आदमियों का क़त्ल, इस कि़स्म की तमाम चीज़ें जुम की परिभाषा में आती हैं। मुसलमान के लिए बराबर का बदला (कि़सास) जाइज है। मगर जुम किसी हाल में जाइज नहीं।

अल्लाह की राह में ज़द्दोज़ेहद सबसे ज़्यादा जिस चीज़ का तक़्वा करती है वह माल है। और माल की कुर्बानी बिला शुबह आदमी के लिए सबसे ज़्यादा मुश्किल चीज़ है। इसलिए हुक्म दिया कि अल्लाह के काम को अपना काम समझ कर उसकी राह में ख़ूब माल ख़र्च करो और इस काम को उसकी बेहतर से बेहतर सूरत में पूरा करो। 'अपने आपको हलाकत में न डालो' से मुराद बुख़ल (कंजूसी) है यानी ऐसा न हो कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च न करो, क्योंकि ख़र्च में दिल तंग होना दुनिया व आख़िरत की बर्बादी है। आदमी माल ख़र्च कर देने को हलाकत समझता है मगर हकीकत यह है कि माल को अल्लाह की राह में ख़र्च न करना हलाकत है। आदमी के पास जो कुछ है अगर वह उसे अल्लाह के हवाले न करे तो अल्लाह के पास जो कुछ है वह क्यों उसे आदमी के हवाले करेगा।

आदमी अपनी दौलत का इस्तेमाल सिर्फ़ यह समझता है कि इसको अपने आप पर या अपने बीबी बच्चों पर ख़र्च करे। मगर इस ज़ेहन को कुरआन हलाकत बताता है। इसके बजाए दौलत का सही इस्तेमाल यह है कि इसको ज़्यादा से ज़्यादा दीन की ज़रूरतों में ख़र्च किया जाए। माल को सिर्फ़ अपने जाती हैसलों की पूर्ति में ख़र्च करना फ़र्द और मुआशिरा (व्याक्ति और समाज) को खुदा के ग़ज़ब का मुस्तहिक़ बनाता है इसके बरअक्स जब माल को दीन की राह में ख़र्च किया जाए तो फ़र्द और जमाअत दोनों अल्लाह की रहमतों और नुसरतों के मुस्तहिक़ बनते हैं। ख़र्च करने वाले को इसका फायदा बेशुमार सूरतों में दुनिया में भी हासिल होता है और आख़िरत में भी।

وَاتَّبِعُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِّن رَّأْسِهِ فَغَدِيَّةٌ مِّنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أُمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَثَّلَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَ سَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَةٌ ۖ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ وَاتَّقُونِ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ۝

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए। फिर अगर तुम घिर जाओ तो जो कुर्बानी का जानवर मयस्सर हो वह पेश कर दो और अपने सरों को न मुंडवाओ जब तक कि कुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुंच जाए। तुममें से जो बीमार हो या उसके सर में कोई तकलीफ हो तो वह अर्धण्ड फिटिया दे रोज़ या सदक़ या कुर्बानी का। जब अन्न की हालत हो और कोई हज तक उमरा का फायदा हासिल करना चाहे तो वह कुर्बानी पेश करे जो उसे मयस्सर आए। फिर जिसे मयस्सर न आए तो वह हज के दिनों में तीन दिन के रोजे रखे और सात दिन के रोजे जबकि तुम घरों को लौटो। ये पूरे दस हुए। यह उस शख्स के लिए है जिसका खानदान मस्जिदे हराम के पास आबाद न हो। अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख्त अजाब देने वाला है। हज के निर्धारित महीने हैं। पस जिसने हज का अज्र कर लिया तो फिर उसे हज के दौरान न कोई फहेश (अश्लील) बात करनी चाहिए और न गुनाह की और न लड़ाई झगड़े की। और जो नेक काम तुम करोगे अल्लाह उसे जान लेगा। और तुम ज़ेराह (यात्रा-सामग्री) लो। बेहरीन ज़ेराह तक्वा का ज़ेराह है। और ऐ अक्ल वाले मुझ से डरो। (196-197)

जाहिलियत के जमाने के अरबों में भी हज का रिवाज था। मगर वह उनके लिए गोया एक कौमी रस्म या तिजारती मेला था न कि एक अल्लाह की इबादत। मगर हज व उमरा हो या कोई और इबादत, उनकी अस्ल कीमत उसी वक्त है जबकि वह ख़ालिसतन अल्लाह के लिए अदा की जाएं। जो शख्स अपनी रोजाना ज़िंदगी में अल्लाह का परस्तर बना हुआ हो जब वह अल्लाह की इबादत के लिए उठता है तो उसकी सारी नपिसयात सिमट कर उसी के ऊपर

लग जाती है। वह एक ऐसी इबादत का तजर्बा करता है जो जाहिरी तौर पर देखने में तो आदाब व मनासिक (रस्मों) का एक मज्मूआ होती है, मगर अपनी अंदरूनी रूह के एतबार से वह एक ऐसी हस्ती का अपने आपको अल्लाह के आगे डाल देना होता है जो अल्लाह से डरता हो और आखिरत की पकड़ का अंदेशा जिसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा मसला बना हुआ हो।

मोमिन वह है जो शहवत (वासना) के लिए जीने के बजाए मक्सद के लिए जीने लगे। वह अपने मामलात में खुदा की नाफरमानी से बचने वाला हो और इज्तिमाई (सामूहिक) ज़िंदगी में आपस के लड़ाई-झगड़े से बचा रहे। हज का सफर इन अख़्लाकी औसाफ की तर्बियत के लिए बहुत मौजू (उपयुक्त) है। इसलिए इसमें ख़ासतौर पर इनकी ताकीद की गई है। इसी तरह हज में सफर का पहलू लोगों को सफर के सामान के एहतेमाम में लगा देता है। मगर अल्लाह के मुसाफिर की सबसे बड़ी जादेराह (यात्रा सामग्री) तक्वा है। एक शख्स सफर के सामान के पूरे एहतेमाम के साथ निकले, दूसरा शख्स अल्लाह पर एतमाद (भरोसा) का सरमाया (पूँजी) लेकर निकले तो सफर के दौरान दोनों की नपिसयात एक जैसी नहीं हो सकती।

‘ऐ अक्ल वाले मेरा तक्वा इस्त्रियार करो।’ से मालूम हुआ कि तक्वा एक ऐसी चीज है जिसका तअल्लुक अक्ल से है। तक्वा किसी ज़हिरी स्वरूप का नाम नहीं है, यह अक्ल या शुऊर की एक हालत है। इंसान जब शुऊर की सतह पर अपने रब को पा लेता है तो उसका जेहन इसके बाद खुदा के जलाल व जमाल (प्रताप एवं सौंदर्य) से भर जाता है। उस वक्त रूह की लतीफ सतह पर जो कैफ़ियतें पैदा होती हैं इन्हीं का नाम तक्वा है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِّنْ عَرَقَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَّكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِّن قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَقِضُوا مِنْ حَيْثُ أَقَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۚ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَالَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ ۚ وَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً ۚ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۖ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَٰهِي تُخْشَرُونَ ۝

इसमें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फजल भी तलाश करो। फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस हो तो अल्लाह को याद करो मशअरे हराम के नजदीक। और उसे याद करो जिस तरह अल्लाह ने बताया है। इससे पहले यकीनन तुम राह भटके हुए लोगों में थे। फिर तवाफ़ को चलो जहां से सब लोग चलें और अल्लाह से माफ़ी मांगें। यकीनन अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जिस तरह तुम पहले अपने पूर्वजों को याद करते थे, बल्कि इससे भी ज्यादा। पस कोई आदमी कहता है : ऐ हमारे रब हमें इसी दुनिया में दे दे और आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। और कोई आदमी है जो कहता है कि हमारे रब हमें दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें आग के अजाब से बचा। इन्हीं लोगों के लिए हिस्सा है उनके किए का और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। और अल्लाह को याद करो मुकर्र दिनों में। फिर जो शख़्स जल्दी करके दो दिन में मक्का वापस आ जाए उस पर कोई गुनाह नहीं और जो शख़्स ठहर जाए उस पर भी कोई गुनाह नहीं। यह उसके लिए है जो अल्लाह से डरे। और तुम अल्लाह से डरते रहो और ख़ूब जान लो कि तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे। (198-203)

अस्त चीज अल्लाह का तक्वा है। किसी के अंदर यह मल्लूब (अपेक्षित) हालत मौजूद हो तो इसके बाद हज के दौरान आर्थिक जरूरत के तहत उसका कुछ कारोबार कर लेना या कुछ हज की रस्मों की अदायगी में किसी का आगे या किसी का पीछे हो जाना कोई हर्ज नहीं पैदा करता। हज के दौरान जो फिजा जारी रहनी चाहिए वह है अल्लाह का ख़ौफ़, अल्लाह की याद, अल्लाह की नेमतों का शुक्र, अल्लाह के लिए हवालगी (समर्पण) का जब्बा। हज के दौरान कोई ऐसा फ़ैल (कृत्य) नहीं होना चाहिए जो इन कैफियतों के खिलाफ हो। मसलन किसी शख़्स या गिरोह के लिए इबादत की अदायगी में इम्तियाज (विशिष्टता), पूर्वजों के कारनामे बयान करना जो गोया परोक्ष रूप से अपने को नुमायां करने की एक सूरत है। ये चीजें एक ऐसी इबादत के साथ बेजोड़ हैं जो यह बताती हो कि तमाम इंसान समान हैं, जिसमें इस बात का एलान किया जाता हो कि तमाम बड़ाई सिर्फ अल्लाह के लिए है। हज के जमाने में भी अगर आदमी इन चीजों की तर्बियत हासिल न करे तो ज़िंदगी के बाकी लम्हात में वह किस तरह इन पर कायम हो सकेगा।

दुआएं, खास तौर पर हज की दुआएं, आदमी की अंदरूनी हालत का इज्हार हैं। कोई शख़्स आखिरत की अज्मतों को अपने दिल में लिए हुए जी रहा हो तो हज के मक़ामात पर उसके दिल से आखिरत वाली दुआएं उबलेंगी। इसके बरअक्स जो शख़्स दुनिया की चीजों में अपना दिल लगाए हुए हो, वह हज के मौके पर अपने खुदा से सबसे ज्यादा जो चीज मांगेगा वह वही होगी जिसकी तड़प लिए हुए वह वहां पहुंचा था। और सबसे बेहतर दुआ तो यह है कि आदमी अपने रब से कहे कि खुदाया दुनिया में तेरे नजदीक जो चीज बेहतर हो वह मुझे दुनिया में दे दे और आखिरत में तेरे नजदीक जो चीज बेहतर हो वह मुझे आखिरत में दे दे और अपने एताब (प्रकोप) से मुझको बचा ले।

‘तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे’ यह हज का सबसे बड़ा सबक है जो अरफ़ात के मैदान में दुनिया भर के लाखों इंसानों को एक ही वक़्त जमा करके दिया जाता है। अरफ़ात का इज्तिमा क़ायमत के इज्तिमा की एक तम्सील है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَى مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ۖ وَإِذَا تَوَلَّى سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَيْسَ الْهَادِيَ ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝

और लोगों में से कोई है कि उसकी बात दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हें खुश लगती है और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है। हालांकि वह सज़ा झगड़ा लू है। और जब वह पीठ फेरता है तो वह इस कोशिश में रहता है कि ज़मीन में फ़साद फैलाए और खेतियाँ और जानवरों को हलाक करे। हालांकि अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता। और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो वकार (प्रतिष्ठा) उसे गुनाह पर जमा देता है। पस ऐसे शख़्स के लिए जहन्नम काफी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और लोगों में कोई है कि अल्लाह की खुशी की तलाश में अपनी जान को बेच देता है और अल्लाह अपने बंदों पर निहायत महरबान है। (204-207)

जो शख़्स मस्लेहत को अपना दीन बनाए उसकी बातें हमेशा लोगों को बहुत भली मालूम होती हैं। क्योंकि वह लोगों की पसंद को देखकर उसके मुताबिक बोलता है न कि यह देखकर कि हक क्या है और नाहक क्या। उसके सामने कोई मुस्तक़िल मेयार नहीं होता। इसलिए वह मुखातब (संबोधित वर्ग) की रियायत से हर वह अंदाज अपना लेता है जो मुखातब पर असर डालने वाला हो। हक का वफ़ादार न होने की वजह से उसके लिए यह मुश्किल नहीं रहता कि दिल में कोई हकीमी जब्बा न होंते हुए भी वह ज़बान से ख़ूबसूरत बातें करे।

ऐसा क्यों होता है कि बात के स्टेज पर वह मुस्लेह (सुधारक) के रूप में नजर आता है और अमल के मैदान में उसकी सरगर्मियां फ़साद का सबब बन जाती हैं। इसकी वजह उसका तज़ाद (अन्तर्विरोध) है। अमली नताइज हमेशा अमल से पैदा होते हैं न कि अल्फ़ाज से। वह अगरचे ज़बान से हक़मरस्ती के अल्फ़ाज बोलता है, मगर अमल के एतबार से वह जिस सतह पर होता है वह सिर्फ़ ज़िती मफ़द है। यह चीज उसमें कैल व अमल में फ़र्क़ पैदा कर देती है। बात के मक़ाम से हटकर जब वह अमल के मक़ाम पर आता है तो उसके मफ़द (हित) का तक्ज़ा खींचकर उसे ऐसी सरगर्मियों की तरफ ले जाता है जो सिर्फ़ तज़रीब (विध्वंस) पैदा

करने वाली हैं। यहां वह अपने जाती फ़ायदे की खातिर दूसरों का इस्तहसाल (शोषण) करता है। वह अवामी मकबूलियत हासिल करने के लिए लोगों को ज़ब़ाती बातों की शराब पिलाता है। वह अपनी कयादत कायम करने की खातिर पूरी कौम को दांव पर लगा देता है। वह तामीर (रचनात्मक कार्यों) की सियासत करने के बजाए तख़रीब (विध्वंस) की सियासत चलाता है। क्योंकि इस तरह ज्यादा आसानी से अवाम की भीड़ अपने गिर्द इकट्ठा की जा सकती है। ये वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया के मफ़ाद और मस्लेहत के साथ अपनी ज़िंदगी का सौदा किया। हक़ वाजेह हो जाने के बाद भी वे इसे कुबूल करने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि इसमें उन्हें वक़र (प्रतिष्ठा) का बुत टूटता हुआ नजर आता है। जाहिरी तौर पर नर्म बातों के पीछे उनकी घमंड भरी नफ़िसयात उन्हें एक ऐसे हक़ के दाजी के सामने झुकने से रोक देती है जिसे वे अपने से छोटा समझते हैं।

दूसरे लोग वे हैं जो अल्लाह की रिज़ा (खुशी) के साथ अपनी ज़िंदगी का सौदा करते हैं। ऐसा शख्स अपनी आदतों (व्यवहार) और ख़्यालात को छोड़कर खुदा की बातों को कुबूल करता है। वह अपने माल को खुदा के हवाले करके इसके बदल बे-माल बन जाने को ग़वारा कर लेता है। वह रिवाजी दीन को रद्द करके खुदा के बेआमेज़ (विशुद्ध) दीन को लेता है चाहे इसकी वजह से उसे ग़ैर-मकबूलियत पर राजी होना पड़े। वह मस्लेहतपरस्ती के बजाए हक़ के एतान को अपना शेवा (कार्य नियम) बनाता है। अगरचे इसके नतीजे में वह लोगों के एताब (प्रकोप) का शिकार होता रहे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ فَاغْلِبُوا
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلُلٍ مِّنَ الْغَمَامِ
ۖ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۚ سَلِّ بَيْنِي وَبَيْنَ
كُمُ اتِّبِعْتُمْ مِنْ آيَاتِي بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۚ ذُنُوبَ الَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ
الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

ऐ ईमान वाले इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के कदमों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। अगर तुम फ़िसल जाओ बाद इसके कि तुम्हारे पास वाजेह दलीलें आ चुकी हैं तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त है और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। क्या लोग इस इंतज़ार में हैं कि अल्लाह बादल के साथवानों

में आए और फ़रिश्ते भी आ जाएं और मामले का फैसला कर दिया जाए और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ फेंरे जाते हैं। बनी इस्राईल से पूछो, हमने उन्हें कितनी खुली-खुली निशानियां दीं। और जो शख्स अल्लाह की नेमत को बदल डाले जबकि वह उसके पास आ चुकी हो तो अल्लाह यकीनन सज़ा सजा देने वाला है। खुशनुमा कर दी गई है दुनिया की ज़िंदगी उन लोगों की नज़र में जो मुंकिर हैं और वे ईमान वालों पर हंसते हैं, हालांकि जो परहेज़गार हैं वे क़ियामत के दिन उनके मुक़ाबले में ऊंचे होंगे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है। (208-212)

इस्लाम को अपनाने की एक सूत यह है कि तहफ़ुज़ात और मस्लेहतों का लिहाज़ किए बग़ैर इसे अपनाया जाए। इस्लाम जिस चीज़ को करने को कहे उसे किया जाए। और जिस चीज़ को छोड़ने को कहे उसे छोड़ दिया जाए। यह किसी आदमी का पूरे का पूरा इस्लाम में दाख़िल होना है। दूसरी सूत यह है कि आदमी इस्लाम को उसी हद तक अपनाए जिस हद तक इस्लाम उसकी ज़िंदगी से टकराता न हो। वह उस इस्लाम को ले ले जो उसके लिए मुफ़ीद और या कम से कम नुक़सानदेह न हो। और उस इस्लाम को छोड़े रहे जो उसके महबूब अक़ाइद, उसकी पसंदीदा आदतों, उसके दुनियावी फ़ायदे, उसके शख़्सि वक़र, उसकी कायदाना मस्लेहतों को मज़रूह करता हो। आदमी शुरू में पूरी तरह इरादा करके इस्लाम को अपनाता है। मगर जब वह वक़्त आता है कि वह अपने फ़िक़्री (वैचारिक) दांचे को तोड़े या अपने मफ़ाद को नज़रअंदाज़ करके इस्लाम का साथ दे तो वह फ़िसल जाता है। वह ऐसे इस्लाम पर ठहर जाता है जिसमें उसके मफ़ादात (हित) भी मज़रूह न हों और इस्लाम का तमगा भी हाथ से जाने न जाए।

इस्लाम के पैग़ाम की सदाक़त पर यकीन करने के लिए अगर वे दलीलें चाहते हैं तो दलीलें पूरी तरह दी जा चुकी हैं। अगर वे चाहते कि उन्हें मोज़िजात (चमत्कार) दिखाए जाएं तो जो शख्स खुली-खुली दलीलों को न माने उसे चुप करने के लिए मोज़िजात भी नाक़ाफी साबित होंगे। इसके बाद आखिरी चीज़ जो बाकी रहती है वह यह कि खुदा अपने फ़रिश्तों के साथ सामने आ जाए। मगर जब ऐसा होगा तो वह किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह फैसले का वक़्त होगा न कि अमल करने का। इंसान का इम्तेहान यही है कि वह देखे बग़ैर महज दलीलों की बुनियाद पर मान ले। अगर उसने देखकर माना तो इस मानने की कोई कीमत नहीं।

वे लोग जो मस्लेहतों को नज़रअंदाज़ करके इस्लाम को अपनाएं और वे लोग जो मस्लेहतों की रियायत करते हुए मुसलमान बनें, दोनों के हालात एकसां (समान) नहीं होते। पहला ग़िरोह अक्सर दुनियावी अहमियत की चीज़ों से ख़ाली हो जाता है जबकि दूसरे ग़िरोह के पास हर किस्म की दुनियावी रैनकें जमा हो जाती हैं। यह चीज़ दूसरे ग़िरोह को ग़लतफ़हमी में डाल देती है। वह अपने को बरतर ख़याल करता है और पहले ग़िरोह को हकीर (तुच्छ) समझने लगता है। मगर यह सूरतेहाल इतिहाई आरज़ी है। मौजूदा दुनिया को तोड़कर जब नया बेहतर निज़ाम बनेगा तो वहां आज के बड़े पस्त कर दिए जाएंगे और वही लोग बड़ाई के मक़ाम पर नज़र आएंगे जिन्हें आज छोटा समझ लिया गया था।

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيُحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِي مَا اختلفُوا فِيهِ وَمَا اختلف فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَ نَهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَكَذَا اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِيَا اختلفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِأُذُنِهِ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ٩٠ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَكِنَّا لَا نَتَحَكَّمُ مِثْلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصُرُ اللَّهُ ۚ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ٩١

लोग एक उम्मत थे। उन्होंने इस्तेलाफ (मतभेद) किया तो अल्लाह ने पैगम्बरों को भेजा खुशखबरी देने वाले और डराने वाले। और उनके साथ उतारी किताब हक के साथ ताकि वह फैसला कर दे उन बातों का जिनमें लोग इस्तेलाफ कर रहे हैं। और ये इस्तेलाफ उन्हीं लोगों ने किए जिन्हें हक दिया गया था, बाद इसके कि उनके पास खुली-खुली हिदायतें आ चुकी थीं, आपस की ज़िद की वजह से। पर अल्लाह ने अपनी तौफ़ीक से हक के मामले में ईमान वालों को राह दिखाई जिसमें वे झगड़ रहे थे और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह दिखा देता है। क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे हालांकि अभी तुम पर वे हालात गुजरे ही नहीं जो तुम्हारे अंगलों पर गुजरे थे। उन्हें सज़्ज़ी और तकलीफ पहुंची और वे हिला मारे गए। यहां तक कि रसूल और उनके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। याद रखो, अल्लाह की मदद करीब है। (213-214)

दीन में इस्तेलाफ (मतभेद) तावीर और तशरीह (भाष्य एवं व्याख्या) के इस्तेलाफ से शुरू होता है। हर एक अपने जेहनी सांचे के मुताबिक खुदा के दीन का एक तसव्वुर (अवधारणा) कायम कर लेता है। एक ही हिदायत की किताब को मानते हुए भी लोगों की राय अलग-अलग हो जाती है। उस वक्त अल्लाह अपने चुने हुए बंदे के जरिए हक का एलान कराता है। यह आवाज अगरचे ईंसान की ज़बान में होती है और बजाहिर आम आदमियों जैसे एक आदमी के जरिए बुलंद की जाती है। ताहम जो सच्चे हक को तलाश करने वाले हैं, वे उसके अंदर शामिल खुदाई गुंज को पहचान लेते हैं और अपने इस्तेलाफ को भूल कर फौरन उसकी आवाज पर लंबेक कहते हैं। दूसरी तरफ वह तबका है जो अपने खुदसाज़्ज़ा (स्वनिर्मित) दीन के साथ अपने को इतना ज़्यादा वाबस्ता कर चुका होता है कि उसके अंदर यह जब्बा उभर आता है कि मैं दूसरे की बात क्यों मानूं। उसके अंदर ज़िद की नफ़्तियात पैदा हो जाती है। यहां तक कि वह उसी चीज का इंकार कर देता है जिसका वह अपने ख़्याल के मुताबिक अलमबरदार बना हुआ था।

हक जब रोशन दलीलों के साथ आ जाए और इसके बावजूद आदमी इसका साथ न दे तो इसकी वजह हमेशा यह होती है कि आदमी को नजर आता है कि इसका साथ देने में उसकी खुशगुमानियों का महल ढह जाएगा। उसके मफ़ादात का निजाम टूट जाएगा। उसकी आसूदा (तृप्त, संतुष्ट) ज़िंदगी ख़तरे में पड़ जाएगी। उसका वकार बाक़ी नहीं रहेगा। मगर यही वह चीज है जो अल्लाह को अपने वफ़ादार बंदों से मल्लूब है। जिस रास्ते की दुश्वारियों से घबरा कर आदमी उस पर आना नहीं चाहता यही वह रास्ता है जो जन्नत की तरफ ले जाने वाला है। जन्नत की वाहिद (एकमात्र) कीमत आदमी का अपना वजूद है। आदमी अपने वजूद को फ़िक्र व अमल के जिन नक्शों के हवाले किए हुए है वहां से उखाड़कर जब वह उसे खुदा के नक्शे में लाना चाहता है तो उसकी पूरी शख़्शियत हिल जाती है। इसमें उस वक्त और ज़्यादा इजाफ़ा हो जाता है जबकि इसके साथ वह खुदा के दीन का दाओ बनकर खड़ा हो जाए। दाओ (आह्वानकर्ता) बनना दूसरे शब्दों में दूसरों के ऊपर नासेह (नसीहत करने वाला) और नाकिद (आलोचक) बनना है और अपने खिलाफ नसीहत और तंकीद (आलोचना) को सुनना हर ज़माने में इंसान के लिए सबसे असहनीय बात रही है। इसके नतीजे में संबोधित वर्ग की तरफ से इतनी शदीद प्रतिक्रिया सामने आती है जो दाओ के लिए एक भूचाल से कम नहीं होती।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُ مِنْ خَيْرٍ فَلِلَّهِ الدِّينُ وَالْآقِرْبِينَ وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينُ وَابْنُ السَّبِيلِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ٩٢ كَتَبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٩٣

लोग तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें। कह दो कि जो माल तुम ख़र्च करो तो उसमें हक है तुम्हारे मां-बाप का और रिश्तेदारों का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफ़ि़रों का। और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को मालूम है। तुम पर लड़ाई का हुक्म हुआ है और वह तुम्हें भार महसूस होती है। हो सकता है कि तुम एक चीज को नागवार समझो और वह तुम्हारे लिए भली हो। और हो सकता है कि तुम एक चीज को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (215-216)

इंसान यह समझता है कि उसके जान और माल के इस्तेमाल का बेहतरीन मसरफ़ उसके बीवी-बच्चे हैं। वह अपनी पूंजी को अपने जाती हौसलों और तमन्नाओं में लुटाकर खुश होता है। इसके विपरीत शरीअत यह कहती है कि अपने जान और माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करो। ये दोनों मंदाएँ एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। एक खुद अपने ऊपर ख़र्च करना है और दूसरा शैरों के ऊपर। एक अपनी ताक़त को दुनिया की जाहिरी चीजों की प्राप्ति पर लगाना है और और दूसरा आख़िरत की नजर न आने वाली चीजों पर। मगर इंसान को जो चीज नापसंद है वही

अल्लाह की नजर में भलाई है। क्योंकि वह उसकी अगली व्यापक जिंदगी में उसे नफ़ा देने वाली है। और इंसान को जो चीज पसंद है वह अल्लाह की नजर में बुराई है। क्योंकि इसका जो कुछ फ़ायदा है इसी आरज़ी दुनिया में है, आख़िरत में इससे किसी को कुछ मिलने वाला नहीं।

यही उसूल जिंदगी के तमाम मामलों के लिए सही है। आदमी आज़ाद और बैक़ेद (उन्मुक्त) जिंदगी को पसंद करता है, हालांकि उसकी भलाई इस में है कि वह अपने आपको अल्लाह की रस्सी में बांध कर रखे। आदमी अपनी तारीफ़ करने वालों को दोस्त बनाता है, हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर यह है कि वह उस शख्स को अपना दोस्त बनाए, जो उसकी ग़लतियों को उसे बताता हो। आदमी एक हक़ को मानने से इंकार करता है और खुश होता है कि इस तरह उसने लोगों की नज़र में अपने वक़ार (प्रतिष्ठा) को बचा लिया। हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर यह था कि वह अपनी इज़्ज़त को ख़तरे में डालकर खुले दिल से हक़ का एतराफ़ कर ले। आदमी महनत और कुर्बानी वाले दीन से बेरग़बत (उदासीन) रहता है और उस दीन को ले लेता है जिसमें मामूली बातों पर ज़न्नत की खुशख़बरी मिल रही हो। हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर था कि वह महनत और कुर्बानी वाले दीन को अपनाता। आदमी 'जिंदगी' के मसाइल को अहमियत देता है, हालांकि ज्यादा बड़ी अक़लमंदी यह है कि आदमी 'मौत' के मसाइल को अहमियत दे।

'अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।' का मतलब यह है कि अल्लाह उन सतही ज़ज्वात और प्रेरकों से बुलंद है जिनसे बुलंद न होने की वजह से इंसान की राय प्रभावित राय बन जाती है और वह सही रुख़ को छोड़कर ग़लत रुख़ की तरफ़ मुड़ जाता है। अल्लाह का पैसला हर किस्म की असंबंधित चीज़ों की मिलावट से پاک है। वह विशुद्ध पैसला है। इसलिए इसके बरहक होने में शुबह नहीं। इंसान के पैसले तरह-तरह की नफ़िसयाति पेचीदगियों से प्रभावित रहते हैं। वह घटिया प्रेरकों के ज़ेरे असर राय कायम करता है। इसलिए इंसान की राय प्रायः हक़ पर आधारित नहीं होती है और न हालात के अनुकूल होती है। खुदा जो कहे उसी को तुम हक़ समझो और उसके मुकाबले में अपने ख़्याल को छोड़ दो।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالنَّدْبُ الْحَرَامِ وَالْإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّى يَزِدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنَّ اسْتِطَاعُوا مَنْ يَرْتَدِدُ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ٢٠ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٢١

लोग तुमसे हुरमत (प्रतिष्ठा) वाले महीने की बाबत पूछते हैं कि इसमें लड़ना कैसा है। कह दो कि इसमें लड़ना बहुत बुरा है। मगर अल्लाह के रास्ते से रोकना और इसका इंकार करना और मस्जिद हाराम से रोकना और उसके लोगों को इससे निकालना, अल्लाह के नजदीक इससे भी ज्यादा बुरा है। और फ़ितना क़त्ल से भी ज्यादा बड़ी बुराई है। और ये लोग तुमसे निरंतर लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर काबू पाएं। और तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा और कुफ़्र की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के अमल जाए (विनष्ट) हो गए दुनिया में और आख़िरत में। और वे आग में पड़ने वाले हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने हिज़रत की ओर अल्लाह की राह में जिहाद किया, वे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (217-218)

रजब 2 हिजरी में यह वाकया पेश आया कि मुसलमानों के एक दस्ता और क़ैश के मुशरिकीन की एक जमाअत के दर्मियान टकराव हो गया। यह वाकया मक्का और तायफ़ के दर्मियान नख़ला में पेश आया। क़ैश का एक आदमी मुसलमानों के हाथ से मारा गया। मुसलमानों का ख़्याल था कि यह जमादि उस सानी की 30 तारीख़ है। मगर चांद 29 का हो गया था और वह रजब की पहली तारीख़ थी। रजब का महीना माह हाराम में शुमार होता है और सदियों के रवाज से इस मामले में अरबों के ज़ज्वात बहुत शदीद थे। इस तरह विरोधियों को मौका मिल गया कि वे मुसलमानों को और मुहम्मद (सल्ल०) को बदनाम करें कि ये लोग हक़परस्ती से इतना दूर हैं कि हाराम महीनों की हुरमत का भी ख़्याल नहीं करते। जवाब में कहा गया कि माह हाराम में लड़ना यकीनन गुनाह है। मगर मुसलमानों से यह कृत्य तो भूल से और संयोगवश हो गया और तुम लोगों का हाल यह है कि जानबूझ कर और मुस्तक़िल तौर पर तुम इससे कहीं ज्यादा बड़े जुर्म कर रहे हो। तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की पुकार बुलंद हुई है मगर तुम इसे मानने से इंकार कर रहे हो और दूसरों को भी इसे अपनासे से रोकते हो। तुम्हारी ज़िद और एनाद (ईष्या) का यह हाल है कि अल्लाह के बंदों के ऊपर अल्लाह के घर का दरवाजा बंद करते हो, उन्हें उनके अपने घरों से निकलने पर मजबूर करते हो। यहां तक कि जो लोग अल्लाह के दीन की तरफ़ बढ़ते हैं उन्हें तरह-तरह से सताते हो ताकि वे इसे छोड़ दें। हालांकि किसी को अल्लाह के रास्ते से हटाना उसे क़त्ल कर देने से भी ज्यादा बुरा है। अल्लाह के नजदीक यह बहुत बड़ा जुर्म है कि आदमी खुद बड़ी-बड़ी बुराइयों में मुक्त्ला हो और दूसरे की एक मामूली ख़ता को पा जाए तो इसे प्रचारित करके उसे बदनाम करे। विरोधों का यह नतीजा होता है कि अहले ईमान को अपने घरों को छोड़ना पड़ता है। दीन पर कायम रहने के लिए उन्हें जिहाद की हद तक जाना पड़ता है। मगर मौजूदा दुनिया में ऐसा होना ज़रूरी है। यह एक दोतरफ़ा अमल है जो खुदापरस्तों और खुदा दुश्मनों को एक-दूसरे से अलग करता है। इस तरह एक तरफ़ यह साबित होता है कि वे कौन लोग हैं जो अल्लाह के नहीं बल्कि अपनी जात के पुजारी हैं। जो अपने जाती मफ़द के लिए अल्लाह से बेख़ौफ़ होकर अल्लाह के बंदों को सताते हैं। दूसरी तरफ़ इसी वाकया के दर्मियान ईमान और हिज़रत और जिहाद की नेकियां प्रकट होती हैं। इससे मालूम होता है कि वे कौन लोग

हैं जिन्होंने हालात की शिद्दत के बावजूद अल्लाह पर अपने भरोसे को बाकी रखा और किसने इसे खो दिया।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَيْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنْفَاعَةٌ لِلنَّاسِ ۖ
وَشَهْءٌ أَكْبَرُ مِنْ نَفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ الْعَفْوَ كَذَلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْيَتَامَى قُلْ إِصْلَاحُهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ١٢٠

लोग तुमसे शराब और जुवे के बारे में पूछते हैं। कह दो कि इन दोनों चीजों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ फायदे भी हैं। और इनका गुनाह बहुत ज्यादा है इनके फायदे से। और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या खर्च करें। कह दो कि जो हाजत (जरूरत) से ज्यादा हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम को बयान करता है ताकि तुम ध्यान करो दुनिया और आखिरत के मामलों में। और वे तुमसे यतीमों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि जिसमें उनकी बहबूद (बेहतरी) हो वह बेहतर है। और अगर तुम उन्हें अपने साथ शामिल कर लो तो वे तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह को मालूम है कि कौन खराबी पैदा करने वाला है और कौन दुरुस्तगी पैदा करने वाला। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मुश्किल में डाल देता। अल्लाह जबरदस्त है तदबीर वाला है। (219-120)

कुछ सवालों का जवाब देते हुए यहां कुछ बुनियादी उसूल बता दिए गए हैं। (1) किसी चीज का नुस्सान अगर उसके फायदे से ज्यादा हो तो छोड़ देने योग्य है। (2) अपनी वाकई जरूरत से ज्यादा जो माल हो उसे अल्लाह की राह में दे देना चाहिए। (3) आपसी मामलों में उन तरीकों से बचना जो किसी बिगाड़ का सबब बन सकते हों और उन तरीकों को अपनाना जो सुधार पैदा करने वाले हों।

शराब पीकर आदमी को सुरूर हासिल होता है। जुवा खेलने वाले को कभी महनत के बगैर काफ़ी दौलत हाथ आ जाती है। इस एतबार से इन दोनों चीजों में नफे का पहलू है। मगर दूसरे एतबार से इनके अंदर दीनी और अख़लाकी नुक्सानात हैं और ये नुक्सानात इनके नफ़ा से बहुत ज्यादा हैं। इसलिए इनसे मना कर दिया गया। किसी चीज को लेने या न लेने का यही मेयार ज़िंदगी के दूसरे मामलों के लिए भी है। मसलन वे तमाम सियासी और ग़ैर सियासी सरगर्मियों, वे तमाम समारोह और जलसे त्याग देने योग्य हैं जिनके बारे में दीनी और आर्थिक जायज बताए कि इनमें फायदा कम है और नुस्सान ज्यादा है।

मुसलमान वह है जो आखिरत को अपनी मंजिल बनाए, जो इस तड़प के साथ अपनी सुबह व शाम कर रहा हो कि उसका खुदा उससे राजी हो जाए। ऐसे शख्स के लिए दुनिया का साज व सामान ज़िंदगी की जरूरत है न कि ज़िंदगी का मक़सद। वह माल हासिल करता है, वह दुनिया के कामों में मशगूल रहता है। मगर यह सब कुछ उसके लिए हाजत और जरूरत के दर्जे में होता है न कि मक़सद के दर्जे में। उसके असासे (सम्पत्ति) की जो चीज उसकी हकीकी जरूरत से ज्यादा हो, उसका बेहतर मसरफ़ उसके नज़दीक यह होता है कि वह उसे अपने रब की राह में दे दे, ताकि वह उससे राजी हो और उसे अपनी रहमतों के साए में जगह दे। उसकी हर चीज हाजत के बराबर अपने लिए होती है और हाजत से जो ज्यादा हो वह दीन के लिए।

आपसी मामलात और कारोबार के अक्सर मसाइल इतने पेचीदा होते हैं कि इनके बारे में सिर्फ बुनियादी हिदायतें दी जा सकती हैं, इनकी तमाम अमली तफ़सीलात को कानून के अल्फ़ाज़ में निधारित नहीं किया जा सकता। इस सिलसिले में यह उसूल निधारित कर दिया गया कि अपनी नियत को दुरुस्त रखो और जो कार्रवाई करो यह सोच कर करो कि वह किसी बिगाड़ का सबब न बने। बल्कि साहिबे मामला के हक में बेहतर पैदा करने वाली हो। अगर तुम दूसरे को अपना भाई समझते हुए उसके हित की पूरी रियायत रखोगे और तुम्हारा मक़सद सिर्फ सुधार और दुरुस्तगी होगा तो अल्लाह के यहां तुम्हारी पकड़ नहीं।

وَلَا تَتَّبِعُوا الْبَشْرَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُ ۚ وَلَكُمْ مَوَدَّةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ
أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۚ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى التَّارِكِ ۖ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْحَقِّ
وَالْمَغْفِرَةِ ۖ بِإِذْنِهِ ۚ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۚ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْمَحْيِضِ قُلْ هُوَ أَذَىٰ فَأَعْرِضُوا ۚ وَالنِّسَاءُ فِي الْمَحْيِضِ ۚ وَلَا
تَقْرُبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۚ نَسْأَلُكُمْ خَزَائِنَ لَكُمْ
فَأَنْتُمْ حَرَجْتُكُمْ ۚ أَلَمْ يَشْعُرْ ۚ وَقَدْ مُؤَالَافَتْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
مُّلُوقُوهُ ۚ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ١٢١

और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक वे ईमान न लाएं और मोमिन कनीज (दासी) बेहतर है एक मुशरिक औरत से, अगरचे वह तुम्हें अच्छी मालूम हो। और अपनी

औरतों को मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक वे ईमान न लाएं, मोमिन गुलाम बेहतर है एक आजाद मुशरिक से, अगरचे वह तुम्हें अच्छा मालूम हो। ये लोग आग की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ और अपनी बख़्शिश की तरफ बुलाता है। वह अपने अहकाम लोगों के लिए खोलकर बयान करता है ताकि वे नसीहत पकड़ें। और वे तुमसे हैज (मासिक धर्म) का हुक्म पूछते हैं। कह दो कि वह एक गंदगी है, इसमें औरतों से अलग रहो। और जब तक वे पाक न हो जाएं उनके करीब न जाओ। फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएं तो उस तरीके से उनके पास जाओ जिसका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है। अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और वह दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं। पस अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आगे भेजो और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम्हें जरूर उससे मिलना है। और ईमान वाले को खुशखबरी दे दो। (221-223)

मर्द और औरत जब निकाह के जरिए एक-दूसरे के साथी बनते हैं तो इसका अस्त मक्सद शहवतरानी (यौन तृप्ति) नहीं होता बल्कि यह उसी किस्म का एक वामक्सद तअल्लुक है जो किसान और खेत के दर्मियान होता है। इसमें आदमी को इतना ही संजीदा होना चाहिए जितना खेती का मंसूबा बनाने वाला संजीदा होता है। इस सिलसिले में कुछ बातों का लिहाज जरूरी है।

एक यह कि जोड़े के चुनाव में सबसे ज्यादा जिस चीज को देखा जाए वह ईमान है। मियाँ-बीवी का तअल्लुक बेहद नाजुक तअल्लुक है। इसके बहुत से नपिंसयाती, खानदानी और समाजी पहलू हैं। इस किस्म का तअल्लुक दो शख्सों के दर्मियान अगर एतकादी (आस्थागत) समानता के बगैर हो तो अंततः वह दो में से किसी एक की बर्बादी का सबब होगा। एक मोमिन अपने गैर-मोमिन जोड़े से एतकादी समझौता कर ले तो इसका मतलब यह है कि उसने अपने दीन को बर्बाद कर लिया। और अगर वह समझौता न करे तो इसके बाद दोनों में जो कशमकश होगी इसके नतीजे में उसका घर बर्बाद हो जाएगा। दूसरी चीज यह कि दो सिनफों का यह तअल्लुक खुदा की बनावट के मुताबिक अपने फित्ती ढंग पर क़ायम हो। फित्तरत भी खुदा का हुक्म है। कुरआन के शाब्दिक आदेशों की पाबंदी जिस तरह जरूरी है उसी तरह उस फित्ती निज़ाम की पाबंदी भी जरूरी है जो खुदा ने तख़्खीकी (रचनात्मक) तौर पर हमारे लिए बना दिया है। तीसरी चीज यह कि हर मरहले में आदमी के ऊपर अल्लाह का ख़ौफ़ ग़ालिब रहे। वह जो भी रवैया अपनाए यह सोच कर अपनाए कि अंततः उसे रब्बुल आलमीन के पास जाना है जो खुले और खुपे हर चीज से बाख़बर है। 'और अपने लिए आगे भेजो।' का मतलब यह है कि अपनी आख़िरत के लिए नेक आमाल भेजो। यानी जो कुछ करो यह समझ कर करो कि तुम्हारा कोई काम सिर्फ़ दुनियावी काम नहीं है बल्कि हर काम का एक उख़रवी (आख़िरत संबंधी) पहलू है। मरने के बाद तुम अपने इस उख़रवी पहलू से दो-चार होने वाले हो। तुम्हें इस मामले में हद दर्जा होशियार रहना चाहिए कि तुम्हारा अमल आख़िरत के पैमाने में सालेह (नेक) अमल करार पाए न कि ग़ैर-सालेह।

وَلَا تَجْعَلُوا لِلّٰهِ عُزُضَةً لِآيِنَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصَلُّوا بَيْنَ النَّاسِ وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِالْغَوِي فِي آيِنَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللّٰهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِنْ فَاءُوا فَإِنَّ اللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبَعُوْهُنَّ مَا أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

और अल्लाह को अपनी कसमों का निशाना न बनाओ कि तुम भलाई न करो और परहेजगारी न करो और लोगों के दर्मियान सुलह न करो। अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह तुम्हारी बेइरादा कसमों पर तुम को नहीं पकड़ता, मगर वह उस काम पर पकड़ता है जो तुम्हारे दिल करते हैं। और अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मूल (धैर्य) वाला है। जो लोग अपनी बीवियों से न मिलने की कसम खा लें उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है। फिर अगर वे रुजूअ कर लें तो अल्लाह माफ़ करने वाला, महरबान है। और अगर वे तलाक़ का फैसला करें तो यकीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। और तलाक़ दी हुई औरतें अपने आपको तीन हैज तक रोके रखें। और अगर वे अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए जाइज नहीं कि वे उस चीज को छुपाएं जो अल्लाह ने पैदा किया है उनके पेट में। और इस दौरान में उनके शौहर उन्हें फिर लौटा लेने का हक़ रखते हैं अगर वे सुलह करना चाहें। और इन औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक उसी तरह हुक्म हैं जिस तरह दस्तूर के मुताबिक उन पर जिम्मेदारियां हैं। और मर्दों का उनके मुकाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है। और अल्लाह जबरदस्त है, तदबीर वाला है। (224-228)

जिद और गुस्से में कभी एक आदमी कसम खा लेता है कि मैं फलों आदमी के साथ कोई नेक सलूक नहीं करूंगा। कदीम ज़माने में अरबों में इस तरह की कसमों का बहुत रवाज था। वे एक भलाई का काम या एक इस्लाह (सुधार) का काम न करने की कसम खा लेते और जब उन्हें इस नौइयत के काम के लिए पुकारा जाता तो कह देते कि हम तो इसे न करने की

कसम खा चुके हैं। यह कहना कि मैं भलाई का काम न करूंगा, यूं भी एक ग़लत बात है और इसे खुदा के नाम की कसम खाकर कहना और भी ज्यादा बुरा है। क्योंकि खुदा तो वह हस्ती है जो सरापा रहमत और ख़ैर है। फिर ऐसे खुदा का नाम लेकर अपने को रहमत और ख़ैर के कामों से अलग करना क्यूं कर दुरुस्त हो सकता है। बिगाड़ हर हाल में बुरा है। लेकिन अगर बिगाड़ को खुदा या उसके दीन का नाम लेकर किया जाए तो इसकी बुराई बहुत ज्यादा बढ़ जाती है।

कुछ लोग कसम को तकिया कलाम बना लेते हैं और ग़ैर इरादी तौर पर कसम के अल्फ़ाज़ बोलते रहते हैं। यह घटिया बात है और हर आदमी को इससे बचना चाहिए, ताहम मियां-बीबी के तअल्लुक की नज़ाकत की वजह से इस तरह के मामलात में ऐसी कसम को कानूनी तौर पर अप्रभावी करार दिया गया। अलबत्ता वह कलाम जो आदमी सोच समझ कर मुंह से निकाले और जिसके साथ कलबी इरादा शामिल हो जाए उसकी नौइयत बिल्कुल दूसरी होती है। इसलिए अगर कोई शख्स इरादतन यह कसम खाले कि मैं अपनी औरत के पास न जाऊंगा तो इसे कबिले लिहाज़ करार देकर इसे एक कानूनी मसला बना दिया गया और इसके अहक़ाम मुकर्र किए गए।

ख़ानदानी निजाम में, चाहे मर्द हो या औरत, हर एक के हुक्म भी हैं और हर एक की जिम्मेदारियां भी। हर फर्द को चाहिए कि दूसरे से अपना हक लेने के साथ दूसरे को उसका हक भी पूरी तरह अदा करे। कोई शख्स इत्तेफ़ाकी हालात या अपनी फ़ित्री बालादस्ती (प्राकृतिक शक्ति) से फायदा उठा कर अगर दूसरे के साथ नाइंसाफी करेगा तो वह खुदा की पकड़ से अपने आपको बचा नहीं सकता।

الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ ۖ فَاِمْسَاكٌ مَّعْرُوفٌ اَوْ تَسْرِيَةٌ بِاِحْسَانٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا بِمَا اَتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْئًا اِلَّا اَنْ يَخَافَا اَلَا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَا

يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِىْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ۚ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۚ ۝۱१ ۚ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْ بَعْدِ حَتّٰى تَنْكِحَ رَوْجًا غَيْرَ ۚ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا اَنْ يَتَرَاجَعَا اِنْ ظَنَّا اَنْ يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُوْنَ ۚ ۝۱۲ ۚ وَاِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلْيُغْنِ اَجْلَهُنَّ فَاِمْسَاكُوْهُنَّ بِمَعْرُوفٍ اَوْ تَسْرِيْهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضَرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ

ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوْا اَيْتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَمَا اَنْزَلَ عَلَيْنَا مِنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ وَاعْلَمُوْا ۝۱۳ اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

तलाक दो बार है। फिर या तो कायदे के मुताबिक रख लेना है या खुशउत्तुबी के साथ रुख़सत कर देना। और तुम्हारे लिए यह बात जाइज नहीं कि तुमने जो कुछ इन औरतों को दिया है उसमें से कुछ ले लो मगर यह कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की हदों पर कायम न रह सकेंगे। फिर अगर तुम्हें यह डर हो कि दोनों अल्लाह की हदों पर कायम न रह सकेंगे तो दोनों पर गुनाह नहीं उस माल में जिसे औरत फ़िदये में दे। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनसे बाहर न निकलो। और जो शख्स अल्लाह की हदों से निकल जाए तो वही लोग जलित हैं। फिर अगर वह उसे तलाक दे दे तो इसके बाद वह औरत उसके लिए हलाल नहीं जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से निकाह न करे। फिर अगर वह मर्द उसे तलाक दे दे तब गुनाह नहीं उन दोनों पर कि फिर मिल जाएं बशर्ते कि उन्हें अल्लाह की हदों पर कायम रहने की उम्मीद हो। ये खुदावंदी हदें (सीमाएं) हैं जिन्हें वह बयान कर रहा है उन लोगों के लिए जो दानिशमंद हैं। और जब तुम औरतों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत तक पहुंच जाएं तो उन्हें या तो कायदे के मुताबिक रख लो या कायदे के मुताबिक रुख़सत कर दो। और तकलीफ पहुंचाने की ग़र्ज से न रोको ताकि उन पर ज्यादाती करो। और जो ऐसा करेगा उसने अपना ही बुरा किया। और अल्लाह की आयतों को खेल न बनाओ। और याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को और उस किताब व हिकमत (तत्वदर्शिता) को जो उसने तुम्हारी नसीहत के लिए उतारी है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (229-231)

तलाक एक ग़ैर-मामूली वाकया है जो ग़ैर-मामूली हालात में पेश आता है मगर इस इतिहाई ज़बाती मामले में भी तकवा और एहसान (शालीनता, सद्व्यवहार) पर कायम रहने का हुक्म दिया गया है। इससे अंदाजा किया जा सकता है कि दुनिया की ज़िंदगी में मोमिन से किस किस का सुलूक अल्लाह तआला को मल्लूब है।

निकाह के रिश्ते को एक ही वक़्त में तोड़ने के बजाए इसे तीन मरहलों में अंजाम देने का हुक्म हुआ है जो कुछ महीनों में पूरा होता है। एक इतिहाई हैजानी मामले में इस किस्म का संजीदा तरीक़ा मुकर्र करके बताया गया कि इज़्तेलाफ़ (मतभेद) के वक़्त मोमिन का रवैया कैसा होना चाहिए। अपने मुख़लिफ़ फ़रीक़ (पक्ष) के साथ उसका सुलूक ग़ैर-ज़बाती अंदाज़ में सोचा हुआ साबिराना फैसला हो न कि इश्तेआल (उत्तेजना) के तहत जाहिर होने वाला अचानक फैसला। इसी तरह तलाक के जितने आदाब मुकर्र किए गए हैं सबमें ज़िंदगी का बहुत गहरा सबक मौजूद है। अलाहिदगी (अलग होने) का इरादा करने के बाद भी आदमी

एक मुद्दत तक दुबारा इत्तेहाद के इम्कान पर गौर करता है। तअल्लुकात के ख़ात्मे की नौबत आ जाए तब भी वह उसे इंसानियत के हुक्क के ख़ात्मे के हममअना न बनाए। आपसी सुलूक के लिए अल्लाह का जो कानून है उसकी मुकम्मल पाबंदी की जाए। शरीअत के किसी हुक्म को क़मूनी बहानों के जरिए ख़ूद न किया जाए। क़मूनी की तामील में सिर्फ़ क़मूनी के अल्फ़ज को न देखा जाए बल्कि उसकी हिक्मत (कानून की मूल भावना) को भी सामने रखा जाए। अलाहिदगी से पहले अपने साबका (पूर्व) साथी को जो कुछ दिया था उसे अलाहिदगी के बाद वापस लेने की कोशिश न की जाए। जिस तरह तअल्लुक के जमाने को खुशउस्लूबी के साथ गुजारा था उसी तरह अलाहिदगी के जमाने को भी खुशउस्लूबी के साथ गुजारा जाए।

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ
أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَائُوا بَيْنَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ لَكُمْ وَآطَهُرُّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ۝ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ
يُتِمَّ الرِّضَاعَ ۝ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِشْقُهُنَّ وَكَسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۝ لَا تُكَلِّفُ
نَفْسٌ الْاُوسْعَهَا لَاتِّصَارَ وَالِدَةٌ بَوْلِدًا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بَوْلِدَةٌ ۝ وَعَلَى
الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ ۝ فَإِنْ أَرَادَ اِفْصَالُ عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا ۝ وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا
سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

और जब तुम अपनी औरतों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन्हें न रोको कि वे अपने शोहरों से निकाह कर लें। जबकि वे दस्तूर (सामान्य नियम) के अनुसार आपस में राजी हो जाएं। यह नसीहत की जाती है उस शख्स को जो तुममें से अल्लाह और आखिरत के दिन पर यकीन रखता हो। यह तुम्हारे लिए ज्यादा पाकीजा और सुगरा तरीका है। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलाएं उन लोगों के लिए जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहते हों। और जिसका बच्चा है उसके जिम्मे है इन मांओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक। किसी को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बर्दास्त के मुताबिक। न किसी मां को उसके बच्चे के सबब से तकलीफ दी जाए। और न किसी बाप को उसके बच्चे के सबब से। और यही जिम्मेदारी वारिस पर भी है। फिर अगर दोनों आपसी

रजामंदी और मशवरे से दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं। और अगर तुम चाहो कि अपने बच्चे को किसी और से दूध पिलवाओ तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। बशर्ते कि तुम कायदे के मुताबिक वह अदा कर दो जो तुमने उन्हें देना ठहराया था। और अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (232-233)

एक औरत को उसके ख़ाविंद ने तलाक दे दी और इद्दत के जमाने में रजअत (मिलन) न की। जब इद्दत ख़त्म हो चुकी तो दूसरे लोगों के साथ पहले शौहर ने भी निकाह का पैगाम दिया। औरत ने अपने पहले शौहर से दुबारा निकाह करना मंजूर कर लिया मगर औरत का भाई गुस्से में आ गया और निकाह को रोक दिया। इस पर यह हुक्म उतरा की जब दोनों दुबारा वैवाहिक संबंध कायम करने पर राजी हैं तो रुकावट न डालो।

तलाक के बाद भी अक्सर बहुत से मसाइल बाकी रहते हैं। कभी पहले शौहर से दुबारा निकाह का मामला होता है। कभी तलाकशुदा औरत किसी दूसरे मर्द से शादी करना चाहती है। ऐसे मौकों पर मुश्किलें पैदा करना दुरुस्त नहीं। कभी तलाकशुदा औरत बच्चे वाली होती है और साबका (पूर्व) शौहर के बच्चे के दूध पिलाने का मसला होता है। ऐसी हालत में एक-दूसरे को तकलीफ देने से मना किया गया और हुक्म दिया गया कि इस मामले को जज्वात का सवाल न बनाओ। इसे आपसी मशवरे और रजामंदी से तै कर लो। इससे अंदाजा होता है कि इस्तेलाफ और अलाहिदगी के वक्त मामले को निपटाने का मोमिनाना तरीका क्या है। वह यह कि दोनों पक्षों की जानिब जो मसाइल बाकी रह गए हों उन्हें एक-दूसरे को परेशान करने का जरिया न बनाया जाए बल्कि उन्हें ऐसे ढंग से तै किया जाए जो दोनों जानिब के लिए बेहतर और कबिले कबूल हो। ईमान रूह की पाकीजगी है फिर जिसकी रूह पाक हो चुकी हो वह अपने मामलात में नापाकी का तरीका कैसे अपना सकता है।

नसीहत किसी के लिए सिर्फ़ इस बुनियाद पर क़बिले कुबूल नहीं हो जाती कि वह बरहक है। जरूरी है कि सुनने वाला अल्लाह पर यकीन रखता हो और उसकी पकड़ से डरने वाला हो। वह समझे कि नसीहत करने वाले की नसीहत को रद्द करने के लिए आज अगर मैंने कुछ अल्फ़ज पा लिए तो इससे अस्ल मसला ख़त्म नहीं हो जाता। क्योंकि मामला विलआखिर अल्लाह की अदालत में पेश होना है। और वहां किसी किस्म का जोर और कोई लफ्ज़ी हुज्जत काम आने वाली नहीं।

وَالَّذِينَ يَتَوَقَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ
وَعَشْرًا ۖ وَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ
مِنْ خُطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ ۖ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذَرُونَهُنَّ

وَلَكِنْ لَا تَأْخُذْ بِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا وَلَا تَعْرِضُوا عَنْ قَوْلِ
النِّكَاحِ حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ
تَمْسُوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى الْمَوْسِعِ قَدَرُهُ
وَعَلَى الْمَقْتَرِ قَدَرُهُ ۚ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْحُسَيْنِينَ ۝ وَإِنْ
طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَرْصُفٌ
مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ
تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَى ۚ وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِمَا

تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

और तुममें से जो लोग मर जाएं और बीवियां छोड़ जाएं वे बीवियां अपने आप को चार महीने दस दिन तक इंतजार में रखें। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंचें तो जो कुछ वे अपने बारे में कायदे के मुवाफिक करें उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह बाख़बर है। और तुम्हारे लिए इस बात में कोई गुनाह नहीं कि इन औरतों को पैगाम देने में कोई बात इशारे में कहो या अपने दिल में छुपाए रखो। अल्लाह को मालूम है कि तुम जरूर इनका ध्यान करोगे। मगर छुपकर इनसे वादा न करो, तुम इनसे सिर्फ दस्तूर के मुताबिक कोई बात कह सकते हो। और निकाह का इरादा उस वक्त तक न करो जब तक निर्धारित मुद्दत पूरी न हो जाए। और जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। पस उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मूल (संयम) वाला है। अगर तुम औरतों को ऐसी हालत में तलाक दो कि न इन्हें तुमने हाथ लगाया है और इनके लिए कुछ महर मुकर्रर किया है तो इनके महर का तुम पर कुछ मुवाख़िजा (देय) नहीं। अलबत्ता उन्हें दस्तूर के मुताबिक कुछ सामान दे दो, वरुअत वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक है और तंगी वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक, यह नेकी करने वालों पर लाजिम है। और अगर तुम उन्हें तलाक दो इससे पहले कि उन्हें हाथ लगाओ और तुम उनके लिए कुछ महर भी मुकर्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुकर्रर किया हो उसका आधा अदा करो। यह और बात है कि वे माफ कर दें या वह मर्द माफ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गिरह है। और तुम्हारा माफ कर देना ज्यादा करीब है तक्व़ा से। और आपस में एहसान करने से गमलत मत करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (234-237)

निकाह और तलाक के कानून बयान करते हुए बार-बार तक़्वा और एहसान की नसीहत की जा रही है। इससे मालूम हुआ कि किसी हुक्म को उसकी अस्ल रूह के साथ ज़ेरेअमल लाने के लिए जरूरी है कि मआशरे (समाज) के अफ़राद ख़ालिस कानूनी मामला करने वाले न हों बल्कि एक-दूसरे के साथ हुस्ने सुलूक का जज्बा रखते हों। इसी के साथ उन्हें यह खटका लगा हुआ हो कि दूसरे के साथ बेहतर सुलूक न करना खुद अपने बारे में बेहतर सुलूक न किए जाने का खतरा मोल लेना है क्योंकि बिलआख़िर सारा मामला खुदा के यहां पेश होना है और वहां न लफ़्जी तावीलें किसी के काम आएंगी और न किसी के लिए यह मुमकिन होगा कि वह मामले से मुतअल्लिक किसी बात को छुपा सके।

अगर निकाह के वक्त औरत का महर मुकर्रर हुआ और तअल्लुक कायम होने से पहले तलाक हो गई तो कानून के एतबार से आधा महर देना लाजिम किया गया है। मगर ख़ैरबख़ाली का तक़्वा है कि दोनों इस मामले में कानूनी बर्ताव के बजाए फ़याजना (उदारता, सहृदयतापूर्ण) बर्ताव करना चाहें। औरत के अंदर यह मिजाज हो कि जब तअल्लुक कायम नहीं हुआ तो मैं आधा महर छोड़ दूँ। मर्द के अंदर यह जज्बा उभरे कि अगरचे कानूनन मेरे ऊपर सिर्फ आधे की ज़िम्मेदारी है मगर फ़याजी का तक़्वा है कि मैं पूरा का पूरा अदा कर दूँ। फ़याजी और वरुअते जर्फ (सहृदयता) का यही मिजाज तमाम मामलों में मल्बू है। वही मआशरा मुस्लिम मआशरा है जिसके अफ़राद का यह हाल हो कि हर एक-दूसरे को देना चाहे न यह कि हर एक-दूसरे से लेने का हरीस बना हुआ हो। साथ ही यह भी कि वरुअते जर्फ का यह मामला दुम्नी के वक्त भी हो न कि सिर्फ देस्ती के वक्त।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ۝ فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۚ وَصِيَّةٌ لِأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

पाबंदी करो नमाजों की और पाबंदी करो बीच की नमाज की। और खड़े हो अल्लाह के सामने आजिम बने हुए। अगर तुम्हें अंदेशा हो तो पैदल या सवारी पर पढ़ लो। फिर जब अमन की हालत आ जाए तो अल्लाह को उस तरीके से याद करो जो उसने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे। और तुममें से जो लोग वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ रहे हों वे अपनी बीवियों के बारे में वसीयत कर दें कि एक साल तक उन्हें

घर में रखकर खर्च दिया जाए। फिर अगर वे खुद से घर छोड़ दें तो जो कुछ वे अपने मामले में दस्तूर के मुताबिक करें उसका तुम पर कोई इल्जाम नहीं। अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। और तलाक दी हुई औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक खर्च देना है, यह लाजिम है परहेजगारों के लिए। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम खोलकर बयान करता है ताकि तुम समझो। (238-242)

नमाज गोया दीन का खुलासा है। नमाज मोमिनाना जिंदगी की वह मुख़्तसर तस्वीर है जो फैलती है तो मुकम्मल इस्लामी जिन्दगी बन जाती है। यहां एक छोटे से जुमले में नमाज के तीन अहमतरीन अजजा (टुकड़ों) को बयान कर दिया गया है (1) नमाज का पांच वक़्त के लिए फर्ज होना। (2) नमाज का एक क़विले एहतेमाम चीज होना। (3) यह बात कि नमाज की अस्त हक्कीकत इज्ज (विनय भाव) है।

‘पाबंदी करो नमाजों की और पाबंदी करो बीच की नमाज की।’ इससे मालूम हुआ कि नमाजों में एक बीच की नमाज है और फिर इसके दोनों तरफ नमाजें हैं। इस जुमले में अतराफ की ‘नमाजों’ से कम से कम चार की तादाद मान लेना जरूरी है। क्योंकि अरबी ज़बान में ‘सलवात’ (नमाजों) का इतलाक तीन या इससे ज्यादा के अदद के लिए होता है। पहला मुमकिन अदद जिसमें ‘नमाजों’ के दर्मियान एक ‘बीच की’ नमाज बन सके, चार ही है। इस तरह एक नमाज बीच की नमाज होकर इसके दोनों तरफ दोनो नमाजें हो जाती हैं। ‘बीच की नमाज’ से मुराद अम्र की नमाज है। जैसा कि रिवायत से साबित है। नमाज के दूसरे पहलू को बताने के लिए ‘मुफ़ाजिजत’ (संरक्षा) का लफ़्ज इस्तेमाल हुआ है। गोया नमाज उसी तरह हिफ़ज की एक चीज है जिस तरह माल आदमी के लिए हिफ़ज की चीज होता है। नमाज के वक़्तों का पूरा लिहाज, उसके बताए हुए तरीके पर अदा करने का एहतेमाम, ऐसी चीजों से पक्के इरादे से बचना जो आदमी की नमाज में कोई ख़राबी पैदा करने वाली हों, वैसा ही मुफ़ाजिजे नमाज में शामिल है। नमाज का तीसरा पहलू इज्ज है। यह नमाज की अस्त रूह है, नमाज बंद का अल्लाह के सामने खड़ा होना है। इसलिए जरूरी है कि नमाज के वक़्त आदमी के ऊपर वह कैफ़ियत तारी हो जो सबसे बड़े के आगे खड़े होने की सूरत में सबसे छोटे के ऊपर तारी होती है।

माआशरत (सामाजिकता) के अहकाम बताते हुए यह कहना कि ‘यह हक़ है मुत्तकियों के ऊपर’ शरीअत के एक अहम पहलू को ज़हिर करता है। आपसी मामलों में कुछ हुक्म वे हैं जिन्हें क़ानून ने सुनिश्चित कर दिया है। मगर एक आदमी पर दूसरे के हुक्म की हदें यहीं ख़त्म नहीं हो जाती। सुनिश्चित हुक्म के अलावा भी कुछ हुक्म हैं। ये हुक्म वे हैं जिन्हें आदमी का तक़्वा उसे महसूस कराता है। और आदमी का मुत्तकयाना एहसास जितना शदीद हो उतना ही ज्यादा वह इसे अपने ऊपर लाजिम समझता है। अंदर का यह जोर अगर मौजूद न हो तो आदमी कभी सही तौर पर दूसरों के हुक्म अदा नहीं कर सकता।

الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ وَ قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفَ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْطِطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से भाग खड़े हुए मौत के डर से, और वे हजारों की तादाद में थे। तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ। फिर अल्लाह ने इन्हें जिंदा किया। बेशक अल्लाह लोगों पर फ़त्ल करने वाला है। मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। और अल्लाह की राह में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। कौन है जो अल्लाह को कर्जे हसन दे कि अल्लाह इसे बढ़ाकर उसके लिए कई गुना कर दे। और अल्लाह ही तंगी भी पैदा करता है और कुशादगी भी। और तुम सब उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (243-245)

मक्का से तंग आकर मुसलमान मदीना चले आए। मदीना में अपने दीन के मुताबिक रहने के लिए निस्वतन (अपेक्षाकृत) आजादाना माहौल था। मगर इस्लाम के विरोधियों ने अब भी उन्हें न छोड़ा। उन्होंने फौजी हमले शुरू कर दिए ताकि मदीना से मुसलमानों का ख़ात्मा कर दें। उस वक़्त हुक्म हुआ कि उनसे मुक़बला करो। विरोधियों की अपेक्षा इस वक़्त मुसलमानों की ताकत बहुत कम थी। इसलिए कुछ लोगों के अंदर बेहिम्मती पैदा हुई। यहां बनी इस्राईल के इतिहास का एक वाक़या याद दिला कर बताया गया कि जिंदगी के मोर्चे में शिकस्त से डरने ही का नाम शिकस्त है।

बनी इस्राईल की एक पड़ोसी कौम फिलिस्ती ने उन पर हमला कर दिया। बनी इस्राईल हार गए। फिलिस्तिनियों ने दो हमलों में इनके चौतीस हजार आदमी मार डाले। बनी इस्राईल इतना डरे कि अपने घरों को छोड़कर भाग गए। बाइबल के अल्फ़ाज में ‘हशमत (प्रताप) बनी इस्राईल के हाथों से जाती रही।’ बनी इस्राईल का सारा घराना ख़ौफ में मुक़बला होकर विलाप करने लगा। इसी हाल में इन्हें बीस साल गुजर गए। फिर इन्होंने सोचा कि फिलिस्तिनियों के सामने उन्हें शिकस्त क्यों हुई। उनके नबी समूईल ने कहा कि शिकस्त की वजह खुदा में तुम्हारे यकीन का कमजोर हो जाना है। उन्होंने इस्राईल के सारे घराने से कहा कि अगर तुम अपने सारे दिल से खुदावंद की तरफ रुजूआ लाते हो तो अजनबी देवताओं को अपने बीच से दूर कर दो। और खुदावंद के लिए अपने दिलों को मुस्तइद (एकाग्र) करके सिर्फ उसी की इबादत करो। खुदा फिलिस्तिनियों के हाथ से तुम्हें रिहाई देगा। तब इस्राईल ने अजनबी देवताओं को अपने से दूर किया और फ़त्त खुदावंद की इबादत करने लगे। अब जब दुबारा फिलिस्तिनियों

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَفَرَّجُوا يَمِينَهُ
 إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَطَلَبَا جَاوِزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ
 بِطَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْقَوُا اللَّهَ كَمْ مَرْنٍ فَنَزَّ قَلِيلًا
 غَلَبَتْ فِيهِمْ كَثِيرَةٌ يَّا ذُنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَمَّا بَارَوْا طَالَوتُ وَجُنُودُهُ
 قَالُوا رَبَّنَا آفِرْغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝
 فَهَرَمُوهُمْ يَّا ذُنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَاتَّهَ اللَّهُ الْمَلِكُ وَالْحَكِيمُ وَعَلِمَهُ
 مِمَّا يَشَاءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ
 وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

फिर जब तालूत फौजों को लेकर चला तो उसने कहा : अल्लाह तुम्हें एक नदी के जरिए आजमाने वाला है। पस जिसने उसका पानी पिया वह मेरा साथी नहीं और जिसने उसे न चखा वह मेरा साथी है। मगर यह कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले। तो उन्होंने इसमें से खूब पिया सिवाए थोड़े आदमियों के। फिर जब तालूत और जो उसके साथ ईमान पर कायम रहे थे दरिया पार कर चुके तो वे लोग बोले कि आज हमें जालूत और उसकी फौजों से लड़ने की ताकत नहीं। जो लोग यह जानते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने कहा कि कितनी ही छोटी जमाअतें अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आई हैं। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जब जालूत और उसकी फौजों से उनका सामना हुआ तो उन्होंने कहा : कि ऐ हमारे रब हमारे ऊपर सब्र डाल दे और हमारे कदमों को जमा दे और इन मुंकिरों के मुकाबले में हमारी मदद कर। फिर उन्होंने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी। और दाऊद ने जालूत को कत्ल कर दिया। और अल्लाह ने दाऊद को बादशाहत और दानाई (सूझबूझ) अता की और जिन चीजों का चाहा इल्म बख़्शा। और अगर अल्लाह कुछ लोगों को कुछ लोगों के जरिए हटाता न रहे तो ज़मीन फ़साद से भर जाए। मगर अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा फ़ल फ़रमाने वाला है। (249-251)

मूसा के तकरीबन तीन सौ साल बाद और हजरत मसीह से तकरीबन एक हजार साल पहले

ऐसा हुआ कि फिलिस्तीनों ने बनी इस्राईल पर हमला किया और फिलिस्तीन के अक्सर इलाके उनसे छीन लिए। एक अर्से के बाद बनी इस्राईल ने चाहा कि वे फिलिस्तीनों के खिलाफ़ इक़दाम करें और अपने इलाके उनसे वापिस लें, उस वक़्त उनके दर्मियान एक नबी थे जिनका नाम समूईल था वह शाम के एक कदीम शहर रामह में रहते थे और बनी इस्राईल के सामूहिक मामलों के जिम्मेदार थे। बनी इस्राईल का एक वफ़द (प्रतिनिधिमण्डल) उनसे मिला। और कहा कि आप अब बूढ़े हो चुके हैं, इसलिए आप हममें से किसी को हमारे ऊपर बादशाह मुकर्रर कर दें, ताकि हम उसकी रहनुमाई में जंग कर सकें। तौरात के अल्फ़ाज में 'और हमारा बादशाह हमारी अदालत करे और हमारे आगे-आगे चले और हमारी लड़ाई करे।'

हजरत समूईल अगरचे यहूद के किरदार के बारे में अच्छी राय न रखते थे ताहम उनकी मांग की बुनियाद पर उन्होंने कहा कि अच्छा मैं तुम्हारे लिए एक बादशाह मुकर्रर कर दूंगा। अतः उन्होंने कबीला बिन यमीन के एक बहादुर नौजवान साऊल (तालूत) को उनका बादशाह (सरदार) मुकर्रर कर दिया।

साऊल (तालूत) बनी इस्राईल का लश्कर लेकर दुश्मन की तरफ बढ़े, रास्ते में यरदन नदी पड़ती थी इसे पार करके दुश्मन के इलाके में पहुंचना था। क्योंकि तालूत को बनी इस्राईल की कमजोरियों का इल्म था उन्होंने उनकी जांच के लिए एक सादा तरीका इस्तेमाल किया। नदी को पार करते हुए उन्होंने एलान किया कि कोई शख्स पानी न पिए। अलबत्ता एक आध चुल्लू ले ले तो कोई हर्ज नहीं। बनी इस्राईल की बड़ी तादाद इस इन्तेहान में पूरी न उतरी। ताहम इस मुक़ाबले में अल्लाह तआला ने उन्हें कामयाबी दी। हजरत दाऊद उस वक़्त सिर्फ़ एक नौजवान थे, उन्होंने इस जंग में फैसलाकुन किरदार अदा किया। फिलिस्तीनों की फौज का जबरदस्त पहलवान जालूत उनके हाथ से कत्ल हुआ। इसके बाद फिलिस्तीनों ने इस्राईल के मुकाबले में हथियार डाल दिए।

मुक़ाबले में कामयाबी हासिल करने के लिए जरूरी है कि अफ़साद के अंदर मुश्किलात पर जमने और सरदार की इताअत (आज्ञापालन) करने का माद़्दा हो। तालूत का अपने साथियों को पानी पीने से मना करना इसी क्षमता की जांच की एक सादा सी तदबीर थी। बाइबल के बयान के मुताबिक़ इनमें से सिर्फ़ छः सौ आदमी ऐसे निकले जिन्होंने रास्ते में आने वाली नदी का पानी नहीं पिया। जिन लोगों ने पानी पिया उन्होंने गोया अपनी अख़्ताकी कमजोरियों को और पुख़्ता कर लिया। इसलिए दुश्मन का बजाहिर ताक़तवर होना अब उन्हें और ज्यादा महसूस होने लगा। दूसरी तरफ़ जिन लोगों ने पानी नहीं पिया था उनके इस ख़ेस (कार्य) से उनका सब्र और इताअत का मिजाज और ज्यादा मजबूत हो गया। उन्हें वह हकीक़त और ज्यादा वाजेह सूत में दिखाई देने लगी जिसे बाइबल के बयान के मुताबिक़ तालूत के एक साथी ने इन लफ़्जों में बयान किया था : 'और यह सारी जमाअत जान ले कि खुदावंद तलवार और भाले के जरिए से नहीं बचाता। इस लिए कि जंग तो खुदावंद की है और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।' (1-समूईल, 48 : 17)

सत्ता जिसके पास हो वह कुछ दिनों बाद घमंड में पड़ कर जुल्म करने लगता है। इसलिए सत्ता किसी के पास स्थाई रूप से जमा हो जाए तो उसके जुल्म व फसाद से जमीन भर जाए। इसकी तलाफी का इन्तेजाम अल्लाह ने इस तरह किया है कि वह सत्ताधारियों को बदलता रहता है। वह सत्ताहीन लोगों में से एक गिरोह को उठाता है और उसके जरिए से सत्ताधारी को हटा कर उसके मंसब पर दूसरे को बैठा देता है। इसका मतलब यह है कि जब किसी सत्ताधारी वर्ग का जुल्म बढ़ जाए तो यह उसके खिलाफ उठने वाले गिरोह के लिए खुदाई मदद का वक़्त होता है। अगर वह सब्र और इताअत की शर्त को पूरा करते हुए अपने आप को खुदाई मंसूबे में शामिल कर दे तो बजाहिर कम होने के बावजूद वह खुदा की मदद से ज्यादा के ऊपर ग़ालिब आ जाएगा। खुदा का ख़ैफ़ महज़ एक मंमि (नकारात्मक) चीज़ नहीं वह एक इल्म है जो आदमी के ज़ेहन को इस तरह रोशन कर देता है कि वह हर चीज़ को उसके असली और हकीकी रूप में देख सके।

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ يُنْتَلُوها عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٣﴾
تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَهُ
بَعْضُهُمْ دَرَجَاتٍ ۚ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ
اخْتَلَفُوا فَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا وَلَكِنْ
اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٤﴾

ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें सुनाते हैं ठीक-ठीक। और बेशक तू पैग़म्बरों में से है इन पैग़म्बरों में से कुछ को हमने कुछ पर फज़ील दी। इनमें से कुछ से अल्लाह ने कलाम किया। और कुछ के दर्जे बुलंद किए। और हमने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां दीं और हमने उसकी मदद की रूहुल कुदूस से। अल्लाह अगर चाहता तो इनके बाद वाले साफ़ हुक्म आ जाने के बाद न लड़ते मगर उन्होंने मतभेद किया। फिर इनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने इंकार किया। और अगर अल्लाह चाहता तो वे न लड़ते। मगर अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (252-253)

अल्लाह की तरफ से कोई पुकारने वाला जब लोगों को पुकारता है तो उसकी पुकार में ऐसी निशानियां शामिल होती हैं कि लोगों को यह समझने में देर न लगे कि वह खुदा की तरफ से है। इसके बावजूद लोग इसका इंकार कर देते हैं और ये इंकार करने वाले सबसे पहले वे लोग होते हैं जो रिसालत को मानते चले आ रहे थे। इसकी वजह यह होती है कि वे जिस रसूल को मान रहे होते हैं उसकी कुछ ख़ुसूसियात की बुनियाद पर वह उसकी अफज़लियत का तसव्वुर कायम कर लेते हैं। वे समझते हैं कि जब हमारा रसूल इतना अफज़ल है और उसे

हम मान रहे हैं तो अब किसी और को मानने की क्या ज़रूरत।

हर पैग़म्बर मुख़लिफ़ हालात में आता है और अपने मिशन की तक़मील के लिए हर एक को अलग-अलग चीज़ों की ज़रूरत होती है। इस एतबार से किसी पैग़म्बर को एक फज़ीलत (खास चीज़) दी जाती है और किसी को दूसरी फज़ीलत। बाद के दौर में पैग़म्बर की यही फज़ीलत उसके उम्मतियों के लिए फितना बन जाती है। वे अपने नबी को दी जाने वाली फज़ीलत को तज़्ज़ी फज़ीलत के बजाए मुतलक फज़ीलत के मअना में लेते हैं। वे समझते हैं कि हम सबसे अफज़ल पैग़म्बर को मानते हैं। इसलिए अब हमें किसी और को मानने की ज़रूरत नहीं। मूसा (अलै०) को मानने वालों ने मसीह (अलै०) का इंकार किया क्योंकि वे समझते थे उनका नबी इतना अफज़ल है कि खुदा बराहिरास्त उससे हमकलाम हुआ। हज़रत मसीह के मानने वालों ने मुहम्मद (सल्ल०) का इंकार किया। क्योंकि उन्होंने समझा कि वह ऐसी हस्ती को मान रहे हैं जिसकी फज़ीलत इतनी ज्यादा है कि खुदा ने उसे बाप के बौर पैदा किया। इसी तरह अल्लाह के वे बंदे जो उम्मतें मुहम्मदी की इस्लाह व तजदीद के लिए उठे उनका भी लोगों ने इंकार किया। क्योंकि उनके मुख़ातिबीन की नफ़िसयात यह थी कि हम बुजुर्गों के वारिस हैं, हम बड़ों का दामन थामे हुए हैं फिर हमें किसी और की क्या ज़रूरत। उम्मतों के जवाल (पतन) के जमाने में ऐसा होता है कि लोग दुनिया के रास्ते पर चल पड़ते हैं। इसी के साथ वे चाहते हैं कि उनकी जन्नत भी महफूज़ रहे। उस वक़्त यह अक्कीदा उनके लिए एक नफ़िसयाती सहारा बन जाता है। वे अपनी मुक़द्दस शख़्सियतों की अफज़लियत के तसव्वुर में यह तस्कीन पा लेते हैं कि दुनिया में चाहे वे कुछ भी करें उनकी आख़िरत कभी ख़तरे में नहीं पड़ेगी।

यही ग़लत एतमाद है जो लोगों को अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की मुख़ालिफ़त पर अड़ा देता है। अल्लाह के लिए यह मुमकिन था कि वह लोगों की हिदायत और रहनुमाई के लिए कोई दूसरा निजाम कायम करता जिसमें किसी के लिए इज़्ज़ेलाफ़ (मतभेद) की गुंजाइश न हो। मगर यह दुनिया इम्तेहान की जगह है। यहां तो इसी बात की आजमाइश हो रही है कि आदमी ग़ैब (अदृश्य) की हालत में खुदा को पाए। इंसान की जबान से बुलंद होने वाली खुदाई आवाज़ को पहचाने। जाहिरी पर्दों से गुजर कर सच्चाई को उसके बातिनी (भीतरी) रूप में देख ले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَئِءَ فِيهِ
وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ۚ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ
الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَنْ
ذَ الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا
يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ لَا اكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ

الرَّشْدُ مِنَ الْعَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٥ وَالَّذِينَ آمَنُوا
يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِهِمُ الطَّاغُوتُ
يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ٦

ए ईमान वालो ख़र्च करा उन चीज़ों से जो हमने तुम्हें दिया है उस दिन के आने से पहले जिसमें न ख़रीद-फ़रोज़ है और न दोस्ती है और न सिफ़ारिश। और जो इंकार करने वाले हैं वही हैं जुल्म करने वाले। अल्लाह, इसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह जिंदा है, सबको थामने वाला। उसे न ऊँघ आती है और न नींद। उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। कौन है जो उसके पास उसकी इजाजत के बिना सिफ़ारिश करे। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके इल्म में से किसी चीज़ का इहाता (ग्रहण) नहीं कर सकते, मगर जो वह चाहे। उसकी हुक्मत आसमानों और ज़मीन में छाई हुई है। वह थकता नहीं इनके थामने से। और वही है बुलंद मर्तबा, बड़ा। दीन के मामले में कोई जबरदस्ती नहीं। हिदायत गुमराही से अलग हो चुकी है। पस जो शख़्स शैतान का इंकार करे और अल्लाह पर ईमान लाए उसने मजबूत हल्का पकड़ लिया जो टूटने वाला नहीं। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह काम बनाने वाला है ईमान वालों का, वह उन्हें अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ़ लाता है, और जिन लोगों ने इंकार किया उनके दोस्त शैतान हैं, वे उन्हें उजाले से निकाल कर अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं। ये आग में जाने वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (254-257)

खुदा को वही पाता है जो इफ्राक (खुदा की राह में खर्च करना) की कीमत देकर खुदा को इख्तियार करे। और कोई आदमी जब खुदा को पा लेता है तो वह एक ऐसी रोशनी को पा लेता है जिसमें वह भटके बगैर चलता रहे। यहां तक कि जन्नत में पहुंच जाए। इसके बरअक्स जो शख्स इफ्राक की कीमत दिए बगैर खुदा को इख्तियार करे वह हमेशा अंधेरे में रहता है, जहां शैतान उसे बहका कर ऐसे रास्तों पर चलाता है जिसकी आखिरी मंजिल जहन्नम के सिवा और कुछ नहीं।

इंफ़क से मुराद अपने आपको और अपने असासे (धन-सम्पत्ति) को दीन की राह में खर्च करना है। अपनी मस्तेहतों को कुर्बान करके दीन की तरफ आगे बढ़ना है। आदमी जब किसी अक़ीदे (आस्था, विश्वास) को इंफ़क की वीमत पर अपनाए तो इसका मतलब यह होता है कि वह इसे अपना ने में संजीदा (Sincere) है। यह संजीदा होना बेहद अहम है। किसी मामले में संजीदा होना ही वह चीज है जो आदमी पर इस मामले के भेदों को खोलता है। संजीदा होने के बाद ही यह इम्कान पैदा होता है कि आदमी और उसके मक़सद के दर्मियान हकीकी तालूक क़यम हो और मक़सद के तमाम पहलू उस पर वजह हों। इसके बरअक्स

मामला उस शख्स का है जो अपनी हस्ती की हवालगी की कीमत पर दीन को न अपनाए। ऐसा शख्स कभी दीन के मामले में संजीदा नहीं होगा और इस बिना पर वह आखिरत के मामले को एक आसान मामला मान लेगा। वह समझेगा कि बुजुर्गों की सिफारिश या दीन के नाम पर कुछ रस्मी और जाहिरी कारवाइयां आखिरत की नजात के लिए काफी हैं। आखिरत के मामले में संजीदा न होने की वजह से वह इस राज को न समझेगा कि आखिरत तो मालिके कायनात की अज्मत व जलाल (प्राप्त) के जुहूर का दिन है। एक ऐसे दिन के बारे में महज सरसरी चीजों पर कामयाबी की उम्मीद कर लेना खुदा की खुदाई का कमतर अंदाजा करना है जो खुदा के यहां आदमी के जुर्म को बढ़ाने वाला है न कि वह उसकी मकबूलियत का सबब बने। खुदा की बात आदमी के सामने दलील की जवान में आती है और वह कुछ अस्फ़ाज बोलकर उसे रद्द कर देता है। यही शैतानी वसवसा है। हिदायत उसे मिलती है जो शैतान के वसवसे से अपने को बचाए और खुदाई दलील को पहचान कर उसके आगे झुक जाए।

أَمَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ
رَبِّىَ الَّذِى يُبْحِى وَيُنِىئُ ۖ قَالَ أَنَا حَجِىٌّ وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِ
بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِى كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٦٧﴾

क्या तुमने उसे नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में हुज्जत की। क्योंकि अल्लाह ने उसे सल्लतन दी थी। जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है। वह बोला कि मैं भी जिलाता हूँ और मारता हूँ। इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह सूरज को पूर्व से निकालता है तुम उसे पश्चिम से निकाल दो। तब वह मुँकिर हैरान रह गया। और अल्लाह जालिमों को राह नहीं दिखाता। (258)

मौजूदा जमाने में अवांमी तार्दीद से हुकूमत की पात्रता हासिल होती है। मगर जम्हूरियत के दौर से पहले अक्सर बादशाह लोगों को यह यकीन दिलाकर उनके ऊपर हुकूमत करते थे कि वे खुदा के इंसानी पैकर हैं। प्राचीन इराक के बादशाह नमरूद का मामला यही था जो हजरत इब्राहीम का समकालीन था। उसकी कौम सूरज को देवताओं का सरदार मानती थी। और उसकी पूजा करती थी। नमरूद ने कहा कि वह सूर्य-देवता का प्रकट रूप है, इसलिए वह लोगों के ऊपर हुकूमत करने का खुदाई हक रखता है। हजरत इब्राहीम ने उस वक्त के इराक में जब तौहीद (एकेश्वरवाद) की आवाज बुलंद की तो इसका सियासत और हुकूमत से बराहेरास्त कोई ताल्लुक न था। आप लोगों से सिर्फ यह कह रहे थे कि तुम्हारा ख़ालिक और मालिक सिर्फ एक अल्लाह है। कोई नहीं जो खुदाई में उसका शरीक हो। इसलिए तुम उसी की इबादत करो। उसी से डरो और उसी से उम्मीदें कायम करो। ताहम इस ग़ैर-सियासी दावत में नमरूद को अपनी सियासत पर ज़द पड़ती हुई नज़र आई। ऐसा अक़ीदा जिसमें सूरज को एक शक्तिहीन रचना बताया गया हो वह गोया उस आस्थागत आधार ही को ढा रहा था जिसके ऊपर नमरूद ने

अपना सियासी तख़्त बिछा रखा था। इस वजह से आपका दुश्मन हो गया।

इब्राहीम (अलै०) ने नमरूद से जो गुप्तगू की उससे नबियों की दावत (आह्वान) का तरीका मालूम होता है। नमरूद के सवाल के जवाब में आपने फरमाया कि मेरा ख़ब वह है जिसके इख़्तियार में ज़िन्दगी और मौत है। नमरूद ने मुनाजिराना (शास्त्रार्थ) अंदाज अपनाते हुए कहा कि मौत और ज़िन्दगी पर तो मैं भी इख़्तियार रखता हूँ। जिसे चाहूँ मरवा डालूँ और जिसे चाहूँ ज़िंदा रहने दूँ। आप नमरूद का जवाब दे सकते थे। मगर आपने गुप्तगू को मुनाजिराना बनाना पसंद नहीं किया। इसलिए आपने फौरन दूसरी मिसाल पेश कर दी जिसके जवाब में नमरूद उस किस्म की बात न कह सकता था जो उसने पहली मिसाल के जवाब में कही। हज़रत इब्राहीम के लिए नमरूद हरीफ़ (प्रतिपक्षी) न था बल्कि मदभू (संबोधित व्यक्ति) की हैसियत रखता था। इसलिए उन्हें यह समझने में देर न लगी कि इस्तदलाल (तर्क) का कौन-सा हक़ीमाना अंदाज उन्हें अपनाना चाहिए।

मौजूदा दुनिया इन्तेहान की दुनिया है। इसलिए इसे इस तरह बनाया गया है कि एक ही चीज़ को आदमी दो भिन्न अर्थों में ले सके। मसलन एक शख्स के पास दौलत और सत्ता आ जाए तो वह इसे ऐसे देख सकता है कि उसकी कामयाबी उसे अपनी क्षमताओं का नतीजा नजर आए। इसी तरह यह भी मुमकिन है कि वह इसे ऐसे देखे कि उसे महसूस हो कि जो कुछ उसे मिला है वह सरासर ख़ुदा का इनाम है। पहली सूरत जुल्म की सूरत है और दूसरी शुक्र की सूरत। जिस शख्स के अंदर ज़ालिमाना मिजाज हो उसके लिए मौजूदा दुनिया सिर्फ़ गुमराही की ख़ुराक होगी। उसे हर वाक्य में घमंड और खुदपसंदी की गिज़ा मिलेगी। इसके विपरीत जिसके अंदर शुक्र का मिजाज होगा उसके लिए हर वाक्य में हिदायत का सामान होगा। ख़ुदा की दुनिया अपनी तमाम वस्तुओं (व्यापकताओं) के साथ उसके लिए ईमानी रिज़क का दस्तरख़ान बन जाएगी।

أَوَكَلَّٰلِئِي مَرَّةٍ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ
بَعْدَ مَوْتِهَا قَالَمَاتُهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثْنَا قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ
يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ
لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ ۖ وَلِيَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَىٰ الْعِظَامِ
كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا خَبْرًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمَرْ
قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَظْهَرَ قَلْبِي قَالَ فُتِدُ ارْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصَرُوهُنَّ إِلَيْكَ
ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ اذْعُرْهُمْ شِعْيًا ۖ وَأَعْلَمُ أَنَّ
اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

या जैसे वह शख्स जिसका गुजर एक बस्ती पर से हुआ। और वह अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उसने कहा : हलाक हो जाने के बाद अल्लाह इस बस्ती को दुबारा कैसे ज़िंदा करेगा। फिर अल्लाह ने उस पर सौ वर्षों तक के लिए मौत तारी कर दी। फिर उसे उठाया। अल्लाह ने पूछा तुम कितनी देर इस हालत में रहे। उसने कहा एक दिन या एक दिन से कुछ कम। अल्लाह ने कहा नहीं बल्कि तुम सौ वर्ष रहे हो। अब तुम अपने खाने पीने की चीज़ों को देखो कि वे सड़ी नहीं हैं और अपने गधे को देखो। और ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें। और हड्डियों की तरफ़ देखो, किस तरह हम उनका ढांचा खड़ा करते हैं। फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं। पस जब उस पर वाज़ेह हो गया तो कहा मैं जानता हूँ कि वेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे ख़ब, मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िंदा करेगा। अल्लाह ने कहा, क्या तुमने यकीन नहीं किया। इब्राहीम ने कहा क्यों नहीं, मगर इसलिए कि मेरे दिल को तस्कीन हो जाए। फरमाया तुम चार परिदे लो और उन्हें अपने से हिला लो। फिर उनमें से हर एक को अलग-अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उन्हें बुलाओ। वे तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे। और जान लो कि अल्लाह जबरदस्त है, हिकमत वाला है। (259-260)

यहां मौत के बाद दुबारा ज़िंदा किए जाने के जिन दो तजुर्बा का जिक्र है इनका तअल्लुक नबियों से है। पहला तजुर्बा संभवतः उज़ैर (अलै०) के साथ गुज़रा जिनका जमाना पांचवीं सदी ईसा पूर्व का है। और दूसरा तजुर्बा इब्राहीम (अलै०) से तअल्लुक रखता है। जिनका जमाना 2160-1985 ई० पू० के दर्मियान है। अबिया ख़ुदा की तरफ से इसलिए मुक़र्रर होते हैं कि लोगों को ग़ैबी हकीकतों से बाख़बर करें। इसलिए उन्हें वे ग़ैबी चीज़ें खोल करके दिखा दी जाती हैं जिन पर दूसरों के लिए असबाब का पर्दा डाल दिया गया है। नबियों के साथ यह ख़ास मामला इसलिए होता है ताकि वे इन चीज़ों के जाती मुशाहिद (प्रत्यक्षदर्शी) बनकर इनके बारे में लोगों को बाख़बर कर सकें। वे लोगों को जिन ग़ैबी हकीकतों की ख़बर दें उनके बारे में कह सकें कि हम एक देखी हुई चीज़ से तुम्हें बाख़बर कर रहे हैं न कि महज सुनी हुई चीज़ से।

नबियों को चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत दी जाती है। नुबुव्वत से पहले उनकी पूरी ज़िंदगी लोगों के सामने इस तरह गुज़रती है कि इनमें से किसी शख्स को झूठ का तजुर्बा नहीं होता। तक़रीबन आधी सदी तक माहौल के अंदर अपने सच्चे होने का सुबूत देने के बाद वह वक्त आता है कि अल्लाह तआला उन्हें लोगों के सामने उन ग़ैबी हकीकतों के एलान के लिए खड़ा करे जिन्हें आजमाइश की मस्तेहत के सबब लोगों से छुपा दिया गया है। माहौल के ये सबसे ज्यादा सच्चे लोग एक तरफ़ अपने मुशाहिदे (प्रत्यक्ष अवलोकन) से लोगों को बाख़बर करते हैं। और दूसरी तरफ़ अक्ल और फ़ितरत के शवाहिद (प्रमाणों) से इसे मुदल्लल (तर्क पूर्ण) करते हैं। साथ ही यह कि नबियों को हमेशा शदीदतरीन हालात से साबका पेश आता है। इसके बावजूद वे अपने कौल से फिरते नहीं, वे इतिहाई साबितकदमी के साथ अपनी बात पर जमे रहते हैं। इस तरह यह साबित हो जाता है कि वे जो कुछ कहते हैं उसमें वे पूरी तरह

संजीदा हैं। फर्जी तौर पर उन्होंने कोई बात नहीं गढ़ ली है। क्योंकि गढ़ी हुई बात को पेश करने वाला कभी इतने सख्त हालात में अपनी बात पर कायम नहीं रह सकता। और न उसकी बात खारजी (वाह्य) कायनात से इतनी ज्यादा मुताबिक हो सकती है कि वह सरापा उसकी तस्दीक (पुष्टि) बन जाए।

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سَبِيلٍ قِيَاءُ حَبَّةٍ وَاللَّهُ يُضَعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يَتَّبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى تَهُمُ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ قَوْلٌ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَتَّبِعُهَا أَذًى وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَى كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ ثَرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَ صَلْدًا لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना हो जिससे सात बालें पैदा हों, हर बाली में सौ दानें हों। और अल्लाह बढ़ाता है जिसके लिए चाहता है। और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। जो लोग अपने माल को अल्लाह की राह में खर्च करते हैं फिर खर्च करने के बाद न एहसान रखते हैं और न तकलीफ पहुंचाते हैं उनके लिए उनके खर्च के पास उनका अज्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे गमगीन होंगे। मुनासिब बात कह देना और दरगुजर (क्षमा) करना उस सदके से बेहतर है जिसके पीछे सताना हो। और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तहम्मल (संयम) वाला है। ऐ ईमान वालो एहसान रख कर और सत्ता कर अपने सदके को जाया न करो, जिस तरह वह शख्स जो अपना माल दिखावे के लिए खर्च करता है और वह अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता। पस उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर जोर की बारिश हो जो उसे बिल्कुल साफ कर दे। ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ नहीं लगेगी। और अल्लाह इंकार करने वालों को राह नहीं दिखाता। (261-264)

हर अमल जो आदमी करता है वह गोया एक बीज है जो आदमी 'जमीन' में डालता है। अगर उसका अमल इसलिए था कि लोग उसे देखें तो उसने अपना बीज दुनिया की जमीन

में डाला ताकि यहां की ज़िंदगी में अपने किए का फल पा सके। और अगर उसका अमल इसलिए था कि अल्लाह उसे 'देखे' तो उसने आखिरत की जमीन में अपना बीज डाला जो अगली दुनिया में अपने फूल और फल की बहरें दिखाए। दुनिया में एक दाने से हजार दाने पैदा होते हैं। यही हाल आखिरत के खेत में दाना डालने का भी है। दुनिया के फायदे या दुनिया की शोहरत व इज्जत के लिए खर्च करने वाला इसी दुनिया में अपना मुआवजा लेना चाहता है ऐसे आदमी के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। मगर जो शख्स अल्लाह के लिए खर्च करे उसका हाल यह होता है कि वह किसी पर एहसान नहीं जताता, उसने जब अल्लाह के लिए खर्च किया है तो ईसान पर उसका क्या एहसान। उसकी रकम खर्च होकर जिन लोगों तक पहुंचती है उनकी तरफ से उसे अच्छा जवाब न मिले तो वह नराजगी का इज्हार नहीं करता। उसे तो अच्छा जवाब अल्लाह से लेना है, फिर इंसानों से मिलने या न मिलने का उसे क्या गम। अगर किसी साइल (सवाल करने वाला) को वह नहीं दे सकता तो वह उससे बुरी बात नहीं कहता बल्कि नमी के साथ माअजरत कर देता है। क्योंकि वह जानता है कि वह जो कुछ बोल रहा है खुदा के सामने बोल रहा है। खुदा का खौफ उसे ईसान के सामने जवान रोकने पर मजबूर कर देता है।

पत्थर की चट्टान के ऊपर कुछ मिट्टी जम जाए तो बजाहिर वह मिट्टी दिखाई देगी। मगर बारिश का झोंका आते ही मिट्टी की ऊपरी तह बह जाएगी और अंदर से खाली पत्थर निकल आएगा। ऐसा ही हाल उस इंसान का होता है जो बस ऊपरी दीनदारी लिए हुए हो। दीन उसके अंदर तक दाखिल न हुआ हो। ऐसे आदमी से अगर कोई साइल बेढंगे अंदाज से सवाल कर दे या किसी की तरफ से कोई बात सामने आ जाए जो उसकी अना (अहंकार) पर चोट लगाने वाली हो तो वह बिफर कर इसाफ की हदों को तोड़ देता है। ऐसा एक वाक्या एक ऐसा तूफान बन जाता है जो उसकी ऊपरी मिट्टी को बहा ले जाता है और फिर उसका अंदर का इंसान सामने आ जाता है जिसे वह दीन के जाहिरी लबादे के पीछे छुपाए हुए था। अल्लाह के लिए अमल करना गोया देखे पर अनदेखे को तरजीह देना। जो इस बुलंद नजरी का सुबूत दे वही वह शख्स है जिस पर खुदा की खुपी हुई मअरफत के दरवाजे खुलते हैं।

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَشْبِيتًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ أُكُلَهَا ضَعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِيبْهَا وَابِلٌ فَطَلَّ وَاللَّهُ يَأْتِي بِمَنْ يَحْكُمُ بِصِيرَةٍ ۝ يَوْمَ أَحْذَرُكُمْ أَن تَكُونُوا لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءٌ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ۝

और उन लोगों की मिसाल जो अपने माल को अल्लाह की रिज़ा चाहने के लिए और अपने नफ्स में पुख्तगी के लिए खर्च करते हैं एक बाग़ की तरह है जो बुलंदी पर हो। उस पर जोर की बारिश पड़ी तो वह दुगना फल लाया। और अगर जोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी काफी है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। क्या तुममें से कोई यह पसंद करता है कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों। उसमें उसके लिए हर किस्म के फल हों। और वह बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे अभी कमजोर हों। तब उस बाग़ पर एक बगूला आए जिसमें आग हो। फिर वह बाग़ जल जाए। अल्लाह इस तरह तुम्हारे लिए खोल कर निशानियां बयान करता है ताकि तुम ग़ौर करो। (265-266)

आदमी जब किसी चीज़ के लिए अमल करता है तो इसी के साथ वह उसके हक में अपनी कुव्वते इरादी (इच्छाशक्ति) को मजबूत करता है। अगर वह अपनी ख़्वाहिश के तहत अमल करे तो उसने अपने दिल को अपनी ख़्वाहिश पर जमाया। इसके बरअक्स आदमी अगर वहां अमल करे जहां ख़ुदा चाहता है कि अमल किया जाए तो उसने अपने दिल को ख़ुदा पर जमाया। दोनों राहों में ऐसा होता है कि कभी आसान हालात में अमल करना होता है और कभी मुश्किल हालात में। ताहम हालात जितने शदीद हों, आदमी को जितना ज्यादा मुश्किलों का मुकाबला करते हुए अपना अमल करना पड़े उतना ही ज्यादा वह अपने फ़ैज़नज़र मक्सद के हक में अपने इरादे को मुस्तहक़म (दृढ़) करेगा। आम हालात में अल्लाह की राह में अपने असासे को खर्च करना भी बाइसे सवाब है। मगर जब मुख़ालिफ़ असबाब की वजह से ख़ुसूसी कुव्वते इरादी को इस्तेमाल करके आदमी अल्लाह की राह में अपना असासा दे तो इसका सवाब अल्लाह के यहां बहुत ज्यादा है। जिस मद में खर्च करना दुनियावी एतबार से बेफ़ायदा हो उसमें अल्लाह की रिज़ा के लिए खर्च करना, जिसको देने का दिल न चाहे उसे अल्लाह के लिए देना, जिससे अच्छे व्यवहार पर तबीयत अमादा न हो उससे अल्लाह की ख़ातिर अच्छा व्यवहार करना, वे चीज़ें हैं जो आदमी को सबसे ज्यादा ख़ुदापरस्ती पर जमाती हैं और उसे ख़ुदा की ख़ुसूसी रहमत व नुसरत का मुस्तहक़ बनाती हैं।

आदमी जवानी की उम्र में बाग़ लगाता है ताकि बुढ़ापे की उम्र में उसका फल खाए। फिर वह शख्स कैसा बदनसीब है जिसका हरा भरा बाग़ उसकी आख़िर उम्र में ऐन उस वक़्त बर्बाद हो जाए जबकि वह सबसे ज्यादा उसका मोहताज हो और उसके लिए वह वक़्त भी ख़त्म हो चुका हो जबकि वह दोबारा नया बाग़ लगाए और उसे नए सिरे से तैयार करे। ऐसा ही हाल उन लोगों का है जिन्होंने दीन का काम दुनियावी इज्जत और फ़यदे के लिए किया, वे बज़ाहिर नेक़ी और भलाई का काम करते रहे। मगर उनका काम सिर्फ़ देखने में ही दुनियादारों से अगल था हकीक़त के एतबार से देखें तो वे फ़र्क़ न था। आम दुनियादार जिस दुनियावी तरक्की और नामवरी के लिए दुनियावी नक्शों में दौड़ धूप कर रहे थे उसी दुनियावी तरक्की और नामवरी के लिए उन्होंने दीनी नक्शों में दौड़ धूप जारी कर दी। जो शोहरत व इज्जत दूसरे लोग दुनिया की इमारत में अपना असासा खर्च करके हासिल कर रहे थे, उसी शोहरत व इज्जत को उन्होंने दीन की इमारत में अपना असासा खर्च करके हासिल करना चाहा। ऐसे लोग जब मरने के बाद आख़िरत के आलम में पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए कुछ न होगा। उन्होंने जो कुछ किया इसी

दुनिया के लिए किया। फिर वे अपने किए का फल अगली दुनिया में किस तरह पा सकते हैं। ख़ुदा की निशानियां हमेशा जाहिर होती हैं मगर वे खामोश जवान में होती हैं। इनसे वही सबक ले सकता है जो अपने अंदर सोचने की सलाहियत पैदा कर चुका हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِآخِذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغْنِصُوا فِيهِ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَمِيدٌ ۚ الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ ۗ وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۚ يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۚ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۚ

ऐ ईमान वालो खर्च करो उम्दा चीज़ को अपनी कमाई में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए जमीन में से पैदा किया है। और घटिया चीज़ का इरादा न करो कि उसमें से खर्च करो। हालांकि तुम कभी इसे लेने वाले नहीं, यह और बात है कि चश्मपोशी कर जाओ। और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ (निस्यूह) है, खूबियों वाला है। शैतान तुम्हें मोहताजी से डराता है और बुरी बात पर उभारता है और अल्लाह वादा देता है अपनी बख़्शिश का और फ़जल का और अल्लाह वुस्अत (ब्यापकता) वाला है, जानने वाला है। वह जिसे चाहता है हिक्मत दे देता है और जिसे हिक्मत मिली उसे बड़ी दौलत मिल गई। और नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। (267-269)

आदमी दुनिया में जो कुछ कमाता है उसे खर्च करने की दो सूरतें हैं। एक यह कि उसे शैतान के बताए हुए रास्ते में खर्च किया जाए। दूसरे यह कि उसे अल्लाह के बताए हुए रास्ते में खर्च किया जाए। शैतान यह करता है कि आदमी के जाती तक्राजों की अहमियत उसके दिल में बिठाता है। वह उसे सिखाता है कि तुमने जो कुछ कमाया है उसका बेहतरीन मसरफ़ यह है कि इसे अपनी जाती जरूरतों को पूरा करने में लगाओ। फिर जब शैतान देखता है कि आदमी के पास उसकी हकीक़ी जरूरत से ज्यादा है तो वह उसके अंदर एक और जब्बा भड़का देता है। यह नुमूद व नुमाइश (दिखावे) का जब्बा है। अब वह अपनी दौलत को नुमाइशी कामों में खूब बहाने लगता है और खुश होता है कि उसने अपनी दौलत को बेहतरीन मसरफ़ में लगाया।

आदमी को चाहिए कि अपने माल को अपनी जाती चीज़ न समझे बल्कि अल्लाह की चीज़ समझे। वह अपनी कमाई में से अपनी हकीक़ी जरूरत के बराबर ले ले और उसके बाद जो कुछ है उसे बुलंदतर मकासिद में लगाए। वह ख़ुदा के कमजोर बंदों को दे और ख़ुदा के दीन की जरूरतों में खर्च करे। आदमी जब अल्लाह के कमजोर बंदों पर अपना माल खर्च करता है तो गोया वह अपने रब से इस बात का उम्मीदवार बन रहा होता है कि आख़िरत में जब वह ख़ाली हाथ ख़ुदा के सामने हाज़िर हो तो उसका ख़ुदा उसे अपनी रहमतों से महरूम न करे। इसी तरह

जब वह दीन की जरूरतों में अपना माल देता है तो वह अपने आपको खुदा के मिशन में शरीक करता है। वह अपने माल को खुदा के माल में शामिल करता है। ताकि उसकी हकी (तुच्छ) पूंजी खुदा के बड़े खजाने में मिलकर ज्यादा हो जाए।

जो शख्स अपने माल को अल्लाह के बताए हुए तरीके के मुताबिक खर्च करता है वह इस बात का सुबूत देता है कि उसे हिक्मत (तत्वदर्शिता, सूझबूझ, विवेकशीलता) और दानाई (प्रबुद्धता) में से हिस्सा मिला है। सबसे बड़ी नादानी यह है कि आदमी माल की मुहब्बत में मुब्तला हो और उसे अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से रुक जाए और सबसे बड़ी दानाई यह है कि आर्थिक मफादात आदमी के लिए अल्लाह की राह में बढ़ने में रुकावट न बनें। वह अपने आपको खुदा में इतना मिला दे कि खुदा को अपना और अपने को खुदा का समझने लगे। जो शख्स जाती मस्तेहतों के खोल में जीता है उसके अंदर वह निगाह पैदा नहीं हो सकती जो बुलंदतर हकीकतों को देखे और आला कैफियतों का तजुर्बा करे। इसके विपरीत जो शख्स जाती मस्तेहतों को नजरअंदाज करके खुदा की तरफ बढ़ता है वह अपने आपको सीमित दायरे से ऊपर उठाता है। वह अपने शुऊर को उस खुदा के सम-स्तर कर लेता है जो गनी (सर्वसम्पन्न), हमीद (प्रशंसित), वसीअ (सर्वांगीण) और अलीम (सर्वज्ञ) है। वह चीजों को उनके अस्ली रूप में देखने लगता है। क्योंकि वह उन हदबंदियों के पार हो जाता है जो आदमी के लिए किसी चीज को उसके अस्ली रूप में देखने में रुकावट बनती हैं। कोई बात चाहे कितनी ही सच्ची हो मगर उसकी सच्चाई किसी आदमी पर उसी वक्त खुलती है जबकि वह उसे खुले जेहन से देख सके।

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهَا وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ إِنْ تَبَدُّوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنْفُسِكُمْ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسَيِّئِهِمْ لَا يَسْكُونُ النَّاسُ الْخَافَاؤَ مَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ الَّذِينَ يَنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِالْئِيلِ وَالْتِهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

और तुम जो खर्च करते हो या जो नज़्र (मन्त) मानते हो उसे अल्लाह जानता है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। अगर तुम अपने सदक़त जाहिर करके दो तब भी अच्छा है और अगर तुम उन्हें छुपाकर मोहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है। और अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और अल्लाह तुम्हारे कामों से वाकिफ है। उन्हें हिदायत पर लाना तुम्हारा जिम्मा नहीं। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जो माल तुम खर्च करोगे अपने ही लिए करोगे। और तुम न खर्च करो मगर अल्लाह की रिजा चाहने के लिए। और तुम जो माल खर्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे लिए इसमें कमी नहीं की जाएगी। ये उन हाजतमंदों के लिए हैं जो अल्लाह की राह में घिर गए हों, जमीन में दौड़ धूप नहीं कर सकते। नावाकिफ आदमी उन्हें गनी ख्याल करता है उनके न मांगने की वजह से। तुम उन्हें उनकी सूरत में पहचान सकते हो। वे लोगों से लिपट कर नहीं मांगते। और जो माल तुम खर्च करोगे वह अल्लाह को मालूम है। जो लोग अपने मालों को रात और दिन, छुपे और खुले खर्च करते हैं, उनके लिए उनके रब के पास अज़्र है। और उनके लिए न ख़ोफ है और न वे ग़मगीन होंगे। (270-274)

अल्लाह की राह में खर्च करने की सबसे बड़ी मदद यह है कि उन दीनी खादिमों की माली मदद की जाए जो दीन की जद्दोजहद में अपने को पूरी तरह लगा देने की वजह से बेरोजगार हो गए हों। एक कामयाब व्यापारी के पास किसी दूसरे काम के लिए वक्त नहीं रहता। ठीक यही मामला खिदमत दीन का है। जो शख्स यकसूई के साथ अपने आपको दीन की खिदमत में लगाए उसके पास मआशी (आर्थिक) जद्दोजहद के लिए वक्त नहीं रहेगा। साथ ही यह कि हर काम की अपनी एक फ़ितरत है और अपनी फ़ितरत के लिहाज से वह आदमी का जेहन एक खास ढंग पर बनाता है। जो शख्स तिजारत में लगता है उसके अंदर धीरे-धीरे तिजारती मिजाज पैदा हो जाता है। तिजारत की राह की बारीकियां फौरन उसकी समझ में आ जाती हैं। जबकि वही आदमी दीन के रास्ते की बातों को गहराई के साथ पकड़ नहीं पाता। यही मामला इसके विपरीत खादिमे दीन का होता है। अब इसका हल क्या हो। क्योंकि किसी समाज में दोनों किस्म के कामों का होना जरूरी है। इस मसले का हल यह है कि जिन लोगों के पास आर्थिक साधन जमा हो गए हैं उसमें वे उन लोगों का हिस्सा लगाएं जो दीनी मसरूफियत (व्यस्तता) की वजह से अपना रोजगार हासिल न कर सके। यह गोया एक तरह का खामोश विभाजन है जो पक्षों के दर्मियान खालिस अल्लाह की रिजा के लिए होता है। खादिमे दीन ने अपने आपको अल्लाह के लिए यकसू किया था, इसलिए वह ईसान से नहीं मांगता और न पाने का उम्मीदवार रहता है। दूसरी तरफ साहिबे मआश यह सोचता है कि मेरे पास मआशी वसाइल (आर्थिक साधन) इस कीमत पर आए हैं कि मैं खिदमते दीन की राह में वह न कर सका जो मुझे करना चाहिए। इसलिए इसकी तलाफी (क्षतिपूर्ति) यह है कि मैं अपने माल में अपने उन भाइयों का हिस्सा लगाऊं जो गोया मेरी कमी की तलाफी खुदा के यहां कर रहे हैं।

जब दीन की जद्दोजहद उस मरहले में हो कि दीन के नाम पर रोजगार के अवसर न मिलते हों, जब दीन की राह में लगने वाला आदमी बेरोजगार हो जाए, उस वक्त दीन के खादिमों को अपना माल देना बजाहिर माहौल के एक ग़ैर-अहम तबके से अपना रिश्ता जोड़ना है। ऐसे लोगों पर खर्च करना मज्लिसों में काबिले जिक्र नहीं होता। वह आदमी की हैसियत और नामवरी में इजाफा नहीं करता। मगर यही वह खर्च है जो आदमी को सबसे ज्यादा अल्लाह की रहमतों का मुस्तहक बनाता है।

الَّذِينَ يَكُونُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّا الْبَائِعُونَ الرَّبَا وَمَا حَلَ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَاتَّبَعَهَا فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ يَنْهَىٰ اللَّهُ الرَّبَا وَيُحِبُّ الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٥-٢٧٧﴾

जो लोग सूद खाते हैं वे कियामत में न उठेंगे मगर उस शख्स की तरह जिसे शैतान ने छूकर खबती बना दिया हो। यह इसलिए कि उन्होंने कहा कि तिजारत करना भी वैसा ही है जैसा सूद लेना। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल ठहराया है और सूद को हारम किया है। फिर जिस शख्स के पास उसके रब की तरफ से नसीहत पहुंची और वह इससे रुक गया तो जो कुछ वह ले चुका वह उसके लिए है। और उसका मामला अल्लाह के हवाले है। और जो शख्स फिर वही करे तो वही लोग दोखबी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को घटाता है और सदकात को बढ़ाता है। और अल्लाह पसंद नहीं करता नाशुक्रों को, गुनाहगारों को। बेशक जो लोग ईमान लाए और लेक अमल किए और नमाज की पाबंदी की और जकात अदा की, उनके लिए उनका अज़्र है उनके रब के पास। उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे गमगीन होंगे। (275-277)

बंदों के दर्मियान आपस में जो मआशी (आर्थिक) तअल्लुकात मलूब हैं उनकी अलामत जकात है। जकात में एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के हुक्क का एतराफ यहां तक करता है कि वह खुद अपनी कमाई का एक हिस्सा निकाल कर अपने भाई को देता है। जो दीन हुक्क शनासी का ऐसा माहिल बनाना चाहता हो वह सूद के जरपरस्ताना (धन लोलुपतापूर्ण) तरीके को किसी तरह कुबूल नहीं कर सकता। ऐसे समाज में आपसी लेन देन तिजारत के उसूल पर होता है न कि सूद के उसूल पर। तिजारत में भी आदमी नफा लेता है। मगर तिजारत का जो नफा है वह आदमी की महनत और उसके जोखिम उठाने की कीमत होता है। जबकि सूद का नफा महज रुद्धगर्ज और जअझिज का नतीजा है।

सूद का कारोबार करने वाला अपनी दौलत दूसरे को इसलिए देता है कि वह इसके जरिए अपनी दौलत को और बढ़ाए। वह यह देखकर खुश होता है कि उसका सरमाया यकीनी शरह (दर) से बढ़ रहा है। मगर इस अमल के दौरान वह खुद अपने अंदर जो इंसान तैयार करता है वह एक खुदगर्जी और दुनियापरस्त इंसान है। इसके बरअक्स जो आदमी अपनी कमाई में से सदका करता है, जो दूसरों की जरूरतमंदी को अपने लिए तिजारत का सौदा नहीं बनाता

बल्कि उसके साथ अपने को शरीक करता है, ऐसा शख्स अपने अमल के दौरान अपने अंदर जो इंसान तैयार कर रहा है वह पहले से बिल्कुल मुख्तलिफ (भिन्न) इंसान है। यह वह इंसान है जिसके दिल में दूसरों की खैरखाही है। जो जाती दायरे से ऊपर उठकर सोचता है।

दुनिया में आदमी इसलिए नहीं भेजा गया है कि वह यहां अपनी कमाई के ढेर लगाए। आदमी के लिए ढेर लगाने की जगह आखिरत है। दुनिया में आदमी को इसलिए भेजा गया है कि यह देखा जाए कि इनमें कौन है जो अपनी खुसूसियतों के एतबार से इस काबिल है कि उसे आखिरत की जन्नती दुनिया में बसाया जाए। जो लोग इस सलाहियत का सुबूत देंगे उन्हें खुदा जन्नत का बाशिंदा बनने के लिए चुन लेगा। और बाकी तमाम लोग कूड़ा करकट की तरह जहन्नम में फेंक दिए जाएंगे। सदका की रूह (मूल भावना) हाजतमंद को अपना माल खुदा के लिए देना है और सूद की रूह इस्तहसाल (शोषण) के लिए देना है। सदका इस बात की अलामत है कि आदमी आखिरत में अपने लिए नेमतों का ढेर देखना चाहता है। इसके मुकाबले में सूद इस बात की अलामत है कि वह इसी दुनिया के लिए ढेर लगाने का ख्वाहिशमंद है। ये दो अलग-अलग इंसान हैं और यह मुमकिन नहीं कि खुदा के यहां दोनों का अंजाम एक जैसा करार पाए। दुनिया उसी को मिलती है जिसने दुनिया के लिए महनत की हो। इसी तरह आखिरत उसी को मिलेगी जिसने आखिरत के लिए अपना असासा (धन-सम्पत्ति) कुर्बान किया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٧٥﴾ فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِن تُبْتِغُوا فَلَئِمَّ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٦﴾ وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۖ وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧٧﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٧٨﴾

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और जो सूद बाकी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से लड़ाई के लिए खबरदार हो जाओ। और अगर तुम तौबा कर लो तो अस्ल रकम के तुम हकदार हो, न तुम किसी पर जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाए। और अगर एक शख्स तंगी वाला है तो उसकी फराखी तक मोहलत दो। और अगर माफ कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, अगर तुम समझो। और उस दिन से डरो जिस दिन तुम अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे। फिर हर शख्स को उसका किया हुआ पूरा-पूरा मिल जाएगा। और उन पर जुल्म न होगा। (278-281)

मुआशिरे की इस्लाह का बुनियादी उसूल यह है कि मुआशिरे का कोई फर्द न किसी दूसरे के ऊपर ज्यादाती करे और न दूसरा कोई उसके ऊपर ज्यादाती करे। न कोई किसी के ऊपर जालिम बने और न कोई किसी को मजूम बनाए। सूदखोरी एक खुला हुआ मआशी

(आर्थिक) जुल्म है, इसलिए इस्लाम ने इसे हराम ठहराया। यहां तक कि इस्लामी शासन के तहत सूदी कारोबार को फौजदारी जुर्म करार दिया। ताहम एक सूदखोर को जिस तरह दूसरे के साथ जालिमाना कारोबार करने की इजाजत नहीं है उसी तरह किसी दूसरे को भी यह हक नहीं है कि वह सूदखोर को अपने जुल्म का निशाना बनाए। किसी का मुजरिम होना उसे उसके दीगर हुक्क से महरूम नहीं करता। सूदखोर के खिलाफ जब कार्रवाई की जाएगी तो सिर्फ उसके सूदी इजाफे को साबित किया जाएगा। अपनी अस्ल रकम को वापस लेने का वह फिर भी हकदार होगा। ताहम सामान्य कानून के साथ इस्लाम इंसानी कमजोरियों की भी आखिरी हद तक रियायत करता है। इसलिए हुक्म दिया गया कि कोई कर्जदार अगर वक्त पर तंगदस्त है तो उसे उस वक्त तक मोहलत दी जाए जब तक वह अपने जिम्मे की रकम अदा करने के कविल हो जाए। इसी के साथ यह तलकीन भी की गई कि कोई शख्स कर्ज की रकम अदा करने के कविल न रहे तो उसके जिम्मे की रकम को सिर से माफ कर देने का हौसला पैदा करो। माफ करने वाला खुदा के यहां अज़्र का मुस्तहिक बनता है और दुनिया में इसका यह फायदा है कि मुआशिर के अंदर आपसी रियायत और हमदर्दी की फिजा पैदा हो जाती है जो बिलआखिर सबके लिए मुफीद है।

ताहम सिर्फ कानून का निफज (लागू करना) मुआशिर की इस्लाह और फलाह का जमिन नहीं। हकीमी इस्लाह के लिए जरूरी है कि मुआशिर में तक्वा की फिज मौजूद हो। इसलिए कानूनी हुक्म बताते हुए ईमान, तक्वा और आखिरत का एहतेमाम के साथ जिक्र किया गया है। जिस तरह एक सेक्सुअल निजाम उसी वक्त कामयाबी के साथ चलता है जबकि नागरिकों के अंदर उसके मुताबिक कौमी किरदार (राष्ट्रीय चरित्र) मौजूद हो। इसी तरह इस्लामी निजाम उसी वक्त सही तौर पर वजूद में आता है जबकि अफराद के कविले लिखज हिस्से में तक्वा की रूह पाई जाती हो। कौमी किरदार या तक्वा दरअसल मल्लूब निजाम के हक में अफराद की आमादगी का नाम है। और अफराद के अंदर जब तक एक दर्जे की आमादगी न हो, महज कानून के जोर पर उसे लागू नहीं किया जा सकता।

साथ ही यह कि इस्लाम के अनुसार मुआशिर की इस्लाह (समाज-सुधार) खुद में मल्लूब चीज नहीं है। इस्लाम में अस्ल मल्लूब फर्द की इस्लाह है। मुआशिर की इस्लाह सिर्फ उसका एक सानवी (अतिरिक्त) नतीजा है। कुरआन जिस ईमान, तक्वा और फिक्के आखिरत की तरफ बुलाता है उसका केन्द्र व्यक्ति है न कि कोई सामूहिक ढांचा। इसलिए कुरआनी दावत का अस्ल मुखातब फर्द है और मुआशिर की इस्लाह अफराद की इस्लाह का इज्तिमाई जूहर (सामूहिक प्रदर्शन) है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَيْتُمْ بِدِينٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَالْتَبَوْهُ وَلَا يَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ وَلِيُمْلَلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلِيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسَ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ

الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَحِيْهُ أَنْ يُمْلَلَ هُوَ فَلْيُمْلَلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ وَأَسْتَشْهِدُ وَاشْهَيْدَكُنْ مِنْ رِّجَالِكُمْ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتْنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا وَلَا تَسْمَعُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا يُضَارُ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَفَعَّلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَيَعْلَمَكُمُ اللَّهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً فَإِنْ أَتَيْنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فليؤدِّ الَّذِي أَوْثِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

۝

ऐ ईमान वाले, जब तुम किसी निर्धारित मुद्दत के लिए उधार का लेनेदेन करो तो उसे लिख लिया करो। और इसे लिखे तुम्हारे दर्मियान कोई लिखने वाला इंसाफ के साथ। और लिखने वाला लिखने से इंकार न करे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया उसी तरह उसे चाहिए कि लिख दे। और वह शख्स शिकुराए जिस पर अदायगी का हक आता है। और वह डरे अल्लाह से जो उसका रब है और इसमें कोई कमी न करे। और अगर वह शख्स जिस पर अदायगी का हक आता है बेसमझ हो, या कमजोर हो या खुद लिखवाने की कुदरत न रखता हो तो चाहिए कि उसका वली (संरक्षक) इंसाफ के साथ लिखवा दे। और अपने मर्दों में सेमअना आदमियों को गवाह कर लो। और अगर दो मर्द न हों तो फिर एक मर्द और दो औरतें, उन लोगों में से जिन्शुऊरतुम पसंद करते हो। ताकि अगर एक औरत भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे। और गवाह इंकार न करें जब वे बुलाए जाएं। और मामला छोटा हो या बड़ा, मीआद (अवधि) के निर्धारण के साथ इसे लिखने में काहिली न करो। यह लिख लेना अल्लाह के नजदीक ज्यादा इंसाफ का तरीका है और गवाही को ज्यादा दुरुस्त रखने वाला है और ज्यादा संभावना है कि तुम शुबह में न पड़ो। लेकिन अगर कोई सौदा नकद हो जिसका तुम आपस में लेनेदेन किया करते हो तुम पर कोई इल्जाम नहीं कि तुम उसे न लिखो। मगर जब यह सौदा करो तो गवाह बना

लिया करो। और किसी लिखने वाले को या गवाह को तकलीफ न पहुंचाई जाए। और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी। और अल्लाह से डरो अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। और अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो रहन (गिरवी) रखने की चीज़ें कब्जे में दे दी जाएं। और अगर एक दूसरे का एतबार करता हो तो चाहिए कि जिस पर एतबार किया गया वह एतबार को पूरा करे। और अल्लाह से डरो जो उसका रब है। और गवाही को न छुपाओ और जो शख्स छुपाएगा उसका दिल गुनाहगार होगा। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे जानने वाला है। (282-283)

दो आदमियों के दर्मियान नक़द मामला हो तो लेनदेन होकर उसी वक्त मामला खत्म हो जाता है। मगर उधार मामले की नौइयत अलग है। उधार मामले में अगर सारी बात जबानी हो तो लिखित सुबूत न होने की वजह से बाद में विवाद पैदा होने की संभावना रहती है। दोनों पक्ष अपने-अपने मुताबिक मामले की तस्वीर पेश करते हैं और कोई ऐसी यकीनी बुनियाद नहीं होती जिसकी रोशनी में सही फैसला किया जा सके। नतीजा यह होता है कि अदायगी के वक्त अक्सर दोनों को एक-दूसरे से शिकायतें पैदा हो जाती हैं। इसका हल तहरीर है। नक़द मामले को लिख लिया जाए तो वह भी बेहतर है। मगर उधार मामला के लिए तो जरूरी है कि उन्हें बाकायदा तहरीर (लिखित) में लाया जाए और इस पर गवाह बना लिए जाएं। विवाद के वक्त यही तहरीर फैसले की बुनियाद होगी। यह मुसलमान के लिए तक्वा और इंसान की एक हिफ़ज़ी तदबीर है। लिखित शर्तों के मुताबिक वह अपने हक़ को अदा करके खुदा और ख़ल्क के सामने ज़िम्मेदारी से बरी हो जाता है।

मुसलमान खुदा के दीन के गवाह हैं। जिस तरह अल्लाह की बात को जानते हुए छुपाना जाइज नहीं, उसी तरह इंसानी मामला में किसी के पास कोई गवाही हो तो उसे चाहिए कि उसे जाहिर कर दे। गवाही को छुपाना अपने अंदर मुजरिमाना ज़ेहन की परवरिश करना है और मामले के मुसिफ़ाना फैसले में वह हिस्सा अदा न करना है जो वह कर सकता है। इंसान का ज़मीर चाहता है कि जब एक चीज़ हक़ नज़र आये तो उससे हक़ हेमके एतराफ़ किया जाए। और जब एक चीज़ नाहक दिखाई दे तो उसके नाहक होने का एलान किया जाए। ऐसी हालत में जो शख्स अपने वकार और मस्लेहत की खातिर अपनी ज़बान को बंद रखता है वह गोया ऐसा मुजरिम है जो अपने जुर्म पर खुद ही गवाह बन गया हो।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَاِنْ تُبَدُّوْا مَآبِیْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تَخْفَوْا
يُحَاسِبْكُمْ بِهٖ ۗ اللّٰهُ ۙ فَيُغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ
شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝۱۷ اَمِنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهِ ۚ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلُّ
اَمِّنٌ بِاللّٰهِ وَمَآ لِكُتُبِهِۦ وَكَتٰبِهِۦ ۙ وَرُسُلِهِۦ ۚ لَا نَفَرَقَ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۚ
وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرٰنَكَ رَبَّنَا ۚ وَالِيْكَ الْمَصِيْرُ ۝۱۸ لَّا يَكْفُرُ اللّٰهُ

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۗ اِلٰهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ
كُنَّا سٰٓئِرًا ۙ اَوْ اَخْطَاۤ اَنْۢا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اَصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلٰی الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لِطَآئِفَةٍ لَّنَا بِهِۦٓ وَاَعْفُ عَنَّا ۙ وَاعْفِرْ لَنَا
وَارْحَمْنَا ۙ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَاَنْصُرْنَا عَلٰی الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ ۝۱۹

अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है। तुम अपने दिल की बातों को जाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुमसे इसका हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सजा देगा। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। रसूल ईमान लाया है उस पर जो उसके रब की तरफ से उस पर उतरा है। और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं। सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फरिशतों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर। हम उसके रसूलों में से किसी के दर्मियान फर्क नहीं करते। और वे कहते हैं कि हमने सुना और माना। हम तेरी बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे रब। और तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी ताक़त के मुताबिक। उसे मिलेगा वही जो उसने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उसने किया। ऐ हमारे रब हमें न पकड़ अगर हम भूलें या हम ग़लती कर जाएं। ऐ हमारे रब हम पर बोझ न डाल जैसा तूने डाला था हम से अगलों पर। ऐ हमारे रब हमसे वह न उठवा जिसकी ताक़त हम में नहीं। और दरगुज़र कर हम से। और हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर। तू हमारा कारसाज है। पस इंकार करने वालों के मुकाबले में हमारी मदद कर। (284-286)

कायनात की हर चीज़ अल्लाह के ज़ेहूक़म है। ज़रों से लेकर सितारों तक सब खुदा के निर्धारित नक्शे में बंधे हुए हैं। वे उसी रास्ते पर चल रहे हैं जिस पर चलने के लिए खुदा ने इन्हें पाबंद कर दिया है। मगर इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जो अपने को खुदमुख्तार हालत में पाता है। बजाहिर वह आजाद है कि अपनी मर्जी से जो रास्ता चाहे अपनाए। मगर इंसान की आजादी मुतलक नहीं है बल्कि इम्तेहान के लिए है। इंसान को भी कायनात की बाक़ी चीज़ों की तरह खुदा की पाबंदी करनी है। जिस पाबंद ज़िंदगी को बाक़ी कायनात ने बजोर अपनाया है वही पाबंद ज़िंदगी इंसान को अपने इरादे से अपनी है। इंसान को जाहिरी सूरतेहाल से धोखा खाकर यह न समझना चाहिए कि उसके आगे पीछे कोई नहीं। हकीकत यह है कि आदमी हर वक्त मालिके कायनात की नज़र में है, वह उसकी हर छोटी-बड़ी बात की निगरानी कर रहा है। चाहे वह उसके अंदर हो या उसके बाहर।

वह कौन सा इंसान है जो अल्लाह को मल्लूब है। वह ईमान और इताअत (आज्ञापालन) वाला इंसान है। ईमान से मुराद आदमी की शुऊरी हवालगी है और इताअत से मुराद उसकी अमली हवालगी। शुऊर के एतबार से यह मल्लूब है कि आदमी अल्लाह को अपने ख़ालिक और मालिक की हैसियत से अपने अंदर उतार ले। वह इस हकीकत को पा गया हो कि कायनात

सूरह-3. आले इमरान

131

पारा 3

का निजाम कोई बेरूह मशीनी निजाम नहीं है बल्कि एक जिंदा निजाम है जिसे खुदा अपने फरमावरदार कारिंदों के जरिए चला रहा है। उसने खुदा के बंदों में से उन बंदों को पहचान लिया हो जिन्हें खुदा ने अपना पैगाम पहुंचाने के लिए चुना। खुदा ने इंसानों की हिदायत के लिए जो किताब उतारी है उसे वह हकीकी मअनों में अपनी सोच-विचार का हिस्सा बना चुका हो। रिसालत और पैगम्बरी उसे पूरी इंसानी तारीख में एक मुसलसल वाक्या की सूरत में नजर आने लगे। ईमानियात को इस तरह अपने दिल व दिमाग में बिठा लेने के बाद वह अपनी जिंदगी पूरी तरह उसके नक्शे पर ढाल दे।

फिर यह ईमान और इताअत उसके लिए कोई रस्मी और जाहिरी मामला न हो बल्कि वह उसकी रूह को इस तरह घुला दे कि वह अल्लाह को पुकारने लगे। उसका वजूद खुदा की याद में ढल जाए। उसकी जिंदगी तमामतर खुदा के ऊपर निर्भर हो जाए।

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ عَمَّا يَشْرِكُونَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بَلَاءُ أَيُّهَا الْمُسْلِمُونَ
الْمَلِكُ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ نَزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابُ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ
الْفُرْقَانَ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
ذُو انْتِقَامٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ
هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

आयतें-200

सूरह-3. आले-इमरान
(मदीना में नाजिल हुई)

रुकूअ-20

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। अल्लाह उसके सिवा कोई माबूद नहीं, जिंदा और सबका थामने वाला। उसने तुम पर किताब उतारी हक के साथ, सच्चा करने वाली उस चीज को जो उसके आगे है और उसने तौरात और इंजील उतारी इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए और अल्लाह ने फुरकान उतारा। बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया उनके लिए सख्त अजाब है और अल्लाह जबरदस्त है, बदला लेने वाला है। बेशक अल्लाह से कोई चीज छुपी हुई नहीं न जमीन में और न आसमान में। वही तुम्हारी सूरत बनाता है मां के पेट में जिस तरह चाहता है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। (1-6)

कायनात का खालिक व मालिक कोई मशीनी खुदा नहीं बल्कि एक जिंदा और बाशुऊर खुदा है। उसने हर जमाने में इंसान के लिए रहनुमाई भेजी। इन्हीं में से वे किताबें थीं जो तौरात व इंजील की सूरत में पिछले नबियों पर उतारी गई। मगर इंसान हमेशा यह करता रहा

पारा 3

132

सूरह-3. आले इमरान

कि उसने अपनी तावील व तशरीह से खुदा की तालीमात को तरह-तरह के मअना पहनाए और खुदा के एक दिन को कई दिन बना डाला। आखिर अल्लाह ने अपने तैशुदा मंसूबे के मुताबिक आखिरी किताब (कुरआन) उतारी जो इंसानों के लिए सही हिदायतनामा भी है और इसी के साथ वह कसौटी भी जिससे हक और बातिल के दर्मियान फैसला किया जा सके। कुरआन बताता है कि अल्लाह का सच्चा दिन क्या है। और वह दिन कौन-सा है जो लोगों ने अपनी खुद की गद्दी हुई तशरीहात (व्याख्याओं) के जरिए बना रखा है। अब जो लोग खुदा की किताब को न मानें या अपनी राय और तावीरों के तहत गढ़े हुए दिन को न छोड़ें वे सख्त सजा के मुस्तहक हैं। ये वे लोग हैं जिन्हें खुदा ने आख दी मगर रोशनी आ जाने के बावजूद उन्होंने नहीं देखा। जिन्हें खुदा ने अक्ल दी मगर दलील आ जाने के बाद भी उन्होंने न समझा। अपनी झूठी बड़ाई की खातिर वे हक के आगे झुकने पर तैयार न हुए।

अल्लाह अपनी जत व सिफत के एतबार से कैसा है इसका हकीकी तआरफ़ खुद वही

करा सकता है। उसकी हस्ती का दूसरी मौजूदात से क्या तअल्लुक है, इसे भी वह खुद ही सही तौर पर बता सकता है। खुदा ने अपनी किताब में इसे इतनी वाजेह सूरत में बता दिया है कि जो शख्स जानना चाहे वह जरूर जान लेगा। यही मामला इंसान के लिए हिदायतनामा मुकर्र करने का है। इंसान की हकीकत क्या है और वह कौन-सा रवैया है जो इंसान की कामयाबी का जामिन है, इसे बताने के लिए पूरी कायनात का इल्म दरकार है। इंसान के लिए सही रवैया वही हो सकता है जो बाकी कायनात से हमआहंग (अंतरंग) हो और दुनिया के वसीअतर (व्यापक) निजाम से पूरी तरह मुताबिकत रखता हो। इंसान के लिए सही राहेअमल का निर्धारण वही कर सकता है जो न सिर्फ इंसान को जन्म से मौत तक जानता हो बल्कि उसे यह भी मालूम हो कि जन्म से पहले क्या है और मौत के बाद क्या। ऐसी हस्ती खुदा के सिवा कोई दूसरी नहीं हो सकती। इंसान के लिए हकीकतपसंदी यह है कि इस मामले में वह खुदा पर भरोसा करे और उसकी तरफ से आई हुई हिदायत को पूरे यकीन के साथ पकड़ ले।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ
مُتَشَابِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ
ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلَةٍ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ
فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذْكُرُ إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَابِ
رَبَّنَا لَا تَزِرْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَّابُ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغْلِبُ الْيَعْسَادَ

وَقَفَّيْنَا عَلَى مَوْجِ السَّرَّاجِ مِنْهُ نَزَّلْنَا الْقُرْآنَ فَذُكِّرُوا بِهِ وَتَوَكَّلْ وَاصْبِرْ

वही है जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। इसमें कुछ आयतें मोहकम (सुदृढ़, सुस्पष्ट) हैं, वे किताब की अस्ल हैं। और दूसरी आयतें मुताशाबह (संदेहास्पद, अस्पष्ट) हैं। पस जिनके दिलों में टेढ़ है वे मुताशाबह आयतों के पीछे पड़ जाते हैं फितने की तलाश में

और इनके अर्थों की तलाश में। हालांकि इनका अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और जो लोग पुख्ता इल्म वाले हैं वे कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाए। सब हमारे खब की तरफ से है। और नसीहत वही लोग कुबूल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। ऐ हमारे खब, हमारे दिलों को न फेर जबकि तू हमें हिदायत दे चुका। और हमें अपने पास से रहमत दे। बेशक तू ही सब कुछ देने वाला है। ऐ हमारे खब, तू जमा करने वाला है लोगों को एक दिन जिसमें कोई शुकह नहीं। बेशक अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करता। (7-9)

कुरआन में दो तरह के मजामीन हैं। एक वे जो इंसान की मालूम दुनिया से संबंधित हैं। जैसे ऐतिहासिक घटनाएं, कायनाती निशानियां, दुनियावी जिंदगी के अहकाम आदि। दूसरे वे जिनका तअल्लुक उन गैबी (अदृश्य) मामलों से है जो आज के इंसान के लिए समझ से बाहर हैं। मसलन खुदा की सिफात, जन्नत व दोज्ख के अहवाल वगैरह। पहली किस्म की बातों को कुरआन में मोहकम अंदाज, दूसरे शब्दों में प्रत्यक्ष शैली में बयान किया गया है। दूसरी किस्म की बातें इंसान की नामालूम दुनिया से संबंधित हैं, वे इंसानी भाषा की गिरफ्त में नहीं आतीं। इसलिए उन्हें मुताशाबह अंदाज यानी रूपकों और उपमा की शैली में बयान किया गया है। मसलन इंसान का हाथ कहा जाए तो यह प्रत्यक्षतः भाषा की मिसाल है और अल्लाह का हाथ रूपकों की भाषा की मिसाल। जो लोग इस फर्क को नहीं समझते वे मुताशाबह आयतों का भावार्थ भी उसी तरह सुनिश्चित करने लगते हैं जिस तरह मोहकम आयतों का भावार्थ सुनिश्चित किया जाता है। यह अपने फित्ती दायरे से बाहर निकलने की कोशिश है। इस किस्म की कोशिश का अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं कि आदमी हमेशा भटकता रहे और कभी मंजिल पर न पहुंचे। क्योंकि 'इंसान के हाथ' को सुनिश्चित तौर पर समझा जा सकता है, मगर 'खुदा के हाथ' को मौजूदा अक्ल के साथ सुनिश्चित तौर पर समझना संभव नहीं।

मुताशाबिहात के सिलसिले में सही इल्मी और अक्ली मौक़िफ यह है कि आदमी अपनी असमर्थता को स्वीकारे। जिन बातों को वह सुनिश्चित रूप से अपने हवास की गिरफ्त में नहीं ला सकता उनकी संक्षिप्त अवधारणा पर संतोष करे। जब हवास की असमर्थता की वजह से इंसान के लिए इन वास्तविकताओं का पूरी तरह ज्ञान मुमकिन नहीं है तो हकीकतपसंदी यह है कि इन मामलों में सुनिश्चितता की बहस न छेड़ी जाए। इसके बजाए अल्लाह से दुआ करना चाहिए कि वह आदमी को इस किस्म की बेनतीजा बहसों में उलझने से बचाए। वह आदमी को ऐसी अक्ले सलीम दे जो अपने मक़ाम को पहचाने और इन हकीकतों के मुजमल (संक्षिप्त) यक़ीन पर राजी हो जाए। एक दिन ऐसा आने वाला है जबकि ये हकीकतें अपनी तफ़्सीली सूरत में खुलकर सामने आ जाएं। मगर आदमी जब तक इम्तेहान की दुनिया में है ऐसा होना मुमकिन नहीं।

जिस तरह रास्ते की फिसलन होती है, उसी तरह अक्ल के सफर की भी फिसलन होती है। और अक्ल की फिसलन यह है कि किसी मामले को आदमी उसके सही रुख से न देखे। किसी चीज की हकीकत आदमी उसी वक़्त समझता है जबकि वह उसे उस रुख से देखे जिस रुख से उसे देखना चाहिए। अगर वह किसी और रुख से देखने लगे तो ऐन मुमकिन है कि वह सही राय

कायम न कर सके और ग़लतफहमियों में पड़ कर रह जाए। सबसे बड़ी समझदारी यह है कि आदमी इस राज को जान ले कि किसी चीज को देखने का सहीतरीन रुख क्या है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۚ كَذَّابِ ۖ الْ فِرْعَوْنُ ۖ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۖ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سِتْغَلِبُونَ ۖ وَتَحْشَرُونَ إِلَىٰ هَمَّتُمْ ۖ وَبَشِّرِ الْيَهُودَ ۖ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ ۖ يَرَوْنَهُمْ فَمِنْهُمْ رَأَىٰ الْعَيْنُ ۖ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصَرِهِ مَن يَشَاءُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۚ

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया, उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आएंगे और यही लोग आग के ईंधन बनेंगे। इनका अंजाम वैसा ही होगा जैसा फिरऔन वालों का और इनसे पहले वालों का हुआ। उन्होंने हमारी निशानियों को झुटलाया। इस पर अल्लाह ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह सख्त सजा देने वाला है। इंकार करने वालों से कह दो कि अब तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ जमा करके ले जाए जाओगे और जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है। बेशक तुम्हारे लिए निशानी है उन दो गिरोहों में जिनमें (बदर में) मुठभेड़ हुई। एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुंकिर था। ये मुंकिर खुली आंखों से उन्हें दुगना देखते थे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी मदद का जोर दे देता है। इसमें आंख वालों के लिए बड़ा सबक है। (10-13)

हक की दावत (आह्वान) जब भी उठती है तो वह लोगों को एक ग़ैर-अहम आवाज मालूम होती है। एक तरफ वक़्त का माहौल होता है जिसके क़ब्जे में हर किस्म के मादूी वसाइल (भौतिक संसाधन) होते हैं। दूसरी तरफ हक का काफ़िला होता है जिसे अभी माहौल में कोई जमाव हासिल नहीं होता। इसके साथ मादूी मफ़ादात (हित) जुड़े नहीं होते। इन हालात में हक की तरफ बढ़ना माहौल से कटने और मफ़ादात से महरूम होने के हममअना बन जाता है। नतीजा यह होता है कि आदमी अपने मफ़ादात को बचाने की खातिर हक को नहीं मानता। अपने साथियों और रिश्तेदारों को छोड़कर एक तंहा दाओी (आह्वानकर्ता) की सफ में आने के लिए तैयार नहीं होता। मगर ये चीजें जो इंसान को आज अहम नजर आती हैं वे पैसले के दिन किसी के कुछ काम न आएंगी। इन चीजों की जो कुछ अहमियत है सिर्फ उस वक़्त तक है जबकि मामला इंसान और इंसान के दर्मियान है। जब कियामत का पर्दा उठेगा और मामला इंसान और खुदा के दर्मियान हो जाएगा तो ये चीजें इतनी बेकीमत हा जाएंगी

जैसे कि इनका कोई वजूद ही नहीं था। दाजी इस दुनिया में बजाहिर बेजोर दिखाई देता है मगर हकीकत में वही ज़ोर वाला है। क्योंकि उसके पीछे खुदा है। मुक़िद बजाहिर इस दुनिया में ताक़तवर दिखाई देता है। मगर वह बिल्कुल बेताक़त है। क्योंकि उसकी ताक़त एक क़स्ती फ़ेख़ के सिवा और कुछ नहीं है।

नुबुव्वत के चौदहवें साल बद्र का मअरका (मोचा) आख़िरत में होने वाले वाक़ये का एक दुनियावी नमूना था। हक़ का इन्कार करने वाले तादाद और ताक़त में बहुत ज्यादा थे और हक़ को मानने वाले तादाद और ताक़त में बहुत कम थे। इसके बावजूद मुक़िदों को ग़ैर मामूली शिकस्त हुई और हक़ की पैरवी करने वालों को फ़ैसलाकुन फ़तह हासिल हुई। यह एक वाज़ेह सुबूत है कि अल्लाह हमेशा हक़ के पैरोकारों की तरफ़ होता है। इतने ग़ैर-मामूली फ़र्क़ के बावजूद इतनी ग़ैर-मामूली फ़तह अल्लाह की मदद के बग़ैर नहीं हो सकती। यह खुदा की तरफ़ से इस बात का एक मुजाहिरा है कि हक़ इस आलम में तंहा नहीं है। इसी के साथ इन्कार करने वालों के लिए वह एक जाहिरी दलील भी है जिसमें वे देख सकते हैं कि खुदा की इस दुनिया में वे कितने बेजगह हैं। हक़ के दाजी के कलाम और उसकी ज़िंदगी में खुली हुई अलामतें होती हैं कि यह खुदा की तरफ़ से है। मगर जो सरकश लोग हैं वे इसे रद्द करने के लिए अल्फ़ाज़ की एक पनाहगाह बना लेते हैं। वे झूठी तौजीहात (कुतर्कों) में जीते रहते हैं, यहां तक कि वे आख़िरत की दुनिया में पहुंच जाते हैं, सिर्फ़ यह जानने के लिए कि वे जिन अल्फ़ाज़ का सहारा लिए हुए थे वे हकीकत के एतबार से कितने बेमअना थे।

زَيْنَ لِّلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ
الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَ حُسْنِ الْمَالِ ۖ قُلْ أَؤْتِيكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَلِكَ لَكُمُ الَّذِينَ
اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۚ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا
إِنَّا مَكَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقْتَا عَذَابِ النَّارِ ۖ الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَ
الْقَنَاتِينَ ۖ وَالْمُنْفِقِينَ ۖ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْكَارِ ۖ

लोगों के लिए सुखनुमा कर दी गई है मुहब्बत ख़्वाहिशों की औरतें, बेटे, सोने-चांदी के ढेर, निशान लगे हुए घोड़े, मवेशी और खेती। ये दुनियावी ज़िंदगी के सामान हैं। और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊं इससे बेहतर चीज़। उन लोगों के लिए जो डरते हैं, उनके रब के पास बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे इनमें हमेशा रहेंगे। और सुथरी बीवियां होंगी और अल्लाह की रिज़ामंदी होगी। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे, जो कहते हैं ऐ हमारे रब, हम ईमान ले आए।

पस तू हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा। वे सब करने वाले हैं और सच्चे हैं, फरमांवरदार हैं और ख़र्च करने वाले हैं और पिछली रात को मफ़िरत (क्षमा) मांगने वाले हैं। (14-17)

दुनिया इन्तेहान की जगह है। इसलिए यहां की चीज़ों में आदमी के लिए जाहिरी कशिश रखी गई है। अब खुदा यह देखना चाहता है कि कौन है जो जाहिरी कशिश से मुतअस्सिर होकर दुनिया की चीज़ों में खो जाता है। और कौन है जो इससे ऊपर उठकर आख़िरत की अनदेखी चीज़ों को अपनी तवज्जोह का मर्कज़ बनाता है। आदमी को दुनिया की चीज़ों में तस्कीन मिलती है। वह देखता है कि माहौल के अंदर इनके ज़रिए से वक़ार कायम होता है। ये चीज़ें हों तो उसके सब काम बनते चले जाते हैं। वह समझने लगता है कि यही चीज़ें अस्ल अहमियत की चीज़ें हैं। उसकी दिलचस्पियां और सरगर्मियां सिमत कर बीबी, बच्चों और माल व जायदाद के गिर्द जमा हो जाती हैं। यही चीज़ आख़िरत के तक्क़ाज़ों की तरफ़ बढ़ने में सबसे बड़ी रुकावट है। दुनिया की चीज़ों की अहमियत का एहसास आदमी को आख़िरत की चीज़ों की तरफ़ से ग़ाफ़िल कर देता है। दुनिया में अपने बच्चों के मुस्तक़बिल (भविष्य) की तामीर में वह इतना मशगूल होता है कि उसे याद नहीं रहता कि दुनिया से आगे भी कोई 'मुस्तक़बिल' है जिसकी तामीर की उसे फ़िक्र करनी चाहिए। दुनिया में अपने घर को आबाद करना उसके लिए इतना महबूब बन जाता है कि उसे कभी ख़्याल नहीं आता कि इसके सिवा भी कोई 'घर' है जिसे आबाद करने में उसे लगना चाहिए। दुनिया में दौलत समेटना और जायदाद बनाना उसे इतने ज्यादा कीमती मालूम होते हैं कि वह सोच नहीं पाता कि इसके सिवा भी कोई 'दौलत' है जिसे हासिल करने के लिए वह अपने को वक्फ़ करे। मगर इस विस्म की तमाम चीज़ें सिर्फ़ मौज़ूआ आज़ी ज़िंदगी की रैनक हैं। अगली तबीलतर (दीर्घ) ज़िंदगी में वे किसी के कुछ काम आने वाली नहीं।

जो शख्स आख़िरत की मुस्तक़बिल ज़िंदगी को अपनी तवज्जोहात का मर्कज़ बनाए उसकी ज़िंदगी कैसी ज़िंदगी होगी। दुनिया की रैनकें उसकी नज़र में हकीर (तुच्छ) बन जाएंगी। वह इस यकीन से भर जाएगा कि आख़िरत का मामला तमामतर अल्लाह के इख़्तियार में है। इसका नतीजा यह होगा कि वह सबसे ज्यादा अल्लाह से डरेगा और सबसे ज्यादा आख़िरत का ख़्वाहिशमंद बन जाएगा। मामलात में वह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे नहीं चलेगा बल्कि अल्लाह की अदालत को सामने रख कर अपना रवैया तै करेगा। उसके कौल व अमल में फ़र्क़ नहीं होगा। उसका माल अपना माल नहीं रहेगा बल्कि खुदा के लिए वक्फ़ हो जाएगा। अल्लाह की राह में चलने में चाहे कितनी ही मुश्किलें पेश आएं वह पूरी इस्तेक़ामत (टूटता) के साथ उस पर कायम रहेगा। क्योंकि उसे यकीन होगा कि अल्लाह को छोड़ने के बाद कोई नहीं है जो उसका सहारा बने। उसका दिल अल्लाह की याद से इस तरह पिघल उठेगा कि वह बताव होकर उसे पुकारने लगेगा। उसकी तंहाइयां अपने रब की सोहबत (सान्निध्य) में बसर होने लगेंगी। अल्लाह की अज़मत और क़माल के आगे उसे अपना वजूद सिर से पैर तक ग़लती नज़र आएगा। उसके पास कहने के लिए इसके सिवा और कुछ न होगा कि ऐ मेरे रब, मुझे माफ़ कर दे।

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ إِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ
وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعْتُ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُتْيَيْنِ أَسْلَمْتُمْ
فَإِنْ أَسْلَمُوا فَغَدَا هَتَدُوا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَاللَّهُ بَصِيرُ الْعِبَادِ ۝
إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ
يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

अल्लाह की गवाही है और फरिश्तों की और अहले इल्म की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह कायम रखने वाला है इंसान का। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह जबरदस्त है, ह्किमत वाला है। दीन अल्लाह के नजदीक सिर्फ इस्लाम है। और अहले किताब ने इसमें जो इस्तेलाफ (मतभेद) किया वह आपस की जिद की वजह से किया, बाद इसके कि उन्हें सही इल्म पहुंच चुका था। और जो अल्लाह की आयतों का इंकार करे तो अल्लाह यकीनन जल्द हिसाब लेने वाला है। फिर अगर वे तुम से इस बारे में झगड़ें तो उनसे कह दो कि मैं अपना रुख अल्लाह की तरफ कर चुका। और जो मेरे पैरोकार हैं वे भी। और अहले किताब से और अनपढ़ों से पूछो, क्या तुम भी इसी तरह इस्लाम लाते हो। अगर वे इस्लाम लाएं तो उन्होंने राह पा ली। और अगर वे फिर जाएं तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ पहुंचा देना है। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे। जो लोग अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हैं और पैगम्बरों को नाहक कत्ल करते हैं और उन लोगों को मार डालते हैं जो लोगों में से इंसान की दावत लेकर उठते हैं, इन्हें एक दर्दनाक सजा की खुशखबरी दे दो। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आखिरत में जाये (विनष्ट) हो गए और उनका मददगार कोई नहीं। (18-22)

कायनात का खुदा एक ही खुदा है और वह अदल व किस्ती (न्याय) को पसंद करता है। तमाम आसमानी किताबें अपनी सही सूरत में इसी का एलान कर रही हैं। फैली हुई कायनात, जो इसका मालिक अपने गैर-मरई (अनदेखी) कारिदों (फरिश्तों) के जरिए चला रहा है वह कामिल तौर पर वैसी ही है जैसा कि उसे होना चाहिए। साबितशुदा इंसानी इल्म के मुताबिक कायनात एक हददर्जा वहदानी निजाम (एकीय व्यवस्था) है। इससे स्पष्ट होता है कि

कायनात का व्यवस्थापक सिर्फ एक है। इसी तरह कायनात की हर चीज का अपने उपयुक्त स्थल पर होना इस बात का सुबूत है कि उसका खुदा अदल (न्याय, सुव्यवस्था) को पसंद करने वाला है न कि बेइसाफी को पसंद करने वाला। फिर जो खुदा वसीअतर कायनात में मुसलसल अदल को कायम किए हुए हो वह इंसान के मामले में अदल के खिलाफ बातों पर कैसे राजी हो जाएगा।

कायनात का हर जुज (अवयव) कामिल तौर पर 'मुस्लिम' है। यानी अपनी सरगर्मियों को अल्लाह के मुकर्र किए हुए नक्शे के मुताबिक अंजाम देता है। ठीक यही रवैया इंसान से भी मल्लूब है। इंसान को चाहिए कि वह अपने रब को पहचाने और उसके मल्लूब नक्शे के मुताबिक अपनी जिंदगी को ढाल ले। अल्लाह के सिवा किसी और को अपनी तक्जोह का मकज बनाना या यह ख्याल करना कि अल्लाह का फैसला अदल के सिवा किसी और बुनियाद पर हो सकता है, ऐसी बेअसल बात है जिसके लिए मौजूदा कायनात में कोई गुंजाइश नहीं।

कुरआन की दावत (आह्वान) इसी सच्चे इस्लाम की दावत है। जो लोग इसमें इस्तेलाफ कर रहे हैं इसकी वजह यह नहीं है कि इसका हक होना उन पर वाजेह नहीं है। इसकी वजह ज़िद है। इसे मानना उन्हें कुरआन के दाजी (आह्वानकर्ता) की फित्री बरतरी (वैचारिक श्रेष्ठता) तस्लीम करना महसूस होता है, और उनकी हसद और किर (घमंड) की नफिसयात इस किस्म का एतराफ करने पर राजी नहीं। सीधी तरह हक को मान लेने के बजाए वे चाहते हैं कि उस जवान ही को बंद कर दें जो हक का एलान कर रही है। ताहम खुदा की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। हक के दाजी की जवान को बंद करने के लिए उनका हर मंसूबा नाकाम होगा और जब खुदा के अदल का तराजू खड़ा होगा तो वे देख लेंगे कि उनके वे आमाल कितने बेकीमत थे जिनके बल पर वे अपनी नजात और कामयाबी का यकीन किए हुए थे। सच्ची दलील खुदा की निशानी है। जो शरख्स दलील के सामने नहीं झुकता वह गोया खुदा के सामने नहीं झुकता। ऐसे लोग कियामत में इस तरह उठेंगे कि वे सबसे ज्यादा बेसहारा होंगे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ ثُمَّ يُتَوَلَّى قَوِيتُ مِنْهُمْ ۚ وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَنْ
تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝
فَكَيْفَ إِذَا جُمِعَهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ۝ قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمَلِكَ مَن تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمَلِكَ
مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُزِلُّ مَن تَشَاءُ يُبْدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें अल्लाह की किताब का एक हिस्सा दिया गया था। उन्हें अल्लाह की किताब की तरफ बुलाया जा रहा है कि वह उनके दरमियान फैसला करे। फिर उनका एक गिरोह मुंह फेर लेता है बेरुखी करते हुए। यह इस सबब से कि वे लोग कहते हैं कि हमें हरगिज आग न छुएगी सिवाए गिने हुए कुछ दिनों के। और उनकी बनाई हुई बातों ने उन्हें उनके दीन के बारे में धोखे में डाल दिया है। फिर उस वक्त क्या होगा जब हम उन्हें जमा करेंगे एक दिन जिसके आने में कोई शक नहीं। और हर शख्स को जो कुछ उसने किया है, इसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। तुम कहो, ऐ अल्लाह, सल्तनत के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले। और तू जिसे चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे जलील करे। तेरे हाथ में है सब खूबी। बेशक तू हर चीज पर कादिर है। तू रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और तू बेजान से जानदार को निकालता है और तू जानदार से बेजान को निकालता है। और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रिक़्क़ देता है। (23-27)

अल्लाह की हिदायत एक ही हिदायत है जो विभिन्न कौमों की भाषा में उनके पैगम्बरों पर उतारी जाती रही है। वही कुरआन के रूप में मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारी गई है। इस एकरूपता की वजह से आसमानी किताबों को जानने और मानने वालों के लिए कुरआन की दावत को पहचानना मुश्किल नहीं। कुरआन की दावत और पिछली आसमानी तालीमात में अगर कुछ फर्क है तो सिर्फ यह कि कुरआन की दावत उनकी अपनी मिलावटों से खुदा के दीन को पाक कर रही है। इसके बावजूद क्यों ऐसा है कि बहुत से लोग कुरआन की दावत का इंकार कर रहे हैं। इसकी वजह यह है कि कुरआन की दावत को वे अपने लिए कोई संजीदा मामला नहीं समझते। अपने स्वनिर्मित अकीदों (आस्था, विश्वास) की बुनियाद पर उन्होंने अपने को जहन्नम की आग से महफूज़ मान लिया है। अपनी इस नपिस्सात के तहत वे समझते हैं कि अगर वे इस हक को न स्वीकारें तो इससे उनकी नजात (मुक्ति) ख़तरे में पड़ने वाली नहीं। मगर जब खुदा के इंसफ़ का तराजू खड़ा होगा उस वक्त उन्हें मालूम होगा कि वे महज खुशख़ालियों के अंधेरे में पड़े हुए थे।

हर किस्म की इज्जत व ताक़त अल्लाह के इच्छियार में है। वक्त के बड़े जिसे देखीक़त समझ लें, खुदा चाहे तो उसी के हक में इज्जत व सरकुलंदी का फैसला कर दे। इल्म की गदियों पर बैठने वाले जिसके बारे में जहल (अज्ञान) का फतवा दें, खुदा चाहे तो उसी के जरिए इल्म का चश्मा (झेलत) जारी कर दे। खुदा की नज़र में अगर कोई इज्जत व ताक़त का मुस्तहिक हो सकता है तो वह जो इसे ख़ालिस खुदा की चीज समझे और खुदा की नज़र में इसका सबसे ज्यादा शैर-मुस्तहिक अगर कोई है तो वह जो इसे अपनी जाती मिल्कियत समझता हो। खुदा वसीअतर कायनात में रोजाना बहुत बड़े पैमाने पर यह करिश्मा दिखा रहा है कि वह तारीकी (अंधकार) को रोशनी के ऊपर ओढ़ा देता है और रोशनी को तारीकी के

ऊपर डाल देता है। वह मुर्दा अनासिर (तत्वों) से ज़िंदगी वजूद में लाता है और ज़िंदा चीजों को मुर्दा अनासिर में तब्दील करता है। खुदा की यही कुदरत अगर इतिहास में जाहिर हो तो इसमें ताज्जुब की क्या बात है। जो लोग हक के नाम पर नाहक का कारोबार कर रहे हों वे हमेशा सच्ची हक की दावत के मुखालिफ हो जाते हैं। ऐसे दाओ को बेघर किया जाता है। उसके आर्थिक साधन बर्बाद किए जाते हैं। मगर ऐसा शख्स प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह की सरपरस्ती में होता है। वह उसके लिए ख़ुसूसी रिज्क का इंतजाम करता है। दूसरों को उनकी मआशी (आर्थिक) मेहनत के हिसाब से रिज्क दिया जाता है और ऐसे शख्स को बेहिसाब।

لَا يَخِذُ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاتُوا وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ إِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ قُلْ إِنْ تَحْفَظُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوْا بِعِلْمِهِ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا أَبْعِيدَ ۝ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝ قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝

मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़ कर हक का इंकार करने वालों को दोस्त न बनाएं। और जो शख्स ऐसा करेगा तो अल्लाह से उसका कोई ताल्लुक नहीं। मगर ऐसी हालत में कि तुम उनसे बचाव करना चाहो। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी जात से। और अल्लाह ही की तरफ लौटना है। कह दो कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है उसे छुपाओ या जाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है। और वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जिस दिन हर शख्स अपनी की हुई नेकी को अपने सामने मौजूद पाएगा, और जो बुराई की होगी उसे भी। उस दिन हर आदमी यह चाहेगा कि काश अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी जात से। और अल्लाह अपने बंदों पर बहुत महरबान है। कहो, अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा। अल्लाह बड़ा माफ करने वाला, बड़ा महरबान है। कहो, अल्लाह की इताअत करो और रसूल की। फिर अगर वे मुंह मोड़ें तो अल्लाह हक का इंकार करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (28-32)

मोमिन तमाम इंसानों के साथ नेकी और इंसाफ का सुलूक करने वाला होता है। इसमें मुस्लिम और गैर-मुस्लिम का कोई विभेद नहीं। मगर जब गैर-मुस्लिमों के साथ दोस्ती मुसलमानों के मफ़्द (हित) की क्रीम पर हो तो ऐसी दोस्ती मुसलमानों के लिए जाइज नहीं। ताहम बचाव की तदबीर के तौर पर अगर किसी वक्त एक मुसलमान या किसी मुस्लिम गिरोह को गैर-मुस्लिमों से वक्ती तअल्लुक कायम करना पड़े तो इसमें कोई हर्ज नहीं। अल्लाह नीयत को देखता है और जब नीयत दुरुस्त हो तो वह किसी को उसके अमल पर नहीं पकड़ता। तमाम मामलात में अस्त काबिले लिहाज चीज अल्लाह का ख़ैफ है। आदमी किसी मामले में जो रवैया अपनाए, उसे अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि अल्लाह उसका हिसाब लेगा। और उसके इंसाफ के तराजू में जो गलत ठहरेगा वह उसकी सजा पाकर रहेगा। अल्लाह से किसी इंसान की कोई बात ओझल नहीं चाहे वह उसने छुपकर की हो या एलानिया की हो। जब इस्तेहान का पर्दा हटेगा और आखिरत का आलम सामने आएगा तो आदमी के आमाल की पूरी खेती उसके सामने होगी। यह मंजर इतना हैलनाक होगा कि वे चीजें जो दुनिया में उसके नफ्स की लज्जत बनी हुई थीं, वह चाहेगा कि वे उससे बहुत दूर चली जाएं।

अल्लाह किसी के इस्लाम को जहां देखता है वह उसका कल्ब (हृदय) है। मोमिन वही है जिसका अल्लाह से तअल्लुक कल्बी मुहब्बत की हद तक कायम हो जाए। ऐसे ही लोग हैं जो अल्लाह की मुहब्बत व तवज्जोह के मुस्तहिक बनते हैं। और जो शख्स अल्लाह से इस तरह तअल्लुक कायम कर ले उससे अगर कोताहियां भी होती हैं तो अल्लाह इससे दरगुजर फरमाता है। अल्लाह सरकशों के लिए बहुत सख्त है। मगर जो लोग आजिजी का रवैया इख़्तियार करें वह उनके लिए नर्म पड़ जाता है।

यह एक नपिसयाती हकीकत है कि जिस सीने में किसी की मुहब्बत मौजूद हो उसी सीने में महबूब के दुश्मन की मुहब्बत जमा नहीं हो सकती। इसी के साथ यह भी एक हकीकत है कि महबूब अगर ऐसी हस्ती हो जो आदमी के लिए आका और मालिक का दर्जा रखती हो तो उसके साथ मुहब्बत सिर्फ मुहब्बत की हद तक न रहेगी बल्कि लाजिमन इताअत (आज्ञापालन) और फरमांबरदारी का जब्बा पैदा करेगी। खुदा की जिस मुहब्बत के बाद खुदा के दुश्मनों से कल्बी तअल्लुक ख़त्म न हो या उसकी इताअत व फरमांबरदारी का जब्बा पैदा न हो वह झूठी मुहब्बत है। ऐसे शख्स का शुमार अल्लाह के यहां इंकार करने वालों में होगा न कि मानने वालों में। रसूल वह शख्स है जिसके कामिल खुदापरस्त होने की गवाही खुद खुदा ने दी है, इसलिए खुदापरस्ताना जिंदगी के लिए रसूल का नमूना ही मौजूदा दुनिया में वाहिद मुस्तनद (एकमात्र प्रमाणित) नमूना है।

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَالْإِسْمَاعِيلَ عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ ذُرِّيَّتُكَ
بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِكَ مِنَ الْآخَرِينَ ۚ إِذْ قَالَتْ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا
قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ ۖ وَلَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ ۚ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتُهَا مِنَ الشَّيْطَانِ

الرَّحِيمِ ۚ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ ۖ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۖ وَكَفَّهَا زَكَرِيَّا ۖ
كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَ هَارِزَاتٍ قَالَتْ لِمَ يَمُرُّ بِكَ
هَذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ
هَذَا لِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ
الدُّعَاءِ ۖ فَادَّأَتْهُ الْمَلَكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ ۖ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ
بِغُلَامٍ مُّصَدِّقًا ۖ فَاكْبَلَتْهُ مِنَ اللَّهِ وَوَسَّيْدًا وَحَصُورًا ۖ وَنَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ
قَالَ رَبِّ إِنِّي يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذَلِكَ
اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۖ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۖ قَالَ إِنَّا لَنُكَلِّمُ النَّاسَ
ثَلَاثَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمَزًا ۖ وَادْكُرْ لَكَ كَثِيرًا ۖ وَسَمِعَ بِالْعَصِيِّ وَالْإِبْرَاقِ ۖ وَلَئِنْ
قَالَتِ الْمَلَكَةُ لِيَمْرُئَاتٍ اللَّهُ اصْطَفَىٰ خَلَقًا وَطَهَّرَ ۖ وَاصْطَفَىٰ عَلَى
نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ۖ لِيَمْرُئَاتٍ اقْتَتَبْنِي وَاسْتَجِدْنِي وَارْكُعْنَ مَعِيَ الرَّكْعَتَيْنِ
ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ ۖ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَقُولُونَ
أَقْلَامُهُمْ إِلَيْهِمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۖ

वेशक अल्लाह ने आदम को और नूह को और आले इब्राहीम को और आले इमरान को सारे आलम के ऊपर मुंतख़ब किया है। ये एक-दूसरे की औलाद हैं। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब मैंने नज़ (अर्पित) कियमअनारे लिए जो मेरे पेट में है वह आज़ाद रखा जाएगा। पस तू मुझसे कुबूल कर वेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। फिर जब उसने बच्चा जन्मा तो उसने कहा ऐ मेरे रब मैंने तो लड़की को जन्मा है और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उसने क्या जन्मा है और लड़का नहीं होता लड़की की मानिंद। और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूं। पस उसके रब ने उसे अच्छी तरह कुबूल किया और उसे उम्दा तरीके से परवान चढ़ाया और जकरिया को उसका सरपरस्त बनाया। जब कभी जकरिया उनके पास हुजरे में आता तो वहां रिज्क पाता। उसने पूछा ऐ मरयम ये चीज तुम्हें कहां से मिलती है मरयम ने कहा यह अल्लाह के पास से है वेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज्क दे देता है। उस वक्त जकरिया ने अपने रब को पुकारा। उसने कहा ऐ मेरे रब मुझे अपना पास से पाकीजा औलाद अता कर वेशक तू दुआ का सुनने वाला है। फिर फरिश्तों ने उसे

आवाज दी जबकि वह हुजरे में खड़ा हुआ नमाज पढ़ रहा था कि अल्लाह तुझे याहिया की खुशखबरी देता है जो अल्लाह के कलिमे की तस्दीक करने वाला होगा और सरदार होगा और अपने नपस को रोकने वाला होगा और नबी होगा नेकों में से। जकरिया ने कहा ऐ मेरे रब मेरे लड़का किस तरह होगा हालांकि मैं बूढ़ा हो चुका और मेरी औरत बांझ है। फरमाया उसी तरह अल्लाह कर देता है जो वह चाहता है। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे रब मेरे लिए कोई निशानी मुकरर कर दे। कहा तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और अपने रब को कसरत से याद करते रहो और शाम व सुबह उसकी तस्बीह करो। और जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम अल्लाह ने तुम्हें मुंतख़ब किया और तुम्हें पाक किया और तुम्हें दुनिया भर की औरतों के मुकाबले में मुंतख़ब किया है (चुना है)। ऐ मरयम अपने रब की फरमांवरदारी करो और सज्दा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो। यह ग़ैब की ख़बरे हैं जो हम तुम्हें 'वही' (अवतरित) कर रहे हैं और तुम उनके पास मौजूद न थे जब वे अपने कुरअे डाल रहे थे कि कौन मरयम की सरपरस्ती करे और न तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद थे जब वे आपस में झगड़ रहे थे। (33-44)

अल्लाह ने हज़रत ज़करिया को बुख़्पे में औलाद दी, हज़रत मरयम को हुजरे में रिज्क पहुंचाया, हज़रत मसीह को बग़ैर बाप के पैदा किया, आले इब्राहीम ने ऐसे सुलहा (महापुरुष) पैदा किए जिन्हें खुदा की पैग़म्बरी के लिए चुना जाए। अल्लाह ने अपने इन बंदों को ये इनामात यूँ ही नहीं दिए बल्कि उन्हें इसका मुस्तहिक़ पाकर ऐसा किया। ये वे लोग थे जिन्होंने अपनी औलाद से आर्थिक उम्मीदें कायम नहीं कीं इनकी खुशी इसमें थी कि इनकी औलाद अल्लाह की राह में सरगर्म हो। ये वे लोग थे जिन्होंने अपने अंदर इस तमन्ना की परवरिश की कि उनकी औलाद शैतान से बची रहे, वह नेक बंदों की जमाअत में शामिल हो जाए। किसी के अंदर भलाई देख कर वे हसद और जलन में मुव्तला नहीं हुए। उनके नेक जज्बात के असर से उनकी औलाद भी ऐसी हुई जो दुनिया की ज़िंदगी में अपने नपस पर काबू रखने वाली हो, वह अल्लाह को याद करे। बदी और नेकी के दर्मियान वह नेकी के रास्ते को अपनाए। यही वे लोग हैं जिनको अल्लाह अपने ख़ास रिज्क से खिलाता पिलाता है और उन्हें अपनी खुसूसी रहमत के लिए कुबूल कर लेता है।

إِذْ قَالَتِ الْمَلَكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ وَكَلَّمَهُ النَّاسُ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الظَّالِمِينَ ۖ قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشْرٌ ۖ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ اِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْاِنْجِيلَ ۚ وَرَسُولًا اِلٰى بَنِي

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْاِنْجِيلَ ۚ وَرَسُولًا اِلٰى بَنِي اِسْرَآءِيْلَ ۚ اِنِّىْ قَدْ جَعَلْتُكُمْ بَآيَةً مِّنْ رَّبِّكُمْ ۚ اِنِّىْ اَخْلَقْتُ لَكُمْ مِّنَ الظَّالِمِيْنَ كَهَيْئَةِ الظَّالِمِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا يٰذِنُ اللّٰهُ وَابْرِئِ الْاَكْمَةَ وَ الْاَبْرَصَ ۚ وَاٰمِى السُّوْىَ يٰذِنُ اللّٰهُ ۚ وَاَنْبِئَكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدْخُرُوْنَ فِيْ بُيُوْتِكُمْ اِنِّىْ فِيْ ذٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيِّ مِنَ التَّوْرَةِ وَلِاِحْلٰى لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاطِيعُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝

जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम, अल्लाह तुम्हें खुशखबरी देता है अपनी तरफ से एक कलिमे की। उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा। वह दुनिया और आखिरत में मर्तबे वाला होगा और अल्लाह के मुकर्रब बंदों में होगा। वह लोगों से बातें करेगा जब मां की गोद में होगा और जब पूरी उम्र का होगा। और वह सालेहीन (सज्जनों) में से होगा। मरयम ने कहा ऐ मेरे रब, मेरे किस तरह लड़का होगा जबकि किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया। फरमाया उसी तरह अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। जब वह किसी काम का फैसला करता है तो उसे कहता है कि हो जा और वह हो जाता है। और अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखाएगा और वह रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लेकर आया हूँ। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे की आकृति बनाता हूँ, फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से वाकई परिंदे बन जाती है। और मैं अल्लाह के हुक्म से जन्मजात अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ। और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को ज़िंदा करता हूँ। और मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या जख़ीरा करते हो। बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो। और मैं तस्दीक करने वाला हूँ तौरात की जो मुझ से पहले की है और मैं इसलिए आया हूँ कि कुछ उन चीजों को तुम्हारे लिए हलाल ठहराऊँ जो तुम पर हराम कर दी गई हैं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से निशानी लेकर आया हूँ। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी। पस उसकी इबादत करो, यही सीधी राह है। (45-51)

यहूद की नस्ल को अल्लाह ने इस ख़ास मंसब के लिए चुन लिया था कि उन पर अपनी हिदायत उतारे ताकि वे खुद अल्लाह के रास्ते पर चलें और दूसरों को उससे आगाह करें। मगर बाद के जमाने में यहूद के अंदर बिगाड़ आ गया। यहाँ तक कि अल्लाह की नजर में वे इस

काबिल न रहे कि आसमानी हिदायत के अमीन (धारक) बन सकें। अब अल्लाह का फैसला यह हुआ कि यह अमानत उनसे छीन कर आले इब्राहीम की दूसरी शाख (बनी इस्माईल) को दे दी जाए। इस फैसले को लागू करने से पहले यहूद पर इत्मा मे हुज्जत (हुज्जत पूरी करना) जरूरी था। हजरत मसीह इसी इत्मा मे हुज्जत के लिए भेजे गए। आपको असामान्य जन्म और आपको गैर-मामूली मोजिजात (पैगम्बरों के चमत्कार) का दिया जाना इसीलिए था कि यहूद को इस बारे में कोई शक न रहे कि आप खुदा के भेजे हुए हैं और खुदा की तरफ से बोल रहे हैं। हजरत मसीह अपने साथ न सिर्फ फैकुल फितरी (दिव्य असामान्य) निशानियां रखते थे बल्कि वह इतने मुअस्सर और मुदल्लल अंदाज में बोलते थे कि उनके जमाने में कोई इस तरह बोलने पर कादिर न था। पहली बार जब आपने यरोशलम के हैकल में तकरीर की तो यहूदी विद्वान आपकी बातों को सुनकर दंग रह गए। (लूका 47 : 2)। यह उनकी मोजिजनुमा शख्सियत और उनके मबूत कर देने वाले कलाम ही का असर था कि अगरचे आप बग़ैर बाप के पैदा हुए थे मगर आपके सामने किसी को जुरत न हो सकी कि इस पहलू से आपको मतऊन (लांछित) करे। ताहम यहूद इतने बेहिस और इतने सरकश हो चुके थे कि इतिहाई खुली-खुली दलीलें सामने आ जाने के बावजूद उन्होंने आपको मानने से इंकार कर दिया। 'इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए' यानी जो दलील पेश की जा रही है वह खुद में मुकम्मल है। मगर वह उसी शख्स के लिए दलील बनेगी जो मानने का मिजाज रखता हो। जिसके अंदर यह सलाहियत हो कि अपने ख्यालात के कोहरे से बाहर आकर दलील पर गौर करे। जिसकी फितरत इस हद तक जिद्द हो कि जाती क्वर का सवाल उसके लिए हक को कुबूल करने में रुकावट न बने।

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ
نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ إِمَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِمَا نَأْمُرُ بِمُؤْمِنُونَ رَبَّنَا مَتَّيَّمَا أَنْزَلْتَ وَابْتَعْنَا
الرَّسُولَ فَالْتَبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَكَرَرُوا مَكْرَ اللَّهِ وَاللَّهُ خَيْرُ الْبَاكِرِينَ ۝ إِذْ قَالَ
اللَّهُ لِعِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ
جَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ
فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ فَاَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعَدَّ لَهُمْ
عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمُ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ ذَلِكَ
نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ۝

फिर जब ईसा ने उनका इंकार देखा तो कहा कि कौन मेरा मददगार बनता है अल्लाह की राह में। हवारियों ने कहा कि हम हैं अल्लाह के मददगार। हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और आप गवाह रहिए कि हम फरमांबरदार हैं। ऐ हमारे रब हम ईमान लाए उस पर जो तूने उतारा, और हमने रसूल की पैरवी की। पस तू लिख ले हमें गवाही देने वालों में। और उन्होंने खुफिया तदबीर की और अल्लाह ने भी खुफिया तदबीर की। और अल्लाह सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है। जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा मैं तुम्हें वापस लेने वाला हूँ और तुम्हें अपनी तरफ उठा लेने वाला हूँ और जिन लोगों ने इंकार किया है उनसे तुम्हें पाक करने वाला हूँ। और जो तुम्हारे पैरोकार हैं उन्हें कियामत तक उन लोगों पर गालिब करने वाला हूँ जिन्होंने तुम्हारा इंकार किया है। फिर मेरी तरफ होगी सबकी वापसी। पस मैं तुम्हारे दर्मियान उन चीजों के बारे में फैसला करूँगा जिनमें तुम झगड़ते थे। फिर जो लोग मुंकिर हुए उन्हें सज़ा अजाब दूँगा दुनिया में और आखिरत में और उनका कोई मददगार न होगा। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें अल्लाह उनका पूरा अज़्र देगा और अल्लाह जालिमों को दोस्त नहीं रखता। यह हम तुम्हें सुनाते हैं अपनी आयतें और हिकमत भरी बातें। (52-58)

बनी इस्राईल के बड़ों ने हजरत मसीह को मानने से इंकार कर दिया। बड़ों के हाथ में हर किस्म के वसाइल (संसाधन) होते हैं। साथ ही यह कि मजहब की गद्दियों पर कबिज होने की वजह से अवाम की नजर में वही मजहब के नुमाइंदे होते हैं। इसलिए वे जिसे रद्द कर दें वह न सिर्फ जिंदगी के वसाइल से महरूम हो जाता है बल्कि हक की खातिर सब कुछ खोने के बाद भी लोगों की नजर में बददीन ही बना रहता है। ऐसे वक़्त में हक के दाओ का साथ देना इतिहाई मुश्किल काम है। यह शुकहत और मुखालिफ़तों की आम फिजा में उसकी सदाक़त पर गवाह बनना है। यह हक की जानिब उस वक़्त खड़ा होना है जबकि हक तंहा रह गया हो।

हक जब अपनी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में उठता है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर इसकी ज़द पड़ती हुई महसूस करते हैं जो अपनी हक के खिलाफ जिद्दी पर हक का लेखल लगाकर लोगों के दर्मियान इज्जत का मक़म हासिल किए हुए थे। वे दाओ को ज़े (परास्त) करने के लिए उठ खड़े होते हैं। वे तरह-तरह के शोषे निकाल कर अवाम को इसके खिलाफ भड़काते हैं। और बिलआखिर ताक़त के ज़रिए उसे मिटा देने का मंसूबा बनाते हैं। मगर अल्लाह की नुसरत (मदद) हमेशा दाओ के साथ होती है, इसलिए कोई मुखालिफ़त (विरोध) उसकी आवाज को दबाने में कामयाब नहीं होती। मुखालिफ़तों के बावजूद वह अपने मिशन को मुकम्मल करता है। जो लोग हक की दावत के मुखालिफ़ बनें वे अल्लाह की नजर में मुफ़सिद (उपद्रवी) हैं। क्योंकि वे लोगों को जन्नत की तरफ जाने से रोकते हैं। इससे बड़ा कोई फ़साद नहीं हो सकता कि खुदा के बंदों को खुदा की जन्नत की तरफ जाने से रोका जाए।

हजरत मसीह यहूद कीम में पैदा हुए मगर यहूद ने आपकी नुबुव्वत नहीं मानी। उन्होंने आपको ख़स करने के लिए आपके खिलाफ झूठा मुक़दमा बनाया और आपको फिलिस्तीन की

रूमी अदालत में ले गए। अदालत से आपको सूली पर चढ़ाने का फैसला हो गया। मगर अल्लाह तआला ने आपको उठा लिया और रूमी सिपाहियों ने एक अन्य आदमी को आपके हमशकल पाकर उसे सूली दे दी। यहूद के इस जुर्म पर खुदा ने यह फैसला कर दिया कि हजरत मसीह को मानने वाली कौम क्रियामत तक यहूदी कौम पर गालिब रहेगी। यह यहूद और मसीही दोनों के साथ खुदा का दुनिवायी मामला है। आखिरत का मामला इसके अलावा है जो खुदा की आम सुन्नत के तहत होगा।

إِنَّمَا مَثَلُ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنَ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۚ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَهُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَهُمْ وَأَنْفُسَنَا
وَأَنْفُسَهُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلُ لَكَ الْكُذِبَ بَيِّنًا ۚ إِنَّ هَذَا هُوَ
الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ وَإِنْ
تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۚ

बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नजदीक आदम की-सी है। अल्लाह ने उसे मिट्टी से बनाया। फिर उसको कहा कि हो जा तो वह हो गया। हक बात है तैरे ख की तरफ से। पस तुम न हो शक करने वालों में। फिर जो तुमसे इस बारे में हुज्जत करे बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो उनसे कहो कि आओ, हम बुलाएँ अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को। और हम और तुम खुद भी जमा हों। फिर हम मिलकर दुआ करें कि जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लानत हो। बेशक यह सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह ही जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। फिर अगर वे कुबूल न करें तो अल्लाह फसाद करने वालों को जानता है। (59-63)

मसीही लोगों का अकीदा है कि हजरत मसीह (अलै०) खुदा के बेटे हैं। इनका कहना है कि हजरत मसीह आम इंसानों से बिल्कुल भिन्न हैं। उनका जन्म प्रजनन के आम नियम के विपरीत बाप के बगैर हुआ, फिर आपको आम इंसानों की तरह एक इंसान कैसे कहा जा सकता है। आपके जन्म की प्रक्रिया खुद बताती है कि वह बशर (आम इंसान) से मावरा थे। वह इंसान के बेटे नहीं बल्कि खुदा के बेटे थे। कहा गया कि तुम्हारे सवाल का जवाब अब्बल इंसान (आदम) की तखलीक में मौजूद है। तुम खुद यह मानते हो कि आदम सबसे पहले बशर हैं। वह मारुफ तरीके के मुताबिक मर्द और औरत के तअल्लुक से वजूद में नहीं आए। बल्कि बराहैरास्त खुदा के हुक्म के तहत वजूद में आए। फिर बाप के बगैर पैदा होने की बुनियाद पर जब आदम खुदा के बेटे नहीं हैं तो इसी तरह बाप के बगैर पैदा होने की बुनियाद पर मसीह कैसे खुदा के बेटे हो जाएंगे।

नजरान (यमन) कुरआन के नाजिल होने के जमाने में मसीही मजहब का बहुत बड़

मर्कज था। उनके उलमा और पेशवाओं का एक वफ्द सन् 9 हिजरी में मदीना आया और अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) से मसीही अकाइद के बारे में बहस की। आपने मुखलिफ दलीलें उनके सामने पेश कीं। मसलन आपने फरमाया कि मसीह खुदा के बेटे कैसे हो सकते हैं जबकि खुदा एक जिंदा हस्ती है, उस पर कभी मौत आने वाली नहीं। मगर ईसा पर मौत और फना आने वाली है। आपकी दलीलों का उन के पास कोई जवाब नहीं था मगर वे बराबर कजबहसी करते रहे। जब आपने देखा कि वे दलील से मानने वाले नहीं हैं तो आपने उन्हें एक आखिरी चैलेंज दिया। आपने फरमाया कि अगर तुम अपने को बरहक समझते हो तो मुवाहिला (एक-दूसरे पर लानत की बददुआ) के लिए तैयार हो जाओ।

अगले दिन सुबह को आप बाहर निकले। आपके साथ आपके दोनों नवासे हसन और हुसैन थे। इनके पीछे हजरत फातिमा और इनके पीछे हजरत अली। नजरानी ईसाई यह देखकर मरऊब हो गए और आपस में मशिवरे की मोहलत मांगी। अकेले मशिवरे में उनके एक आलिम ने कहा : तुम जानते हो कि अल्लाह ने बनी इस्माईल में पैगम्बर भेजने का वादा किया है। हो सकता है कि यह वही पैगम्बर हों। फिर एक पैगम्बर से मुवाहिला और मुलाइना (मलऊन करना) करने का नतीजा यही निकल सकता है कि तुम्हारे छोटे और बड़े सब हलाक हो जाएँ और नस्लों तक इसका असर बाकी रहे। खुदा की कसम मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूँ कि अगर ये दुआ करें तो पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाएंगे। इसलिए बेहतर यह है कि हम उनसे सुलह करके अपनी बस्तियों की तरफ रवाना हो जाएँ।

قُلْ يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَ
لَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا
فَقُولُوا الشَّهْدُ وَإِيَّاكُمْ مُسْلِمُونَ ۚ يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَحْجُونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا
أُنزِلَتِ التَّوْرَةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ هَٰ أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ
حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۚ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا
مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ الْكَذِبِينَ اتَّبَعُوهُ
وَهَٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَكَذَٰلِكَ طَافُوا مِنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۚ
يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۚ يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ
لِمَ تَكْفُرُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْفُرُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ

कहो ऐ अहले किताब, आओ एक ऐसी बात की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान मुसल्लम (साझी) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएं। और हममें से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाए। फिर अगर वे इससे मुंह मोड़ें तो कह दो कि तुम गवाह रहो, हम फरमांबरदार हैं। ऐ अहले किताब, तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। हालांकि तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं। क्या तुम इसे नहीं समझते। तुम वे लोग हो कि तुम उस बात के बारे में झगड़े जिसका तुम्हें कुछ इल्म था। अब तुम ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते। इब्राहीम न यहूदी था और न नसरानी। बल्कि सिर्फ अल्लाह का ही रहने वाला मुस्लिम था और वह शिर्क करने वालों में से न था। लोगों में ज्यादा मुनासिबत इब्राहीम से उन्हें है जिन्होंने उसकी पैरवी की और यह पैगम्बर और जो उस पर ईमान लाए। और अल्लाह ईमान वालों का साथी है। अहले किताब में से एक गिरोह चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह कर दे। हालांकि वे नहीं गुमराह करते मगर खुद अपने आपको। मगर वे इसका एहसास नहीं करते। ऐ अहले किताब, अल्लाह की निशानियों का क्यों इंकार करते हो हालांकि तुम गवाह हो। ऐ अहले किताब, तुम क्यों सही में ग़लत को मिलाते हो और हक को छुपाते हो, हालांकि तुम जानते हो। (64-71)

तौहीद न सिर्फ पैगम्बरों की अस्ल तालीम है बल्कि तौरात और इंजील के मौजूदा ग़ैर-मुस्तनद (अप्रमाणिक) नुस्खों में भी वह एक मुसल्लम हकीकत के तौर पर मौजूद है। इस मुसल्लमा मेयार (मापदंड) पर जांचा जाए तो इस्लाम ही कामिल तौर पर सही दीन साबित होता है न कि यहूदियत और नसरानियत। तौहीद का मतलब यह है कि अल्लाह को एक माना जाए। सिर्फ उसी की इबादत की जाए। उसके साथ किसी को शरीक न ठहराया जाए। किसी इंसान को वह मकाम न दिया जाए जो कायनात के मालिक के लिए ख़ास है। यह तौहीद अपनी ख़ालिस सूत में सिर्फ कुरआन और इस्लाम में महफूज है। दूसरे मजहबों ने नजरी तौर पर तौहीद का इकारा करते हुए अमली तौर पर वह सब कुछ इख़्तियार कर लिया जो तौहीद के सरासर ख़िलाफ था। जवान से ख़ुदा को रब कहते हुए उन्होंने अपने नवियों और बुजुर्गों को अमलन रब का दर्जा दे दिया।

मक्का के मुशरिकीन अपने मजहब को इब्राहीमी मजहब कहते थे। यहूद व नसारा भी अपने मजहबी इतिहास को हजरत इब्राहीम के साथ जोड़ते थे। हर ज़माने के लोग इसी तरह अपने नवियों और बुजुर्गों के नाम को अपनी बिदाआत (कुरीतियों) और तहरीफात (संशोधनों, परिवर्तनों) के लिए इस्तेमाल करते रहे हैं। ज़माना गुजरने के बाद इनका बनाया हुआ मजहब अवाम के जेहनों में इस तरह छा जाता है कि वे उसी को अस्ल मजहब समझने लगते हैं। इन हालात में जब सच्चे और बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत उठती है तो उसके विरोधी इसे बेएतबार साबित करने के लिए सबसे आसान तरीका यह समझते हैं कि अवाम में यह मशहूर कर दें कि यह अस्लाफ (पूर्वजों) के दीन के ख़िलाफ है। वह शख्स जो अस्लाफ के दीन का हकीकी नुमाईदा होता है उसे खुद अस्लाफ ही के नाम पर रद्द कर दिया जाता है। यह गोया

हक के ऊपर बातिल (असत्य) का पर्दा डालना है। यानी ऐसी बातें कहना जो अपनी मूल प्रकृति में बेहकीकत हों मगर अवाम तज्जिया (विश्लेषण) न कर सकने की वजह से इसे दुरुस्त समझ लें और हक से दूर हो जाएं। 'मुस्लिम हनीफ' वह है जो तौहीद के रास्ते पर यकसू होकर चले और ग़ैर-हनीफ वह है जो दाएं या बाएं की पगडंडियों पर मुड़ जाए। कोई एक जेली पहलू (उप पहलू) को लेकर इतना बढ़ाए कि उसी को सब कुछ बना दे। कोई दूसरे जेली पहलू को लेकर उस पर इतने तज़रीही (ब्याख्यागत) इज़फ़े करे कि वही सारी हकीकत नजर आने लगे। लोग दीन के जेली पहलुओं को कुल दीन समझ लें और तौहीद की सीधी शाहराह को छोड़कर इधर-उधर के रास्तों में दौड़ने लगें।

وَقَالَتْ طَافِيَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ يَمُونُوا بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجَهَ النَّهَارِ وَاسْكُرُوا الْخِرَالُ عَلَيْهِمْ يَرْجِعُونَ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا إِلَّا مَن تَبِعَ وَبَيِّنْكُمْ قُلُوبَ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيْتُمْ أَوْ يُحَاجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۖ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَن إِنْ تَأْمَنَهُ بِقِطْعَةٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بِدَيْنَارٍ لَا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۖ بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۖ

और अहले किताब के एक गिरोह ने कहा कि मुसलमानों पर जो चीज उतारी गई है उस पर सुबह को ईमान लाओ और शाम को उसका इंकार कर दो, शायद कि मुसलमान भी इससे फिर जाएं। और यकीन न करो मगर सिर्फ उसका जो चले तुम्हारे दीन पर। कहो हिदायत वही है जो अल्लाह हिदायत करे। और यह उसी की देन है कि किसी को वही कुछ दे दिया जाए जो तुम्हें दिया गया था। या वे तुमसे तुम्हारे रब के यहां हुज्जत करें। कहो बड़ाई अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है देता है और अल्लाह बड़ा वुस्हत वाला है, इल्म वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए ख़ास कर लेता है। और अल्लाह बड़ा फज़ल वाला है। और अहले किताब में कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसके पास अमानत का ढेर रखो तो वह उसे तुम्हें अदा कर दे। और इनमें कोई ऐसा है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार अमानत रख दो तो वह तुम्हें अदा न करे इल्ला यह कि तुम उसके सिर पर खड़े हो जाओ, यह इस सबब से कि वे कहते हैं कि ग़ैर-अहले किताब के बारे में हम पर कोई इल्जाम नहीं। और वे अल्लाह के ऊपर झूठ लगाते हैं

हालांकि वे जानते हैं। बल्कि जो शरूख अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह से डरे तो बेशक अल्लाह ऐसे मुत्तकियों को दोस्त रखता है। (72-76)

एक गिरोह जिसमें अबिया और सुलहा (महापुरुष) पैदा हुए हों, जिसके दर्मियान असें तक दीन का चर्चा रहे, अक्सर वह इस ग़लतफ़हमी में पड़ जाता है कि वह और हक़ दोनों एक हैं। वह हिदायत को एक गिरोही चीज समझ लेता है न कि एक उसूली चीज। यहूद का मामला यही था। उनका ज़ेहन, तारीखी रिवायतों के असर से यह बन गया था कि जो हमारे गिरोह में है वह हिदायत पर है और जो हमारे गिरोह से बाहर है वह हिदायत से ख़ाली है। जो लोग हक़ को इस तरह गिरोही चीज समझ लें वे ऐसी सदाक़त (सच्चाई) को मानने के लिए तैयार नहीं होते जो उनके गिरोह के बाहर जाहिर हुई हो। वे भूल जाते हैं कि हक़ वह है जो अल्लाह की तरफ़ से आए न कि वह जो किसी शरूख या गिरोह की तरफ़ से मिले। वे अगरचे ख़ुदा के दीन का नाम लेते हैं मगर उनका दीन हकीक़त में गिरोहपरस्ती होता है न कि ख़ुदापरस्ती। उनका यह मिजाज उनकी आंख पर ऐसा पर्दा डाल देता है कि अपने गिरोह से बाहर किसी का फ़जल व क़माल उन्हें दिखाई नहीं देता। खुली-खुली दलीलें सामने आने के बाद भी वे इसे शुबह की नज़र से देखते हैं। वे अपने हलके से बाहर उठने वाली हक़ की दावत के शदीद मुख़ालिफ़ बन जाते हैं। दोअमली का तरीका अपना कर वे इसे ख़त्म करने की कोशिश करते हैं। बेबुनियाद बातें मशहूर करके वे लोगों को इसकी सदाक़त के बारे में मुशतबह (भ्रमित) करते हैं। शरीअते ख़ुदावंदी के सरासर ख़िलाफ़ वे इसे अपने लिए जाइज कर लेते हैं कि वे अख़लाक के दो मेयार बनाएं, एक ग़ैरों के लिए और दूसरा अपने गिरोह के लिए।

किसी को अपने दीन की नुमाइंदगी के लिए कुबूल करना अल्लाह की ख़ुसूसी रहमत है। इसका फ़ैसला गिरोही बुनियाद पर नहीं होता। यह सआदत उसे मिलती है जिसे अल्लाह अपने इल्म के मुताबिक़ पसंद करे। और अल्लाह उस शरूख को पसंद करता है जो अल्लाह के साथ अपने को इस तरह वाबस्ता कर ले कि वह उसका निगरा (संरक्षक) बन जाए, जिससे वह डरे, वह उसका आका बन जाए जिसके साथ किए हुए इताअत के अहद को वह कभी नज़रअंदाज न कर सके। अल्लाह के मक़बूल बंदे वे हैं जो अमानत को पूरा करने वाले हों और अहद (वचन) के पाबंद हों। ऐसे ही लोगों पर अल्लाह की रहमतें उतरती हैं। इसके बरअक्स जो लोग अमानत की अदायगी के मामले में बेपरवाह हों और अहद को पूरा करने में हस्सास न रहें वे अल्लाह के यहां बेकीमत हैं। ऐसे लोग अल्लाह की रहमतों और नुसरतों (मदद) से दूर कर दिए जाते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيِّمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَا يُرَكِّبُهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ٧٦ ۚ وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوَنَ أَسْنَتَهُمْ بِالْكَذِبِ ۖ لِيَحْسُبُوهُ مِنَ الْكَذِبِ ۖ وَمَا هُوَ مِنَ الْكَذِبِ ۖ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ

عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ ٧٥ ۚ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ۝ ٧٤ ۚ وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا ۚ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ ٧٣

जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी कसमों को थोड़ी कीमत पर बेचते हैं उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह न उनसे बात करेगा न उनकी तरफ़ देखेगा क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा। और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। और इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी ज़बानों को किताब में मोड़ते हैं ताकि तुम उसे किताब में से समझो हालांकि वह किताब में से नहीं। और वे कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है हालांकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं। और वे जान कर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। किसी इंसान का यह काम नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक़मत और नुबुव्वत दे और वह लोगों से यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे बंदे बन जाओ। बल्कि वह तो कहेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो, इस वास्ते कि तुम दूसरों को किताब की तालीम देते हो और ख़ुद भी उसे पढ़ते हो। और न वह तुम्हें यह हुक्म देगा कि तुम फ़रिस्तों और फ़ैसलियों को ख़ब बनाओ। क्या वह तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा, बाद इसके कि तुम इस्लाम ला चुके हो। (77-80)

एक शरूख जब ईमान लाता है तो वह अल्लाह से इस बात का अहद करता है कि वह उसकी फ़रमांवरदारी करेगा और बंदों के दर्मियान ज़िंगी गुज़ारते हुए उन तमाम जिम्मेदारियों को पूरा करेगा जो ख़ुदा की शरीअत की तरफ़ से उस पर आयद होती हैं। यह एक पाबंद ज़िंदगी है जिसे अहद (वचन, प्रतिज्ञा, प्रतिबद्धता) की ज़िंदगी से ताबीर किया जा सकता है। इस ज़िंदगी पर क़ायम होने के लिए नफ़स की आजदियों को ख़त्म करना पड़ता है, बार-बार अपने फ़ायदों और मस्लेहतों की कुर्बानी देनी पड़ती है। इसलिए इस अहद की ज़िंदगी को वही शरूख निभा सकता है जो नफ़ा नुक्सान से बेनियाज होकर इसे अपनाए। जिस शरूख का हाल यह हो कि नफ़स पर चोट पड़े या दुनिया का मफ़द ख़तरे में नज़र आए तो वह ख़ुदा के अहद को नज़रअंदाज कर दे और अपने फ़ायदों और मस्लेहतों की तरफ़ झुक जाए, उसने गोथा आख़िरत को देकर दुनिया ख़रीदी। जब आख़िरत के पहलू और दुनिया के पहलू में से किसी एक को लेने का सवाल आया तो उसने दुनिया के पहलू को तरजीह दी। जो शरूख आख़िरत को इतनी बेकीमत चीज समझ ले वह आख़िरत में अल्लाह की इनायतों का हक़दार किस तरह हो सकता है।

जो लोग आख़िरत को अपनी दुनिया का सौदा बनाएं वे दीन या आख़िरत के मुंकिर नहीं हो जाते बल्कि दीन और आख़िरत के पूरे इकरार के साथ ऐसा करते हैं। फिर इन दो मुत्तजाद (परस्पर विरोधी) रवैयों को वे किस तरह एक-दूसरे के मुताबिक बनाते हैं। इसका ज़रिया

तहरीफ (संशोधन, परिवर्तन) है। यानी आसमानी तालीमात को खुदसाखा मअना पहनाना। ऐसे लोग अपनी दुनियापरस्तानी रविश को आखिरतपसंदी और खुदापरस्ती साबित करने के लिए दीनी तालीमात को अपने मुताबिक ढाल लेते हैं। कभी खुदा के अल्फज को बदल कर और कभी खुदा के अल्फज की अपने मुफ़िदे मतलब तशरीह करके। वे अपने आप को बदलने की बजाए किताबे इलाही को बदल देते हैं ताकि जो चीज किताबे इलाही में नहीं है उसे ऐन किताबे इलाही की चीज बना दें, अपनी बेखुदा जिंदगी को बाखुदा जिंदगी साबित कर दिखाएं। अल्लाह के नजदीक यह बदतरीन जुर्म है कि आदमी अल्लाह की तरफ ऐसी बात मंसूब करे जो अल्लाह ने न कही हो।

किसी तालीम की सदाकत की सादा और यकीनी पहचान यह है कि वह अल्लाह के बंदों को अल्लाह से मिलाए, लोगों के खौफ व मुहब्बत के जज्बात को बेदार करके उन्हें अल्लाह की तरफ मोड़ दे। इसके बरअक्स जो तालीम शख़्सीयतपरस्ती या और कोई परस्ती पैदा करे, जो इंसान के नाजुक जज्बात की तवज्जोह का मक़ज किसी तैर-खुदा को बनाती हो, उसके बारे में समझना चाहिए की वह सरासर बातिल (असत्य) है चाहे बजाहिर अपने ऊपर उसने हक का लेबल क्यों न लगा रखा हो।

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْنَاكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۖ قَالَ فَاشْهَدُوا ۖ وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۖ فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۖ أَفَغَيْرِ دِينِ اللَّهِ يَبْعُونَ ۖ وَلَٰئِ اسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۖ قُلْ أَمَّا بِاللهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۖ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۖ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرُّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۖ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۖ

خَلِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ ۖ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۖ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزَادُوا كُفْرًا لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَرَاءَ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا ۖ وَسِ افْتَدَىٰ بِهِ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۖ

और जब अल्लाह ने पैगम्बरों का अहद लिया कि जो कुछ मैंने तुम्हें किताब और हिकमत दी, फिर तुम्हारे पास पैगम्बर आए जो सच्चा साबित करे उन पेशेनगोइयों (भविष्यवाणियों) को जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उस पर ईमान लाओगे और उसकी मदद करोगे। अल्लाह ने कहा क्या तुमने इकारा किया और उस पर मेरा अहद कुबूल किया। उन्होंने कहा हम इकारा करते हैं। फरमाया अब गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ। पस जो शख्स फिर जाए तो ऐसे ही लोग नाफरमान हैं। क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं। हालांकि उसी के हुक्म में है जो कोई आसमान और जमीन में है, खुशी से या नाखुशी से और सब उसी की तरफ लौटाए जाएंगे। कहे हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और जो उतारा गया इब्राहीम पर इस्माईल पर इस्हाक पर और याकूब पर और याकूब की औलाद पर। और जो दिया गया मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ से। हम इनके दर्मियान फर्क नहीं करते। और हम उसी के फरमांवरदार हैं। और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को चाहेगा तो वह उससे हरगिज कुबूल नहीं किया जाएगा और वह आखिरत में नामुरादों में से होगा। अल्लाह क्योंकि ऐसे लोगों को हिदायत देगा जो ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए। हालांकि वे गवाही दे चुके कि यह रसूल बरहक है और उनके पास रोशन निशानियां आ चुकी हैं। और अल्लाह जालिमों को हिदायत नहीं देता। ऐसे लोगों की सजा यह है कि उन पर अल्लाह की, उसके फरिश्तों की और सारे इंसानों की लानत होगी। वे इसमें हमेशा रहेंगे, न उनका अजाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। अलबत्ता जो लोग इसके बाद तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो बेशक अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। बेशक जो लोग ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए फिर कुफ्र में बढ़ते रहे, उनकी तौबा हरगिज कुबूल न की जाएगी और यही लोग गुमराह हैं। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और इंकार की हालत में मर गए, अगर वे जमीन भर सोना भी फिदये में दें तो कुबूल नहीं किया जाएगा। उनके लिए दर्दनाक अजाब है और उनका कोई मददगार न होगा। (81-91)

अल्लाह को पाना एक अबदी (शाश्वत) हकीकत को पाना है, यह पूरी कायनात का हमसफर बनना है। जो लोग इस तरह अल्लाह को पा लें वे हर किस्म के तअस्सुबात (विदेवों) से ऊपर उठ जाते हैं। वे हक को हर हाल में पहचान लेते हैं चाहे उसका पैगाम 'इस्राईली पैगम्बर' की जवान से बुलंद हो या 'ईस्माईली पैगम्बर' की जवान से। मगर जो लोग गिरोहपरस्ती की सतह पर जी रहे हों हक उन्हें हक की सूत में सिर्फ उस वक्त नजर आता है जबकि वह उनके अपने गिरोह के किसी फर्द की तरफ से आए। अल्लाह अगर इनके गिरोह से बाहर किसी शख्स को अपने पैगाम की पैगामरसानी के लिए उठाए तो ऐसा पैगाम उनके जेहन का जुज नहीं बनता। यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि उनका दिल उसके हक व सदाकत होने की गवाही दे रहा हो। ऐसे लोग चाहे अपने को मानने वालों में शुमार करें मगर अल्लाह के यहां इनका नाम न मानने वालों में लिखा जाता है। क्योंकि उन्होंने हक को अपने गिरोह की निस्वत से जाना न कि अल्लाह की निस्वत से। ऐसे हक का इकरार न करना जिसके हक होने पर आदमी के दिल ने गवाही दी हो अल्लाह के नजदीक बदतरीन जुर्म है। ऐसे लोग आखिरत में इतने जलील होंगे कि अल्लाह और उसकी तमाम मख्लूकत उन पर लानत करेगी। अपने से बाहर जाहिर होने वाले हक का एतराफ न करना बजहिर अपने ईमान को बचाना है। मगर हकीकत में यह अपने ईमान को बर्बाद करना है। अल्लाह का मोमिन बंदा अल्लाह के मुसलसल फैजान में जीता है। फिर जो शख्स अपने को खुदपरस्ती और गिरोहपरस्ती के खोल में बंद कर ले उसके अंदर अल्लाह का फैजान किस रास्ते से दाखिल होगा। और अल्लाह के फैजान से महरूमी के बाद वह क्या चीज होगी जो उसके ईमान की परवरिश करे।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ
اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ
إِسْرَءِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ فَنُحِلَّ فَأَنُتُوا بِالتَّوْرَةِ
فَأَنُتُوا مَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَمَنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ
ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ فَاتَّبِعُوا أَمْرَهُ
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الشُّرَكِيِّ ۚ إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي
بِبَكَّةَ مُبَرَّكًَا وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ ۚ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَّقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۚ
وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۚ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ
سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ
لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ

الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَنْتُمْ
شُهَدَاءُ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

तुम हरगिज नेकी के मर्तबे को नहीं पहुंच सकते जब तक तुम उन चीजों में से खर्च न करो जिन्हें तुम महबूब रखते हो। और जो चीज भी तुम खर्च करोगे उससे अल्लाह वाखबर है। सब खाने की चीजें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं सिवाए उसके जो इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था इससे पहले कि तौरात उतरे। कही कि तौरात लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो। इसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधें वही जालिम हैं। कही अल्लाह ने सच कहा। अब इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो हनीफ था और वह शिर्क करने वाला न था। बेशक पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहान के लिए हिदायत का मर्कज। इसमें खुली हुई निशानियां हैं, मकामे इब्राहीम है, जो इसमें दाखिल हो जाए वह मामून (सुरक्षित) है। और लोगों पर अल्लाह का यह हक है कि जो इस घर तक पहुंचने की ताकत रखता हो वह इसका हज करे और जो कोई मुंकिर हुआ तो अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज है। कही ऐ अहले किताब तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हो। हालांकि अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। कही ऐ अहले किताब तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो। तुम उसमें ऐब दूढ़ते हो। हालांकि तुम गवाह बनाए गए हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बेखबर नहीं। (92-99)

यहूद के उलमा ने खुद से जो फिक्र बना रखी थी उसमें ऊंट और खरगोश का गोश्त खाना हराम था जबकि इस्लाम में वह जाइज था। अब यहूद यह कहते कि इस्लाम अगर खुदा का उतारा हुआ दीन है तो इसमें भी हराम व हलाल के मसाइल वही क्यों नहीं जो पिछले जमाने में उतारे हुए खुदा के दीन में थे। इसी तरह वे कहते कि बैतुल मक्दिस अब तक तमाम नबियों की इबादत का किबला रहा है। फिर यह कैसे हो सकता है कि खुदा ऐसा दीन उतारे जिसमें इसे छोड़कर काबा को किबला करार दिया गया हो।

हक की दावत जब अपनी खालिस शकल में उठती है तो उन लोगों पर इसकी जद पड़ने लगती है जो खुदा के दीन के नाम पर अपना एक दीन अवाम में राज किए हुए हों। ऐसे लोग इसके मुखालिफ हो जाते हैं और लोगों को हक की दावत से फेरने के लिए तरह-तरह के एतराज निकालते हैं। उनके खुदासाखा (स्वनिर्मित) दीन में दीन के असायात (मूल आधारों) पर जोर बाकी नहीं रहता। इसके बजाए दीन के जुज्यात (अमौलिक चीजों) में मूशिंगाफियों से दीनदारी का एक जहरी ढंवा बन जाता है। आदमी की हकीकी जिंगी कैसी ही हो, नेकी और तक्वा का कमाल यह समझा जाने लगता है कि वह इस जाहरी ढांचे का खूब एहतेमाम करे। वह 'खरगोश' को यह कहकर न खाए कि हमारे अकाबिर (पूर्ववर्ती पूर्वज) इससे बचते थे। दूसरी तरफ वह कितनी ही हराम चीजों को अपने लिए जाइज किए हुए हो। वह बैतुल मक्दिस की तरफ रुख करने में कुतुबनुमा की सूई की तरह सीधा हो जाना जरूरी समझता हो।

मगर सुबह व शाम की सरगर्मियों को खुदा रुखी बनाने में उसे दिलचस्पी न हो। मगर नेकी का दर्जा किसी को कुर्बानी से मिलता है न कि सस्ती जाहिरदारियों से। खुदा का नेक बंदा वह है जो अपनी मुहब्बत का हदिया अपने रब को पेश करे, जिसके लिए अल्लाह के मुमबले में दुनिया की कोई चीज अजिजतर न रहे। हक को मानने के लिए जब वक़र (प्रतिष्ठा) की कीमत देनी हो, अल्लाह के रास्ते में बढ़ने के लिए जब माल खर्च करना हो और बच्चों के मुस्तकबिल को ख़तरे में डालना पड़े, उस वक़्त वह अल्लाह की खातिर सब कुछ गवारा कर ले। ऐसे नाज़ुक मौकों पर जो शख्स अपनी महबूब चीजों को देकर अल्लाह को ले ले वही नेक और खुदापरस्त बना।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَنْ تُحْبِبُوا فَرِيقًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمُ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفْرِينَ ۖ وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ آيَاتُ اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۚ وَمَنْ يَعْتَصِم بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۚ وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُم مِّنْهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

ऐ ईमान वालो अगर तुम अहले किताब में से एक गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान के बाद फिर मुंकिर बना देंगे। और तुम किस तरह इंकार करोगे हालांकि तुम्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे दर्मियान उसका रसूल मौजूद है। और जो शख्स अल्लाह को मजबूती से पकड़ेगा तो वह पहुंच गया सीधी राह पर। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए। और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो। और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो और फूट न डालो। और अल्लाह का यह इनाम अपने ऊपर याद रखो कि तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे। फिर उसने तुम्हारे दिलों में उल्फत डाल दी। पस तुम उसके फल से भाई-भाई बन गए। और तुम आग के गढ़े के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियां बयान करता है ताकि तुम राह पाओ। (100-103)

दुनिया आजमाइश की जगह है। यहां हर वक़्त यह ख़तरा है कि शैतान आदमी के ईमान को उचक ले जाए और फ़रिश्ते उसकी रूह इस हाल में कब्ज़ करें कि वह ईमान से ख़ाली हो।

इसलिए जरूरी है कि आदमी हर वक़्त बाहोश रहे, वह अपने आप पर निगरान बन जाए। ईमान से दूर होने की एक सूरत वह है जबकि दीन के अजज़ा (अंगों) में तब्दीली करके अहम को ग़ैर-अहम और ग़ैर-अहम को अहम बना दिया जाए। दीन की अस्ल रस्सी तकवा है। यानी अल्लाह से डरना और मरते दम तक अपने हर मामले में वही रवैया अपनाना जो अल्लाह के सामने जवाबदही के तसव्वुर (धारणा) से बनता हो, यही सिराते मुस्तकीम (सीधा-सच्चा रास्ता, सन्मार्ग) है। इससे हटना यह है कि 'तकवा' के बजाए, किसी और चीज को दीन का मदर समझ लिया जाए और उस पर इस तरह जोर दिया जाए जिस तरह खुदा के ख़ौफ और आख़िरत की फ़िक्र पर दिया जाता है। जब भी दीन में इस किस्म की तब्दीली की जाती है तो इसका लाज़िमी नतीजा यह होता है कि मिल्लत के दर्मियान इख़लेलाफ (मतभेद) पड़ जाता है। कोई एक जिमनी (उप, फूक) चीज पर जोर देता है कोई दूसरी जिमनी चीज पर, और इस तरह मिल्लत फ़िस्के-फ़िस्के में बंट कर रह जाती है। ऊपर वर्णित पहले से एक अल्लाह तवज्जोह का मर्कज बनता है और दूसरे से विविध मसाइल तवज्जोह के मर्कज बन जाते हैं। जब दीन में सारा जोर और ताकीद तकवा (अल्लाह से डरना) पर दिया जाए तो इससे आपस में इत्तेहाद वजूद में आता है और जब इसके सिवा दूसरी चीजों पर जोर दिया जाने लगे तो इससे आपसी इख़लेलाफ (मतभेद) की वह बुराई पैदा होती है जो लोगों को जहन्नम के किनारे पहुंचा देती है। किसी गिरोह के अंदर इख़लेलाफ दुनिया में भी अजब है और आख़िरत में भी अजब।

इस्लाम से पहले मदीने में दो कबीले थे। औस और ख़जरज। ये दोनों अरब कबीले थे मगर वे आपस में लड़ते रहते थे। इन आपसी लड़ाइयों ने उन्हें कमजोर कर दिया था। जब वे इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुए तो उनकी लड़ाइयां ख़त्म हो गईं, वे भाई-भाई की तरह मिलकर रहने लगे।

इसकी वजह यह है कि ग़ैर-इस्लाम में हर आदमी अपना वफ़ादार रहता है और इस्लाम में सिर्फ एक अल्लाह का। जिस समाज में लोग अपने या अपने गिरोह के वफ़ादार हों वहां कुदरती तौर पर कई वफ़ादारियां वजूद में आती हैं। और कई वफ़ादारियों के अमली नतीजे ही का नाम इख़लेलाफ और टकराव है। इसके बरअक्स जिस समाज में तमाम लोग एक खुदा के वफ़ादार बन जाएं वहां सबका रुख़ एक मर्कज की तरफ हो जाता है, सब एक रस्सी से बंध जाते हैं। इस तरह आपसी इख़लेलाफ और टकराव के असबाब अपने आप ही ख़त्म हो जाते हैं।

وَلَنْتَكُنَّ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَأَمَّا

الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وَجُوهُهُمْ فَبِئْسَ خَلْدٌ وَنَ ۖ تِلْكَ
آيَاتُ اللَّهِ تَنْتَلُوهَا عَلَيْكَ بِالحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَلِلَّهِ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَاِلٰی اللَّهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

और जरूर है कि तुममें एक गिरोह हो जो नेकी की तरफ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके और ऐसे ही लोग कामयाब होंगे। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फिरकों में बंट गए और आपस में इस्तेलाफ (मतभेद) कर लिया बाद इसके कि उनके पास वाजेह हुक्म आ चुके थे। और उनके लिए बड़ा अजाब है। जिस दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे और कुछ चेहरे काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जाएगा क्या तुम अपने ईमान के बाद मुंकिर हो गए, तो अब चखो अजाब अपने कुफ्र के सबब से। और जिनके चेहरे रोशन होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें हक के साथ सुना रहे हैं और अल्लाह जहान वालों पर जुल्म नहीं चाहता। और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है सब अल्लाह के लिए है और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाएंगे। (104-109)

‘तुममें एक गिरोह हो जो नेकी की तरफ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके’ यह इशार्द एक साथ दो बातों को बता रहा है। एक का तअल्लुक ख़वास (विशिष्टजनों) से है और दूसरी का तअल्लुक अवाम (जनसाधारण) से। उम्मत के ख़वास के अंदर यह रूह होनी चाहिए कि वे उम्मत के अंदर बुराई को बर्दाशत न करें, वे नेकी और भलाई के लिए तड़पने वाले हों उनका यह इस्लाह का जज्बा उन्हें मजबूर करेगा कि वे लोगों के अहवाल से ग़ैर-मुतअल्लिक न रहें वे अपने भाइयों को नेकी की राह पर चलने के लिए उकसाएँ और उन्हें बुराई से बचने की तलकीन करें।

ताहम इस अमल की कामयाबी के लिए उम्मत के अवाम के अंदर इताअत (आज्ञापालन) का जज्बा होना भी लाजिमन जरूरी है। अवाम को चाहिए कि वे अपने ख़वास का एहतेराम करें। वे उनके कहने से चलें और जहां वे रोके वहां वे रुक जाएँ। वे अपने आपको अपनी दीनी जिम्मेदारियों के हवाले कर दें। जिस मुस्लिम गिरोह में ख़वास और अवाम का यह हाल हो वही फ़लाह पाने वाला गिरोह है। समअ और ताअत (आज्ञापालन और अनुशासन) की इस फिजा ही में किसी समाज के अंदर वे औसाफ (गुण) जन्म लेते हैं जो उसे दुनिया में ताक़तवर और आखिरत में नजातयाफ़ता बनाते हैं।

ख़वास के अंदर इस रूह के जिंदा होने का यह फायदा है कि उनकी सारी तवज्जोह ख़ैर, दूसरे अल्फ़ाज में दीन की बुनियादों पर केंद्रित रहती है। अमौलिक मसाइल में मूशिगाफ़ियां करने का उनके पास वक़्त ही नहीं होता। जो लोग ख़ुदा की अम्मतों के नकीब बनें और आखिरत की कामयाबी की बशारत (शुभ सूचना) देने वाले बन कर उठें उनके पास इतना वक़्त ही नहीं होता कि जाहिरी मसाइल के जुन्यात (अमौलिक अंशों) में अपनी महारत दिखाएं। इसके साथ ‘अग्र बिल मारूफ व नही अनिल मुंकर’ (नेकियों का हुक्म देना, बुराइयों

से रोकना) का काम उन्हें हकीकी मसाइल के हल में लगा देता है। फर्ज़ और क़्यासी (काल्पनिक) मसाइल में जेहनी वरजिश करना उन्हें उसी तरह बेमअना और बेफ़ायदा मालूम होने लगता है जिस तरह एक किसान को शतरंज का खेल।

अवाम को इस निजामे इताअत पर अपने को राजी करने का यह फ़ायदा मिलता है कि वे टुकड़ों में बंटने से बच जाते हैं। एक हुक्म के तहत चलने के नतीजे में सब मिलकर एक हो जाते हैं। इतेहाद व इतेफ़ाक (एकता-एकजुटता) उनकी आम सिफ़त बन जाती है और बिला शुबह इत्तेहाद व इतेफ़ाक से ज्यादा बड़ी ताक़त इस दुनिया में कोई नहीं।

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَوْ آمَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ مِنْهُمْ
الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُونَ ۝ لَنْ يَضُرُّوكُمْ اِلَّا اَذًى وَاِنْ يُقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمْ
الْاَدْبٰبَ اَنْتُمْ لَا يَنْصُرُوْنَ ۝ ضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الدِّمَ اِنْ مَا تَقِفُوْا اِلَّا بِحَبْلِ مِّنَ
اللَّهِ وَحَبْلِ مِّنَ النَّاسِ وَاَبَءُوْا بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ السَّكْنَۃَ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَاَكٰنُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝

अब तुम बेहतरीन गिरोह हो जिसे लोगों के लिए निकाला गया है। तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर अहले किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर होता। इनमें से कुछ ईमान वाले हैं और इनमें अक्सर नाफरमान हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते मगर कुछ सताना। और अगर वे तुमसे मुकाबला करेंगे तो तुम्हें पीठ दिखाएँगे। फिर उन्हें मदद भी न पहुंचेगी और उन पर मुसल्लत कर दी गई जिल्लत चाहे वे कहीं भी पाए जाएँ, सिवा इसके कि अल्लाह की तरफ से कोई अहद (वचन) हो या लोगों की तरफ से कोई अहद हो और वे अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक हो गए और उन पर मुसल्लत कर दी गई पस्ती, यह इसलिए कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते रहे और उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक क़त्ल किया। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद से निकल जाते थे। (110-112)

यहूद खुदाई दीन के हामिल (धारक) बनाए गए थे। मगर वे इसे लेकर खड़े न हो सके और इसे महफूज़ रखने में भी नाकाम रहे। इसके बाद अल्लाह ने मुहम्मद (सल्ल०) के जरिए अपना दीन उसकी सही सूरत में भेजा। अब मुस्लिम उम्मत लोगों के दर्मियान खुदाई रहनुमाई के लिए खड़ी हुई है। इस मंसब का तकाज़ा है कि यह उम्मत अल्लाह की सच्ची मोमिन बने। वह दुनिया को भलाई की तलकीन करे और उन चीजों से बाख़बर करे जो अल्लाह बेनज़िह

बुराई की हैसियत रखती हैं। यह काम चूंकि खुदाई काम है इसलिए खुदा ने इसके साथ अपना तहफुजाती निजाम (सुरक्षा तंत्र) भी शामिल कर दिया है। जो लोग इस कारेखुदावंदी के लिए उन्हें उनके लिए खुदा की जमानत है कि उनके विरोधी उन्हें मामूली अजियतों (यातनाओं) के सिवा कोई हकीकी नुक्सान न पहुंचा सके। ताहम यहूद के अंजाम की सूरत में इसकी भी दाइमी (चिरस्थायी) मिसाल कायम कर दी गई कि इस हक के मंसब पर सरफराज किए जाने के बाद जो लोग बदअहदी (वचन भंग) करें उनकी सजा इसी दुनिया में इस तरह शुरू हो जाती है कि उन्हें जती इज्जत और सरफराज से महरूम कर दिया जाता है। खुदा की रहमतों से महरूमी की वजह से उनकी बेहिसी (संवेदनहीनता) इतनी बढ़ जाती है कि वे उन लोगों की जान के दरपे हो जाते हैं जो उनकी कोताहियों की तरफ तवज्जोह दिलाने के लिए उन्हें।

‘यहूद पर जिल्लत मुसल्लत कर दी गयी इल्ला यह कि उन्हें अल्लाह की या बंदों की अमान हासिल हो।’ यह अल्लाह की एक खास सुन्नत है जिसका तअल्लुक उस कौम से है जिसको खुदा ने अपने दीन का नुमाइंदा बनाया हो। दीन की सच्ची नुमाइंदगी ऐसी कौम के लिए ग़लबे (वर्चस्व) की जमानत होती है। और दीन की सच्ची नुमाइंदगी से हटना उसे मौजूदा दुनिया में मग़लूब (परास्त) करने का सबब बन जाता है। ऐसी कौम अगर खुदा के दीन की नुमाइंदगी से हट जाए तो मौजूदा दुनिया में कभी वह जाती ग़लबा हासिल नहीं कर सकती, किसी दर्जे में अगर कभी उसे इख़्तियार मिल जाए तो वह अपने अलावा किसी दूसरे के बल पर होगा या तो इसलिए कि उसे किसी खुदाई हुक्मत की तरफ से अमान दिया गया है या इसलिए कि किसी ग़ैर कौम की हुक्मत ने उसे अपनी हिमायत व सरपरस्ती में ले लिया है।

कई कैम जिल्लत की इस सज की मुत्तहिक उस वक्त बनती है जबकि उसका यह हाल हो जाए कि वह खुदाई निशानियों का इंकार करने लगे। निशानियों का इंकार सच्ची दलीलों का इंकार है। हक हमेशा दलीलों के रूप में जाहिर होता है। इसलिए जो शख्स सच्ची दलील का इंकार करता है वह खुद खुदा का इंकार कर रहा है।

لَيْسُوا سَوَاءً ۚ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ يَتَّبِعُونَ آيَاتِ اللَّهِ أَنْاءَ الْيَلِّ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ۖ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ ۚ وَأُولَٰئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ وَمَا يَقْعُلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوا ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صَارَتْ خَرْتٌ قَوْمٌ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْ ۖ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ

أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٣﴾

सब अहले किताब एक जैसे नहीं। इनमें एक गिरोह अहद पर कायम है। वे रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सज्दा करते हैं। वे अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं। ये सालेह (नेक) लोग हैं जो नेकी भी वे करेंगे उसकी नाकद्री न की जाएगी और अल्लाह परहेजगारों को खूब जानता है। वेशक जिन लोगों ने इंकार किया तो अल्लाह के मुकाबले में उनके माल और औलाद उनके कुछ काम न आएंगे। और वे लोग दोख़्ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे इस दुनिया की ज़िंदगी में जो कुछ खर्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा की सी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया है फिर वह उसको बर्बाद कर दे। अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते हैं। (113-117)

नेकियों में सबकत (कल्याण कार्यों में स्पर्धा) से मुराद इस आयत में अहले किताब मोमिनों का यह अमल है कि मुहम्मद (सल्ल०) की जबान से जब खुदाई सच्चाई का एलान हुआ तो उन्होंने फ़ैरन उसे पहचान लिया और उसकी तरफ आजिजाना दौड़ पड़े। उस वक्त एक तरफ हजरत मूसा का दीन था जो तारीख़ी अम्मत और रिवायती तक्द्दुस (पावनता) के जोर पर कायम था। दूसरी तरफ मुहम्मद (सल्ल०) का दीन था जिसकी पुस्त पर अभी तक सिर्फ दलील की ताकत थी, तारीख़ी अम्मत और रिवायती तक्द्दुस का वजन अभी तक उसके साथ शामिल नहीं हुआ था। अपने दीन और वक्त के नबी के दीन में यह फर्क वक्त के नबी के दीन को मानने में जबरदस्त रुकावट था। मगर वे इस रुकावट को पार करने में कामयाब हो गए और बढ़कर वक्त के नबी के दीन को मान लिया।

माल व औलाद की मुहब्बत आदमी को कुर्बानी वाले दीन पर आने नहीं देती। अलबत्ता नुमाइशी क्रिस्म के आमाल का मुजाहिदा करके वह समझता है कि वह खुदा के दीन पर कायम है। मगर जिस तरह सख़्त ठंडी हवा अचानक पूरी खेती को बर्बाद कर देती है इसी तरह क़ियामत का तूफ़ान उनके नुमाइशी आमाल को बेक़ीमत करके रख देगा। यहूद में सिर्फ कुछ लोग थे जो मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाए थे। ‘उम्मत कायमा’ की हैसियत से इनका मुस्तक़िल जिक्र करना जाहिर करता है कि चंद आदमी अगर अल्लाह से डरने वाले हों तो वे भीड़ के मुक़बले में अल्लाह की नज़र में ज्यादा कीमती होते हैं।

नजात के लिए सिर्फ यह काफी नहीं कि किसी पैग़म्बर के नाम पर जो नस्ली उम्मत बन गयी है आदमी उस उम्मत में शामिल रहे। बल्कि अस्ल ज़रूरत यह है कि वह अहद का पाबंद बने। अहद से मुराद ईमान है। ईमान बंदे और खुदा के दर्मियान एक अहद है। ईमान लाकर बंदा अपने आपको इसका पाबंद करता है कि वह अपने आपको पूरी तरह अल्लाह का वफ़ादार और इत्ताअतगुज़र बनाएगा। दूसरे लफ्ज़ों में गिरोही निस्वत नहीं बल्कि जाती अमल वह चीज है जो किसी आदमी को खुदा की रहमत और बरिख़िश का मुस्तहिक बनाती है।

इस अहद में तमाम ईमानी जिम्मेदारियां शामिल हैं। तंहाइयों में अल्लाह की याद, अल्लाह की इबादतगुजारी, आखिरत को सामने रख कर ज़िंदगी गुज़ारना, अपने आसपास जो

अफराद हों उन्हें भलाई पर लाने की कोशिश करना, जो अफराद बुराई करें उन्हें बुराई से हटाने में पूरा जोर लगा देना, खुदा की पसंद के कामों में दौड़ कर हिस्सा लेना। जो लोग ऐसा करें वही रब्बानी अहद पर पूरे उतरे। वे खुदा के मकबूल बंदे हैं। उनका अमल खुदा के इल्म में है, वह उन्हें उनके अमल का बदला देगा और फैसले के दिन उनकी पूरी कद्रदानी फरमाएगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بَاطِلَةً مِنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُوكُمْ خَبَالًا وَلَا تُدْرِكُوا
مَاعِثَتُمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝ مَا نُنْفِئُهُمْ إِلَّا بِمَنْ أَوْلَوْا بِهِمْ ۚ وَلَا يُجِيبُوكُمْ
تَوْفِينًا وَلَا يَكْتُمُ لَهُمْ ۚ وَإِذَا الْفُتُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَصَوْا عَٰلَيْكُمْ
الْوَٰعِدَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُؤْتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ۝ إِنْ تَنَسَّكُمُ حَسَنَةٌ تَسُوءُهُمْ وَإِنْ تَصِبْكُمُ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا
ۚ وَإِنْ تَصِيرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝

ऐ ईमान वाले, अपने ार को अपना राजदार न बनाओ, वे तुम्हें नुकसान पहुंचाने में कोई कमी नहीं करते। उन्हें खुशी होती है तुम जितनी तकलीफ पाओ। उनकी अदावत उनकी जवान से निकल पड़ती है जो उनके दिलों में है वह इससे भी सख्त है, हमने तुम्हारे लिए निशानियां खोल कर जाहिर कर दी हैं अगर तुम अकल रखते हो। तुम उनसे मुहब्बत रखते हो मगर वे तुमसे मुहब्बत नहीं रखते। हालांकि तुम सब आसमानी किताबों को मानते हो। और वे जब तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए और जब आपस में मिलते हैं तो तुम पर गुस्से से उंगलियां काटते हैं। कहो कि तुम अपने गुस्से में मर जाओ। बेशक अल्लाह दिलों की बात को जानता है। अगर तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उन्हें रंज होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो वे इससे खुश होते हैं। अगर तुम सब करो और अल्लाह से डरो तो उनकी कोई तदबीर तुम्हें कोई नुकसान न पहुंचा सकेगी। जो कुछ वे कर रहे हैं सब अल्लाह के बस में है। (118-120)

मुसलमान उसी खुदाई दीन पर ईमान लाए थे जो पहले के अहले किताब (यहूद) को अपने नबियों के जरिए मिला था। दोनों का दीन अपनी अस्त हकीकत के एतबार से एक था। मगर यहूद मुसलमानों के इस कद्र दुश्मन हो गए कि मुसलमान अपनी सारी खुसूसियात के बावजूद उनके नजदीक एक अच्छे बोल के भी हकदार न थे। यहां तक कि मुसलमानों को अगर कोई तकलीफ पहुंच जाती तो वे दिल ही दिल में खुश होते गोया वे उन्हें इंसानी हमदर्दी का मुस्तहिक

भी नहीं समझते थे। इसकी वजह यह थी कि यहूद ने बनी इस्राईल के नबियों की तरफ मंसूब करके एक खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) दीन बना रखा था और इसके बल पर अवाम में कयादत (नेतृत्व) का मकाम हासिल किए हुए थे। खुदा के दीन में सारी तवज्जोह खुदा की तरफ रहती है। जबकि खुदसाख्ता दीन में लोगों की तवज्जोह उन अफराद की तरफ लग जाती है जो इस खुदसाख्ता दीन के खालिक और शारेह (व्याख्याकार) हों। ऐसे लोग सच्चे दीन की दावत को कभी गवारा नहीं करते। क्योंकि उन्हें नजर आता है कि वह उन्हें उनके अजमत के मकाम से हटा रही है। जब ऐसी सूरत पेश आए तो अल्लाह के सच्चे बंदों का काम यह है कि वे मनफी रद्देअमल (नकारात्मक प्रतिक्रिया) से बचें और मुकम्मल तौर पर सब्र व तकवा पर कायम रहें। सब्र का मतलब है हर हाल में अपने को हक का पाबंद रखना, और तकवा यह है कि फैसलाकुन ताकत सिर्फ अल्लाह को समझा जाए न कि किसी और को। मुसलमान अगर इस किस्म के मुस्बत (सकारात्मक) रवैये का सुबूत दें तो किसी की दुश्मनी उन्हें जरा भी नुकसान न पहुंचाएगी चाहे वह मिकदार में कितनी ही ज्यादा हो। ताहम इसके साथ मुसलमानों को हकीकतपरसंद भी बनना चाहिए। उन्हें अपने दोस्त और दुश्मन के दर्मियान तमीज करना चाहिए ताकि कोई उनकी साफ दिली का नाजाइज फायदा न उठा सके।

मुसलमानों के दिल में यहूद के लिए मुहब्बत होना और यहूद के दिल में मुसलमानों के लिए मुहब्बत न होना जाहिर करता है कि दोनों में से कौन हक पर है और कौन नाहक पर। अल्लाह सरापा रहम और अद्ल है। वह तमाम इंसानों का खालिक और मालिक है इसलिए जो शख्स हकीकी तौर पर अल्लाह को पा लेता है उसका सीना तमाम खुदा के बंदों के लिए खुल जाता है। उसके लिए तमाम इंसान समान रूप से अल्लाह की संतान बन जाते हैं। वह हर एक के लिए वही चाहने लगता है जो वह खुद अपने लिए चाहता है। मगर जो लोग अल्लाह को हकीकी तौर पर पाए हुए न हों, जिन्होंने अपनी मर्जी को अल्लाह की मर्जी में न मिलाया हो वे सिर्फ अपनी जात की सतह पर जीते हैं। उनकी जिंदगी का सरमाया (पूंजी) अपने फायदे और गिरोही तअस्सुबात होते हैं। उनका यह मिजाज उन्हें ऐसे लोगों का दुश्मन बना देता है जो उन्हें अपने मफ़ाद (हित) के खिलाफ नजर आए, जो उनके अपने गिरोह में शामिल न हों। खुदा को मानते हुए वे भूल जाते हैं कि यह दुनिया खुदा की दुनिया है। यहां किसी की कोई तदबीर अल्लाह की मर्जी के बग़ैर मुअस्सर (प्रभावी) नहीं हो सकती।

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ۝ إِذْ هَمَّتْ طَّائِفَتٌ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلُوا وَاللَّهُ وَلِيٌّ لَهَا وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِدَرِّيٍّ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ وَاتَّقُوا اللَّهَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ إِذْ يَقُولُ الْمُؤْمِنِينَ الْآنَ يَكْفِيكُمُ أَنْ يُبَدِّلَ لَكُمْ رُبَّكُمْ
بِثَلَاثَةِ آفٍ مِنَ الْمَلَكِكَةِ مُنْزَلِينَ ۝ بَلَىٰ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم

مِنْ قَوْمِهِمْ هَذَا يُدْرِكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ۝
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ
فَيَنْقَلِبُوا خَآئِبِينَ ۝ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

जब तुम सुबह को अपने घर से निकले और मुसलमानों को जंग के मकामात पर तैनात किया और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। जब तुममें से दो जमाअतों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह इन दोनों जमाअतों पर मददगार था। और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह पर ही भरोसा करें। और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है वर्र में जबकि तुम कमजोर थे। पस अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुजार रहो। जब तुम मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हजार फरिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे। अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो और दुश्मन तुम्हारे ऊपर अचानक आ पहुंचे तो तुम्हारा रब पांच हजार निशान किए हुए फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। और यह अल्लाह ने इसलिए किया ताकि तुम्हारे लिए खुशखबरी हो और तुम्हारे दिल इससे मुतमइन हो जाएं और मदद सिर्फ अल्लाह ही की तरफ से है जो जबरदस्त है, हिम्मत वाला है, ताकि अल्लाह मुँकियों के एक हिस्से को काट दे या उन्हें जलील कर दे कि वे नाकाम लौट जाएं। तुम्हें इस मामले में कोई दखल नहीं। अल्लाह इनकी तौबा कुबूल करे या उन्हें अजाब दे, क्योंकि वे जालिम हैं। और अल्लाह ही के इख्तियार में है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ जमीन में है। वह जिसे चाहे बर्खा दे और जिसे चाहे अजाब दे और अल्लाह गफूर व रहीम है। (121-129)

ये आयतें उहुद की जंग (3 हिजरी) के बाद नाजिल हुईं। उहुद की जंग में दुश्मनों की तादात तीन हजार थी। मुसलमानों की तरफ से एक हजार आदमी मुकाबले के लिए निकले थे। मगर रास्ते में अब्दुल्लाह बिन उबइ अपने तीन सौ साथियों को लेकर अलग हो गया। इस वाक्ये से कुछ अंसारी (मूल मदीना वासी) मुसलमानों में पस्त हिम्मती पैदा हो गयी मगर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) ने याद दिलाया कि हम अपने भरोसे पर नहीं बल्कि अल्लाह के भरोसे पर निकले हैं। तो अल्लाह ने इस हकीकत को समझने के लिए इन मुसलमानों के सीने खोल दिये। मोमिन के अंदर अगर हालात की शिद्दत से वक्ती कमजोरी पैदा हो जाए तो ऐसे वक्त में अल्लाह उसे तंहा छोड़ नहीं देता बल्कि उसका मददगार बनकर दुबारा उसे ईमान की हालत पर जमा देता है। अल्लाह की यही मदद इज्तिमाई (सामूहिक) सतह पर इस तरह हुई कि उहुद की

लड़ाई में मुसलमानों की एक कमजोरी से फायदा उठा कर दुश्मन उनके ऊपर गालिब आ गये। अब दुश्मन फौज के लिए पूरा मौका था कि वह शिकस्त के बाद मुसलमानों की ताकत को पूरी तरह कुचल डाले। मगर फौजी तारीख का यह हैतअोज वाक्या है कि दुश्मन फौज फतह के बावजूद जंग का मैदान छोड़कर वापस चली गई। यह अल्लाह की खुसूसी मदद थी कि उसने दुश्मन के रुख को 'मदीना' के बजाए 'मक्का' की तरफ मोड़ दिया। यहां तक कि जो मगलूब (परास्त) थे उन्हीं ने गालिब आने वालों का पीछा किया।

मोमिन का मिजाज यह होना चाहिए कि वह तादाद या असबाब (संसाधनों) की कमी से न घबराए। तादाद कम हो तो यकीन करे कि अल्लाह अपने फरिश्तों को भेजकर तादाद की कमी पूरी कर देगा। सामान कम हो तो वह भरोसा रखे कि अल्लाह अपनी तरफ से ऐसी सूरतें पैदा करेगा जो उसके लिए सामान की कमी की तलाफी बन जाए। कामयाबी का दारोमदार माददी असबाब पर नहीं बल्कि सब्र और तकवा पर है। जो लोग अल्लाह से डरें और अल्लाह पर भरोसा रखें उनके हक में अल्लाह की मदद की दो सूरतें हैं। एक, उनके विरोधियों के एक हिस्से को काट लेना। दूसरे, विरोधियों को शिकस्त दे कर उन्हें परास्त करना। पहली कामयाबी दावत की राह से आती है। प्रतिपक्ष के जिन लोगों में अल्लाह कुछ जिंदगी पाता है उनके ऊपर दीन की सच्चाई को रोशन कर देता है, वे बातिल (असत्य) की सफ को छोड़कर हक की सफ में शामिल हो जाते हैं और इस तरह प्रतिपक्ष की कमजोरी और अहले ईमान की कुव्वत का सबब बनते हैं। दूसरी सूरत में अल्लाह अहले ईमान को कुव्वत और हौसला देता है और उनकी खुसूसी मदद करके उन्हें प्रतिपक्ष पर गालिब कर देता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاجِسَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۖ وَمَن يَغْفِرُ اللَّهُ ۖ فَمَا لَهُ مِن دُونِ اللَّهِ ۚ وَلَمْ يُجِرُوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاءُ هُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّتْ تَجْرِي مِّن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِعَمَلِهِمُ الْعَمَلِينَ ۖ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ هَذَا بَيِّنٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝

ऐ ईमान वालो, सूद कई-कई हिस्सा बढ़ाकर न खाओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो। और डरो उस आग से जो मुंकिरों के लिए तैयार की गई है। और अल्लाह और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। और दोड़ो अपने रब की बख्शिश की तरफ और उस जन्नत की तरफ जिसकी वुसूत (व्यापकता) आसमान और जमीन जैसी है। वह तैयार की गई है अल्लाह से डरने वालों के लिए। जो लोग कि खर्च करते हैं फरागत और तंगी में। वे गुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों से दरगुजर करने वाले हैं। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। और ऐसे लोग कि जब वे कोई खुली बुराई कर बैठें या अपनी जान पर कोई जुल्म कर डालें तो वे अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफी मांगें। अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को माफ करे और वे जानते बूझते अपने किए पर इसरार नहीं करते। ये लोग हैं कि इनका बदला उनके रब की तरफ से मफ़िरत (क्षमा, मुक्ति) है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। इनमें वे हमेशा रहेंगे। कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का। तुमसे पहले बहुत-सी मिसालें गुजर चुकी हैं तो जमीन में चल-फिर कर देखो कि क्या अंजाम हुआ झुठलाने वालों का। यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है डरने वालों के लिए। (130-138)

सूदी कारोबार दौलतपरस्ती की आखिरी बदतरनीन शकल है। जो शरूख दौलतपरस्ती में मुक्ता हो वह रात-दिन इसी फिक्र में रहता है कि किस तरह उसकी दौलत दोगुना और चौगुना हो। वह दुनिया का माल हासिल करने की तरफ दौड़ने लगता है। हालांकि सही बात यह है कि आदमी आखिरत की जन्नत की तरफ दौड़े और अल्लाह की रहमत और नुसरत (मदद) का ज्यादा से ज्यादा ख्वाहिशमंद हो। आदमी अपना माल इसलिए बढ़ाना चाहता है कि दुनिया में इज्जत हासिल हो, दुनिया में उसके लिए शानदार जिंदगी की जमानत हो जाए। मगर मौजूदा दुनिया की इज्जत व कामयाबी की कोई हकीकत नहीं। अस्ल अहमियत की चीज जन्नत है जिसकी खुशियां और लज़्ज़तें बेहिसाब हैं। अक्लमंद वह है जो इस जन्नत की तरफ दौड़े। जन्नत की तरफ दौड़ना यह है कि आदमी अपने माल को ज्यादा से ज्यादा अल्लाह की राह में दे। दुनियावी कामयाबी का जरिया 'माल' को बढ़ाना है और आखिरत की कामयाबी को हासिल करने का जरिया माल को 'घटाना' है। पहली किस्म के लोगों का सरमाया (पूंजी) अगर माल की मुहब्बत है तो दूसरे लोगों का सरमाया अल्लाह और रसूल की मुहब्बत। पहली किस्म के लोगों को अगर दुनिया के नफे का शौक होता है तो दूसरी किस्म के लोगों को आखिरत के नफे का। पहली किस्म के लोगों को दुनिया के नुकसान का डर लगा रहता है और दूसरी किस्म के लोगों को आखिरत के नुकसान का।

जो लोग अल्लाह से डरते हैं उनके अंदर 'एहसान' का मिजाज पैदा हो जाता है। यानी जो काम करें इस तरह करें कि वह अल्लाह की नजर में ज्यादा से ज्यादा पसंदीदा करार पाए। वे आजाद जिंदगी के बजाए पाबंद जिंदगी गुजारते हैं। खुदा के दीन की जरूरत को वे अपनी जरूरत बना लेते हैं और इसके लिए हर हाल में खर्च करते हैं चाहे उनके पास कम हो या ज्यादा।

उन्हें जब किसी पर गुस्सा आ जाए तो वे उसे अंदर ही अंदर बर्दाश्त कर लेते हैं। किसी से शिकायत हो तो उससे बदला लेने के बजाए उसे माफ कर देते हैं। गलतियां इनसे भी होती हैं मगर वे वकती होती हैं। ग़लती के बाद वे फौरन चौंक पड़ते हैं और दुबारा अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो जाते हैं। वे बेताब होकर अल्लाह को पुकारने लगते हैं कि वह उन्हें माफ कर दे और उन पर अपनी रहमतों का पर्दा डाल दे। कुरआन में जो बात लफ्जी तौर पर बताई गई है वह तारीख में अमल की जवान में मौजूद है। मगर नसीहत वही पकड़ते हैं जो नसीहत की तलब रखते हों।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ يَسْأَلْكُمْ قَوْمٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْصٌ مِّثْلُكُمْ وَلَئِنْ سَأَلْتُمْ النَّاسَ لَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَتُّونَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَقُولَهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝

और हिम्मत न हारो और ग़म न करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम्हें कोई ज़ख्म पहुंचे तो दुश्मन को भी वैसा ही ज़ख्म पहुंचा है। और हम इन दिनों को लोगों के दर्मियान बदलते रहते हैं। ताकि अल्लाह ईमान वालों को जान ले और तुममें से कुछ लोगों को गवाह बनाए और अल्लाह जालिमों को दोस्त नहीं रखता। और ताकि अल्लाह ईमान वालों को छांट ले और इंकार करने वालों को मिटा दे। क्या तुम ख्याल करते हो कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे, हालांकि अभी अल्लाह ने तुममें से उन लोगों को जाना नहीं जिन्होंने जिहाद किया और न उन्हें जो साबितकदम रहने वाले हैं। और तुम मौत की तमन्ना कर रहे थे इससे मिलने से पहले, सो अब तुमने इसे खुली आंखों से देख लिया। (139-143)

ईमान लाना गोया अल्लाह के लिए जीने और अल्लाह के लिए मरने का इकरार करना है। जो लोग इस तरह मोमिन बनें उनके लिए अल्लाह का वादा है कि वे उन्हें दुनिया में ग़लबा और आखिरत में जन्नत देगा। और उन्हें यह अहमतरनीन एज़ाज अता करेगा कि जिन लोगों ने दुनिया में उन्हें रद्द कर दिया था उनके ऊपर उन्हें अपनी अदालत में गवाह बनाए और उनकी गवाही की बुनियाद पर उनके मुस्तकिल अंजाम का फैसला करे। मगर यह मकाम महज लफ्ज़ी इक्कार से नहीं मिल जाता। इसके लिए जरूरी है कि आदमी सब्र और जिहाद की सतह पर अपने सच्चे मोमिन होने का सुबूत दे। मोमिन चाहे अपनी जाती जिंदगी को ईमान व इस्लाम पर कायम करे या वह दूसरों के सामने खुदा के दीन का गवाह बन कर खड़ा हो,

हर हाल में उसे दूसरे की तरफ से मुश्किलात और रुकावटें पेश आती हैं। इन मुश्किलात और रुकावटों का मुकाबला करना जिहाद है और हर हाल में अपने इकरार पर जमे रहने का नाम सब्र। जो लोग इस जिहाद और सब्र का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो जन्नत की आबादकारी के काबिल ठहरे। साथ ही, इसी से दुनिया की सरबुलंदी का रास्ता खुलता है। 'जिहाद' उनके मुसलसल और मुकम्मल अमल की जमानत और 'सब्र' इस बात की जमानत है कि वे कभी कोई जब्ताती इकदाम नहीं करेंगे। और ये दो बातें जिस गिरोह में पैदा हो जाएं उसके लिए खुदा की इस दुनिया में कामयाबी इतनी ही यकीनी हो जाती है जितनी मुवाफिक जमीन में एक बीज का बारआवर होना।

एक शख्स अल्लाह के रास्ते पर चलने का इरादा करता है तो दूसरों की तरफ से तरह-तरह के मसाइल पेश आते हैं। ये मसाइल कभी उसे बेयकीनी की कैफियत में मुस्तला करते हैं कभी मस्तेहतपरस्ती का सबक देते हैं। कभी उसके अंदर नकारात्मक मानसिकता उभारते हैं कभी खुदा के खालिस दीन के मुकाबले में ऐसे अवामी दीन का नुस्खा बताते हैं जो लोगों के लिए काबिले कुबूल हो। यही मौजूदा दुनिया में आदमी का इस्तेहान है। इन अवसरों पर आदमी जो प्रतिक्रिया जाहिर करे उससे मालूम होता है कि वह अपने ईमान के इकरार में सच्चा था या झूठा। अगर उसका अमल उसके ईमान के दावे के मुताबिक हो तो वह सच्चा है और अगर इसके खिलाफ हो तो झूठा। शहीद (अल्लाह का गवाह) बनना इस सफर की आखिरी इंतहा है। अल्लाह का एक बंदा लोगों के दर्मियान हक का दाजी (आहवानकती) बन कर खड़ा हुआ। उसका हाल यह था कि वह जिस चीज की तरफ बुला रहा था, खुद उस पर पूरी तरह कायम था। लोगों ने उसे हकीर (तुच्छ) समझा मगर उसने किसी की परवाह नहीं की। उस पर मुश्किलात आई मगर वह उसे अपने मकाम से हटाने में कामयाब न हो सकी। वह न कमजोर पड़ा और न मनफ्री नफिसयात (नकारात्मक मानसिकता) का शिकार हुआ। यहां तक कि उसके जान व माल की बाजी लग गई फिर भी वह अपने दावती मौक़िफ से न हटा। यह इस्तेहान हद दर्जा तूफ़ानी इस्तेहान है। मगर इससे गुजरने के बाद ही वह ईंसान बनता है जिसे अल्लाह अपने बंदों के ऊपर अपना गवाह करार दे। आदमी जब हर किस्म के हालात के बावजूद अपने दावती अमल पर कायम रहता है तो वह अपने पैग़ाम के हक में अपने यकीन का सुबूत देता है। साथ ही यह कि वह जिस बात की खबर दे रहा है वह एक हद दर्जा संजीदा मामला है न कि कोई सरसरी मामला।

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ إِنَّ رَبَّنَا إِنَّهُ لَكَنُورٌ وَهُوَ يُنِيرُ وَهُوَ قَدِيرٌ
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ إِنَّ رَبَّنَا إِنَّهُ لَكَنُورٌ وَهُوَ يُنِيرُ وَهُوَ قَدِيرٌ
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ إِنَّ رَبَّنَا إِنَّهُ لَكَنُورٌ وَهُوَ يُنِيرُ وَهُوَ قَدِيرٌ
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ إِنَّ رَبَّنَا إِنَّهُ لَكَنُورٌ وَهُوَ يُنِيرُ وَهُوَ قَدِيرٌ

لَمَّا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ
الْطَّيِّبِينَ ۖ وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا
وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ فَآتَاهُمُ
اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحَسُنَ ثَوَابُ الْآخِرَةِ ۖ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

मुहम्मद बस एक रसूल हैं। इनसे पहले भी रसूल गुजर चुके हैं। फिर क्या अगर वह मर जाएं या कत्ल कर दिए जाएं तो तुम उल्टे पैर फिर जाओगे। और जो शख्स फिर जाए वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह शुक्रगुजारों को बदला देगा। और कोई जान मर नहीं सकती बग़ैर अल्लाह के हुक्म के। अल्लाह का लिखा हुआ वादा है। और जो शख्स दुनिया का फायदा चाहता है उसे हम दुनिया में से दे देते हैं और जो आखिरत का फायदा चाहता है उसे हम आखिरत में से दे देते हैं। और शुक्र करने वालों को हम उनका बदला जरूर अता करेंगे। और कितने नबी हैं जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने जंग की। अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ीं उनसे न वे पस्तहिम्मत हुए न उन्होंने कमजोरी दिखाई। और न वे दबे। और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। उनकी जबान से इसके सिवा कुछ और न निकला कि ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे काम में हमसे जो ज्यादाती हुई उसे माफ़ फरमा और हमें साबितक़दम रख और मुँक़िर कैम के मुक़बले में हमारी मदद फरमा। फस अल्लाह ने उन्हें दुनिया का बदला भी दिया और आखिरत का अच्छा बदला भी। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (144-148)

उहद की जंग में यह खबर मशहूर हो गई कि मुहम्मद (सल्ल०) शहीद हो गए। उस वक्त कुछ मुसलमानों में पस्तहिम्मती पैदा हो गई। मगर अल्लाह के हकीकी बंदे वे हैं जिनकी दीनदारी किसी शख्स के ऊपर कायम न हो। अल्लाह को वह दीनदारी मल्लूब है जबकि बंदा अपनी सारी रूह और सारी जान के साथ सिर्फ एक अल्लाह के साथ जुड़ जाए। मोमिन वह है जो इस्लाम को उसकी उसूली सदाकत की बुनियाद पर पकड़े न कि किसी शख्सियत के सहारे की बिना पर। जो शख्स इस तरह इस्लाम को पाता है उसके लिए इस्लाम एक ऐसी नेमत बन जाता है जिसके लिए उसकी रूह के अंदर शुक्र का दरिया बहने लगे। वह दुनिया के बजाए आखिरत को सब कुछ समझने लगता है। जिंदगी उसके लिए एक ऐसी नापायदार चीज बन जाती है जो किसी भी लम्हे मौत से दोचार होने वाली हो। वह कायनात को एक ऐसे ख़ुदाई कारख़ाने की हैसियत से देख लेता है जहां हर वाकया ख़ुदा के इज्ज के तहत हो रहा है। जहां देने वाला भी वही है और छीनने वाला भी वही है। ऐसे ही लोग अल्लाह की राह के सच्चे मुसाफ़िर हैं। अल्लाह अगर चाहता है तो दुनिया की इज्जत व इक्तेदार (सत्ता) भी उन्हें दे देता है और आखिरत के अजीम और अबदी (चिरस्थाई) इनामात तो सिर्फ इन्हीं के लिए हैं। ताहम यह दर्जा किसी को सिर्फ उस वक्त मिलता है जबकि वह हर किस्म के इस्तेहान में पूरा उतरे। उसके जाहिरी सहारे खो जाएं तब भी वह अल्लाह पर अपनी नजरें

जमाए रहे। जान का खतरा भी उसे पस्तहिम्मत न कर सके। दुनिया बर्बाद हो रही हो तब भी वह पीछे न हटे। उसके सामने कोई नुकसान आए तो उसे वह अपनी कोताही का नतीजा समझ कर अल्लाह से माफ़ी मांगे। कोई फायदा मिले तो उसे खुदा का इनाम समझ कर शुक्र अदा करे। मोमिन का यह इस्तेहान जो हर रोज लिया जा रहा है कभी उन हिला देने वाले मकामात तक भी पहुँच जाता है जहाँ जिङ्गी की बाजी लगी हुई हो। ऐसे मौकों पर भी जब आदमी बुजदिली न दिखाए, न वह बेयकीनी में मुक्तिला हो और न किसी हाल में दीन के दुश्मनों के सामने हार मानने के लिए तैयार हो तो गोया वह इस्तेहान की आखिरी जाँच में भी पूरा उतरा। ऐसे ही लोगों के लिए हर किस्म की सरफराजियाँ हैं। तारीख में वही लोग सबसे ज्यादा कीमती हैं जिन्होंने इस तरह अल्लाह को पाया हो और अपने आपको इस तरह अल्लाह के मंसूबे में शामिल कर दिया हो। नाजुक मौकों पर अहले ईमान का आपस में मुत्तहिद रहना और सब्र के साथ हक पर जमे रहना वे चीजें हैं जो अहले ईमान को अल्लाह की नुसरत का मुस्तहिक बनाती हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يُرْذُوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا
خَاسِرِينَ ۚ بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ۚ سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۚ وَمَا لَهُمْ الشَّارُ
وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ۚ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُمْ
بِإِذْنِهِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فِشَلْتُمْ وَ تَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُم مِّن بَعْدِ
مَا أَرَكُم أَن تُحِيطُوا بِمَن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ
حَرَّفَكُم عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۚ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ ۚ إِذْ تَصْعَدُونَ وَلَا تَلَوْنَ عَلَى أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي
أُخْرَاكُمْ ۚ فَاتَّبَعْتُمْ غَمًّا بُغْمًا ۚ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا
أَصَابَكُمْ ۚ وَاللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۚ

ऐ ईमान वालो अगर तुम मुँकियों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उल्टे पैरों फेर देंगे फिर तुम नाकाम होकर रह जाओगे। बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है। हम मुँकियों के दिलों में तुम्हारा रोब डाल देंगे क्योंकि उन्होंने ऐसी चीज को अल्लाह का शरीक ठहराया जिसके हक में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरी जगह है जालिमों के लिए। और अल्लाह ने तुमसे अपने वादे को सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म से कल्ल कर रहे थे। यहां तक कि जब तुम खुद कमजोर पड़ गए और तुमने काम में झगड़ा किया और

तुम कहने पर न चले जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज दिखा दी थी जो कि तुम चाहते थे। तुममें से कुछ दुनिया चाहते थे और तुममें से कुछ आखिरत चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुम्हारा रुख उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी आजमाइश करे और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया और अल्लाह ईमान वालो के हक में बड़ा फल वाला है। जब तुम चढ़े जा रहे थे और मुड़कर भी किसी को न देखते थे और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार रहा था। फिर अल्लाह ने तुम्हें ाम पर ाम दिया ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज पर जो तुम्हारे हाथ से चूक गई और न उस मुसीबत पर जो तुम पर पड़े। और अल्लाह ख़बरदार है जो कुछ तुम करते हो। (149-153)

उहुद की जंग में वक्ती शिकस्त से विरोधियों को मौका मिला। उन्होंने कहना शुरू किया कि पैगम्बर और उनके साथियों का मामला कोई खुदाई मामला नहीं है। कुछ लोग महज बचकाने जोश के तहत उठ खड़े हुए हैं और अपने जोश की सजा भुगत रहे हैं। अगर यह खुदाई मामला होता तो उन्हें अपने दुश्मनों के मुकाबले में शिकस्त क्यों होती। मगर इस तरह के वाक्यात चाहे बजाहिर मुसलमानों की ग़लती से पेश आएँ, वे हर हाल में खुदा का इस्तेहान होते हैं। दुनिया की जिङ्गी में 'उहुद' का हादसा पेश आना जरूरी है ताकि यह खुल जाए कि कौन अल्लाह पर एतमाद करने वाला था और कौन फिसल जाने वाला। इस किस्म के वाक्यात मोमिन के लिए दोतरफ़ आजमाइश होते हैं एक यह कि वह लोगों की मुखलिफ़ना बातों से मुतअस्सिर न हो। दूसरे यह कि वह वक्ती तकलीफ से घबरा न जाए। और हर हाल में साबितकदम रहे।

मुश्किल अवसरों पर अहले ईमान अगर जमे रह जाएँ तो बहुत जल्द ऐसा होता है कि खुदा की रोब की मदद नाजिल होती है। जो शख्स या गिरोह अल्लाह के सच्चे दीन के सिवा किसी और चीज के ऊपर खड़ा हुआ है वह हकीकत में बेबुनियाद जमीन पर खड़ा हुआ है। क्योंकि अल्लाह की उतारी हुई सच्चाई के सिवा इस दुनिया में कोई और हकीकी बुनियाद नहीं। इसलिए जब कोई अल्लाह के दीन के ऊपर खड़ा हो और दृढ़ता का सुबूत दे तो जल्द ही ऐसा होता है कि अहले बातिल (असत्यवादियों) में बिखराव शुरू हो जाता है। दलीलों के एतबार से उनका बेबुनियाद होना उनके लोगों में बेयकीनी की कैफियत पैदा कर देता है। वे अपने को कम और अहले ईमान को ज्यादा देखने लगते हैं। उनकी जेहनी शिकस्त अंततः अमली शिकस्त तक पहुंचती है। वे अहले हक के मुकाबले में नाकाम व नामुराद होकर रह जाते हैं।

मुसलमानों के लिए शिकस्त और कमजोरी का सबब हमेशा एक होता है। और वह है तनाजो फिल अम्र। यानी राय के इख़ेलाफ के सबब अलग-अलग हो जाना। इंसानों के दर्मियान इतेफ़ाक कभी इस मअना में नहीं हो सकता कि सबकी राय बिल्कुल एक हो जाएँ। इसलिए किसी गिरोह में इतेहाद की सूरत सिर्फ यह है कि राय में भिन्नता के बावजूद अमल में एकरूपता हो। जब तक किसी गिरोह में यह बुलंदनजरी पाई जाएगी तो वह मुत्तहिद और इसके नतीजे में ताकतवर रहेगा। और जब राय में विभेद करके लोग अलग-अलग होने लगें तो इसके बाद लाजिम कमजोरी और इसके नतीजे में शिकस्त होगी।

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَى طَآئِفَةً مِّنكُمْ
وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ
يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلّهِ يُخْفُونَ
فِي أَنفُسِهِمْ مَا لَا يَبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا
قُتِلْنَا ههنا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
إِلَى مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُبَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝١٥١ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِيثَاقَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ
إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝١٥٢

फिर अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर गम के बाद इत्मीनान उतारा यानी ऊंच कि इसका तुममें से एक जमाअत पर ग़लबा हो रहा था और एक जमाअत वह थी कि उसे अपनी जानों कि फ़िक्र पड़े हुई थी। वे अल्लाह के बारे में हकीकत के ख़िलाफ़ ख़्यालात, जाहलियत के ख़्यालात कायम कर रहे थे। वे कहते थे कि क्या हमारा भी कुछ इस्तिथार है। कहो सारा मामला अल्लाह के इस्तिथार में है। वे अपने दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो तुम पर जाहिर नहीं करते। वे कहते हैं कि अगर इस मामले में कुछ हमारा भी दखल होता तो हम यहां न मारे जाते। कहो अगर तुम अपने घरों में होते तब भी जिनका क़त्ल होना लिख गया था वे अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल पड़ते। यह इसलिए हुआ कि अल्लाह को आजमाना था जो कुछ तुम्हारे सीनों में है और निखारना था जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानता है सीनों वाली बात को। तुममें से जो लोग फिर गए थे उस दिन कि दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई इन्हें शैतान ने इनके कुछ आमांल के सबब से फिसला दिया था। अल्लाह ने इन्हें माफ़ कर दिया। वेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (154-155)

जिंदगी के मोर्चे में सबसे ज्यादा अहमियत इस बात की होती है कि आदमी का चैन उससे रुख़सत न हो। वह पूरी यक़सूई के साथ अपना मंसूबा बनाने के काबिल रहे। अल्लाह पर भरोसे की वजह से अहले इमान को यह चीज कमाल दर्जे में हासिल होती है। यहां तक कि हिला देने वाले मौक़ों पर जबकि लोगों की नई उड़ जाती हैं, उस वक़्त भी वे इस काबिल रहते हैं कि एक नई लेकर दुबारा ताजा दम हो सकें। उहुद के मौक़े पर इसका एक प्रदर्शन इस तरह हुआ कि शिकस्त के बाद सख़्ततरीन हालात के बावजूद वे सो सके और अगले दिन

हमरा-उल-असद तक दुश्मन का पीछा किया जो मदीना से आठ मील की दूरी पर है। इसके नतीजे में फातेह (विजयी) दुश्मन मरऊब होकर मक्का वापस चला गया। यह सच्चे अहले इमान का हाल है। मगर जो लोग पूरे मअनों में अल्लाह को अपना वली (सहायक) और सरपरस्त बनाए हुए न हों, उन्हें हर तरफ़ बस अपनी जान का ख़तरा नजर आता है। दीन की फ़िक्र से ख़ाली लोग अपनी जात की फ़िक्र के पड़े रहते हैं वे अल्लाह की तरफ़ से इत्मीनान की मदद में से अपना हिस्सा नहीं पाते।

उहुद के मौक़े पर अब्दुल्लाह बिन उबी की राय थी कि मदीना में रहकर जंग की जाए। मगर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) मुख़लिस (निष्ठावान) मुसलमानों के मशिवर पर बाहर निकले और उहुद पहाड़ के दामन में मुकाबला किया। दरें पर तैनात दस्ते की ग़लती से जब शिकस्त हुई तो उन लोगों को मौका मिला। उन्होंने कहना शुरू किया कि अगर हमारी बात मानी गई होती और मदीना में रहकर लड़ते तो इस बर्बादी की नौबत नहीं आती। मगर मौत ख़ुदा की तरफ़ से है और वहीं आकर रहती है जहां वह किसी के लिए लिखी हुई है। एहतियाती तदबीरों किसी को मौत से बचा नहीं सकतीं। इस तरह के वाक़ेआत, चाहे बजाहिर इनका जो सबब भी नजर आए, वे अल्लाह की तरफ़ से होते हैं। ताकि अल्लाह के सच्चे बंदे अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करके और भी ज्यादा रहमतों के मुस्तहक़ बनें। और जो सच्चे नहीं हैं उनकी हकीकत भी खुलकर सामने आ जाए।

उहुद के दरें पर जो पचास तीरअंदाज तैनात थे जब उन्होंने देखा कि मुसलमानों को फतह हो गई है तो इनमें से कुछ लोगों ने इसरार किया कि चलकर माले ग़नीमत लूटें। मगर अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके कुछ साथियों ने कहा नहीं। हमें हर हाल में यहीं रहना है क्योंकि यही अल्लाह के रसूल का हुक्म है। अंततः ग्यारह को छोड़कर बाकी लोग चले गए। आपसी मतभेद की इस कमजोरी से शैतान ने अंदर दाख़िल होने का रास्ता पा लिया। ताहम जब उन्होंने अपनी ग़लती का एतराफ़ किया तो अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया और इब्तिदाई नुक़सान के बाद उनकी मदद इस तरह की कि दुश्मनों के दिल में रौब डालकर इन्हें वापस कर दिया। हालांकि उस वक़्त वे मदीना से सिर्फ़ कुछ मील की दूरी पर रह गए थे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا الْإِخْوَانُ هُمْ أَذَىٰ أَصْرُنَا فِي
الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غَرَىٰ لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَلِك
حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُخَيِّ وَيُخَيِّتُ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَلَكِنْ
قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُونَ ۝ وَلَكِنْ مِّمَّنْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَا إِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ۝ فِيمَا رَحِمَهُ مِّنَ
اللَّهِ لَبِئْسَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ قَطًّا غَلِيظًا الْقَلْبُ لَا تَفْطَنُوا مِنْ حَوْلِكَ
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ

عَلَى اللَّهِ إِنْ لَيْسَ لَهُ الْيُوسُفُ إِنَّ اللَّهَ يُخَبِّرُ الْمُنَافِقِينَ ۖ إِنَّ يَتَصَرُّكُمْ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ
وَأَنْ يَتَّخِذُ لَكُمْ فِتْنَةً ۚ أَذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इंकार किया। वे अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, जबकि वे सफर या जिहाद में निकलते हैं और उन्हें मौत आ जाती है, कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। ताकि अल्लाह इसे उनके दिलों में हसरत का सबब बना दे। और अल्लाह ही जिलाता है और मारता है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मफिरत और रहमत उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। और तुम मर गए या मारे गए बहरहाल तुम अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे। यह अल्लाह की बड़ी रहमत है कि तुम उनके लिए नर्म हो। अगर तुम तुंदखू (कठोर) और सख्त दिल होते तो ये लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। पस इन्हें माफ कर दो और इनके लिए मफिरत मांगो और मामलात में इनसे मश्वरा लो। फिर जब फैसला कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारा साथ दे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हारा साथ छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे। और अल्लाह ही के ऊपर भरोसा करना चाहिए ईमान वालों को। (156-160)

इस दुनिया में जो कुछ होता है अल्लाह के हुक्म से होता है। ताहम यहां हर चीज पर असबाब का पर्दा डाल दिया गया है। वाक़ेआत बज़हिर असबाब के तहत होंगे नज़र आते हैं मगर हकीकत में वे अल्लाह के हुक्म के तहत हो रहे हैं। आदमी का इस्तेहान यह है कि वह जाहिरी असबाब में न अटक बल्कि इनके पीछे काम करने वाली खुदाई कुदरत को देख ले। ग़ैर-मोमिन वह है जो असबाब में खो जाए और मोमिन वह है जो असबाब से गुजर कर अस्त हकीकत को पा ले। एक शख्स मोमिन होने का दावेदार हो मगर इसी के साथ उसका हाल यह हो कि जिंदगी व मौत और कामयाबी व नाकामी को वह तदवीरों का नतीजा समझता हो तो उसका ईमान का दावा मोअतबार नहीं। ग़ैर-मोमिन के साथ कोई हादसा पेश आए तो वह इस ग़म में मुब्तला हो जाता है कि मैंने फलों तदवीर की होती तो मैं इस हादसे से बच जाता। मगर मोमिन के साथ जब कोई हादसा गुजरता है तो वह यह सोचकर मुतमइन रहता है कि अल्लाह की मर्जी यही थी। जो लोग दुनियावी असबाब को अहमियत दें वे अपनी पूरी जिंदगी दुनिया की चीजों को फ़राहम करने में लगा देते हैं। 'मरने' से ज्यादा 'जीना' उन्हें अजीज हो जाता है। मगर पाने की अस्त चीज वह है जो आख़िरत में है। यानी अल्लाह की जन्नत व मफ़िरत (क्षमा, मोक्ष, मुक्ति)। और जन्नत वह चीज है जिसे सिर्फ जिंदगी ही की कीमत पर हासिल किया जा सकता है। आदमी का वजूद ही जन्नत की वाहिद

(एकमात्र) कीमत है। आदमी अगर अपने वजूद को न दे तो वह किसी और चीज के जरिए जन्नत हासिल नहीं कर सकता।

अहले ईमान से साथ जिस इज्तिमाई सुलूक का हुक्म पैग़म्बर को दिया गया है वही आम मुस्लिम सरबराह (प्रमुख, शासक) के लिए भी है। मुस्लिम सरबराह के लिए जरूरी है कि वह नर्म दिल, नर्म गुप्तर (शालीन) हो। यह नर्मी सिर्फ रोज़मर्रा की आम जिंदगी ही में मल्बूब नहीं है बल्कि ऐसे ग़ैर-मामूली मौकों पर भी मल्बूब है जबकि इस्लाम और ग़ैर-इस्लाम के टकराव के वक्त लोगों से एक हुक्म की नाफरमानी हो और नतीजे में जीती हुई जंग हार में बदल जाए। सरबराह के अंदर जब तक यह वुस्अत और बुलंदी न हो ताक़त और इज्तिमाइयत कायम नहीं हो सकती। ग़लती चाहे कितनी ही बड़ी हो, अगर वह सिर्फ एक ग़लती है, शरपसंदी नहीं है तो वह काबिले माफी है। सरबराह को चाहिए कि ऐसी हर ग़लती को भुलाकर वह लोगों से मामला करे। यहां तक कि वह लोगों का इतना ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हो कि उनके हक में उसके दिल से दुआएं निकलने लगें। उसकी नज़र में लोगों की इतनी कद्र हो कि मामलात में वह उनसे मश्वरा ले। जब आदमी को यह यकीन हो कि जो कुछ होता है खुदा के किए से होता है तो इसके बाद इंसानी असबाब उसकी नज़र में नाक़बिले लिहाज हो जाएंगे।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلُّ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ ثُمَّ تَوَفَّى
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَفَمَنْ أَتَّبَعَ رِضْوَانُ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ
بِسَخَطٍ مِنَ اللَّهِ وَمَا لَوْ جَاهَتُمْ وَيُسَّ الْمَصِيرُ ۝ هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ
وَاللَّهُ بِصِيرٍ بَآيَعُمُوكُمْ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ
كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

और नबी का यह काम नहीं कि वह कुछ छुपाए रखे और जो कोई छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज को क़ियामत के दिन हाज़िर करेगा। फिर हर जान को उसके किए हुए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर कुछ जुल्म न होगा। क्या वह शख्स जो अल्लाह की मर्जी का ताबेअ (अधीन) है वह उस शख्स की तरह हो जाएगा जो अल्लाह का ग़ज़ब लेकर लौटा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अल्लाह के यहां उनके दर्जे अलग-अलग होंगे। और अल्लाह देख रहा है जो वे करते हैं। अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब व हिक़मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है। बेशक ये इससे पहले खुली हुई गुमराही में थे। (161-164)

उहुद की दर्रे पर तैनात जिन चालीस लोगों ने नाफरमानी की थी, अल्लाह के रसूल मुहम्मद

(सल्ल०) ने उन्हें माफ कर दिया था। ताहम इन लोगों को यह शुबह था कि आपने शय्द सिर्फ ऊपरी तौर पर हमें माफ किया है। दिल में आप अब भी खफ़ हैं और किसी वक्त हमारे ऊपर खफ़गी निकालेंगे। फरमाया कि यह पैग़म्बर का तरीका नहीं। पैग़म्बर अंदर और बाहर एक होता है, इससे यह अंदाजा होता है कि मुसलमानों के सरबराह को कैसा होना चाहिए। मुस्लिम सरबराह का दिल ऐसा होना चाहिए कि उसके अंदर बुग़्ज, नफरत, कीना और हसद बिल्कुल जगह न पा सके। यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि उसके साथियों से एक भयानक ग़लती हो गई हो। मुस्लिम सरबराह को चाहिए कि बड़ी से बड़ी ग़लती करने वालों के खिलाफ भी वह दिल में कोई दुर्भावना छुपाकर न रखे। आज के दिन उनके साथ इस तरह रहे जैसे पिछले दिन उनसे कुछ नहीं हुआ था। इसी तरह यह भी जरूरी है कि मुसलमानों का कोई ग़िरोह जब एक सरबराह पर एतमाद करके अपने मामलात को उसके सुपुर्द कर दे तो सरबराह को ऐसा भी नहीं करना चाहिए कि उनके जान व माल को वह अपने जाती हौसलों और तमन्नाओं की तकमील पर कुर्बान कर दे। यह अल्लाह के ग़जब से बेख़ौफ होना है। जो शख्स लोगों को यह बताने के लिए उठा हो कि लोग अल्लाह की मर्जी पर चलें वह खुद क्योंकि इस हाल में अल्लाह से मिलना पसंद करेगा कि वह अल्लाह की मर्जी के खिलाफ चला हो।

पैग़म्बर ने अपनी ज़िंदगी से जो मिसाली नमूना कायम किया है, क़ियामत तक तमाम मुस्लिहीन (सुधारकों) को उसी के मुताबिक बनना है। इस्लाह के काम के लिए जरूरी है कि आदमी जिन लोगों के दर्मियान काम करने उठे उन्हें हर एतबार से वह 'अपना' नजर आए। उसकी ज़बान, तर्ज कलाम, रहन-सहन हर चीज़ अजनबियत से پاک हो। वह अपने और मुखातिबीन (संबोधित वर्ग) के दर्मियान ऐसी फ़जा न बनाए जो किसी पहलू से एक-दूसरे को दूर करने वाली हो या एक को दूसरे के मुकाबले में फ़रीक (पक्ष) बनाकर खड़ा कर दे। लोगों के दर्मियान जो काम करना है वह सबसे पहले यह है कि लोगों के अंदर यह सलाहियत पैदा की जाए कि वे उन निशानियों को पढ़ने लगे जो उनकी जात (निजी जीवन) में और बाहर की दुनिया में फैली हुई हैं। वे अल्लाह की दलीलों को जानकर उन्हें अपने जेहन का जुज बनाएं। दूसरा काम 'तज़किया' (आन्तरिक शुद्धिकरण) है। यह मक़सद जबानी गुफ़्तगू और सोहबत (सान्निध्य) के जरिए हासिल होता है। आम तहरीर और तकरीर में बात ज्यादातर उसकी अंदाज में होती है जबकि इफ़रादी (व्यक्तिशः) गुफ़्तगूओं में बात ज्यादा सुनिश्चित और विस्तृत होती है। साथ ही दाअी (आह्वानकर्ता) का अपना वजूद भी पूरी तरह उसके प्रोत्साहन पर मौजूद रहता है आम कलाम अगर दावत (आह्वान) होता है तो इफ़रादी मुलाक़ातें संबोधित व्यक्ति के लिए तज़किया का जरिया बन जाती हैं। तीसरी चीज़ क़िताब है। यानी ज़िंदगी गुज़ारने की बाबत आसमानी हिदायतों को बताना जिसका दूसरा नाम शरीअत है। और चौथी चीज़ हिक़मत है। यानी दीन के गहरे भेदों से पर्दा उठाना, पंक्तियों के मध्य छुपी हुई हकीक़तों को स्पष्ट करना।

اَوَلَمَّا اَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِثْلَهَا قُلْتُمْ اِنَّا هَذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا اَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّغٰى الْجَبْعِيْنَ فَاِذْ اَنَّ اللّٰهَ وَلِيْعَلْمُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَلِيْعَلْمُ الَّذِيْنَ تَافَفُوْا ۝ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ اَدْفَعُوْا قَالُوْا لَوْلَا نُوْعَلْمُ قَاتِلًا لَا تَبْعَلْمُ هُمْ لِلْكَفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ يَقُوْلُوْنَ يَا فَوَاحِشُهُمْ تَالَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۝ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ قَالُوْا الْاِخْوَانُ نَحْمُ وَنَعُوْذُ وَالْوَاظِعُوْنَ مَا قَاتِلُوْا قُلْ فَاذْرُوْا عَنۢ اَنْفُسِكُمْ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

और जब तुम्हें ऐसी मुसीबत पहुंची जिसकी दुगनी मुसीबत तुम पहुंचा चुके थे तो तुमने कहा कि यह कहाँ से आ गई। कहो यह तुम्हारे अपने पास से है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। और दोनों जमाअतों के मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वह अल्लाह के हुक्म से पहुंची और इस वास्ते कि अल्लाह मोमिनों को जान ले और उन्हें भी जान ले जो मुनाफ़िक (पाखंडी) थे जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ। उन्होंने कहा अगर हम जानते कि जंग होना है तो हम जरूर तुम्हारे साथ चलते। ये लोग उस दिन ईमान से ज्यादा कुफ़्र के करीब थे। वे अपने मुँह से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और अल्लाह उस चीज़ को खूब जानता है जिसे वे छुपाते हैं। ये लोग जो खुद बैठे रहे, अपने भाइयों के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारी बात मानते तो वे मारे न जाते। कहो तुम अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (165-168)

हक और बातिल के मुकाबले में आखिरी फ़तह हक की होती है। क्योंकि अल्लाह हमेशा हक के साथ होता है। ताहम यह दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। यहां शरपसंदों को भी अमल की पूरी आज़ादी है। इसलिए कभी ऐसा होता है कि अहले हक की किसी कमजोरी (मसलन आपसी मतभेदों) से फ़ायदा उठा कर शरपसंद उन्हें वक्ती नुक्सान पहुंचाने में कामयाब हो जाते हैं। ताहम इस तरह के वाक़ेआत का एक मुफ़ीद पहलू भी है। इसके जरिए खुद मुसलमानों की जमाअत की जांच हो जाती है। प्रतिकूल हालत को देखकर ग़ैर-मुख़्लिस लोग छंट जाते हैं और जो सच्चे मुसलमान हैं वे अल्लाह पर भरोसा करते हुए जमे रहते हैं। इस तरह मालूम हो जाता है कि कौन क़ाबिले एतमाद है और कौन नाक़ाबिले एतमाद। मज़ीद यह कि इस्तेफ़ाकी ग़लती से नुक्सान उठाने के बाद जब अहले ईमान दुबारा सत्र, इनाबत (कर्तव्यनिष्ठा) और अल्लाह पर भरोसे का सुबूत देते हैं तो अल्लाह की रहमत उनकी तरफ पहले से भी ज्यादा मुतवज्जह हो जाती है।

हक और बातिल के मोर्चे में जो लोग इस तरह शिकर्त करें कि उसी की राह में अपने को मिटा दें, उनके बारे में दुनिया वाले अक्सर अफसोस के साथ कहते हैं कि उन्होंने व्यर्थ में अपने को बर्बाद कर लिया। मगर यह सिर्फ नादानी की बात है। अल्लाह की राह में खोना ही तो सबसे बड़ा पाना है। क्योंकि जो लोग अल्लाह की राह में अपना सब कुछ कुर्बान कर दें वही वे लोग हैं जो सबसे ज्यादा अल्लाह के इनामात के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

अल्लाह की राह में जान देने वालों का जिक्र नादान लोग इस तरह करते हैं जैसे दूसरी राहों में अपनी जिंदगियां लगाने वालों पर मौत नहीं आती, जैसे कि सिर्फ अल्लाह की राह के मुजाहिदीन मरते हैं दूसरे लोग मरते ही नहीं। जाहिर है कि यह बात सरासर बेमानी है। मौत खुदा का एक आम कानून है। वह बहरहाल हर एक के लिए अपने वक्त पर आने वाली है। आदमी चाहे एक रास्ते में चल रहा हो या दूसरे रास्ते में, वह किसी हाल में मौत के अंजाम से बच नहीं सकता।

जो लोग इस किस्म की बातें करते हैं वे कभी अपनी बात में संजीदा नहीं होते। उनका दिल तो एतराफ कर रहा होता है कि हक के लिए कुर्बानी न देकर उन्होंने सख्त कोताही की है। मगर जबान से कुर्बानी करने वालों को मतऊन (लाखित) करके अपना जाहिरी भ्रम कयम रखना चाहते हैं। वे अपनी जबान से ऐसे अल्फाज बोलते हैं जिनके बारे में खुद उनका दिल गवाही दे रहा होता है कि ये झूठे अल्फाज हैं इनकी कोई वाकई हकीकत नहीं।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزُقُونَ ۝ فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ ۖ أَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ الَّذِينَ قَالُوا لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝ فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةِ رَبِّهِمْ إِلَى دَوْلِهِمْ لِيَنْصَلِحَ الْأَمْرَ ۚ وَاللَّهُ وَفَّيْلٌ ۖ وَإِنَّمَا ذَلِكَ الشَّيْطَانُ يُوْخِوْهُ ۖ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُوا اللَّهَ ۚ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें मुर्दा न समझो। बल्कि वे ज़िंदा हैं अपने ख के पास, उन्हें रोज़ी मिल रही है। वे खुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फल में

से उन्हें दिया है और खुशखबरी ले रहे हैं कि जो लोग उनके पीछे हैं और अभी वहां नहीं पहुंचे हैं उनके लिए भी न कोई खौफ है और न वे गमगीन होंगे। वे खुश हो रहे हैं अल्लाह के इनाम और फल पर और इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का अज़्र जाये नहीं करता। जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के हुक्म को माना बाद इसके कि उन्हें ज़ख्म लग चुका था, इनमें से जो नेक और मुत्तकी हैं उनके लिए बड़ा अज़्र है जिनसे लोगों ने कहा कि दुश्मन ने तुम्हारे खिलाफ बड़ी ताकत जमा कर ली है उससे डरो। लेकिन इस चीज ने उनके ईमान में और इजाफा कर दिया और वे बोले कि अल्लाह हमारे लिए काफी है और वह बेहतरीन कारसाज है। पस वे अल्लाह की नेमत और उसके फल के साथ वापस आए। इन लोगों को कोई बुराई पेश न आयी। और वे अल्लाह की रिजामंदी पर चले और अल्लाह बड़ा फल वाला है। यह शैतान है जो तुम्हें अपने दोस्तों के जरिए डराता है। तुम उनसे न डरो बल्कि मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो। (169-175)

जो लोग इस्लाम के दुश्मनों से लड़े और शहीद हुए उन्हें मुनाफिकीन मौते जियाअ (व्यर्थ की मौत) कहते थे। उनका ख्याल था कि ये मुसलमान एक शख्स (मुहम्मद सल्ल०) के बहकावे में आकर अपनी जानें जाया कर रहे हैं। फरमाया कि जिसे तुम मौत समझते हो वही हकीकत में जिंदा है। तुम सिर्फ दुनिया का नफा नुस्तान जानते हो। यही वजह है कि आखिरत की राह में जान देना तुम्हें अपने आपको बर्बाद करना मालूम होता है। मगर अल्लाह की राह में मरने वाले तुमसे ज्यादा बेहतर जिंदगी पाए हुए हैं। वे आखिरत में तुमसे ज्यादा ऐश की हालत में हैं।

शैतान का यह तरीका है कि वह जिन इंसानों को अपने करीब पाता है उन्हें उकसा कर खड़ा कर देता है कि वे दीन की तरफ बढ़ने के खौफनाक नतीजों को दिखा कर लोगों को दीन के महाज से हटा दें। ये लोग विरोधियों की ताकत बढ़ा-चढ़ाकर बयान करते हैं ताकि अहले ईमान मरऊब हो जाएं। मगर इस किस्म की बातें अहले ईमान के हक में मुफीद साबित होती हैं। क्योंकि उनका यह यकीन नए सिरे से ज़िंदा हो जाता है के मुश्किल हालात में उनका खुदा उन्हें तंहा नहीं छोड़ेगा।

उहद की जंग मदीना से तकरीबन दो मील की दूरी पर हुई। जंग के बाद मुंकिरों का लश्कर अबू सुफयान की कयादत में वापस रवाना हुआ। मदीना से आठ मील पर हमरा उल असद पहुंच कर उन्होंने पड़ाव डाला। यहां उनकी समझ में यह बात आयी कि उहद से वापस होकर उन्होंने ग़लती की है। यह बेहतरीन मौका था कि मदीना तक मुसलमानों का पीछा किया जाता और उनकी ताकत का आखिरी तौर पर ख़ात्मा कर दिया जाता। इस दर्मियान में उन्हें कबीला अब्दुल कैस का एक तिजारीत काफिला मिल गया जो मदीना जा रहा था। मुंकिरों ने इस काफिले को कुछ रकम देकर आमदा किया कि वह मदीना पहुंचकर ऐसी ख़बरे फैलाए जिससे मुसलमान डर जाएं। अतः काफिले वालों ने मदीना पहुंच कर कहना शुरू किया कि हम देख आए हैं कि मक्का वाले भारी लश्कर जमा कर रहे हैं और दुबारा मदीना पर हमला करने

حَتَّىٰ يَأْتِيَٰنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِي
بِالْبَيِّنَاتِ وَالَّذِينَ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ فَإِنْ كَذَّبُوكَ
فَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۚ وَالْكِتَابُ الْمُنِيرُ ۚ
كُلُّ نَفْسٍ ذَٰئِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّقُونَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ فَمَن زُحِرَ عَنْ
النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۚ

और जो लोग बुद्ध (कंजूसी) करते हैं उस चीज में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फल में से दिया है वे हरगिज यह न समझें कि यह उनके हक में अच्छा है। बल्कि यह उनके हक में बहुत बुरा है जिस चीज में वे बुद्ध कर रहे हैं उसका क्रियामत के दिन उन्हें तैक पहनाया जाएगा। और अल्लाह ही वारिस है जमीन और आसमान का और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाखबर है। अल्लाह ने उन लोगों का कौल सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह गुनी है और हम मोहताज हैं। हम लिख लेंगे उनके इस कौल को और उनके पैगम्बरों को नाहक मार डालने को भी। और हम कहेंगे कि अब आग का अजाब चखो। यह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई है और अल्लाह अपने बंदों के साथ नाइसाफी करने वाला नहीं। जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है कि हम किसी रसूल को तस्तीम न करें जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी कुर्बानी पेश न करे जिसे आग खाले, उनसे कहो कि मुझसे पहले तुम्हारे पास रसूल आए खुली निशानियां लेकर और वह चीज लेकर जिसे तुम कह रहे हो फिर तुमने क्यों उन्हें मार डाला, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी बहुत से रसूल झुठलाए जा चुके हैं जो खुली निशानियां और सहीफे और रोशन किताब लेकर आए थे। हर शख्स को मौत का मजा चखना है और तुम्हें पूरा अज्र तो बस क्रियामत के दिन मिलेगा। पस जो शख्स आग से बच जाए और जन्नत में दाखिल किया जाए वही कामयाब रहा और दुनिया की ज़िंदगी तो बस धोखे का सौदा है। (180-185)

जाहिरी तौर पर आदमी एक कौल देकर मोमिन बन जाता है मगर अल्लाह की नजर में वह उस वक्त मोमिन बनता है जबकि वह अपनी जान और माल को अल्लाह की राह में दे दे। जान व माल की कुर्बानी के बगैर किसी का ईमान अल्लाह के यहां मोतबर नहीं। आदमी अपने माल को इसलिए बचाता है कि वह समझता है कि इस तरह वह अपने दुनियावी मुस्तकबिल (भविष्य) की सुरक्षा का रहा है। मगर आदमी का हकीकी मुस्तकबिल वह है जो आखिरत में सामने आने वाला है और आखिरत की दुनिया में ऐसा बचाया हुआ माल आदमी के हक में सिर्फ वबाल साबित होगा। जो माल दुनिया में ज़िन्त और फय्र का ज़रिया दिखाई दे रहा है वह आखिरत में खुदा के हुक्म से सांप का रूप धार लेगा और सदैव उसे डसता रहेगा।

जो लोग कुर्बानी वाले दीन को नहीं अपनाते वे अपने को सही साबित करने के लिए विभिन्न बातें करते हैं। मसलन यह कि यह माल खुदा ने हमारी जरूरत के लिए पैदा किया है फिर क्यों न हम इसे अपनी जरूरतों पर खर्च करें और इससे अपने दुनियावी आराम का सामान करें। कभी उनकी बेहिंसी उन्हें यहां तक ले जाती है कि वे खुद हक के दाओ (आह्वानकर्ता) को संदिग्ध करने के लिए तरह-तरह के शोशे निकालते हैं ताकि यह साबित कर सकें कि वह शख्स सच्चा दाओ ही नहीं जिसका जुहूर (प्रकट होना) यह तकाजा कर रहा है कि अपनी ज़िंदगी और अपने माल को कुर्बान करके उसका साथ दिया जाए। इस क्रिम के लोग जो बातें कहते हैं वे बजाहिर दलील के रूप में होती हैं मगर हकीकत में वे ईमानी तकाजों से फरार के लिए हैं। इसलिए चाहे कैसी ही दलील पेश की जाए वे इसे रद्द करने के लिए कुछ न कुछ अल्फाज तलाश कर लेंगे। ये वे लोग हैं जो इस बात को भूल गए हैं कि उनका आखिरी अंजाम मौत है, और मौत का मरहला सामने आते ही सूरतेहाल बिल्कुल बदल जाएगी। मौत तमाम झूठे सहारों को बातिल कर देगी। इसके बाद आदमी अपने आपको ठीक उस मकाम पर खड़ा हुआ पाएगा जहां वह हकीकत में था न कि उस मकाम पर जहां वह अपने आपको जाहिर कर रहा था। मौजूदा दुनिया में किसी का तरक्की करना या मौजूदा दुनिया में किसी का नाकाम हो जाना, दोनों हकीकत के एतबार से एक ही सतह की चीजें हैं। न यहां की नेमतें किसी के बरहक होने का सुबूत हैं और न किसी का यहां मुश्किलों और मुसीबतों में मुब्तला होना उसके बरसरे बातिल (असत्यवादी) होने का सुबूत। क्योंकि दोनों ही इस्तेहान के नक्शे हैं न कि अंजाम की अलामतें।

لَتُبْلَوْنَ فِيْٓ أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعْنَ مِنَ الَّذِينَ أُوتُواْ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَتَوُكُمُ أَذًى كَثِيْرًا وَإِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُواْ فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۖ وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُواْ الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّ لِلنَّاسِ وَكَلَّامُنَّ ۖ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۖ فَبَيَّسَ مَا يَشْتَرُونَ ۗ لَّا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا وَيُجِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ۖ
وَاللّٰهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَاللّٰهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ۙ

यकीनन तुम अपने जान व माल में आजमाए जाओगे। और तुम बहुत सी तकलीफदेह बातें सुनोगे उनसे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिली और उनसे भी जिन्होंने शिर्क किया। और अगर तुम सन्न करो और तकवा इस्तियार करो तो यह बड़े हौसले का काम है। और जब अल्लाह ने अहले किताब से अहद लिया कि तुम खुदा की किताब को पूरी तरह लोगों के लिए जाहिर करोगे और उसे नहीं छुपाओगे। मगर उन्होंने इसे पीठ पीछे

डाल दिया और इसे थोड़ी कीमत पर बेच डाला। कैसी बुरी चीज है जिसे वे खरीद रहे हैं। जो लोग अपने इन करतूतों पर खुश हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किए उस पर उनकी तारीफ हो, उन्हें अजाब से बरी न समझो। उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और अल्लाह ही के लिए है जमीन और आसमान की बादशाही, और अल्लाह हर चीज पर कadir है। (186-189)

ईमान का सफर आदमी को ऐसी दुनिया में तै करना होता है जहां अपनों और गैरों की तरफ से तरह-तरह के जख्म लगते हैं। मगर मोमिन के लिए जरूरी होता है कि वह रद्देअमल की नपिस्थात में मुब्तला न हो, वह सूरतेहाल का मुस्बत (सकारात्मक) जवाब देते हुए आगे बढ़ता रहे। लोगों की तरफ से उत्तेजना दिलाने वाले अवसर आते हैं मगर वह पाबंद होता है कि हर किसम के झटकों को अपने ऊपर सहे और जवाबी जेहन के तहत कोई कार्रवाई न करे। बार-बार ऐसे मामलात सामने आते हैं जबकि दिल कहता है खुदा की हदों को तोड़ कर अपना उद्देश्य हासिल किया जाए, मगर अल्लाह का डर उसके कदमों को रोक देता है। इसी तरह दीन की विभिन्न जरूरतें सामने आती हैं और जान व माल की कुर्बानी का तक्काज करती हैं ऐसे मौकों पर आसान दीन को छोड़कर मुश्किल दीन अपना पड़ता है। यह वाक्या ईमान के सफर को हिम्मत और आली हैसलगी का जबरदस्त इम्तेहान बना देता है। हकीकत यह है कि मोमिन बनना अपने आपको सब्र और तकवा के इम्तेहान में खड़ा करना है। जो इस इम्तेहान में पूरा उतरा वह मोमिन बना जिसके लिए आखिरत में जन्नत के दरवाजे खोले जाएंगे।

आसमानी किताब के हामिल (धारक) जब किसी गिरोह पर जवाल (पतन) आता है तो ऐसा नहीं होता कि वह खुदा और रसूल का नाम लेना छोड़ दे या खुदा की किताब से अपनी बेतअल्लुकी का एलान कर दे। दीन ऐसे गिरोह की नस्ली रिवायत में शामिल हो जाता है। वह उसका पुफ़्फ़ू कैमी असासा (धरोहर) बन जाता है। और जिस चीज से इस तरह का नस्ली और कैमी तअल्लुक कायम हो जाए उससे अलग होना किसी गिरोह के लिए मुमकिन नहीं होता। ताहम इसका यह तअल्लुक महज रस्मी तअल्लुक होता है न कि वास्तव में कोई हकीकती तअल्लुक। वे अपनी दुनियावी सरगर्मियां भी दीन के नाम पर जारी करते हैं। वे बेदीन होकर भी अपने को दीनदार कहलाना चाहते हैं। वे चाहने लगते हैं कि उन्हें उस काम का क्रेडिट दिया जाए जिसे उन्होंने किया नहीं। वे आखिरत की नजात से बेफिक्र होकर जिंदगी गुजारते हैं और इसी के साथ ऐसे अक़ीदे बना लेते हैं जिनके मुताबिक उन्हें अपनी नजात बिल्कुल महफूज नजर आती है। वे अपने गढ़े हुए दीन पर चलते हैं मगर अपने को खुदाई दीन का अलमबरदार बताते हैं। वे दुनियावी मक्सदों के लिए सरगर्म होते हैं और अपनी सरगर्मियों को आखिरत का उन्वान देते हैं। वे खुदसाख्ता सियासत चलाते हैं और उसे खुदाई सियासत साबित करते हैं। वे कैमी मफ़ादात (हिती) के लिए उठते हैं और एलान करते हैं कि वे खैरुल उमम का किरदार अदा करने के लिए खड़े हुए हैं। मगर कोई शख्स बेदीनी को दीन कहने लगे तो इस बुनियाद पर वह अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकता। आदमी दुनिया की तरफ दौड़े और आखिरत से बेपरवाह हो जाए तो यह सिर्फ गुमराही है और अगर वह अपने दुनियावी कारोबार को खुदा और रसूल के नाम पर करने लगे तो यह गुमराही पर ठिठाई का इजाफ़ा है। क्योंकि यह ऐसे काम पर इनाम चाहना है जिसे आदमी ने किया ही नहीं।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالاختلافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا ۖ سُبْحَنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تَدْخُلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْرَجْتَهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۚ رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِنسَانِ أَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ ۖ فَامْكُمَا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مَعَ الْاَكْبَارِ ۖ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

आसमानों और जमीन की पैदाइश और रात दिन के बारी-बारी आने में अक्ल वालों के लिए बहुत निशानियां हैं। जो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और जमीन की पैदाइश पर गौर करते रहते हैं। वे कह उठते हैं ऐ हमारे रब तूने यह सब बेमक्सद नहीं बनाया है। तू पाक है, पस हमें आग के अजाब से बचा। ऐ हमारे रब तूने जिसे आग में डाला उसे तूने वाकई रुसवा कर दिया। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। ऐ हमारे रब हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ। पस हम ईमान लाए। ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख्श दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमारा ख़ात्मा नेक लोगों के साथ कर। ऐ हमारे रब तूने जो वादे अपने रसूलों के जरिए हमसे किए हैं उन्हें हमारे साथ पूरा कर और क़ियामत के दिन हमें रुसवाई में न डाल। बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ करने वाला नहीं है। (190-194)

कायनात अपने पूरे वजूद के साथ एक ख़ामोश एलान है। आदमी जब अपने कान और आंख से मसनुई (कृत्रिम) पर्दों को हटाता है तो वह इस ख़ामोश एलान को हर तरफ से सुनने और देखने लगता है। उसे नामुमकिन नजर आता है कि एक ऐसी कायनात जिसके सितारे और सय्यारे (ग्रह) खरबों साल तक भी ख़त्म नहीं होते वहां इंसान अपनी तमाम तमन्नाओं और ख़्वाहिशों को लिए हुए सिर्फ पचास-सौ वर्षों में ख़त्म हो जाए। एक ऐसी दुनिया जहां दरख़्तों का हुस्न और फूलों की लताफ़त है। जहां हवा और पानी और सूरज जैसी बेशुमार बामअना चीजों का एहतेमाम किया गया है वहां इंसान के लिए हुज़्म (अति दुख) और ग़म के सिवा कोई अंजाम न हो। फिर यह भी उसे नामुमकिन नजर आता है कि एक ऐसी दुनिया जहां यह अथाह इम्कान रखा गया है कि यहां एक छोटा सा बीज जमीन में डाला जाए तो उसके अंदर से हरे-भरे दरख़्त की एक पूरी कायनात निकल आए, वहां आदमी नेकी की जिंदगी

इख्तियार करके भी उसका कोई फल न पाता हो। एक ऐसी दुनिया जहां हर रोज तारीक रात के बाद रोशन दिन आता है वहां सदियां गुजर जाएं और अदूल व इंसाफ का उजाला अपनी चमक न दिखाए। एक ऐसी दुनिया जिसकी गोद में जलजले और तूफान सो रहे हैं वहां इंसान जुम पर जुम करता रहे मगर कोई उसका हाथ पकड़ने वाला सामने न आए। जो लोग हकीकतों में जीते हैं और गहराइयों में उतरकर सोचते हैं उनके लिए नाकाबिले यकीन हो जाता है कि एक बामअना (सार्थक) कायनात बेमअना (निरर्थक) अंजाम पर खत्म हो जाए। वे जान लेते हैं कि हक का दाआ जो पैगाम दे रहा है वह शब्दों की जबान में उसी बात का एलान है जो खामोश जबान में सारी कायनात में नश्र हो रहा है। उनके लिए सबसे बड़ा मसला यह बन जाता है कि जब सच्चाई खुले और जब इंसाफ का सूरज निकले तो उस दिन वे नाकाम व नामुराद न हो जाएं। वे अपने रब को पुकारते हुए उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं, वे मफाद और मस्लेहतों की तमाम हदों को तोड़कर हक के दाआ के साथ हो जाते हैं ताकि कायनात का 'उजाला' और कायनात का 'अंधेरा' एक दूसरे से अलग हो जाएं तो कायनात का मालिक उन्हें उजाले में जगह दे। वह उन्हें अंधेरे में ठोकरें खाने के लिए न छोड़े।

अकल और बेअकली का हकीकी पैमाना उससे बिल्कुल भिन्न है जो इंसानों ने खुद बना रखा है। यहां अकल वाला वह है जो अल्लाह की याद में जाए, जो कायनात के तख्तीकी (रचनात्मक) मंसूबे में काम आने वाली खुदाई सार्थकता को पा ले। इसके विपरीत बेअकल वह है जो अपने दिल व दिमाग को अन्य चीजों में अटकाए, जो दुनिया में इस तरह ज़िंदगी गुजारे जैसे कि उसे कायनात के मालिक के तख्तीकी मंसूबे (Creation Plan) की खबर ही नहीं।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّمَّنْ ذُكِّرَ أَوْ أُنْثِيَ
بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُودُوا فِي
سَبِيلِي وَقَاتِلُوا قَاتِلُوا أَلَا تَفْقَهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَدْخُلْتَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِّن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ
لَا يَغْرُبُكَ تُغْتَابُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۖ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَا لَهُمْ
جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْهَبَاءُ ۚ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي
مِّن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ
لِّلْآبَرَارِ ۚ وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ
وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَشِيعِينَ ۚ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا
أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

۝ اٰمَنُوْا صٰبِرُوْا وَصٰبِرُوْا وَاٰرٰطُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

उनके रब ने उनकी दुआ कुबूल फरमाई कि मैं तुममें से किसी का अमल जाये करने वाला नहीं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक-दूसरे से हो। पस जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और वे लड़े और मारे गए उनकी ख़ताएं जरूर उनसे दूर कर दूंगा और उन्हें ऐसे बागों में दाखिल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका बदला है अल्लाह के यहां और बेहतरीन बदला अल्लाह ही के पास है। और मुल्क के अंदर मुंकिरों की सरगर्मियां तुम्हें धोखे में न डालें यह थोड़ा सा फायदा है। फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए बाग होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह की तरफ से उनकी मेजबानी होगी और जो कुछ अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए है वही सबसे बेहतर है। और बेशक अहले किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब को भी मानते हैं जो तुम्हारी तरफ भेजी गई है और उस किताब को भी मानते हैं जो इससे पहले खुद उनकी तरफ भेजी गई थी, वे अल्लाह के आगे झुके हुए हैं और अल्लाह की आयतों को थोड़ी कीमत पर बेच नहीं देते। उनका अज़ उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान वाले, सब्र करो और मुकाबले में मजबूत रहो और लगे रहो और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब होगे। (195-200)

अहले ईमान की जिम्मेदाराना ज़िंदगी उन्हें नफ्स की आजादियों से महरूम कर देती है। उनके हक के एलान में बहुत से लोगों को अपने वजूद की तरदीद (निरस्तीकरण) दिखाई देने लगती है और वे उनके दुश्मन बन जाते हैं। यह सूरतेहाल कभी इतनी शदीद हो जाती है कि वे अपने वतन में बेवतन कर दिए जाते हैं उन्हें विरोधियों की जालिमाना कार्रवाइयों के मुकाबले में खड़ा होना पड़ता है। अल्लाह के दीन को उन्हें जान व माल की कुर्बानी की कीमत पर अपनाना होता है। इन इस्तेहानों में पूरा उतरने के लिए अहले ईमान को जो कुछ करना है वह यह कि वे दुनिया की मस्लेहतों की खातिर आखिरत की मस्लेहतों को भूल न जाएं। वे मुश्किलों और नाखुशगवारियों पर सब्र करें, वे अपने अंदर उभरने वाले मंफ़ी (नकारात्मक) जज्बात को दबाएं और मुतअस्सिर (प्रभावित) ज़ेहन के तहत कार्रवाई न करें। फिर उन्हें बाहर के हरीफों (प्रतिपक्षियों) के मुसबले में साबितकदम रहना है। यह साबितकदमी ही वह चीज है जो अल्लाह की नुसरत को अपनी तरफ खींचती है। इसी के साथ ज़रूरी है कि तमाम अहले ईमान आपस में एक दूसरे के साथ बंधे रहें, वे दीनी जद्दोजेहद के लिए आपस में जुड़ जाएं और एक जान हेकर सामूहिक ताकत से मुख़ालिफ ताकतों का मुकाबला करें। ईमान दरअस्त सब्र का इस्तेहान है और इस इस्तेहान में वही शख्स पूरा उतरता है जो अल्लाह से डरने वाला हो।

दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि खुदा से बेखौफ और आखिरत से बेपरवाह लोगों को जोर और ग़ुलब हासिल हो जाता है। हर क्रिम की इज्जत और रैनके उनके गिर्द जमा हो जाती हैं। दूसरी तरफ अहलेइमान अक्सर हालात में बेजोर बने रहते हैं। शान व शौकत का कोई हिस्सा उन्हें नहीं मिलता। मगर यह सूरतेहाल इतिहाई आरजी (अस्थायी) है। कियामत आते ही हालात बिल्कुल बदल जाएंगे। बेखौफी के रास्ते से दुनिया की इज्जतें समेटने वाले रुस्वाई के गढ़ में पड़े होंगे। और खुदा के खौफ की वजह से बेहिसियत हो जाने वाले हर क्रिम की अबदी (चिरस्थायी) इज्जतों और कामयाबियों के मालिक होंगे। वे अल्लाह के मेहमान होंगे और अल्लाह की मेहमानी से ज्यादा बड़ी चीज इस जमीन और आसमान के अंदर नहीं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۖ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَبْدَلُوا الْخَيْثُ بِالْخَبِيثِ ۖ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانكِسُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ۖ وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَتِهِنَّ نِحْلَةً فَإِنْ طُبِنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَرِيئًا

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है। ऐ लोगो अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और इन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें पैदा दीं। और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और खबरदार रहो संबंधियों से। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। और यतीमों का माल उनके हवाले करो। और बुरे माल को अच्छे माल से न बदलो और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खाओ। यह बहुत बड़ा गुनाह है। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीमों

के मामले में इंसाफ न कर सकोगे तो औरतों में से जो तुम्हें पसंद हों उन से दो-दो, तीन-तीन, चार-चार तक निकाह कर लो। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम अदल (न्याय) न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो या जो कनीज (दासी) तुम्हारे अधीन हो। इसमें उम्मीद है कि तुम इंसाफ से न हटोगे। और औरतों को उनके महर खुशदिली के साथ अदा करो। फिर अगर वे इसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें अपनी खुशी से तो तुम उसे हंसी-खुशी से खाओ। (1-4)

तमाम इंसान पैदाइश के एतबार से एक हैं। एक ही औरत और एक ही मर्द सबके मां और बाप हैं। इस लिहाज से जरूरी है कि हर आदमी दूसरे आदमी को अपना समझे। सबके सब एक मुश्तरक (साझे) घराने के अफराद की तरह मिलजुल कर इंसाफ और खैरखाही के साथ रहें। फिर इनमें से जो रहमी (खून के) रिश्ते हैं उनमें यह नस्ली इत्तेहाद और ज्यादा करीबी हो जाता है। इसलिए रहमी रिश्तों में हुस्ने सुलूक की अहमियत और ज्यादा बढ़ जाती है। इंसानों के दर्मियान इस आपसी हुस्ने सुलूक की अहमियत सिर्फ अख्ताकी एतबार से नहीं है बल्कि यह खुद आदमी का अपना जाती मसला है। क्योंकि तमाम इंसानों के ऊपर अजीम व बरतर खुदा है। वह आखिर में सबसे हिसाब लेने वाला है और दुनिया में उनके अमल के मुताबिक आखिरत में उनके अबदी मुस्तकबिल का फैसला करने वाला है। इसलिए आदमी को चाहिए कि इंसान के मामले को सिर्फ इंसान का मामला न समझे बल्कि इसे अल्लाह का मामला समझे। वह अल्लाह की पकड़ से डरे और अपने आपको उस अमल का पाबंद बनाए जो उसे अल्लाह के ग़जब से बचाने वाला हो।

हदीसे कुदसी में है कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि जो शख्स रहम को जोड़ेगा मैं उससे जुड़ूंगा और जो शख्स रहम को काटेगा मैं उससे कटूंगा। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह से तअल्लुक का इस्तेहान बंदों से तअल्लुक के मामले में लिया जाता है। वही शख्स अल्लाह से डरने वाला है जो बंदों के हुक्म के मामले में अल्लाह से डरे, वही शख्स अल्लाह से मुहब्बत करने वाला है जो बंदों के साथ मुहब्बत में इसका सुबूत दे। यह बात आम इंसानी तअल्लुकात में भी मल्बू है। मगर रहमी रिश्तों से हुस्ने सुलूक के मामले में इसकी अहमियत इतनी बढ़ जाती है कि वह सिर्फ खुदा के बाद दूसरे नम्बर पर है।

यतीम लड़के और लड़कियां किसी खानदान या समाज का सबसे ज्यादा कमजोर हिस्सा होते हैं। इसलिए खुदा से डर का सबसे ज्यादा सख्त इस्तेहान यतीम लड़कों और लड़कियों के बारे में होता है। आदमी को चाहिए कि यतीमों के बारे में वही करे जो इंसाफ और खैरखाही का तमज है और जिसमें यतीमों के हुक्म याद से ज्यादा महफूज रहने की जमानत हो।

यह बहुत गुनाह की बात है कि मुश्तरका असासा (साझी सम्पत्ति) की ऐसी तकसीम की जाए जिसमें अच्छी चीजें अपने हिस्से में रख ली जाएं और दूसरे के हिस्से में खराब चीजें डाल कर गिनती पूरी कर दी जाए।

وَلَا تَتَّبِعُوا السَّيِّئَاتِ أَهْلَ الْأَمْوَالِ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَمًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا
وَأَكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۖ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ
فَإِنْ أَسْتَمْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا
وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْعِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ وَكَفَىٰ
بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ
نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا
مَّفْرُوضًا ۖ وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ فَارْزُقُوهُمْ
مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۚ وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ
ذُرِّيَّةً ضِعَفًا خَافُوا عَلَيْهِمْ ۚ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۚ إِنَّ
الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ

وَيَصْلُونَ سَعِيرًا ۝

और नादानों को अपना वह माल न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए कियाम का जरिया बनाया है और इस माल में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उनसे भलाई की बात कहो। और यतीमों को जांचते रहो, यहां तक कि जब वे निकाह की उम्र को पहुंच जाएं तो अगर उनमें होशियारी देखो तो उनका माल उनके हवाले कर दो। और उनका माल अनुचित तरीके से और इस ख्याल से कि वे बड़े हो जाएंगे न खा जाओ। और जिसे हाजत न हो वह यतीम के माल से परहेज करे और जो शरूस मोहताज हो वह दस्तूर के मुवाफिक खाए। फिर जब तुम उनका माल उनके हवाले करो तो उन पर गवाह ठहरा लो और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। मां-बाप और रिश्तेदारों के तरके (छोड़ी हुई सम्पत्ति) में से मर्दों का भी हिस्सा है। और मां-बाप और रिश्तेदारों के तरके में से औरतों का भी हिस्सा है, थोड़ा हो या ज्यादा हो, एक मुकर्रर किया हुआ हिस्सा। और अगर तत्कालीन के वक्त रिश्तेदार और यतीम और मोहताज मौजूद हों तो इसमें से उन्हें भी कुछ दो और उनसे हमदर्दी की बात कहो। और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर वे अपने पीछे कमजोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें उनकी बहुत फिक्र रहती। पस उन्हें चाहिए कि अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें। जो लोग यतीमों का माल नाहक खाते हैं वे लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वे जल्द ही भड़कती हुई आग में डाले जाएंगे। (5-10)

माल न ऐश के लिए है और न फव्व जाहिर करने के लिए। वह आदमी के लिए जिंदगी का जरिया है। वह दुनिया में उसके कयाम और बका (अस्तित्व) का सामान है। माल का जीवन-साधन होना एक तरफ यह जाहिर करता है कि इसे ही स्वयं उद्देश्य बना लेना दुरुस्त नहीं। दूसरे यह कि यह इतिहाई जरूरी है कि माल को जाए होने से बचाया जाए और उसे उसके हकदार तक पहुंचाने का पूरा एहतमाम किया जाए। किसी के माल को ठीक-ठीक अदा न करना गोया खुदा के उस इंतजाम में फसाद डालना है जो खुदा ने अपने बंदों को रिक्र पहुंचाने के लिए किया है। यतीम किसी सामाज का सबसे कमजोर हिस्सा होता है इसलिए उसके माल की हिफाजत और उसके मामले में हर क्रिम के जुल्म से अपने को बचाना और भी ज्यादा जरूरी है। यहां तक कि यह भी जरूरी है कि आदमी इंसान के मुताबिक उनके साथ जो मामला करे उसे लिख कर उस पर गवाही लेले ताकि सामाज के अंदर शिकायत और विवाद की फजा पैदा न हो और वह लोगों के सामने जिम्मेदारी से बरी हो सके। जब भी आदमी के हाथ में किसी का मामला हो तो उसे यह समझ कर मामला करना चाहिए कि उसकी हर कोताही अल्लाह के इल्म में है। साहिबे मामला अपनी कमजोरी की वजह से चाहे उसके खिलाफ कुछ न कर सके मगर खुदा उसे जरूर कियामत के दिन पकड़ेंगा और अगर उसने हक के खिलाफ मामला किया है तो वह उसे सख्त सजा देगा और उसके लिए किसी तरह भी खुदा की सजा से बचना मुमकिन न होगा।

दुनिया में कमजोर का हक दबा कर आदमी खुश होता है। मगर हर नाजाइज माल जो आदमी अपने पेट में डालता है वह गोया अपने पेट में आग डाल रहा है। दुनिया में ऐसे माल का आग होना बजाहिर महसूस नहीं होता मगर आखिरत में यह हकीकत खुल जाएगी। यहां आदमी को अमल की आजादी जरूर दी गयी है मगर नतीजा आदमी के अपने इख्तियार में नहीं। जो शरूस अपने को बुरे अंजाम से बचाना चाहता है उसे दूसरों के साथ भी बुरा नहीं करना चाहिए। आदमी को चाहिए कि वह दूसरों के लिए नफाबख्श बने, वह अपनी क्षमता के मुताबिक दूसरों को दे। अगर कोई शरूस देने की हैसियत में नहीं है तो आखिरी इस्लामी दर्जा यह है कि वह दूसरों का दिल न दुखाए, वह अपनी जबान खोले तो सीधी और सच्ची बात कहने के लिए खोले वर्ना खामोश रहे।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلَّذِ كَرِمٰثِلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً
فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ فَإِنْ لَمْ
يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ
السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ أَبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا
تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفَعًا فَرِيضَةٌ مِنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا

حَكِيمًا ۝ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ آبَاؤُكُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ ۖ وَإِنْ كَانَ
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوَصِّينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ
وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَتُمْ إِن لَّمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ ۖ وَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ
الْثُّمْنُ مِمَّا تَرَكَتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تَوْصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۖ وَإِنْ كَانَ
رَجُلٌ يُورِثُ كَلَّةً أَوْ امْرَأَةً وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتُ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا
السُّدُسُ ۖ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ ۖ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۖ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ تِلْكَ
أَحْدُودُ اللَّهِ ۖ وَمَنْ يُطِغِرْ اللَّهُ وَرَسُولُهُ يَدْخُلْهُ جَنَّتِ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ
حُدُودَهُ يَدْخُلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। अगर औरतें दो से ज्यादा हैं तो उनके लिए दो तिहाई है उस माल से जो मूरिस (विरासत छोड़ने वाला) छोड़ गया है और अगर वह अकेली है तो उसके लिए आधा है। और मय्यत के मां-बाप को दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है उस माल का जो वह छोड़ गया है बशर्ते कि मूरिस के औलाद हो। और अगर मूरिस की औलाद न हो और उसके मां-बाप उसके वारिस हों तो उसकी मां का तिहाई है और अगर उसके भाई बहिन हों तो उसकी मां के लिए छठा हिस्सा है। ये हिस्से वसीयत निकालने के बाद या कर्ज की अदायगी के बाद हैं जो वह कर जाता है। तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे हों, तुम नहीं जानते कि उनमें तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा नफा देने वाला कौन है। यह अल्लाह का ठहराया हुआ फरीजा है। वेशक अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी वीवियां छोड़ें, बशर्ते कि उनके औलाद न हो। और अगर उनके औलाद हो तो तुम्हारे लिए वीवियों के तरके का चौथाई है वसीयत निकालने के बाद जिसकी वे वसीयत कर जाएं या कर्ज की अदायगी के बाद। और उन वीवियों के लिए चौथाई है तुम्हारे तरके का अगर तुम्हारे औलाद नहीं है, और अगर तुम्हारे औलाद है तो उनके लिए आठवां हिस्सा है तुम्हारे तरके का वसीयत निकालने के बाद जिसकी तुम वसीयत कर जाओ या कर्ज की अदायगी के बाद। और अगर कोई मूरिस मर्द या औरत ऐसा हो जिसके न औलाद हो और न मां-बाप जिंदा हों, और उसके एक भाई या एक बहिन हो तो दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है। और अगर वे इससे ज्यादा हों तो वे एक तिहाई में

शरीक होंगे वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत की गयी हो या कर्ज की अदायगी के बाद, बगैर किसी को नुकसान पहुंचाए। यह हुक्म अल्लाह की तरफ से है और अल्लाह अलीम व हलीम है। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा अल्लाह उसे ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा और उसके मुकर्रर किए हुए जातों (नियमों) से बाहर निकल जाएगा उसे वह आग में दाखिल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए जिल्लत वाला अजब है। (11-14)

आदमी जो कानून बनाता है उसमें किसी न किसी पहलू की तरफ झुकाव हो जाता है। पुराने कबाइली दौर में लड़का बहुत अहमियत रखता था। क्योंकि वह कबीले के लिए ताकत का जरिया था, इसलिए विरासत में लड़की को महरूम करके सारा हक लड़के को दे दिया गया। मौजूदा जमाने में इसका रद्देअमल हुआ तो लड़का और लड़की दोनों बराबर कर दिए गए। लेकिन पिछला उसूल अगर गैर-मुसिफाना था तो मौजूदा उसूल गैर हकीकतपसंदाना है। यह सिर्फ अल्लाह है जिसका इल्म व हिक्मत इस बात की जमानत है कि वह जो कानून दे वह हर किस्म की बेएतदाली से पाक हो। अल्लाह ने इस सिलसिले में जो जांचे मुकर्रर किए हैं वे न सिर्फ यह कि समाजी इंसफ का हकीमी जरिया है बल्कि आखिरत की जिम्गी से भी इनका गहरा तअल्लुक है। यतीमों के हुक्क अदा करना, वसीयत की तामील करना, विरासत को उसके वारिसों तक पहुंचाना उन मामलों में से हैं जिन पर आदमी की दोख व जन्नत निर्भर है। एक तिहाई हिस्से में वसीयत करना शरीअत की रु से जाइज है। लेकिन कोई शख्स ऐसी वसीयत करे जिसका मकसद हकदार को विरासत से महरूम करना हो तो यह ऐसा गुनाह है जो उसे जहन्नम का मुस्तहिक बना सकता है। इस मामले में आदमी को खुदा के मुकर्रर किए हुए जांचे पर चलना है न कि जाती ख्वाहिशों और खानदानी मस्लेहतों के ऊपर।

وَالَّتِي يَأْتِيَنَّ الْفَاحِشَةُ مِنْ رِّسَالِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِنْكُمْ
فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى يَتَوَقَّعَنَّ الْمَوْتَ أَوْ يُعْمَلَ اللَّهُ
لَهُنَّ سَبِيلًا ۝ وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَّاهُمْ فَادْءُوهُمَا قَاتِلًا أَوْ فَكَّرًا فَغَرْضُوا
عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۖ حَتَّى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّیْ تُبْتُ النَّفْسَ وَلَا الَّذِينَ يُؤْتُونَ وَهُمْ كَفَارًا أُولَئِكَ أَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

और तुम्हारी औरतों में से जो कोई बदकारी करे तो उन पर अपनों में से चार मर्द गवाह करो। फिर अगर वे गवाही दे दें तो इन औरतों को घरों के अंदर बंद रखो, यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाल दे। और तुममें से दो मर्द जो वही बदकारी करें तो उन्हें अज़ियत (यातना) पहुंचाओ। फिर अगर वे दोनों तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें तो उनका ख्याल छोड़ दो। बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला महरबान है। तौबा जिसे कुबूल करना अल्लाह के जिम्मे है वह उन लोगों की है जो बुरी हरकत नादानी से कर बैठते हैं, फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं। वही हैं जिनकी तौबा अल्लाह कुबूल करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और ऐसे लोगों की तौबा नहीं है जो बराबर गुनाह करते रहें, यहां तक कि जब मौत उनमें से किसी के सामने आ जाए तब वह कहे कि अब मैं तौबा करता हूं, और न उन लोगों की तौबा है जो इस हाल में मरते हैं कि वे मुंकिर हैं, उनके लिए तो हमने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (15-18)

कोई मर्द या औरत अगर ऐसा फेअल (कृत्य) कर बैठे जो शरीअत के नजदीक गुनाह हो तब भी उसके साथ जो मामला किया जाएगा वह कानून के मुताबिक किया जाएगा न कि क़मून से आजद हेकर। क़मून के तमजे पूरे किए बغير किसी को मुजरिम करार देना दुरुस्त नहीं, किसी का मुजरिम होना दूसरे को यह हक नहीं देता कि वह उसके खिलाफ जलिमाना कार्रवाई करने लगे। सज़ा का मक़सद अज़ल (न्याय) का क़याम है और अज़ल का क़याम जुल्म और नाइसाफी के साथ नहीं हो सकता। और अगर गुनाह करने वाला तौबा करे और अपनी इस्लाह कर ले तो इसके बाद तो लाज़िम हो जाता है कि उसके साथ शफ़क़त (स्नेह) और दरगुज़र (क्षमा) का मामला किया जाए। किसी के माजी (अतीत) की बुनियाद पर उसे मतऊन (लाछित) करना दुरुस्त नहीं। जब अल्लाह तौबा करने वालों की तौबा कुबूल करता है और अपनी इस्लाह कर लेने वालों की तरफ़ दुबारा महरबानी के साथ पलट आता है तो इंसानों को क्या हक़ है कि ऐसे किसी शख्स को तंज और मलामत का निशाना बनाएं। ऐसे किसी शख्स को तंज और मलामत का निशाना बनाकर आदमी खुद अपने आपको मुजरिम साबित कर रहा है, न कि किसी दूसरे आदमी को।

तौबा ज़बान से 'तौबा' का लफ़्ज़ बोलने का नाम नहीं। यह अपनी गुनाहगारी के शदीद एहसास का नाम है। और आदमी अगर अपनी तौबा में संजीदा हो और वाकई शिद्दत के साथ उसने अपनी गुनाहगारी को महसूस किया हो तो वह आदमी के लिए इतना सख़्त मामला होता है कि तौबा आदमी के लिए अपनी सज़ा आप देने के हममअना बन जाती है। यह कैफ़ियत आदमी के अंदर अगर अल्लाह के डर से पैदा हुई हो तो अल्लाह जरूर उसे माफ़ कर देता है। मगर उन लोगों की तौबा की अल्लाह के नजदीक कोई कीमत नहीं जो इतने जरी (हेकड़) हों कि जानबूझ कर अल्लाह की नाफरमानी करते रहें। और तंबीह (चेतावनी) के बावजूद उस पर कायम रहें, अलबत्ता जब दुनिया से जाने का वक़्त आ जाए तो कहें कि 'मैंने तौबा की।' इसी तरह उन लोगों की तौबा भी बेफ़ायदा है जो आख़िरत में अजाब को समाने देखकर अपने ज़ुर्म का इकरार करेंगे।

तौबा की हकीकत बंद का अपने ख़ब की तरफ़ पलटना है ताकि उसका ख़ब भी उसकी तरफ़ पलटे। तौबा उस शख्स के लिए है जो वक़ती जब्बे से मग़लूब होकर बुरी हरकत कर बैठे, फिर उसके नफ़स का एहतेसाब (परख) जल्द ही उसे अपनी ग़लती का एहसास करा दे वह बुराई को छोड़कर दुबारा नेकी की रविश अपनाए और शरीअत के मुताबिक अपनी ज़िंदगी की इस्लाह कर ले। ऐसा ही आदमी तौबा करने वाला है और जो शख्स इस तरह तौबा करे उसकी मिसाल ऐसी ही है जैसा भटका हुआ आदमी दुबारा अपने घर वापस आ जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرِهًا وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْتَهُنَّ بِبَعْضِ مَا تَنَبَّأْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِغَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ وَعَاشِرُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكُونُوا شِئْنًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ۖ وَإِنْ أَردُّنَّكُمْ سَتَبَدَّلَ زَوْجٌ مَكَانَ زَوْجٍ ۖ وَاتَّبِعْتُمُ أَحَدَهُنَّ فَطَارِقًا فَلَا تَأْخُذْهُنَّ مِنْهُ شَيْئًا ۖ لَتَأْخُذُنَّ بَهْتًا ۖ وَاللَّمَّا مُبِينًا ۖ وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَى بَعْضُكُمْ إِلَى بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنْكُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۖ وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا ۚ وَسَاءَ سَبِيلًا ۚ

ऐ ईमान वालो तुम्हारे लिए जाइज नहीं कि तुम औरतों को जबरदस्ती अपनी मीरास में ले लो और न उन्हें इस गरज से रोके रखो कि तुमने जो कुछ उन्हें दिया है उसका कुछ हिस्सा उनसे ले लो मगर इस सूरत में कि वे खुली हुई बेहयाई करें। और उनके साथ अच्छी तरह गुज़र-बसर करो। अगर वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसंद न हो मगर अल्लाह ने इसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो। और अगर तुम एक बीबी की जगह दूसरी बीबी बदलना चाहो और तुम उसे बहुत सा माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ वापस न लो। क्या तुम इसे बोहतान (आक्षेप) लगाकर और सरीह जुल्म करके वापस लोगे। और तुम किस तरह उसे लोगे जबकि एक दूसरे से ख़लवत कर चुका है और वे तुमसे पुख़्ता अहद ले चुकी हैं। और उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हैं, मगर जो पहले हो चुका। बेशक यह बेहयाई है और नफ़रत की बात है और बहुत बुरा तरीका है। (19-22)

मरने वाले के माल में यकीनन बाद वालों को विरासत का हक़ है। मगर इसका मतलब यह नहीं कि मरने वाले की बीबी को भी बाद के लोग अपनी मीरास समझ लें और जिस तरह चाहें उसको इस्तेमाल करें। माल एक संवेदनहीन और अधीन चीज़ है और इसमें विरासत चलती है। मगर इंसान एक जिंदा और आजाद हस्ती है। उसे इख़्तियार है कि वह अपनी मर्जी से अपने मुस्तक़बिल (भविष्य) का फैसला करे। औरत में अगर कोई जिस्मानी या मिजाजी कमी हो तो उसे बर्दाश्त करते हुए औरत को मौका देना चाहिए कि वह अल्लाह की दी हुई

दूसरी खूबियों के जरिए घर की तामीर में अपना हिस्सा अदा करे। आदमी को चाहिए कि जाहिरी नापसंदीदगी को भूल कर आपसी तअल्लुकात को निभाए। किसी खानदान और इसी तरह किसी समाज की तरक्की और इस्तहकाम का राज यह है कि उसके अफ़राद एक-दूसरे की कमियों को नजरअंदाज करते हुए उनकी खूबियों को बरुएकार आने का मौका दें। जो लोग अल्लाह की खातिर मौजूदा दुनिया में सन्न और बर्दाश्त का तरीका अपनाएं वही वे लोग हैं जो आखिरत की जन्नतों में दाखिल किए जाएंगे।

जब आदमी को अपना जीवन साथी नापसंद हो और वह सन्न का तरीका न अपनाकर अलग होने का फैसला करे तो अक्सर ऐसा होता है कि इस अलेहिदगी को हक बजानिव साबित करने के लिए वह दूसरे फरीक की खामियों को बढ़ा-चढ़ा कर बयान करता है। वह उस पर झूठे इल्जाम लगाता है। वह उसके खिलाफ जालिमाना कार्रवाई करता है ताकि वह घबरा कर खुद ही भाग जाए। इसी तरह जब आदमी किसी से तअल्लुक तोड़ता है तो ज़िद में आकर दूसरे फरीक को दी हुई चीजें उससे वापस छीनने की कोशिश करता है। मगर यह सब अहद की खिलाफ़तजी है और अहद (वचनबद्धता) अल्लाह की नज़र में ऐसी मुक़द्दस चीज है कि अगर वह अलिखित रूप में हो तब भी उसकी पाबंदी उतनी ही ज़रूरी है जितना कि लिखित अहद की।

‘जो हो चुका सो हो चुका’ का उसूल सिर्फ़ निकाह से संबंधित नहीं है। बल्कि यह एक आम उसूल है। ज़िंदगी के निजाम में जब भी कोई तब्दीली आती है, चाहे वह घरेलू ज़िंदगी में हो या क़ैमी ज़िंदगी में, तो माजी (अतीत) के बहुत से मामले ऐसे होते हैं जो नए इस्लाम के मेयार पर ज़लत नज़र आते हैं। ऐसे मौकों पर माजी को कुदना और गुज़री हुई ज़लतियों पर अहकाम जारी करना बेशुमार नए मसाइल पैदा करने का सबब बन जाता है। इसलिए सही तरीका यही है कि माजी को भुला दिया जाए और सिर्फ़ हाल और मुस्तक़बिल की इस्लाम पर अपनी कोशिशें लगा दी जाएं। ‘और उनके साथ अच्छे तरीके से गुज़र-बसर करो। अगर वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि तुम्हें एक चीज पसंद न हो मगर अल्लाह ने उसके अंदर तुम्हारे लिए कोई बड़ी भलाई रख दी हो।’ यह जुमला यहां अगरचे मियां-बीबी के तअल्लुक के बारे में आया है, मगर इसके अंदर एक उमूमी तालीम भी है। कुरआन का यह आम उसूल (शैली) है कि एक सुनिश्चित मामले का हुक्म बताते हुए उसके दर्मियान एक ऐसी सामान्य हिदायत दे देता है जिसका तअल्लुक आदमी की पूरी ज़िंदगी से हो।

दुनिया की ज़िंदगी में इंसान के लिए मिलजुल कर रहना नागुज़ीर है। कोई शख्स बिल्कुल अलग-थलग ज़िंदगी गुज़ार नहीं सकता। अब चूँकि स्वभाव अलग-अलग हैं, इसलिए जब भी कुछ लोग मिलजुल कर रहेंगे उनके दर्मियान लाजिमन शिकायतें पैदा होंगी। ऐसी हालत में क़बिले अमल सूत्र सिर्फ़ यह है कि शिकायतों को नज़रअंदाज किया जाए और खुशउस्लूबी के साथ तअल्लुक को निभाने का उसूल अपनाया जाए।

अक्सर ऐसा होता है कि अपने साथी की एक खराबी आदमी के सामने आती है और वह बस उसी को लेकर अपने साथी से रूठ जाता है। हालांकि अगर वह सोचे तो वह पाएगा कि हर नामुवाफ़िक (प्रतिकूल) सूतेहाल में कोई ख़ैर का पहलू मौजूद है। कभी किसी वाक्य में आदमी के लिए सन्न की तर्बियत का इम्तेहान होता है। कभी इसके अंदर अल्लाह की तरफ

रुजूअ और इनाबत की गिजा होती है। कभी एक छोटी-सी तकलीफ़ में कोई बड़ा सबक छुपा हुआ होता है, आदि।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَخَنَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأَخِ
وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي
فِي جُحُوبِكُمْ قَمِنْ نِسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ
إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ٥

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَ
أَحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ فَمَا
اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا
تَرَضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ٦ وَمَنْ لَمْ
يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ
مِنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَأَنْكِحُوهُنَّ
بِأَذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَفِحَاتٍ وَلَا
مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ فَإِذَا أُحْصِنَ فَإِنَّهُنَّ بِنَاتٌ حِشَّةٌ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ
مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ
وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٧

तुम्हारे ऊपर हराम की गई तुम्हारी माएं, तुम्हारी बेटियां, तुम्हारी बहिनें, तुम्हारी फूफियां, तुम्हारी खालाएं, तुम्हारी भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी वे माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया, तुम्हारी दूध शरीक बहिनें, तुम्हारी औरतों की माएं और उनकी बेटियां जो तुम्हारी परवरिश में हैं जो तुम्हारी उन बीवियों से हों जिनसे तुमने सोहबत की है, लेकिन अगर अभी तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं। और तुम्हारे सुलबी (तुमसे पैदा) बेटों की बीवियां और यह कि तुम इकट्ठा करो दो बहिनों को मगर जो पहले हो चुका। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और वे औरतें भी हराम हैं जो किसी दूसरे के निकाह में हों मगर यह कि वे जंग में तुम्हारे

हाथ आएंगे। यह अल्लाह का हुक्म है तुम्हारे ऊपर। इनके अलावा जो औरतें हैं वे सब तुम्हारे लिए हलाल हैं बशर्ते कि तुम अपने माल के जरिए से उनके तालिब बनो, उनसे निकाह करके न कि बदकारी के तौर पर। फिर उन औरतों में से जिन्हें तुम काम में लाए उन्हें उनको तैशुदा महर दे दो। और महर के ठहराने के बाद जो तुमने आपस में राजीनामा किया हो तो इसमें कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और तुममें से जो शख्स सामर्थ्य न रखता हो कि आजाद मुसलमान औरतों से निकाह कर सके तो उसे चाहिए कि वह तुम्हारी उन कनीजों (दासियों) में से किसी के साथ निकाह कर ले जो तुम्हारे कब्जे में हों और मोमिना हों। अल्लाह तुम्हारे इमान को खूब जानता है, तुम आपस में एक हो। पस उनके मालिकों की इजाजत से उनसे निकाह कर लो और मारुफ तरीके से उनके महर अदा कर दो, इस तरह कि उनसे निकाह किया जाए न कि आजाद शहवतरानी करें और चोरी छुपे आशनाइयां करें। फिर जब वे निकाह के बंधन में आ जाएं और इसके बाद वे बदकारी करें तो आजाद औरतों के लिए जो सजा है उसकी आधी सजा इन पर है। यह उसके लिए है जो तुममें से बदकारी का अंदेशा रखता हो। और अगर तुम जब्त (संयम) से काम लो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, और अल्लाह बख्शने वाला रहम करने वाला है। (23-25)

इंसान के अंदर बहुत सी फितरी ख्वाहिशें हैं। इन्हीं में से एक शहवानी ख्वाहिश (यौन-इच्छा) है जो औरत और मर्द के दर्मियान पाई जाती है। शरीअत तमाम इंसानी जज्बात की हदबंदी करती है। इसी तरह उसने शहवानी जज्बात के लिए भी हदें और जाबते (नियम) मुकर्र किए हैं। शरीअते इलाही के मुताबिक औरत और मर्द के दर्मियान सिर्फ वही तअल्लुक सही है जो निकाह की सूरत में एक संजीदा समाजी समझौते की हैसियत से कायम हो। फिर यह कि जिस तरह फितरी जज्बात की तस्कीन जरूरी है उसी तरह यह भी जरूरी है कि ख़ानदानी जिंदगी में तक्द्दुस (पवित्रता) की फिज मौजूद रहे। इस मक्सद के लिए नसब (वंश) या रजाअत (दूध का रिश्ता) या मुसाहिरत (पारिवारिक संबंध) के तहत कायम होने वाले कुछ रिश्तों को हराम करार दे दिया गया ताकि बिल्कुल करीबी रिश्तों के दर्मियान का तअल्लुक शहवानी जज्बात से मुक्त रहे।

इंसान की इज्जत और बड़ाई का मेयार वह दिखाई देने वाली चीजें नहीं हैं जिन पर लोग एक-दूसरे की इज्जत व बड़ाई को नापते हैं। बल्कि बड़ाई का मेयार वह न दिखाई देने वाला इमान है जो सिर्फ अल्लाह के इल्म में होता है। गोधा किसी का इज्जत वाला होना या ब्रेज्जत वाला होना ऐसी चीज नहीं जो आदमी को मालूम हो। यह तमामतर नामालूम चीज है और इसका फैसला आखिरत में अल्लाह की अदालत में होने वाला है। यह एक ऐसा तसच्चुर है जो आदमी से बरतरी (उच्चता) का अहसास छीन लेता है। और बरतरी का एहसास ही वह चीज है जो अधिकतर समाजी ख़राबियों की अस्त जड़ है।

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ الَّذِي فِيكُمْ وَيُطَهِّرَ كَلِمَاتِكُمْ وَيُخَوِّفَ عَنْكُمْ وَخُلُقَ

وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ۝ يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَوِّفَ عَنْكُمْ وَخُلُقَ الْإِنْسَانِ ضَعِيفًا ۝

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे वास्ते बयान करे और तुम्हें उन लोगों के तरीकों की हिदायत दे जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और तुम पर तवज्जोह करे, अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर तवज्जोह करे और जो लोग अपनी ख्वाहिशों की पैरवी कर रहे हैं वे चाहते हैं कि तुम राहेरास्त से बहुत दूर निकल जाओ। अल्लाह चाहता है कि तुम से बोझ को हल्का करे और इंसान कमजोर बनाया गया है। (26-28)

जिंदगी के तरीके जो कुरआन में बताए गए हैं वे कोई नए नहीं हैं। हर दौर में अल्लाह अपने पैगम्बरों के जरिए इनका एलान कराता रहा है। हर जमाने के खुदापरस्त लोगों का इसी पर अमल था। मगर कदीम आसमानी किताबों के महफूज न रहने की वजह से ये तरीके गुम हो गए। अब अल्लाह ने अपने आखिरी रसूल के जरिए इन्हें अरबी भाषा में उतारा और इन्हें हमेशा के लिए महफूज कर दिया। आज जब कोई गिरोह इन तरीकों पर अपनी जिंदगी को ढालता है तो गोया वह सालेहीन (सच्चे लोगों) के उस अबदी काफिले में शामिल हो जाता है जिन्हें अल्लाह की रहमतों में हिस्सा मिला, जो हर जमाने में अल्लाह के उस रास्ते पर चले जिसे अल्लाह ने अपने वफादार बंदों के लिए खोला था।

हर इंसानी गिरोह में ऐसा होता है कि कुछ चीजें सदियों के रवाज से जड़ जमा लेती हैं। वे लोगों के जेहनों पर इस तरह छा जाती हैं कि उनके खिलाफ सोचना मुश्किल हो जाता है। जब अल्लाह का कोई बंदा समाज सुधार का काम शुरू करता है तो इस किस्म के लोग चीख उठते हैं। अपने मानूस (प्रचलित) तरीकों को छोड़कर नामानूस तरीकों को अपनाना उनके लिए सख्त दुश्वार हो जाता है। वे ऐसी इस्लाही तहरीक के दुश्मन बन जाते हैं जो उन्हें उनके बाप-दादा के तरीकों से हटाना चाहती हो। इस सिलसिले में मजहबी तबके का रद्देअमल और भी ज्यादा शदीद होता है। जब दीन का अंदरूनी पहलू कमजोर होता है तो खारजी (वाह्य) मूशिगाफियां (कुतक) जन्म लेती हैं। अब आदाब और कायदों का एक जाहिरी ढांचा बना लिया जाता है। लोग दीन की अस्ली कैफियतों से खाली होते हैं और जाहिरी आदाब और कायदों की पाबंदी करके समझते हैं कि वे खुदा के दीन पर कायम हैं। यह स्वनिर्मित दीन पूर्वजों से मंसूब होकर धीरे-धीरे पवित्र बन जाता है और नौबत यहां तक पहुंचती है कि खुदा का सादा और फितरी दीन इन्हें अजनबी मालूम होता है। और अपना जकड़बाँदियों वाला दीन ऐन बरहक नजर आता है। ऐसी हालत में जो तहरीक अस्ली और इब्तिदाई दीन को जिंदा करने के लिए उठे वे इसके शदीद विरोधी हो जाते हैं क्योंकि इसमें उन्हें अपनी दीनदारी की नफी (नकार) होती हुई नजर आती है। मसलन खुदा की शरीअत में हैज़ के दौरान औरत के साथ मुबाशिरत नाजाइज है, इसके अलावा दूसरे तअल्लुकात उसी तरह रखे जा सकते हैं जिस तरह आम दिनों के होते हैं। यहूदियों ने इस सादा हुक्म पर इजाफा करके यह मसला बनाया

कि माहवारी के दिनों में औरत की पकाई हुई चीज को खाना, उसके हाथ का पानी पीना, उसके साथ एक जगह बैठना, उसे अपने हाथ से छूना सब नाजाइज या कम से कम तकवा के खिलाफ है। इस तरह हैज वाली औरत से मुकम्मल दूरी गोया पारसाई की अलामत बन गई। अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीने में जब खुदा की अस्ली शरीअत को ज़िंदा किया तो यहूदी बिगड़ गए। वह चीज जिस पर उन्होंने अपनी पारसाई की इमारत खड़ी की थी अचानक गिरती हुई नजर आई। खुदा के सादा दीन को जब भी ज़िंदा किया जाए तो वे लोग इसके सख्त मुख़ालिफ हो जाते हैं जो बनावटी दीन के ऊपर अपनी दीनदारी की इमारत खड़ी किए हुए हों। यह उनसे सरदारी छीनने के समान होता है और सरदारी का छिनना कोई बर्दाश्त नहीं करता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُضِلُّهُ نَارًا وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۚ إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبِيرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلَكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا ۖ وَلَا تَتَمَتَّعُوا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلَّذِينَ عَقَدْتَ أَيْمَانُكُمْ فَأَوْهَهُمْ نَصِيْبَهُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

ऐ ईमान वाले, आपस में एक-दूसरे का माल नाहक तौर पर न खाओ। मगर यह कि तिजारत हो आपस की खुशी से। और खून न करो आपस में। बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर बड़ा महरवान है। और जो शख्स सरकशी और जुल्म से ऐसा करेगा उसे हम जरूर आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिए आसान है। अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिनसे तुम्हें मना किया गया है तो हम तुम्हारी छोटी बुराइयों को माफ कर देंगे और तुम्हें इज्जत की जगह दाखिल करेंगे। और तुम ऐसी चीज की तमन्ना न करो जिसमें अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है। मर्दों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का और औरतों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का। और अल्लाह से उसका फल मांगो। बेशक अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है। और हमने वालिदेन और रिश्तेदारों के छोड़े हुए में से हर एक के लिए वारिस ठहरा दिए हैं और जिनसे तुमने अहद बांध रखा हो तो उन्हें उनका हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह के रूबरू है हर चीज। (29-33)

एक का माल दूसरे तक पहुंचने की एक सूरत यह है कि एक आदमी दूसरे की जरूरत फराहम करे और उससे अपनी महनत का मुआवजा ले। यह तिजारत है और शरीअत के मुताबिक यही कस्बेमाश (जीविका) का सही तरीका है। इसके बजाए चोरी, धोखा, झूठ, रिश्वत, सूद, जुवा वगैरह से जो माल कमाया जाता है वह खुदा की नजर में नजाइज तरीके से कमाया हुआ माल है। यह लूट की विभिन्न किस्में हैं और जो लोग तिजारत के बजाए लूट को अपना माश का जरिया बनाएं वे दुनिया में चाहे कामयाब रहें मगर आखिरत में उनके लिए आग का अजाब है। आदमी की जान का मामला भी यही है। आदमी को मारने का हक सिर्फ एक कायमशुदा हुक्मत को है जो खुदा के कानून के तहत बाक़ायदा इल्जाम साबित होने के बाद उसके खिलाफ कार्रवाई करे। इसके सिवा जो शख्स किसी को उसकी ज़िंदगी से महरूम करने की कोशिश करता है वह हaram काम करता है जिसके लिए अल्लाह के यहां सख्त सजा है। अल्लाह के नजदीक सबसे बड़ा जुर्म उदवान और सरकशी है। यानी हद से निकलना और नाहक किसी को सताना। जो लोग उदवान (दुश्मनी) और जुल्म से अपने को बचाएं उनके साथ अल्लाह यह खुसूसी मामला फरमाएगा कि वे आखिरत की दुनिया में इस तरह दाखिल होंगे कि उनकी मामूली कोताहियां और लगज़िर्शें उनसे दूर की जा चुकी होंगी।

दुनिया में एक आदमी और दूसरे आदमी के दर्मियान फर्क रखा गया है। किसी को जिस्मानी और जेहनी कुव्वतों में कम हिस्सा मिला है और किसी को ज्यादा। कोई अच्छे हालात में पैदा होता है और कोई बुरे हालात में। किसी के पास बड़े-बड़े जराए (संसाधन) हैं और किसी के पास मामूली जराए। आदमी जब किसी दूसरे को अपने से बड़ा हुआ देखता है तो उसके अंदर फौन उसके खिलाफ जलन पैदा हो जाती है। इससे इत्तिमाई ज़िंदगी में हसद, अदावत और आपसी कशमकश पैदा होती है। मगर इन चीजों के एतबार से अपने या दूसरे को तौलना नादानी है। ये सब दुनियावी अहमियत की चीजें हैं। ये दुनिया में मिली हैं और दुनिया ही में रह जाने वाली हैं। अस्ल अहमियत आखिरत की कामयाबी की है और आखिरत की कामयाबी में इन चीजों का कुछ भी दखल नहीं। आखिरत की कामयाबी उस अमल पर निर्भर है जो आदमी इरादे और इख्तियार से अल्लाह के लिए करता है। इसलिए बेहतरीन अक्लमंदी यह है कि आदमी हसद से अपने आपको बचाए और अल्लाह से तौफीक की दुआ करते हुए अपने आपको आखिरत के लिए अमल करने में लगा दे।

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَبِأَنَّهُمْ أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ فَالضِّلَحْتُ قُنْتُ حِفْظٌ لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ وَالَّتِي تَخَافُونَ شُرُوهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا كَبِيرًا ۝ وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ۝

मर्द औरतों के ऊपर कवाम (प्रमुख) हैं। इस कारण कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और इस कारण कि मर्द ने अपने माल खर्च किए। पस जो नेक औरतें हैं वे फरमांवरदारी करने वाली, पीठ पीछे निगहबानी करती हैं अल्लाह की हिफाजत से। और जिन औरतों से तुम्हें सरकशी का अंदेशा हो उन्हें समझाओ और उन्हें उनके बिस्तरों में तंहा छोड़ दो और उन्हें सजा दो। पस अगर वे तुम्हारी इताअत करें तो उनके खिलाफ इल्जाम की राह न तलाश करो। बेशक अल्लाह सबसे ऊपर है, बहुत बड़ा है। और अगर तुम्हें मियां-बीबी के दर्मियान तअल्लुकात बिगड़ने का अंदेशा हो तो एक मुंसिफ मर्द के रिश्तेदारों में से खड़ा करो और एक मुंसिफ औरत के रिश्तेदारों में से खड़ा करो। अगर दोनों इस्लाह चाहेंगे तो अल्लाह उनके दर्मियान मुवाफिकत कर देगा। बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला खबरदार है। (34-35)

जहां भी आदमियों का कोई मज्मूआ हो, चाहे वह खानदान की सूरत में हो या राज्य की सूरत में, जरूरी है कि उसके ऊपर सरदार और सरबराह (प्रमुख) हो, और यह सरबराह लाजिमन एक ही हो सकता है। दुनिया के बारे में अल्लाह का बनाया हुआ जो मंसूबा है उसमें खानदान की सरबराही के लिए मर्द को मुतअय्यन किया गया है और इसी के लिहाज से उसकी तख्लीक (रचना) हुई है। मर्द की बनावट और औरत की बनावट में जो जैविक और मनोवैज्ञानिक फर्क है वह अल्लाह के इसी तख्लीकी मंसूबे के अनुरूप है। अब अगर कुछ लोग अल्लाह के मंसूबे के खिलाफ चलें तो वे सिर्फ बिगाड़ पैदा करने का सबब बनेंगे। क्योंकि खुदा का कारखाना तो मर्द और औरत को बदस्तूर अपने मंसूबे के मुताबिक बनाता रहेगा जिसमें 'कवामियत' की क्षमताएं मर्द को दी गई होंगी और 'इताअत' की क्षमताएं औरत को। जबकि इनके सामाजिक इस्तेमाल में खुदाई रचना-योजना का पालन नहीं किया जा रहा होगा। ऐसे हर अन्तर्विरोध का नतीजा इस दुनिया में सिर्फ बिगाड़ है।

बेहतरीन औरत वह है जो अल्लाह के तख्लीकी मंसूबे (रचना-योजना) में अपने को शामिल करते हुए मर्द की बरतरी तस्लीम कर ले। इसी तरह बेहतरीन मर्द वह है जो अपनी बरतर हैसियत के सबब इस हकीकत को भूल न जाए कि खुदा उससे भी ज्यादा बरतर है। खुदा की अदालत में औरत मर्द का कोई फर्क नहीं, यह फर्क तमामतर सिर्फ दुनिया के इंतजाम के एतबार से है न कि आखिरत में इनामात की तक्सीम के एतबार से। मर्द को चाहिए कि वह औरत के हक में अपनी जिम्मेदारियों को अदा करने का पूरा एहतेमाम करे। कोई औरत अगर ऐसी हो जो मर्द की इंतजामी बड़ाई को न माने तो ऐसा हरगिज न होना चाहिए कि मर्द के अंदर इंतिकाम का जज्बा उभर आए या वह इल्जामात लगा कर औरत को बदनाम करे। कोई भी बरतरी किसी को ईसाफ की पाबंदी से मुक्त नहीं करती। अलबत्ता खुसूसी हालात में मर्द को यह हक है कि किसी औरत के अंदर अगर वह सरताबी देखे तो वह उसकी इस्लाह की कोशिश करे। यह इस्लाह अव्वलन समझाने बुझाने से शुरू होगी। फिर दबाव डालने के लिए बातचीत न करना और तअल्लुक न रखना अपनाया जा सकता है। आखिरी दर्जे में मर्द उसे हल्की सजा दे सकता है, जैसे मिस्वाक से मारना।

दो आदमियों में जब आपसी मनमुटाव हो तो दोनों का जेहन एक-दूसरे के बारे में मुतअस्सिर जेहन बन जाता है। दोनों एक-दूसरे के बारे में खालिस वाक्याती अंदाज से सोच

नहीं पाते। ऐसी हालत में मामले को तै करने की बेहतरीन सूरत यह है कि दोनों अपने सिवा किसी दूसरे को हकम (बिचैलिया, मुंसिफ) बनाने पर राजी हो जाएं। दूसरा शख्स मामले से जाती तौर पर जुड़ा न होने की वजह से गैर-मुतअस्सिर जेहन के साथ सोचेगा और ऐसे फैसले तक पहुंचने में कामयाब हो जाएगा जो वाक्ये की हकीकत के मुताबिक हो।

وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ
وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ فُحْشًا لَا فُحُورًا
الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ
فَضْلِهِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۖ وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ
رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ
الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ۖ وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَانْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ وَإِنْ تَكَ حَسَنَةً يُّضْعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ

और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज को उसका शरीक न बनाओ। और अच्छा सुलूक करो मां-बाप के साथ और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिस्कीनों और रिश्तेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी और पास बैठने वाले और मुसाफिर के साथ और ममलूक (अधीन) के साथ। बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वाले बड़ाई करने वाले को जोकि कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं और जो कुछ उन्हें अल्लाह ने अपने फल से दे रखा है उसे छुपाते हैं। और हमने मुंकेरों के लिए जिल्लत का अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं और अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका साथी शैतान बन जाए तो वह बहुत बुरा साथी है। उनका क्या नुक्सान था अगर वे अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है उसमें से खर्च करते। और अल्लाह उनसे अच्छी तरह वाखबर है। बेशक अल्लाह जरा भी किसी की हकतलफी नहीं करेगा। अगर नेकी हो तो वह उसे दुगना बढ़ा देता है और अपने पास से बहुत बड़ा सवाब देता है। (36-40)

इंसान के पास जो कुछ है सब अल्लाह का दिया हुआ है। इसका तकाजा है कि इंसान अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दे, वह उसका इबादतगुजार बन जाए। जब आदमी इस तरह अल्लाह वाला बनता है तो उसके अंदर फितरी तौर पर तवाज्जुअ (विनम्रता, सद्ब्यवहार)

का मिजाज पैदा हो जाता है। उसका यह मिजाज उन इंसानों से तअल्लुकत में जाहिर होता है जिनके दर्मियान वह जिंदगी गुजार रहा हो। उसका यह मिजाज मां-बाप के मामले में हुने सुलूक की सूरत अपना लेता है। हर शख्स जिससे उसका वास्ता पड़ता है वह उसे ऐसा इंसान पाता है जैसे वह अल्लाह को अपने ऊपर खड़ा हुआ देख रहा हो। वह हर एक का हक उसके तअल्लुक के मुवाफिक और उसकी जरूरत के मुनासिब अदा करने वाला बन जाता है। जो शख्स भी किसी हैसियत से उसके संपर्क में आता है उसे नजरअंदाज करना उसे ऐसा लगता है जैसे वह खुद अपने को अल्लाह के यहां नजरअंदाज किए जाने का खतरा मोल ले रहा है।

जो शख्स अपने आपको अल्लाह के हवाले न करे उसके अंदर फख्र की नफिसयात उभरती है। उसके पास जो कुछ है उसे वह अपनी महनत और काबलियत का करिश्मा समझता है। इसका नतीजा यह होता है कि वह अपनी कमाई को सिर्फ अपना हक समझता है। कमजोर रिश्तेदारों या मोहताजों से तअल्लुक जोड़ना उसे अपने मकाम से नीचे दर्जे की चीज मालूम होती है। वह अपनी मस्तेहतों या ख्वाहिशों की तस्कीन में खूब माल खर्च करता है मगर वे मदें जिनमें खर्च करना उसकी अना (अहंकार) को गिजा देने वाला न हो वहां खर्च करने में दिल तंग होता है। दिखावे के कामों में खर्च करने में वह फय्याज होता है और खामोश दीनी कामों में खर्च करने में वह बखील (कंजूस) होता है। जो लोग खुदा की नेमत से तवाजोअ (विनम्रता) के बजाए फख्र की गिजा लें, जो खुदा के दिए हुए माल को खुदा की बताई हुई मदों में न खर्च करें, अलबत्ता अपने नफ्स के तकाजों पर खर्च करने के लिए फय्याज हों, ऐसे लोग शैतान के साथी हैं। शैतान ने उन्हें कुछ सामने का नफा दिखाया तो वे उसकी तरफ दौड़ पड़े और खुदा जिस अबदी नफे का वादा कर रहा था उससे उन्हें दिलचस्पी न हो सकी। उनके लिए खुदा के यहां सख्त अजाब के सिवा और कुछ नहीं। आदमी खुद जो काम न करे उसे वह गैर-अहम बताता है। यह अपने मामले को नजरियाती मामला बनाना है, यह अपने को हक बजानिब साबित करने की कोशिश है। मगर इस किस्म की कोई भी कोशिश अल्लाह के यहां किसी के काम आने वाली नहीं।

فَكَيفَ إِذْ اجْتَنَبْنَا مِنَ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا وَجَعَلْنَاكَ عَلَىٰ هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ۖ
يَوْمَئِذٍ يُوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصُوا الرَّسُولَ كُفُسُومُ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ
اللَّهُ حَدِيثًا ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ
تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنْبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ
مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُم مِّنَ الْغَايَةِ أَوْ لَسْتُمْ الْمَسَاءِ فَلَمْ
تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوْهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ۝

फिर उस वक्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे और तुम्हें उन लोगों के ऊपर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे। वे लोग जिन्होंने इकार किया और पैगम्बर

की नाफरमानी की उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश जमीन उन पर बराबर कर दी जाए, और वे अल्लाह से कोई बात न छुपा सकेंगे। ऐ इमान वाले, नजदीक न जाओ नमाज के जिस वक्त कि तुम नशे में हो यहां तक कि समझने लगे जो तुम कहते हो, और न उस वक्त कि गुस्ले की हाजत हो मगर राह चलते हुए, यहां तक कि गुस्ले कर लो। और अगर तुम मरीज हो या सफर में हो या तुममें से कोई शौच से आए या तुम ओरतों के पास गए हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो और अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लो, बेशक अल्लाह माफ करने वाला बख्शने वाला है। (41-43)

हक का दाजी (आह्वानकती) जब आता है तो वह एक मामूली इंसान की सूरत में होता है। उसके गिर्द जाहिर बड़बड़ायां और रैनकेंजमा नहीं होतीं। इसलिए वक्त के बड़े उसे हकीर (तुच्छ) समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें यकीन नहीं आता कि एक ऐसा शख्स भी उनसे ज्यादा हक व सदाकत वाला हो सकता है जो दुनियावी शान व शौकत में उनसे कम हो। मगर जब कियामत आएगी और खुदा की अदालत कायम होगी तो वे हैरत के साथ देखेंगे कि वही शख्स जिसे उन्होंने बेकीमत समझ कर ठुकरा दिया था वह आखिरत की अदालत में खुदाई गवाह बना दिया गया है। वही वह शख्स है जिसके बयान पर लोगों के लिए जन्नत और जहन्नम के फैसले हों। ये वहां मुजरिम के मकाम पर खड़े होंगे और वह खुदा की तरफ से बोलने वाले के मकाम पर। यह ऐसा सख्त और हौलनाक लम्हा होगा कि लोग चाहेंगे कि जमीन फट जाए और वे उनके अंदर समा जाएं। मगर उनकी यह शर्मिंदगी उनके काम न आएगी। खुदा के यहां उनके कौल व अमल से लेकर उनकी सोच तक का रिकार्ड मौजूद होगा। और खुदा उन्हें दिखा देगा कि हक के दाजी का इंकार जो उन्होंने किया वह नावाकफियत के सबब से न था बल्कि घमंड की वजह से था। उन्होंने अपने को बड़ा समझा और हक के दाजी को छोटा जाना। हकीकत को सुस्पष्ट रूप में देखने और जानने के बावजूद वे महज इसलिए इसके मुक़िर हो गए कि इसे मानने में उन्हें अपनी बड़ाई ख़त्म होती हुई नजर आती थी।

शरीअत में गैर-मामूली हालात में गैर-मामूली रुख़सत दी गई है। मर्ज या सफर या पानी का न होना ये तीनों आदमी के लिए गैर-मामूली हालतें हैं। इसलिए इन मौकों पर यह रुख़सत दी गई कि अगर नुक्स्तान का अंदेशा हो तो जुजू या गुस्ले के बजाए तयम्मूम का तरीका अपनाया जाए। आम जुजू पानी से होता है। तयम्मूम गोया मिट्टी से जुजू करना है। जुजू का मकसद आदमी के अंदर पाकी की नफिसयात पैदा करना है और तयम्मूम, जुजू न करने की सूरत में, इस पाकी की नफिसयात को बाकी रखने की एक मादूदी तदबीर है। 'नमाज उस वक्त पढ़ो जबकि तुम जानो कि तुम क्या कह रहे हो।' यहां यह आयत शराब का इब्तिदाई हुक्म बताने के लिए आई है। मगर इसी के साथ वह नमाज के बारे में एक अहम हकीकत को भी बता रही है। इससे मालूम होता है कि नमाज एक ऐसी इबादत है जो फहम व शुऊर के तहत अदा की जाती है। नमाज महज इसका नाम नहीं है कि कुछ अल्फज़ और कुछ हरकतों को अच्छे ढंग से अदा कर दिया जाए। इसी के साथ नमाज में आदमी के जेहन का हाजिर रहना भी जरूरी है। वह नमाज को जानकर नमाज पढ़े अपनी ज़बान और अपने जिस्म

से वह जिस खुदा के सामने झुकने का इज्हार कर रहा है, उसी खुदा के सामने उसकी सोच और उसका इरादा भी झुक गया हो। उसका जिस्म जिस खुदा की इबादत कर रहा है, उसका शुऊर भी उसी खुदा का इबादतगुजार बन जाए।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتُرُونَ الضَّلَلَةَ وَ يُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَى بِاللَّهِ وَلِيًّا ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ نَصِيرًا ۖ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمِعْ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمِعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمًا وَلَكِنْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था। वे गुमराही को मोल ले रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ। अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है। और अल्लाह काफी है हिमायत के लिए और अल्लाह काफी है मदद के लिए। यहूद में से एक गिरोह बात को उसके ठिकाने से हटा देता है और कहता है कि हमने सुना और न माना। और कहते हैं कि सुनो और तुम्हें सुनवाया न जाए। वे अपनी जबान को मोड़ कर कहते हैं राइना, दीन में ऐब लगाने के लिए। और अगर वे कहते कि हमने सुना और माना, और सुनो और हम पर नजर करो तो यह उनके हक में ज्यादा बेहतर और दुरुस्त होता। मगर अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उन पर लानत कर दी है। पस वे ईमान न लाएंगे मगर बहुत कम। (44-46)

अल्लाह की किताब किसी गिरोह को इसलिए दी जाती है कि वह उससे अपनी सोच और अपने अमल को दुरुस्त करे। मगर जब आसमानी किताब की हामिल कोई कौम जवाल का शिकार होती है, जैसा कि यहूद हुए, तो खुदा की किताब से वह हिदायत की बजाए गुमराही की गिजा लेने लगती है। खुदा के अहकाम उसके लिए खुशक निरर्थक बहसों का विषय बन जाते हैं। अब उसके यहां आस्थाओं के नाम पर दार्शनिक किस्म की मोशगाफियां जन्म लेती हैं। वह उसके लिए ऐसी सरगर्मियों की तालीम देने वाली किताब बन जाती है जिसका आखिरत के मसले से कोई तअल्लुक न हो। ऐसे लोग अपनी रियायती नफिसयात की वजह से जरूरी समझते हैं कि वे अपनी हर बात को खुदा की बात साबित करें। वे अपने अमल को दीनी जवाज फराहम करने के लिए खुदा की किताब को बदल देते हैं। खुदा के कलिमात को उसके प्रसंग से हटा कर उसकी अपनी गढ़ी हुई तशरीह करते हैं। वे अल्फाज

में उलट फेर करके उससे ऐसा मफहूम निकालते हैं जिसका अस्ल खुदाई तालीमात से कोई तअल्लुक नहीं होता।

‘यहूद को किताब का कुछ हिस्सा मिला था।’ का मतलब यह है कि उन्हें खुदा की किताब के अल्फाज तो पढ़ने को मिले मगर खुदा की किताब पर अमल करना जो अस्ल मक्सूद था उससे वे दूर रहे। लफज के मामले में वे हामिले किताब बने रहे मगर अमल के मामले में उन्होंने आम दुनियादार कौमों का रास्ता अपना लिया। साथ ही यह कि आम लोग दुनियादारी को दुनियादारी के नाम पर करते हैं और उन्होंने यह ढिठाई की कि अपनी दुनियादारी के लिए खुदा की किताब से सनद पेश करने लगे।

फिर उनकी गुमराही अपनी जात तक नहीं रुकी। वे अपने को खुदा के दीन का नुमाईदा समझते थे। इसलिए जब गैर यहूदी अरबों ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देना शुरू किया तो यहूद अपनी दीनदारी का भरम कायम रखने के लिए खुद पैगम्बर के विरोधी हो गए। उन्होंने आपकी जिंदगी और आपकी तालीमात में तरह-तरह के शोशे निकाल कर लोगों को इस शुबह में मुक्ताल करना शुरू किया कि यह खुदा के भेजे हुए नहीं हैं बल्कि महज जाती हौसले के तहत खुदा के दीन के अमलबरादार बन कर खड़े हो गए हैं। मगर इस मअरके में अल्लाह गैर जानिबदार नहीं है। वह अपने दुश्मनों के मुकाबले में अपने वफादारों का साथ देगा और उन्हें कामयाब करके रहेगा।

‘लानत’ दरअस्ल बेहिसी की आखिरी सूरत है। आदमी की बेहिसी जब इस नौबत को पहुंच जाए कि उसे हक और नाहक की कोई तमीज न रहे तो इसी को लानत कहते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِنِّي أُنذِرُكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّن قَبْلِ أَنْ تَطْغَىٰ وُجُوهًا فَتَرُدُّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ تَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ۚ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْكُونَ أَنْفُسَهُمْ بِاللَّهِ يَزْكِي مَنْ يَشَاءُ وَلَا يَظْلَمُونَ فَتِيلًا ۚ أُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتُرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ۚ

ऐ वे लोगो जिन्हें किताब दी गई उस पर ईमान लाओ जो हमने उतारा है, तस्दीक करने वाली उस किताब की जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को मिटा दें और फिर उन्हें उलट दें पीठ की तरफ या उन पर लानत करें जैसे हमने लानत की सब्त वालों पर। और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहता है। बेशक अल्लाह इसे नहीं बख्शेगा कि उसके साथ शिरक किया जाए। लेकिन इसके अलावा जो कुछ है उसे जिसके लिए चाहेगा बख्श देगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया उसने बड़ा तूफान बांधा। क्या तुमने देखा उन्हें जो अपने आपको पाकीजा कहते हैं। बल्कि अल्लाह ही पाक करता है जिसे चाहता है, और उन पर जरा भी जुल्म न होगा। देखो, ये अल्लाह पर कैसा झूठ

बांध रहे हैं और सरीह गुनाह होने के लिए यही काफी है। (47-50)

कभी ऐसा होता है कि आदमी एक बात को सुनता है मगर वह हकीकत में नहीं सुनता। यह उस वक्त होता है जबकि आदमी उस बात को समझने के मामले में संजीदा न हो और उस पर अमल करने में उसे कोई दिलचस्पी न हो। यह मिजाज जब अपने आखिरी दर्जे में पहुंचता है तो आदमी की नासमझी का हाल ऐसा हो जाता है जैसे उसके चेहरे के निशानाट मिटा दिए गए हों और अब वह चीजों को इस तरह देख और सुन रहा हो जैसे कोई शख्स सर के पिछले हिस्से की तरफ से चीजों को देखे और सुने, जहां न देखने के लिए आंख है और न सुनने के लिए कान। हक बात को समझने के लिए आदमी का इस तरह अंधा बहरा हो जाना इस बात की अलामत है कि हक से साथ मुसलसल बेपरवाही के सबब खुदा ने उसे अपनी तौफीक से महरूम कर दिया है। खुदा ने उसे कान दिया मगर उसने नहीं सुना, खुदा ने उसे आंख दी मगर उसने नहीं देखा तो अब खुदा ने भी उसे वैसा ही बना दिया जैसा उसने खुद से अपने को बना रखा था। बेहिंसी जब अपने आखिरी दर्जे में पहुंचती है तो वह मस्ख (विनष्ट) की सूरत अपना लेती है।

यहूद का यह ख्याल था कि हम पैगम्बरों की नस्ल से हैं, इस सबब हमारा गिरोह मुकद्दस गिरोह है। उन्होंने बेशुमार रिवायतें और कहानियां गढ़ रखी थीं जो उनके नस्ली शरफ और गिरोही फजिलत की तस्दीक करती थीं। वे इन्हीं खुशखालियों में जी रहे थे। उन्होंने बतौर खुद यह अक्रीदा कायम कर लिया था कि हर वह शख्स जो यहूदी है उसकी नजात यकीनी है। कोई यहूदी कभी जहन्म की आग में नहीं डाला जाएगा।

‘वे अपने को पाकीजा ठहराते हैं हालांकि अल्लाह जिसे चाहे पाकीजा ठहराए।’ ये जुमला इस ख्याल की तरदीद (खंडन) है। मतलब यह है कि किसी नस्ल या गिरोह से वाबस्तगी के सबब किसी को फजिलत या शरफ नहीं मिल जाता। बल्कि इसका तअल्लुक खुदा के इंसफ के कानून से है। जो शख्स खुदाई कानून के मुताबिक अपने को शरफ का मुस्तहिक साबित करे वह शरफ वाला है और जो शख्स अपने अमल से अपने को मुस्तहिक साबित न कर सके वह महज किसी गिरोह से वाबस्तगी की बुनियाद पर शरफ का मालिक नहीं बन जाएगा।

गिरोही नजात का अक्रीदा चाहे यहूदी कायम करें या कोई और ऐसा अक्रीदा बना ले वह सरासर बातिल है। जो लोग ऐसा अक्रीदा बनाते हैं वे उसे खुदा की तरफ मंसूब करते हैं। मगर यह खुदा पर झूठ लगाना है। क्योंकि खुदा ने कभी ऐसी तालीम नहीं दी। खुदा अगर एक इंसान और दूसरे इंसान में गिरोही तअल्लुक की बुनियाद पर फर्क करने लगे तो यह जुम् होगा और खुदा सरासर अद्ल (इंसफ) है, वह कभी किसी के साथ जुम् करने वाला नहीं।

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْحَقُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْحَقُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْحَقُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْحَقُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْحَقُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْحَقُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْحَقُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْحَقُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था, वे जबिब (झूठी चीजों) और तागूत को मानते हैं और मुंकिरों के बारे में कहते हैं कि वे ईमानवालों से ज्यादा सही रास्ते पर हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह लानत करे तुम उसका कोई मददगार न पाओगे। क्या खुदा के इक्तेदार (संप्रभुत्व) में कुछ इनका भी दखल है। फिर तो ये लोगों को एक तिल बराबर भी न दें। क्या ये लोगों पर हसद कर रहे हैं इस सबब कि अल्लाह ने उन्हें अपने फजल से दिया है। पस हमने आले इब्राहीम को किताब और हिक्मत दी है और हमने उन्हें एक बड़ी सलतनत भी दे दी। उनमें से किसी ने इसे माना और कोई इससे रुका रहा और ऐसों के लिए जहन्म की भड़कती हुई आग काफी है। बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों का इंकार किया उन्हें हम सख्त आग में डालेंगे। जब उनके जिस्म की खाल जल जाएगी तो हम उनकी खाल को बदल कर दूसरी कर देंगे ताकि वे अजाब चखते रहें। बेशक अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत वाला है। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें हम बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उसमें वे हमेशा रहेंगे, वहां उनके लिए सुथरी वीवियां होंगी और उन्हें हम घनी छांव में रखेंगे। (51-57)

आसमानी किताब की हामिल किसी कौम पर जब जवाल आता है तो वह अमल के बजाए खुशअक्रीदगी (सुआस्था) की सतह पर जीने लगती है। इसका नतीजा यह होता है कि उसके दर्मियान तवह्यूमात (अंधविश्वास) खूब फैलते हैं। जो चीज हकीकी अमल के जरिए मिलती है उसे वह अमलियात और फर्जी अक्रीदों और सिफली आमाल के रास्ते से पाने की कोशिश शुरू कर देती है। ऐसे लोग दीन के मामले को ‘पाक कलिमात’ और ‘बाबरकत’ निस्वतों का मामला समझ लेते हैं जिसके महज जबानी अदायगी या रस्मी तअल्लुक से चमत्कार प्रकट होते हों। इसी के साथ उनका यह हाल होता है कि वे जबान से दीन का नाम लेते हुए अपनी अमली जिंगी को शैतान के हवाले कर देते हैं। वे हकीकी जिंगी में नपस की ख्वाहिशों और शैतान की तरगीबात पर चल पड़ते हैं। मगर इसी के साथ अपने ऊपर दीन का लेबल लगा कर समझते हैं कि जो कुछ वे करने लगे वही खुदा का दीन है। ऐसी हालत

में जब उनके दर्मियान बेआमेज (विशुद्ध) हक की दावत उठती है तो वे सबसे ज्यादा इसके मुखालिफ हो जाते हैं। क्योंकि उन्हें महसूस होता है कि वह उनकी दीनी हैसियत को नकार रही है। मुंकिरों का वुजूद उनके लिए इस किस्म का चैलेंज नहीं होता इसलिए मुंकिरों के मामले में वे नर्म होते हैं, मगर हक के दाजी के लिए उनके दिल में कोई नर्म गोशा नहीं होता। उनके अंदर यह हासिदाना (ईर्ष्यापूर्ण) आग भड़क उठती है कि जब दीन के इजारादार हम थे तो दूसरे किसी शख्स को दीन की नुमाइंदगी का दर्जा कैसे मिल गया। वे भूल जाते हैं कि खुदा आदमी की कल्बी इस्तेदाद (आन्तरिक क्षमता) की बुनियाद पर किसी को अपने दीन का नुमाइंदा चुनता है न कि नुमाइशी चीजों की बुनियाद पर।

लानत यह है कि आदमी अल्लाह की रहमतों और नुसरतों से बिल्कुल दूर कर दिया जाए। खाना और पानी बंद होने से जिस तरह आदमी की माददी जिंदगी खत्म हो जाती है उसी तरह खुदा की नुसरत से महरूमी के बाद आदमी की ईमानी जिंदगी का ख़ात्मा हो जाता है। लानतजदा आदमी लतीफ एहसासात के एतबार से इस तरह एक ख़त्मशुदा ईसान बन जाता है कि उसके अंदर हक और नाहक की तमीज बाकी नहीं रहती। खुली-खुली निशानियां सामने आने के बाद भी उसे एतराफ की तौफीक नहीं होती। वह निरर्थक शोशों और सुस्पष्ट दलीलों के दर्मियान फर्क नहीं करता।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِيَ الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَكَّمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتُ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ قَالُوا هَٰذَا الَّذِي جَاءُوكَ يَحْفَلُونَ ﴿٦٢﴾ بِاللَّهِ إِنَّ أَرْدْنَا إِلَّا أَحْسَنًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٣﴾ وَلِلَّهِ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٤﴾

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके हकदारों को पहुंचा दो। और जब लोगों के दर्मियान फैसला करो तो इंसाफ के साथ फैसला करो। अल्लाह अच्छी नसीहत करता है तुम्हें, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने में अहले इख़्तियार की इताअत करो। फिर अगर तुम्हारे दर्मियान किसी चीज में इख़्तेलाफ (मतभेद) हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ लौटाओ, अगर तुम अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो। यह बात अच्छी है और इसका अंजाम बेहतर है। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे ईमान लाए हैं उस पर जो उतारा गया है तुम्हारी तरफ और जो उतारा गया है तुमसे पहले, वे चाहते हैं कि विवाद ले जाएं शैतान की तरफ, हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि उसे न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर बहुत दूर डाल दे। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह की उत्तरी हुई किताब की तरफ और रसूल की तरफ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक्कीन (पाखंडी) तुमसे कतरा जाते हैं। फिर उस वक़्त क्या होगा जब उनके अपने हाथों की लाई हुई मुसीबत उन पर पहुंचेगी, उस वक़्त ये तुम्हारे पास कसमें खाते हुए आएंगे कि खुदा की कसम हमें तो सिर्फ भलाई और मिलाप से ग़रज थी। उनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उससे खूब वाकिफ़ है। पस तुम उनसे एराज (उपेक्षा) करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बात कहो जो उनके दिलों में उतर जाए। (58-63)

हर जिम्मेदारी एक अमानत है और उसे ठीक-ठीक अदा करना जरूरी है। इसी तरह जब किसी से मामला पड़े तो आदमी को चाहिए कि वह करे जो इंसाफ का तक्काज हो, चाहे मामला दोस्त का हो या दुश्मन का। अगर अमानतदारी और इंसाफ का तरीका बजाहिर अपने फायदों और मस्लेहतों के खिलाफ नजर आए तब भी उसे इंसाफ और सच्चाई ही के तरीके पर कायम रहना है। क्योंकि बेहतरी उसमें है जो अल्लाह बताए न कि उसमें जो हमारे नफस को पसंद हो। अगर हुक्मती निजाम के मैके हों तो मुसलमानों को चाहिए कि बाक़यदा इस्लामी हुक्मत का कायम अमल में लाएं। और अगर हुक्मत के अवसर न हों तो अपने अंदर के कविले एतमाद अफराद को अपना सरबराह (प्रमुख) बना लें और उनकी हिदायतों को लेते हुए दीनी जिंदगी गुजारें। जब किसी मामले में इख़्तेलाफ (मतभेद, विवाद) हो तो हर फ़रीक (पक्ष) पर लाज़िम है कि वह उस बात को मान ले जो अल्लाह और रसूल की तरफ से आ रही हो। हर आदमी को अपनी राय और मत रखने की आजादी है मगर इज्तिमाई (सामूहिक) फैसले को न मानने की आजादी किसी को भी हासिल नहीं। इज्तिमाई निजाम मुस्लिम समाज की इज्तिमाई जरूरत है।

मदीना के इब्तिदाई जमाने में इख़्तिलाफ़ी मामलों में फैसला लेने के लिए एक ही समय में दो अदालतें पाई जाती थीं। एक यहूदी सरदारों की जो पहले से चली आ रही थी। दूसरी अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की जो हिजरत के बाद कायम हुई। मुसलमानों में जो लोग अपने मफ़ाद (हित) की कुर्बानी की कीमत पर दीनदार बनने के लिए तैयार न थे वे ऐसा करते

कि जब उन्हें अंदेशा होता कि उनका मुकदमा कमजोर है और वे अल्लाह के रसूल की अदालत से अपने मुवाफिक फैसला न ले सकें तो वे कअब बिन अशरफ यहूदी की अदालत में चले जाते। यह बात सरासर ईमान के खिलाफ है। आदमी अगर अल्लाह के फैसले पर राजी न हो बल्कि अपनी पसंद का फैसला लेना चाहे तो उसका ईमान का दावा झूठा है, चाहे वह अपने रवैये को हक बजानिब साबित करने के लिए कितने ही खूबसूरत अल्फाज अपने पास रखता हो। ताहम ऐसे लोगों से न उलझते हुए उन्हें मुअस्सिर अंदाज में नसीहत करने का काम फिर भी जारी रहना चाहिए।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِي مَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوْ اخْرَجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ۝ وَإِذْ آتَيْنَاهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۖ وَلَهْدَيْنَاهُمْ صَرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۖ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالطَّاهِرِينَ وَحَسَنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۖ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ۝

और हमने जो रसूल भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत (आज्ञापालन) की जाए। और अगर वे जबकि उन्होंने अपना बुरा किया था, तुम्हारे पास आते और अल्लाह से माफी चाहते और रसूल भी उनके लिए माफी चाहता तो यकीनन वे अल्लाह को बख्शने वाला रहम करने वाला पाते। पस तैरे रब की कसम वे कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वे अपने आपसी झगड़े में तुम्हें फैसला करने वाला न मान लें। फिर जो फैसला तुम करो उस पर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और उसे खुशी से कुबूल कर लें। और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आपको हलाक करो या अपने घरों से निकलो तो उनमें से थोड़े ही इस पर अमल करते। और अगर ये लोग वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह बात बेहतर और ईमान पर साबित रखने वाली होती। और उस वक्त हम उन्हें अपने पास से बड़ा अज्र देते और उन्हें सीधा रास्ता दिखाते। और जो अल्लाह और रसूल की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने इनाम किया, यानी पैगम्बर और

सिद्दीक और शहीद और सातेह। वैसी अच्छी है उनकी रिफाकत। यह फल है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह का इल्म काफी है। (64-70)

रसूल इसलिए नहीं आता कि लोग बस उसके अकीदतमंद हो जाएं और उसकी बारगाह में अल्फाज के गुलदस्ते पेश करते रहें। रसूल इसलिए आता है कि आदमी उससे अपनी जिंदगी का तरीका मालूम करे और उस पर अमलन कारबंद हो। इस मामले में आदमी को इतना ज्यादा शदीद होना चाहिए कि नाजुक मौकों पर भी वह रसूल की इताअत से न हटे। जब दो आदमियों का मफाद एक-दूसरे से टकरा जाए और दो आदमियों के दर्मियान एक-दूसरे के खिलाफ तलबी उभर आए उस वक्त भी आदमी को अपने नपस को दबाना है और अपने इरादे से अपने को रसूल वाले तरीके का पाबंद बनाना है। विवाद के अवसर पर जो शख्स रसूल की रहनुमाई को कुबूल करे वही रसूल को मानने वाला है। यहां तक कि रसूल का तरीका अपने जैक और अपनी मस्लेहत के खिलाफ हो तब भी वह दिल की रिजम्दी के साथ उसे कुबूल कर ले। वह अपने एहसास को इतना जिंदा रखे कि अगर वक्ती तौर पर कभी उससे गलती हो जाए तो वह जल्द ही चौंक उठे। वह जान ले कि रसूल को छोड़कर वह शैतान के पीछे चल पड़ा था। वह फौरन पलटे और माफी का तालिब हो। जो शख्स नफिसयाती झटकों के मौकों पर दीन पर कायम न रह सके उससे क्या उम्मीद की जा सकती है कि वह उन शदीदतर मौकों पर साबितकदम रहेगा जबकि वतन को छोड़कर और जान व माल की कुर्बानी देकर आदमी को अपने ईमान का सुबूत देना पड़ता है।

नफ्सपररस्ती और मस्लेहतपसंदी की जिंदगी इख्तियार करने के नतीजे में आदमी जो सबसे बड़ी चीज खो देता है वह सिराते मुस्तकीम (सीधी-सच्ची राह, सन्मार्ग) है। यानी वह रास्ता जिसे पकड़ कर आदमी चलता रहे यहां तक कि अपने रब तक पहुंच जाए। यह रास्ता खुदा की किताब और रसूल की सुन्नत में वाजेह तौर पर मौजूद है। मगर आदमी जब अपनी सोच को तहफुजात (संरक्षण) का पाबंद कर लेता है तो वजाहत के बावजूद वह सिराते मुस्तकीम को देख नहीं पाता। वह दीन का मुतालआ (मनन, अध्ययन) अपनी ख्वाहिशों और मस्लेहतों के जेअसर करता है न कि उसकी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में। उसके जेहन में अपने अनुकूल दीन की एक स्वनिर्मित परिकल्पना कायम हो जाती है। वह ईमान का दावेदार होकर भी ईमान से महरूम रहता है। ऐसे लोग उस जन्नत के मुस्तहिक कैसे हो सकते हैं जहां वे लोग बसाए जाएंगे जिन्होंने हर किस्म की मस्लेहतों से ऊपर उठ कर दीन को अपनाया था। वे लोग जो खुदा के अहद को पूरा करने वाले हैं, जो हक की गवाही आखिरी हद तक देने वाले हैं और जिनकी जिंदगियां हद दर्जा पाकीजा हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوا ثُبَاتٍ أَوْ تَنْفِرُوا جَمِيعًا ۚ وَإِنْ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيْظُنُّ أَنَّهُ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالَتْ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَاهِدًا ۚ وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ لَيَقُولُنَّ كَأَن لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَلَيْتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ
وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ
وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
أَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۖ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ۝ الَّذِينَ
آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ
فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝

ऐ ईमान वाले अपनी एहतियात कर लो फिर निकलो जुदा-जुदा या इकट्ठे होकर। और तुममें कोई ऐसा भी है जो देर लगा देता है। फिर अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो वह कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर इनाम किया कि मैं उनके साथ न था। और अगर तुम्हें अल्लाह का कोई फल हासिल हो तो कहता है, गोया तुम्हारे और उसके दरमियान कोई मुहब्बत का रिश्ता ही नहीं कि काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी कामयाबी हासिल करता। पस चाहिए कि लड़ें अल्लाह की राह में वे लोग जो आखिरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेच देते हैं। और जो शरस अल्लाह की राह में लड़े, फिर मारा जाए या गालिब हो तो हम उसे बड़ा अज़्र देंगे। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम नहीं लड़ते अल्लाह की राह में और उन कमजोर मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए जो कहते हैं कि खुदाया हमें इस बस्ती से निकाल जिसके बाशिंदे जालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई हिमायती पैदा कर दे और हमारे लिए अपने पास से कोई मददगार खड़ा कर दे। जो लोग ईमान वाले हैं वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो मुंकिर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं। पस तुम शैतान के साथियों से लड़ो। बेशक शैतान की चाल बहुत कमजोर है। (71-76)

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है, इसलिए यहां हर एक को अमल की आजादी है। यहां शरीर लोगों को भी मौका है कि वे खुदा के बंदों को अपने जुल्म का निशाना बनाएं और इसी के साथ खुदा के नेक बंदों को अपने ईमान के इकरार का सुबूत इस तरह देना है कि वे शरीर लोगों की तरफ से डाली जाने वाली मुसीबतों के बावजूद साबितकदम रहें। अहले ईमान को खुदा के दुश्मनों के मुकाबलें में हर वक्त चौकन्ना रहना है। पुरअमन तदबीरों और जंगी तैयारियों से उन्हें पूरी तरह अपने बचाव का इंतजाम करना है। उन्हें अलग-अलग तौर पर भी अपने दुश्मनों का मुकाबला करना है और मिल कर भी। इसी के साथ खुद मुसलमानों की सफ में भी ऐसे लोग होते हैं जैसा कि उहूद की जंग में जाहिर हुआ, जो दुनिया के नुस्सान का खतरा मोल लिए बगैर आखिरत का सौदा करना चाहते हों। ऐसे लोगों का हाल यह होता

है कि वे उन कामों में तो खूब हिस्सा लेते हैं जिनमें दुनियावी फायदे का कोई पहलू हो। मगर ऐसा दीनी काम जिसमें दुनियावी एतबार से नुस्सान का अंदेशा हो उससे अलग होने के लिए खूबसूरत उज़्र तलाश कर लेते हैं। उनकी यह जेहनियत इसलिए है कि इस्लाम कुबूल करने के बावजूद अमलन वे इसी मौजूदा दुनिया की सतह पर जी रहे हैं। अगर उन्हें यकीन हो कि अस्ल अहमियत की चीज आखिरत है तो दुनिया की कामयाबी व नाकामी उनके लिए नाकाबिले लिहाज बन जाए। अल्लाह की राह का मुजाहिद हकीकत में वह है जो सिर्फ आखिरत का तालिब हो, जो दुनिया के फायदों और मस्लेहतों को कुर्बान करके अल्लाह की राह में बड़े। न कि वह जो ऐसे जिहाद का गाजी बनना पसंद करे जिसमें कोई ज़ख्म लगे बगैर बड़े-बड़े क्रेडिट मिलते हों, जिसमें अस्मज बेल्कर श्रेष्ठत व इज्जत का मयम हासिल होता हो।

खुदा की राह की लड़ाई वह है जो उस खुदा के बंदे को पेश आए जो सिर्फ खुदा के लिए उठा हो। वह लोगों को जहन्नम से डराए और लोगों को जन्नत की तरफ बुलाए। किसी से वह माददी (भौतिक, सांसारिक) या सियासी झगड़ा न छेड़े। फिर भी शरीर लोग उससे लड़ने के लिए खड़े हो जाएं। और शैतान की राह में लड़ने वाले वे लोग हैं जो किसी खुदा के बंदे से इस सबब लड़ें कि उसकी बातों से उनके अहंकार पर चोट पड़ती है। उसके पैगाम के फैलाव में उन्हें अपना आर्थिक या सियासी खतरा दिखाई देता है। उसकी दलीलों को तोड़ने के लिए वे आक्रामकता के सिवा और कोई दलील अपने पास नहीं पाते।

الْمَرَّةَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كُتِبَتْ عَلَيْنَا الْقِتَالُ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلْ مَتَاءُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى ۚ وَلَا تَظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُدْرِكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي بُرُوجٍ مُشِيدَةٍ ۚ وَإِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِي ۚ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۚ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज क़यम करो और ज़कात दो। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया तो उनमें से एक गिरोह इंसानों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरना चाहिए या इससे भी ज्यादा। वे कहते हैं ऐ हमारे ख, तूने हम पर लड़ाई क्यों फर्ज कर दी। क्यों न छोड़े

रखा हमें थोड़ी मुद्दत तक। कह दो कि दुनिया का फायदा थोड़ा है और आखिरत बेहतर है उसके लिए जो परहेजगारी करे, और तुम्हारे साथ जरा भी जुम न होगा। और तुम जहां भी होगे मौत तुम्हें पा लेगी अगरचे तुम मजबूत किताबों में हो। अगर उन्हें कोई भलाई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह खुदा की तरफ से है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह तुम्हारे सबब से है। कह दो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ से है। इन लोगों का क्या हाल है कि लगता है कि कोई बात ही नहीं समझते। तुम्हें जो भलाई भी पहुंचती है खुदा की तरफ से पहुंचती है और तुम्हें जो बुराई पहुंचती है वह तुम्हारे अपने ही सबब से है। और हमने तुम्हें इंसानों की तरफ पैगम्बर बना कर भेजा है और अल्लाह की गवाही काफी है। (77-79)

हिजरत से पहले मक्का में इस्लाम के विरोधी मुसलमानों को बहुत सताते थे। मारना-पीटना, उनके आर्थिक साधन-स्रोतों को तबाह करना, उन्हें मस्जिद हराम में इबादत से रोकना, उन्हें तब्लीग की इजाजत न देना, उन्हें घर बार छोड़ने पर मजबूर करना, सब कुछ उन्होंने मुसलमानों के लिए जाइज कर लिया था। जो शरूख इस्लाम कुबूल करता उस पर वे हर किसम का दबाव डालते ताकि वह इस्लाम को छोड़कर अपने आबाई मजहब की तरफ लौट जाए। इस्लाम विरोधियों की इस जारिहियत (आक्रमकता) ने मुसलमानों के लिए उसूलन जाइज कर दिया था कि वे उनके खिलाफ तलवार उठाएं। अतः वे मुहम्मद (सल्ल०) से बार-बार जंग की इजाजत मांगते। मगर आप हमेशा यह कहते कि मुझे जंग का हुक्म नहीं दिया गया है। तुम सब्र करो और नमाज और जकात की अदायगी करते रहो। इसकी वजह यह थी कि वक्त से पहले कोई इकदाम करना इस्लाम का तरीका नहीं। मक्का में मुसलमानों की इतनी ताकत नहीं थी कि वे अपने दुश्मनों के खिलाफ फैसलाकुन इकदाम कर सकते। उस वक्त मक्का वालों के मुकाबले में तलवार उठाना अपनी मुसीबतों को और बढ़ाने के समान था। इसका मतलब यह था कि वह ताकतवर दुश्मन जो अभी तक सिर्फ इफ्तिदाी जुम कर रहा है उसे अपनी तरफ से मुकम्मल जंगी कार्रवाई करने का जवाज (औचित्य) फराहम कर दिया जाए। अमली इकदाम हमेशा उस वक्त किया जाता है जबकि उसके लिए जरूरी तैयारी कर ली गई हो। इससे पहले अहले ईमान से सिर्फ इफ्तिदाी अहकाम का तकाजा किया जाता है जो हर हाल में आदमी के लिए जरूरी हैं। यानी अल्लाह से तअल्लुक जोड़ना, बंदों के हुक्म अदा करना और दीन की राह में जो मुश्किलें पेश आएँ उन्हें बर्दाश्त करना।

कुरआन में कुर्बानी के अहकाम आए तो मस्लेहतपरस्त लोगों को अपनी जिंगी का नक्शा बिखरता हुआ नजर आया। वे अपनी कमजोरी को छुपाने के लिए तरह-तरह की बातें करने लगे। उहुद की जंग में शिकस्त हुई तो इसे वह रसूल की बेतदबीरी का नतीजा बता कर रसूल की रहनुमाई के बारे में लोगों को बदजन करने लगे। फायदे वाली बातों को अल्लाह का फजल बता कर वे अपनी इस्लामियत का प्रदर्शन करते और अमली इस्लाम से बचने के लिए रसूल को गलत साबित करते। खुदा को मान कर आदमी के लिए मुमकिन रहता है कि वह अपने नपस पर चलता रहे। मगर खुदा के दाजी (आह्वानकर्ता) को मानने के बाद उसका साथ देना भी जरूरी हो जाता है जो आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है।

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ تَوَلَّى فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظًا ۖ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَدُوا مِنْ عِنْدِكَ بِكَيْتَ طَائِفَةٍ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبِيتُونَ فَأَعْرَضَ عَنْهُمْ وَتَوَلَّى عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۖ أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۖ وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَ لَهُمْ مِنْهُمْ وَلَا فَضْلُ لِلَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَا تَبْغَتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जो उल्टा फिरा तो हमने उन पर तुम्हें निगरां बना कर नहीं भेजा है और ये लोग कहते हैं कि हमें कुबूल है। फिर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनमें से एक गिरोह उसके खिलाफ मश्वरा करता है जो वह कह चुका था। और अल्लाह उनकी सरगोशियों (कुकृत्यों) को लिख रहा है। पस तुम उनसे एराज (उपेक्षा) करो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह भरोसे के लिए काफी है। क्या ये लोग कुरआन पर गौर नहीं करते, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ से होता तो वे इसके अंदर बड़ा इत्तेलाफ (अन्तर्विरोध) पाते। और जब उन्हें कोई बात अमन या खौफ की पहुंचती है तो वह उसे फैला देते हैं। और अगर वे उसे रसूल तक या अपने जिम्मेदार लोगों तक पहुंचाते तो उनमें से जो लोग तहकीक करने वाले हैं वे उसकी हकीकत जान लेते। और अगर तुम पर अल्लाह का फजल और उसकी रहमत न होती तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे लग जाते। (80-83)

खुदा के दाजी को मानना 'अपने जैसे इंसान' को मानना है। यही वजह है कि आदमी खुदा को मान लेता है, मगर वह खुदा के दाजी (आह्वानकर्ता) को मानने पर राजी नहीं होता। मगर आदमी का अस्ल इस्तेहान यही है कि वह खुदा के दाजी को पहचाने और उसकी जानिब अपने को खड़ा करे। दाजी के मामले को जब आदमी खुदा का मामला न समझे तो वह इसके बारे में संजीदा भी नहीं होता। सामने वह रस्मी तौर पर हां कर देता है मगर जब अलग होता है तो अपनी पहले की रविश पर चलने लगता है। वह इसके खिलाफ ऐसी बातें फैलाता है जिनका फैलाना सरासर गैर-जिम्मेदाराना फैअल हो। जो लोग खुदा के दाजी के साथ इस किसम की बेपरवाई का सुलूक करें वे खुदा के यहां यह कह कर नहीं छूट सकते कि हम नहीं जानते थे। आदमी अगर ठहर कर सोचे तो दाजी की सदाकत को जानने के लिए वह कलाम ही काफी है जो खुदा ने उसकी जबान पर जारी किया है।

कुरआन के कलामे इलाही होने का एक वाजेह सबूत यह है कि इसका कोई बयान किसी

भी मुसल्लमा सदाकत के खिलाफ नहीं। इसमें कोई ऐसी चीज नहीं जो इंसानी फितरत के खिलाफ हो। इसमें कोई ऐसा बयान नहीं जो पहले की आसमानी किताबों के जरिए जानी हुई किसी हकीकत से टकराता हो। इसमें कोई ऐसा इशारा नहीं जो प्रयोगात्मक ज्ञानों से प्राप्त किसी घटना के विपरीत हो। यथार्थ से यह पूरी तरह अनुकूलता इस बात का यकीनी सबूत है कि यह अल्लाह की तरफ से आया हुआ कलाम है। ताहम किसी भी सच्चाई का सच्चाई नजर आना इस पर निर्भर है कि आदमी गंभीरता के साथ उसे समझने की कोशिश करे। कुरआन का इख़लाफ़े कसीर (अन्तर्विरोधों) से मुक्त होना उस शख्स को दिखाई देगा जो कुरआन पर 'तदब्बुर' (चिंतन-मनन) करे। जो शख्स तदब्बुर करना न चाहे उसके लिए बेमअनी एतराजात निकालने का दरवाजा उस वक्त तक खुला हुआ है जब तक कियामत आकर मौजूदा इस्तेहानी हालत का खात्मा न कर दे।

इस्लामी समाज वह है जिसके अफराद इतने खुदशनास (आत्मविश्लेषक) हों कि वे दूसरों के मुकाबले में अपनी नाअहली (अयोग्यता) को जान लें। वे किसी मामले को अहलतर शख्स के हवाले करके उसकी रहनुमाई पर राजी हो जाएं। यह खुदशनासी ही एक मात्र चीज है जो सामूहिक जीवन में किसी को शैतान के पीछे चल पड़ने से बचाती है। आदमी अगर अपने आपको न जाने तो वह योग्यता न रखते हुए भी नाजुक मामलों में कूद पड़ता है और फिर खुद भी हलाक होता है और दूसरों को भी हलाक कर देता है। इज्तिमाई (सामूहिक) मामलों में बोलने से ज्यादा चुप रहना जरूरी होता है। यह शैतान की मदद करना है कि आदमी जो बात सुने उसे दूसरों के सामने दोहराने लगे।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَعَلَّكَ تُكْفِتُ لِنَفْسِكَ وَحَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيدًا مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُجَمِّعُكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا

पस लड़ो अल्लाह की राह में। तुम पर अपनी जान के सिवा किसी की जिम्मेदारी नहीं और मुसलमानों को उभारो। उम्मीद है कि अल्लाह मुंकिरों का जोर तोड़ दे और अल्लाह बड़ा जोर वाला और बहुत सज़ा देने वाला है। जो शख्स किसी अच्छी बात के हक में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और जो इसके विरोध में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। और जब कोई तुम्हें दुआ दे तो तुम भी दुआ दो उससे बेहतर या उलट कर वही कह दो, वेशक अल्लाह हर चीज का हिसाब लेने वाला है। अल्लाह ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह तुम सब को कियामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शक नहीं। और अल्लाह की बात

से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है। (84-87)

दीनदारी की एक सूरत यह है कि आदमी अमली तौर पर जहां है वहीं रहे, वह अपनी हकीकी जिंदगी में कोई तब्दीली न करे। अलबत्ता कुछ ऊपरी मजाहिर का एहतेमाम करके समझे कि मैं दीनदार बन गया हूं। ऐसे दीन से किसी को ज़िद नहीं होती। लोग उसके विरोध की ज़रूरत नहीं समझते। मगर जब दीन के ऐसे तक्ज़े पेश किए जाएं जो कुर्बानी का मुतालबा करते हों, जिसमें आदमी को अपनी बनी बनाई जिंदगी उजाड़ना पड़े तो इसके सामने आने के बाद लोगों में दो पक्ष हो जाते हैं। एक तबका दावत (इस्लामी आह्वान) के विरोधियों का। ये वे लोग हैं जो सस्ते मजाहिर (दिखावटी कर्मकांडों) के जरिए अपनी दीनदारी का सिक्का कायम किए हुए होते हैं। वे कुर्बानी वाले दीन के मुखालिफ बन जाते हैं। क्योंकि ऐसे दीन को अपनाना उन्हें बरतरी के मक़ाम से उतरने के समान नजर आता है। दूसरा तबका वह होता है जिसकी फितरत जिंदा होती है। वह चीजों को मफ़द और मस्तेह्त से ऊपर उठ कर देखता है। एक बात का हक साबित हो जाना ही उसके लिए काफी हो जाता है कि वह उसे कुबूल कर ले। यह सूरतेहाल कभी इतनी संगीन हो जाती है कि हक की ताईद और हिमायत में जबान खोलना जिहाद के समान बन जाता है। इसके विपरीत हक के बारे में खामोशी या विरोध का रवैया अपनाना आदमी को इनाम का हकदार बना देता है। ताहम जहां तक सच्चे अहले ईमान का तअल्लुक है उन्हें हर हाल में यह हुकम है कि आम समाजी तअल्लुकात को इस मतभेद से प्रभावित न होने दें। और उनके साथ गैर-अब्खाकी रवैया न अपनाएं। मुसलमान का रवैया दूसरों की प्रतिक्रिया में नहीं बनना चाहिए बल्कि इस किस्म की चीजों को नजरअंदाज करके बनना चाहिए। यह मामला अल्लाह से संबंधित है कि वह किसे क्या बदला दे और किसी के लिए क्या फैसला करे।

नाज़ुक हालत में हक की दावत को जिंदा रखने की ज़मानत सिर्फ यह होती है कि कम से कम दाओ (आह्वानकर्ता) अपनी जात की सतह पर यह अज़म रखे कि वह हर हाल में अपने मौक़िफ़ पर कायम रहेगा चाहे कोई ताईद करने वाला हो या न हो। ऐसे हालात में दाओ का अज़म उसे अल्लाह की ख़ास मदद का हकदार बना देता है। इसकी एक मिसाल बंदे सुग्रा की लड़ाई है जो उहद के सिर्फ एक माह बाद पेश आई। उस वक्त मदीना में ऐसी कैफ़ियत छाई हुई थी कि सिर्फ सत्तर आदमी अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) के साथ निकले। मगर इस छोटे से काफ़िले को अल्लाह की यह खुसूसी मदद मिली कि मक्का वालों पर ऐसा रौब तारी हुआ कि वे मुकाबले में न आ सके। खुदा की सुन्नत है कि वह मुंकिरों का जोर तोड़े। मगर खुदा की यह सुन्नत उस वक्त जाहिर होती है जबकि दीन के अलमबरदार अपनी बेसरोसामानी के बावजूद खुदा के दुश्मनों का जोर तोड़ने के लिए निकल पड़े हों।

فَبَاكُمُ فِي السُّفْقَيْنِ فَنَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا أَلَّا تَهْتَدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَنْ يَضِلَّ اللَّهُ فَلَنْ يَهْدِيَ اللَّهُ سَبِيلًا ۚ وَذُؤَالُو كُفْرُونَ

كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوا مِنْهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ جَاءَكُمْ حَصْرَتٌ صُدُّوا عَنْهُمْ أَنْ يَقَاتِلُوا أَوْ يَفْتَالُوا أَوْ مَهُمُ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَاطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتِلُوكُمْ فَإِنْ اعْتَرَفُوكُمْ فَلَكُمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَالْقُوا إِلَيْكُمْ السَّلَامَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۝ سَتَجِدُونَ الْآخَرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلًّا رُدُّوْا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا فَإِنْ لَمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمْ السَّلَامَ وَيَكْفُوا إِلَيْدَهُمْ فَخُذُوا مِنْهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ تَقِفْتُمُوهُمْ وَأُولَٰئِكَ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ۝

फिर तुम्हें क्या हुआ है कि तुम मुनाफिकों (पाखंडियों) के मामले में दो गिरोह हो रहे हो। हालांकि अल्लाह ने उनके आमाल के सबब से उन्हें उल्टा फेर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि उन्हें राह पर लाओ जिन्हें अल्लाह ने गुमराह कर दिया है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तुम हरगिज उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। वे चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने इंकार किया है तुम भी इंकार करो ताकि तुम सब बराबर हो जाओ। पस तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें। फिर अगर वे इसे कुबूल न करें तो उन्हें पकड़ो और जहां कहीं उन्हें पाओ उनको कत्ल करो और उनमें से किसी को साथी और मददगार न बनाओ। मगर वे लोग जिनका तअल्लुक किसी ऐसी कौम से हो जिनके साथ तुम्हारा समझौता है। या वे लोग जो तुम्हारे पास इस हाल में आए कि उनके सीने तंग हो रहे हैं तुम्हारी लड़ाई से और अपनी कौम की लड़ाई से। और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर जोर दे देता तो वे जरूर तुमसे लड़ते। पस अगर वे तुम्हें छोड़े रहें और तुमसे जंग न करें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया रखें तो अल्लाह तुम्हें भी उनके खिलाफ किसी इकदाम की इजाजत नहीं देता। दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अमन में रहें और अपनी कौम से भी अमन में रहें। जब कभी वे फितने का मौक़ पाएं वे उसमें कूद पड़ते हैं। ऐसे लोग अगर तुमसे एकसू न रहें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया न रखें और अपने हाथ न रोके तो तुम उन्हें पकड़ो और उन्हें कत्ल करो जहां कहीं पाओ। ये लोग हैं जिनके खिलाफ हमने तुम्हें खुली हुज्जत दी है। (88-91)

आदमी जब अल्लाह के दीन को अपनाता है तो इसके बाद उसकी जिंदगी में बार-बार ऐसे मरहले आते हैं जहां यह जांच होती है कि वह अपने फैसले में सजीदा है या नहीं। इसी सिलसिले का एक इस्तेहान 'हिजरत' है। यानी दीन की राह में जब दुनिया के फायदे और मस्तेहतें (हित) रुकावट बनें तो फायदों और मस्तेहतों को छोड़कर अल्लाह की तरफ बढ़ जाना। यहां तक कि अगर रिश्तेदार और घर-बार छोड़ने की जरूरत पेश आए तो उसे भी छोड़ देना। ऐसा नाजुक मौक़ा पेश आने की सूरत में अगर ऐसा हो कि आदमी अपने फायदों और मस्तेहतों को नज़्अंज़ करके हक़ की तरफ बढ़े तो उसने हक़ के साथ अपने कबी तअल्लुक को पुखा किया। इसके विपरीत अगर ऐसा हो कि ऐसे मौक़े पर आदमी अपने फायदों और मस्तेहतों से लिपटा रहे तो उसने हक़ के साथ अपने कबी तअल्लुक को कमजोर किया। जो शख्स पहली राह पर चले उसके अंदर हक़ की और भी कुबूलियत का मादूदा पैदा होता है, वह बराबर हक़ की तरफ बढ़ता रहता है। और जो शख्स दूसरी राह पर चले उसके अंदर हक़ की कुबूलियत का मादूदा घटता रहता है यहां तक कि वह इतना बेहिस हो जाता है कि उसके अंदर हक़ को कुबूल करने की सलाहियत बाकी नहीं रहती।

जब दीन के सख़्त तक़जे सामने आते हैं तो लोगों में विभिन्न गिरोह बन जाते हैं। कोई मुख़्लस लोगों का होता है कोई विरोधियों का। और कुछ ऐसे लोगों का जो बजाहिर हक़ से करीब मगर अंदर से उससे दूर होते हैं। ऐसी हालत में जरूरी है कि अहलेइमान हर एक से उसके हस्बेहाल मामला करें। वे फितना को मिटाने में सख़्त और अज़लाकी जिम्मेदारियों को निभाने में नर्म हों। वे कमजोरों के साथ रियायत का सुलूक करें। दूसरों से मुतअस्सिर होने के बजाए खुद उन्हें मुतअस्सिर करने की कोशिश करें। किसी को अगर अल्लाह ख़ामोश करके बिठा दे तो उससे बिना जरूरत लड़ाई न छेड़ें।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسْلَمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَصَدَّقُوا فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدَا لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسْلَمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعْنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ۝

और मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को कत्ल करे मगर यह कि ग़लती से ऐसा हो जाए। और जो शख्स किसी मुसलमान को ग़लती से कत्ल कर दे तो वह

एक मुसलमान गुलाम को आजाद करे और मक्तूल (मृतक) के वारिसों को खूबहा (कत्ल का आर्थिक हर्जाना) दे, मगर यह कि वे माफ कर दें। फिर मक्तूल अगर ऐसी कौम में से था जो तुम्हारी दुश्मन है और वह खुद मुसलमान था तो वह एक मुसलमान गुलाम को आजाद करे। और अगर वह ऐसी कौम से था कि तुम्हारे और उसके दरमियान समझौता है तो वह उसके वारिसों को खूबहा (कत्ल का आर्थिक हर्जाना) दे और एक मुसलमान को आजाद करे। फिर जिसे मयस्सर न हो तो वह लगातार दो महीने के रोजे रखे। यह तौबा है अल्लाह की तरफ से। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और जो शख्स किसी मुसलमान को जान कर कत्ल करे तो इसकी सजा जहन्म है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़जब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अजाब तैयार कर रखा है। (92-93)

एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान के जो हुक्म हैं उनमें सबसे बड़ा हक यह है कि वह उसकी जान का एहताराम करे। अगर एक मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को कत्ल कर दे तो उसने सबसे बड़ा समाजी जुर्म किया। एक शख्स जब दूसरे शख्स को कत्ल करता है तो वह उसके ऊपर आखिरी मुमकिन वार करता है। और यह वह जुर्म है जिसके बाद मुजरिम के लिए अपने जुर्म की तलाफी की कोई सूरत बाकी नहीं रहती। यही वजह है कि जानबूझकर कत्ल करने की सजा सदा जहन्म में रहना है। जो शख्स किसी मुसलमान को जानबूझ कर मार डाले उससे अल्लाह इतना ग़जबनाक होता है कि उसे मलऊन करार देकर उसे हमेशा के लिए जहन्म में डाल देता है। अलबत्ता कत्ले ख़ता का जुर्म हल्का है। कोई शख्स किसी मुसलमान को ग़लती से मार डाले, इसके बाद उसे ग़लती का एहसास हो वह अल्लाह के सामने रोये गिड़गिड़ाए और निर्धारित कायदे के मुताबिक उसकी तलाफी करे तो उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसे माफ कर देगा। ग़लती के बाद माल खर्च करना या मुसलसल रोजे रखना गोया खुद अपने हाथों अपने आपको सजा देना है। जब आदमी के ऊपर शिद्दत से यह एहसास तारी होता है कि उससे ग़लती हो गई तो वह चाहता है कि अपने ऊपर इस्लाही अमल करे। अल्लाह ने बताया कि ऐसी हालत में आदमी को अपनी इस्लाह के लिए क्या करना चाहिए।

यहां अस्लन कत्ल का हुक्म बताया गया है। ताहम इसी नौइयत को दूसरे समाजी जुर्म भी हैं और मज्हूर हुक्म से अंदाजा होता है कि उन दूसरी चीजों के बारे में शरीअत का तक्का क्या है।

एक मुसलमान का फर्ज जिस तरह यह है कि वह अपने भाई को ज़िंदगी से महरूम करने की कोशिश न करे, इसी तरह एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर यह हक भी है कि वह उसे बेइज्जत न करे। उसका माल न छीने। उसे बेघर न करे। उसके रोजगार में खलल न डाले। उसके सुकून को ग़ारत करने का मंसूबा न बनाए। वे चीजें जो उसके लिए ज़िंदगी के

असासे की हैसियत रखती हैं, उनमें से किसी चीज को उससे छीनने की कोशिश न करे। एक आदमी अगर ग़लती से ऐसा कोई फ़ेअल कर बैठे जिससे उसके मुसलमान भाई को इस किस्म का कोई नुकसान पहुंच जाए तो उसे फौरन अपनी ग़लती का एहसास होना चाहिए और ग़लती के एहसास का सुबूत यह है कि वह अल्लाह से माफ़ी मांगे और अपने भाई के नुकसान की तलाफी करे। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि आदमी जानबूझ कर ऐसी कार्रवाई करे जिसका सोचा समझा मक़सद अपने भाई को नुकसान पहुंचाना और उसे परेशान करना हो तो दर्जे के फ़र्क के साथ यह उसी नौइयत का जुर्म है जैसा जानबूझकर किया गया कत्ल।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا إِنَّمَا أَتَيْنَا لِنُكَلِّمَ النَّاسَ وَنَكَلِّمَهُمْ فَتَبَيَّنُوا لِنُكَلِّمَ النَّاسَ وَنَكَلِّمَهُمْ لَسْتُمْ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمِنَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ كَذَلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحَسَنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ دَرَجَتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً ۚ وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

94-96

ऐ ईमान वालो जब तुम सफ़र करो अल्लाह की राह में तो खूब तहकीक कर लिया करो और जो शख्स तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं। तुम दुनियावी ज़िंदगी का सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास ग़नीमत के बहुत सामान हैं। तुम भी पहले ऐसे ही थे। फिर अल्लाह ने तुम पर फ़ल किया तो तहकीक कर लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है। बराबर नहीं हो सकते बैठे रहने वाले मुसलमान जिनको कोई उज़्र (विवशता) नहीं और वे मुसलमान जो अल्लाह की राह में लड़ने वाले हैं अपने माल और अपनी जान से। माल व जान से जिहाद करने वालों का दर्जा अल्लाह ने बैठे रहने वालों की निस्वत बड़ा रखा है और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर अज़े अजीम में बरतरी दी है। उनके लिए अल्लाह की तरफ से बड़े दर्जे हैं और मफ़िरत (क्षमा) और रहमत है। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (94-96)

अब के मुखालिफ कबीलों में कुछ ऐसे अफ़राद थे जो अंदर से मुसलमान थे मगर हिजरत करके अभी अपने कबीले से कटे नहीं थे। एक लड़ाई में ऐसा एक शख्स मुसलमान की तलवार

की जद में आ गया। उसने 'अस्सलामु अलैकुम' कह कर जाहिर किया कि मैं तुम्हारा दीनी भाई हूं। कुछ पुरजोश मुसलमानों ने फिर भी उसको कल्ल कर दिया। उन्होंने समझा कि यह मुसलमान नहीं है और महज अपने को बचाने के खातिर अस्सलामु अलैकुम कह रहा है। मगर अस्सलामु अलैकुम कहने की हद तक भी कोई शख्स मुसलमान हो तो उस पर हाथ उठाना जाइज नहीं। यहां तक कि जंग के मौके पर भी नहीं जबकि यह अदेशा हो कि दुश्मन इससे फायदा उठाएगा। किसी मुसलमान का मारा जाना अल्लाह के नजदीक इतना बड़ा हादसा है कि सारी दुनिया का फना हो जाना भी उसके मुक़बले में कम है।

जब भी कोई शख्स इस किस्म का इस्लामी जोश दिखाता है कि वह दूसरे आदमी की इस्लामियत को नाकाबिले तस्लीम करार देकर उसे सजा देने पर इसार करता है तो इसके पीछे हमेशा दुनियावी प्रेरक होते हैं। कभी कोई माददी लालच, कभी इतिकाम (बदले) की आग, कभी अपने किसी हरीफ को मैदान से हटाने का शौक, बस इस किस्म के जबाबत हैं जो इसका सबब बनते हैं। अगर आदमी के सीने में अल्लाह से डरने वाला दिल हो तो वह इस्लाम का इज्हार करने वाले के अल्फ़ाज को कुबूल कर लेगा और उसके मामले को अल्लाह के हवाले करके खामोश हो जाएगा।

अमल के लिहाज से मुसलमानों के दो दर्जे हैं। एक वे लोग जो फ़राइज के दायरे में इस्लामी जिंदगी को इख़्तियार करें। वे अल्लाह की इबादत करें और हराम व हलाल के हुद्द का लिहाज करते हुए जिंदगी गुज़ारें। दूसरे लोग वे हैं जो कुर्बानी की सतह पर इस्लाम को इख़्तियार करें। वे खुद इस्लाम को अपनाते हुए दूसरों को भी इस्लाम पर लाने की कोशिश करें और इस राह की मुसीबतों को बर्दाश्त करें। वे इस्लाम के महाज पर अपनी जान व माल को लेकर हाज़िर हो जाएं। वे फ़राइज की हुद्द में न ठहरें बल्कि फ़राइज से आगे बढ़कर अपने आपको इस्लाम के लिए पेश कर दें। ये दोनों ही गिरोह मुख़्लिस हैं और दोनों अल्लाह की रहमतों में अपना हिस्सा पाएंगे। मगर दूसरे गिरोह का मामला बुनियादी तौर पर अलग है। उन्होंने नाप कर खुदा की राह में नहीं दिया इसलिए खुदा भी उनको नाप कर नहीं देगा। उन्होंने अपनी जाती मस्लेहतों को नज़रअंदाज़ करके खुदा के मिशन में अपने आपको शरीक किया इसलिए खुदा भी उनकी कमियों को नज़रअंदाज़ करके उन्हें अपनी रहमतों में ले लेगा।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْنَاهُمُ لَمَلَكَ ظَالِمٍ أَنفُسَهُمْ قَالُوا فِيهِمْ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَهَاجِرُوا فِيهَا فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۝ فَأُولَٰئِكَ عَسَىٰ اللَّهُ أَن يَعْفُو عَنْهُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَمَنْ يَهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرْعًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۖ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا

إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ يُذِرْكُمُ الْمَوْتَ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

जो लोग अपना बुरा कर रहे हैं जब उनकी जान फरिश्ते निकालेंगे तो वे उनसे पूछेंगे कि तुम किस हाल में थे। वे कहेंगे कि हम जमीन में बेबस थे। फरिश्ते कहेंगे क्या खुदा की जमीन कुशादा न थी कि तुम वतन छोड़कर वहां चले जाते। ये वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। मगर वे बेबस मर्द और औरतें और बच्चे जो कोई तदवीर नहीं कर सकते और न कोई राह पा रहे हैं, ये लोग उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें माफ कर देगा और अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो कोई अल्लाह की राह में वतन छोड़ेगा वह जमीन में बड़े ठिकाने और बड़ी वुस्तत पाएगा और जो शख्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ हिजरत करके निकले, फिर उसे मौत आ जाए तो उसका अज़्र अल्लाह के यहां मुकर्र हो चुका और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (97-100)

मोमिन की फितरत चाहती है कि उसे आजादाना माहौल मिले जहां उसकी ईमानी हस्ती के इज्हार के लिए खुले मौके हों। जब भी ऐसा न हो तो आदमी को चाहिए कि अपना माहौल बदल दे। इसी का नाम हिजरत है। हिजरत अपनी अस्ल हकीकत के एतबार से यह है कि आदमी अपने को गैर मुआफ़िक (प्रतिकूल) फज से निकले और अपने को मुआफ़िक (अनुकूल) फज में ले जाए। एक इदारा (संस्था) है जिसमें कुछ शख्सियतों का जोर है। वहां रहने वाला एक आदमी महसूस करता है कि मैं यहां शख्सियतपरस्त बनकर तो रह सकता हूं मगर खुदापरस्त बनकर नहीं रह सकता। अब अगर वह आदमी अपने मफाद की खातिर ऐसे माहौल से समझौता करके उसमें पड़ा रहे और जो चीज उसे हक नज़र आए उसके हक होने का एलान न करे, यहां तक कि इसी हाल में मर जाए तो उसने अपनी जान पर जुल्म किया। इसी तरह कोई कैम है जिसका एक कैमी मजहब है। वह उसी शख्स को एजज अत्ता करती है जो उसके कैमपरस्ताना मजहब को अपनाए। जो शख्स ऐसा न करे वह उसे कुबूल करने से इंकार कर देती है। ऐसी हालत में अगर एक शख्स उस कैम का साथी बनता है और इसी हाल में उसको मौत आ जाती है तो उसने अपनी जान पर जुल्म किया। इसी तरह एक माहौल में हक की दावत उठती है। उस वक्त जरूरत होती है कि बिखरे हुए अहले ईमान उसकी पुश्त पर जमा हों। वे अपनी सलाहियतों को उसकी खिदमत में लगाएं। वे अपने माल से उसकी मदद करें। मगर ईमान वाले अपने फायदों और मस्लेहतों के खोल में पड़े रहते हैं। वे ऐसा नहीं करते कि अपने ख़ेल से बाहर आए और हक के क़फ़िले में शरीक होकर उसकी कुव्वत का बाइस बनें। अगर वे इसी हाल में अपनी जिंदगी के दिन पूरे कर देते हैं तो वे खुदा के यहां इस हाल में पहुंचेंगे कि उन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था। ताहम वे लोग इससे अपवाद हैं जो इतने मजबूर हों कि उनसे कोई तदवीर न बन रही हो और न बाहर से उनके लिए कोई राह खुल रही हो।

आदमी अपने माहौल में नामुवाफिक (प्रतिकूल) हालात को देखकर समझ लेता है कि सारी दुनिया उसके लिए ऐसी ही नामुवाफिक होगी। मगर खुदा की वसीअ दुनिया में तरह-तरह के लोग बसते हैं। यहां अगर 'मक्का' है जहां दाओ को पत्थर मारे जाते हैं तो यहां 'यसरिब' (मदीना) भी है जहां दाओ का इस्तकबाल किया जाता है। इसलिए आदमी को माहौल से मुसालिहत के बजाए माहौल की तब्दीली के उसूल को अपनाना चाहिए। ऐन मुमकिन है कि नये मकाम को अपना मैदाने अमल बनाना, उसके लिए नये इम्कानात का दरवाजा खोलने का सबब बन जाए।

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ فِي رَمٍ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَافِةً مِنْهُمْ مَعَكَ وَلِيَاخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنَ الرَّاكِعِينَ وَارْكُوعًا وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَلْيُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلِيَاخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَذَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۖ وَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْفُورًا ۖ وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ إِنْ تَكُونُوا تَأْلُفُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلُمُونَ كَمَا تَأْلُمُونَ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

और जब तुम जमीन में सफर करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज में कमी करो, अगर तुम्हें डर हो कि मुंकिर तुम्हें सताएंगे। बेशक मुंकिर लोग तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं। और जब तुम मुसलमानों के दर्मियान हो और उनके लिए नमाज कायम करो तो चाहिए कि उनकी एक जमाअत तुम्हारे साथ खड़ी हो और वह अपने हथियार लिए हुए हो। पस जब वे सज्दा कर चुकें तो वे तुम्हारे पास से हट जाएं और दूसरी जमाअत आए जिसने अभी नमाज नहीं पढ़ी है और वे तुम्हारे साथ नमाज पढ़ें। और वे भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लिए रहें। मुंकिर लोग चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से किसी तरह ग्राफिल हो जाओ तो

वे तुम पर एकबारगी टूट पड़ें। और तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं अगर तुम्हें वारिश के सबब से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार दो और अपने बचाव का सामान लिए रहो। बेशक अल्लाह ने मुंकिरों के लिए रुसवा करने वाला अजाब तैयार कर रखा है। पस जब तुम नमाज अदा कर लो तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और लेते। फिर जब इल्मीनान हो जाए तो नमाज की इकामत करो। बेक़ नमाज अहले इमान पर मुस्ल वक्तों के साथ फर्ज है। और वैम का पीछा करने से हिम्मत न हारो। अगर तुम दुख उठाते हो तो वे भी तुम्हारी तरह दुख उठाते हैं और तुम अल्लाह से वह उम्मीद रखते हो जो उम्मीद वे नहीं रखते। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (101-104)

दीन में जितने आमाल बताए गए हैं, चाहे वे नमाज और जकात की क्रिम से हों या तब्लीग और जिहाद की क्रिम से, सबका आखिरी मक्सूद अल्लाह की याद है। तमाम आमाल का अस्ल उद्देश्य यह है कि ऐसा इंसान तैयार हो जो इस तरह जिए कि खुदा उसकी यादों में बसा हुआ हो। जिंदगी का हर मोड़ उसको खुदा की याद दिलाने वाला बन जाए। अंदेशे का मौका उसे अल्लाह से डराए, उम्मीद का मौका उसके अंदर अल्लाह का शौक पैदा करे। उसका भरोसा अल्लाह पर हो। उसकी तवज्जोहात अल्लाह की तरफ लगी हुई हों। जो चीज मिले उसे वह अल्लाह की तरफ से आई हुई जाने और जो चीज न मिले उसे वह अल्लाह के हुक्म का नतीजा समझे। उसकी पूरी अंदरूनी हस्ती अल्लाह के जलाल व जमाल में खोई हुई हो। यह मामला इतना अहम है कि जंग के नाजुकतरीन मौके पर भी किसी न किसी शक्ल में नमाज अदा करने का हुक्म हुआ ताकि मौत के किनारे खड़े होकर इंसान को याद दिलाया जाए कि वह अस्ल चीज क्या है जो बंदे को इस दुनिया से लेकर अपने रब के पास जाना चाहिए।

अहले ईमान का भरोसा अगरचे तमामतर अल्लाह पर होता है। मगर इसी के साथ हुक्म है कि दुश्मनों से अपने बचाव का जाहिरी सामान मुहय्या रखो। इसकी वजह यह है कि अल्लाह की मदद जाहिरी सामान के अंदर से होकर ही आती है। अहले ईमान ने अगर अपने बचाव का मुमकिन इतिजाम न किया हो तो गोया उन्होंने वह शक्ल ही खड़ी नहीं की जिसके ढांचे में अल्लाह की मदद उतर कर उनकी तरफ आए। मोमिन को दुनिया में जो मुसीबतें पेश आती हैं वे अल्लाह के उस मंसूबे की कीमत हैं कि वह आजमाइशी हालात पैदा करके देखे कि कौन सच्चाई पर कायम रहने वाला है और कौन दूसरों को नाहक सताने वाला है।

इस्लाम और गैर इस्लाम की कश्मकश में कभी अहले इस्लाम को शिकस्त और नुकसान पहुंच जाता है। उस वक्त कुछ लोग पस्तहिम्मत होने लगते हैं। मगर ऐसे हादसात में भी अल्लाह की मस्तेहत शामिल रहती है। वे इसलिए पेश आते हैं कि बंदे के अंदर मजीद इनाबत और तवज्जोह उभरे और इसके नतीजे में वह अल्लाह की मजीद इनायतों का मुस्तहिक बने।

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَادَ اللَّهُ وَلَا تَكُنْ
لِلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ۖ وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ وَلَا
تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَلُونَ أَنفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا
أَتِيمًا ۖ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ
يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَى مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ حَاطًّا ۝

बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ हक के साथ उतारी है ताकि तुम लोगों के
दर्मियान उसके मुताबिक फैसला करो जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है। और बददयानत
लोगों की तरफ से झगड़ने वाले न बनो। और अल्लाह से बख्शिश मांगो। बेशक
अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। और तुम उन लोगों की तरफ से न झगड़ो जो अपने
आप से खियानत कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख्स को पसंद नहीं करता जो खियानत
वाला और गुनाहगार हो। वे आदमियों से शर्माते हैं और अल्लाह से नहीं शर्माते।
हालांकि वह उनके साथ होता है जबकि वे सरगोशियां (गुप्त बातें) करते हैं उस बात
की जिससे अल्लाह राजी नहीं। और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसका इहाता
(आच्छादन) किए हुए है। (105-108)

इंसान की यह जरूरत है कि वह मिल जुलकर रहे। यही जरूरत कौम या गिरोह को वजूद
में लाती है। इज्तिमाइयत से वाबस्ता होकर एक आदमी अपनी ताकत को हजारों लाखों गुना
बड़ा कर लेता है। मगर धीरे-धीरे ऐसा होता है कि जो चीज इज्तिमाइयत के तौर पर बनी
थी वह इज्तिमाई मजहब का दर्जा हासिल कर लेती है। वह बजातेखुद लोगों का मक्सूद बन
जाती है। अब यह जेहन बन जाता है कि 'मेरा गिरोह चाहे वह सही हो या गलत। मेरी कौम
चाहे वह हक पर हो या बातिल पर' इसका नतीजा यह होता है कि लोगों को अपना हलका
अहम दिखाई देता है और दूसरा हलका ग़ैर अहम। अपने हलके का आदमी अगर बातिल
(असत्य) पर है तब भी उसकी हिमायत जरूरी समझी जाती है और दूसरे हलके का आदमी अगर
हक पर है तब भी उसका साथ नहीं दिया जाता।

किसी गिरोह में यह जेहन बन जाए तो इसका मतलब यह है कि उसने अपनी गिरोही
मस्लेहतों (हितों) और जमाअती तअस्सुबात (विद्वेषों) को मेयार का दर्जा दे दिया। हालांकि
सही बात यह है कि आदमी अल्लाह की हिदायत को मेयार का दर्जा दे और उसकी रोशनी
में अपना रवैया तै करे न कि दुनियावी मस्लेहतों और जमाअती तअस्सुबात के तहत। एक
आदमी गलती करे तो उसका हाथ पकड़ा जाए चाहे वह अपना हो। एक आदमी सही बात कहे
तो उसका साथ दिया जाए चाहे वह कोई ग़ैर हो। यहां तक कि ऐसा मामला जिसमें एक फरीक
अपना हो और एक फरीक बाहर का, तब भी मामले को अपने और ग़ैर की नजर से न देखा
जाए बल्कि हक और नाहक की नजर से देखा जाए और हर दूसरी चीज की परवाह किए बग़ैर

अपने को हक की जानिब खड़ा किया जाए।

सच्चाई को छोड़ना, खुद अपने आपको छोड़ने के हममअना है। जब आदमी दूसरे के साथ
खियानत करता है तो सबसे पहले वह अपने साथ खियानत कर चुका होता है। क्योंकि हर सीने
के अंदर अल्लाह ने अपना एक नुमाइंदा बिठा दिया है। यह इंसान का जमीर है। जब भी आदमी
हक के खिलाफ जाने का इरादा करता है तो यह अंदर का छुपा हुआ हक का नुमाइंदा उसे टोकता
है। इस अंदरूनी आवाज को आदमी दबाता है और उसे नजरअंदाज करता है। इसके बाद ही
यह मुमकिन होता है कि वह इंसान के रास्ते को छोड़े और बेइसाफी के रास्ते पर चल पड़े।
मजीद यह कि जब आदमी नाहक में किसी का साथ देता है तो वह इंसान का लिहाज करने
की वजह से होता है। दुनियावी तअल्लुकात और मस्लेहतों की वजह से वह एक शख्स को
नजरअंदाज नहीं कर पाता इसलिए वह उसे गलत जानते हुए उसका साथी बन जाता है। मगर
नाहक (असत्य) के बावजूद एक शख्स को न छोड़ना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी
खुदा को छोड़ दे। ऐन उस वक्त जब कि वह दुनिया में एक शख्स का साथ देता है, आखिरत
में वह खुदा के साथ से महरूम हो जाता है।

هَآئِهِمْ هَؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلِ اللَّهَ عَنْهُمْ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝ وَمَن يَعْلَمْ سُوًّا أَوْ يَظْلِمُ نَفْسًا
ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُ عَلَى
نَفْسِهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا
فَقَدْ احْتَمَلَ بُحْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ لَكُمُ
طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ أَن يَضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّوكَ إِلَّا أَنفُسُهُمْ وَمَا يَضُرُّوكَ مِن
شَيْءٍ ۖ وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ وَكَانَ
فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝

तुम लोगों ने दुनिया की ज़िंदगी में तो उनकी तरफ से झगड़ा कर लिया। मगर
कियामत के दिन कौन उनके बदले अल्लाह से झगड़ा करेगा या कौन होगा उनका
काम बनाने वाला। और जो शख्स बुराई करे या अपने आप पर जुल्म करे फिर
अल्लाह से बख्शिश मांगे तो वह अल्लाह को बख्शने वाला रहम करने वाला पाएगा।
और जो शख्स कोई गुनाह करता है तो वह अपने ही हक में करता है और अल्लाह
जानने वाला हिक्मत (तत्व ज्ञान) वाला है। और जो शख्स कोई गलती या गुनाह
करे फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने एक बड़ा बोहतान और
खुला हुआ गुनाह अपने सर ले लिया। और अगर तुम पर अल्लाह का फज़ल और

उसकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह ने तो यह ठान ही लिया था कि तुम्हें बहका कर रहेगा। हालांकि वे अपने आप को बहका रहे हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिकमत (तत्व ज्ञान) उतारी है और तुम्हें वह चीज सिखाई है जिसे तुम नहीं जानते थे और अल्लाह का फरस है तुम पर बहुत बड़ा। (109-113)

दुनिया आजमाइश की जगह है। यहां हर आदमी से गलती हो सकती है। खुदा के मामले में भी और बंदों के मामले में भी। जब किसी से कोई गलती हो जाए तो सही तरीका यह है कि आदमी अपनी गलती पर शर्मिन्दा हो। वह अल्लाह की तरफ और ज्यादा तवज्जोह के साथ दौड़े। वह अल्लाह से दरखास्त करे कि वह उसकी गलती को माफ कर दे और आईदा के लिए उसे नेकी की तौफीक दे। जो शख्स इस तरह अल्लाह की पनाह चाहे तो अल्लाह भी उसे अपनी पनाह में ले लेता है। अल्लाह उसके दीनी एहसास को बेदार करके उसे इस काबिल बना देता है कि वह पहले से ज्यादा मोहतात होकर दुनिया में रहने लगे।

दूसरी सूरत यह है कि आदमी जब गलती करे तो वह गलती को मानने के लिए तैयार न हो। बल्कि अपनी गलती को सही साबित करने की कोशिश में लग जाए। वह अपने साथियों की हिमायत से खुद उन लोगों से लड़ने लगे जो उसकी गलती से उसे आगाह कर रहे हैं। जो लोग अपनी गलती पर इस तरह अकड़ते हैं और जो लोग उनका साथ देते हैं वे खुदा के नजदीक बदतरीन मुजरिम हैं। वे अपनी गलती पर पर्दा डालने के लिए जिन अल्फ़ाज का सहारा लेते हैं वे आखिरत में बिल्कुल बेमअना साबित होंगे और जिन हिमायतियों के भरोसे पर वे घमंड कर रहे हैं वे बिलआखिर जान लेंगे कि वे कुछ भी उनके काम आने वाले न थे।

एक शख्स किसी का माल चुराए और जब पकड़े जाने का अंदेश हो तो उसे दूसरे के घर में रख कर कहे कि फलों ने उसे चुराया था। एक शख्स किसी औरत को अपनी हवस का निशाना बनाना चाहे और जब वह पाक दामन औरत उसका साथ न दे तो वह झूठे अफसाने गढ़कर उस औरत को बदनाम करे। दो आदमी मिल कर एक काम शुरू करें। इसके बाद एक शख्स को महसूस हो कि उसकी जाती मस्तेहतें मजरूह हो रही हैं, वह तदबीर करके उस काम को बंद करा दे और उसके बाद मशहूर करे कि इसके बंद होने की जिम्मेदारी दूसरे पक्ष के ऊपर है। ये सब अपना जुर्म दूसरे के सर डालने की कोशिशें हैं। मगर ऐसी कोशिशें सिर्फ आदमी के जुर्म को बढ़ाती हैं, वे उसे जुर्म से मुक्त साबित नहीं करतीं। अल्लाह का सबसे बड़ा फरस यह है कि वह हिदायत के दरवाजे खोले। वह आदमी को समझाए कि गलती करने के बाद अपनी गलती को मान लो न कि बहस करके अपने को सही साबित करो। किसी से मामला पड़े तो साथियों के बल पर घमंड न करो बल्कि अल्लाह से डर कर तवाज़ोअ (विनम्रता) का अंदाज इस्तिआर करो। किसी के खिलाफ कार्रवाई करने का मौक़ा मिल जाए तो अपने को कामयाब समझ कर खुश न हो बल्कि अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हें जालिम बनने से बचाए।

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ جُحُولِهِمْ إِلَّا مَنَ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ يَنَ
تَّائِسٍ وَمَن يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ١٠٩
وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ
الْمُؤْمِنِينَ نُؤَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ١١٠

उनकी अक्सर सरगोशियों (कानाफूसियों) में कोई भलाई नहीं। भलाई वाली सरगोशी सिर्फ उसकी है जो सदका करने को कहे या किसी नेक काम के लिए या लोगों में सुलह कराने के लिए कहे। जो शख्स अल्लाह की खुशी के लिए ऐसा करे तो हम उसे बड़ा अज़्र अता करेंगे। मगर जो शख्स रसूल की मुख़ालिफ़त करेगा और मोमिनों के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर चलेगा, हालांकि उस पर राह वाजेह हो चुकी, तो उसे हम उसी तरफ चलाएंगे ज़िधर वह खुद फिर गया और उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरा ठिकाना है। (114-115)

हक की बेआमेज़ (विशुद्ध) दावत जब उठती है तो वह ज़मीन पर खुदा का तराजू खड़ा करना होता है। उसकी मीज़ान में हर आदमी अपने को तुलता हुआ महसूस करता है। हक की दावत हर एक के ऊपर से उसका जाहिरी पर्दा उतार देती है और हर शख्स को उसके उस मक़ाम पर खड़ा कर देती है जहां वह हकीक़त के एतबार से था। यह सूरतेहाल इतनी सख़्त होती है कि लोग चीख उठते हैं। सारा माहौल दाजी के लिए ऐसा बन जाता है जैसा वह अंगारों के दर्मियान खड़ा हुआ हो।

जो लोग दावते हक की तराजू में अपने आप को बेवज़न होता हुआ महसूस करते हैं उनके अंदर ज़िद और घमंड के जज्बात जाग उठते हैं। वे तेज़ी से मुख़ालिफ़ना रुख़ पर चल पड़ते हैं। वे चाहने लगते हैं कि ऐसी दावत (आह्वान) को मिटा दें जो उनकी हक़परस्ताना हैसियत को संदिग्ध साबित करती हो। उनके लिए अपनी जबान का इस्तेमाल यह हो जाता है कि वह दावत और दाजी के खिलाफ़ झूठी बातें फैलाएं। उन्हें परास्त करने के मंसूबे बनाएं। वह लोगों को मना करें कि उसकी माली मदद न करो। जो अल्लाह के बंदे अल्लाह की रस्ती के गिर्द मुत्तहिद हो रहे हों उन्हें बदगुमानियों में मुब्तला करके मुत्तशिर करें।

इसके बरअक्स जो लोग अपनी फ़ितरत को ज़िदा रखे हुए थे उन्हें अल्लाह की मदद से यह तौफीक मिलती है कि वे उसके आगे झुक जाएं, वे उसका साथ दें, वे अपनी ज़िदगी को उसके मुताबिक़ ढालना शुरू कर दें। ऐसे लोगों के लिए उनकी जबान का इस्तेमाल यह होता है कि वे खुले तौर पर सच्चाई का एतराफ़ कर लें। वे लोगों से कहें कि यह अल्लाह का काम है इसमें अपना माल और अपना वक़्त खर्च करो। वे लोगों को प्रेरित करें कि वे अपनी कुव्वतों को नेकी और भलाई के कामों में लगाएं। वे आपस में रंजिशों और शिकायतों को दूर करने की कोशिश करें। हक़ का एतराफ़ उनके अंदर जो नफ़िसयात जगाता है उसका कुदरती नतीजा है कि वे इस किस्म के कामों में लग जाएं।

अल्लाह के नज़ीक यह एक नाक़बिल माफी जुर्म है कि हक की दावत की मुख़लिफ़त की जाए और जो लोग हक की दावत के गिर्द जमा हुए हैं उन्हें अपनी दुश्मनी की आग में जलाने की कोशिश की जाए। दूसरे अक्सर गुनाहों में यह इम्कान रहता है कि वे इंसान की ग़फलत या कमजोरी की वजह से हुए हों। मगर दावते हक की मुख़लिफ़त तमामतर सरकशी की वजह से होती है। और सरकशी किसी आदमी का वह जुर्म है जिसे अल्लाह कभी माफ नहीं करता, इल्ला यह कि वह अपनी ग़लती का इकरार करे और सरकशी से बाज आ जाए। दीन की दावत जब भी अपनी बेआमेज शक्ल में उठती है तो वह एक खुदाई काम होता है जो खुदा की खुसूसी मदद पर शुरू होता है। ऐसे काम की मुख़लिफ़त करना गोया खुदा के मुकाबले में खड़ा होना है और कौन है जो खुदा के मुकाबले में खड़ा होकर कामयाब हो।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا بَعِيدًا ۖ إِنَّ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنْسَانًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا الشَّيْطَانَ مَرِيدًا ۚ لَعَنَهُ اللَّهُ وَقَالَ لَا تَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ۖ وَلَا خُلَّةً لَهُمْ وَلَا مَرْثَةً لَهُمْ وَلَا مَرْثَةً لَهُمْ وَلِأَنْ تَتَّخِذَ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ۖ يَعِدُهُمْ وَيُمِيتُهُمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۚ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ۖ

बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शेगा कि उसका शरीक ठहराया जाए और इसके सिवा गुनाहों को बख़्श देगा जिसके लिए चाहेगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया वह बहक कर बहुत दूर जा पड़ा। वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं देवियों को और वे पुकारते हैं सरकश शैतान को। उस पर अल्लाह ने लानत की है। और शैतान ने कहा था कि मैं तेरे बंदों से एक मुकर्र हिस्सा लेकर रहूंगा। मैं उन्हें बहकाऊंगा और उन्हें उम्मीदें दिलाऊंगा और उन्हें समझाऊंगा तो वे चौपायों के कान काटेंगे और उन्हें समझाऊंगा तो वे अल्लाह की बनावट को बदलेंगे और जो शख्स अल्लाह के सिवा शैतान को अपना दोस्त बनाए तो वह खुले हुए नुक्सान में पड़ गया। वह उन्हें वादा देता है और उन्हें उम्मीदें दिलाता है और शैतान के तमाम वादे फरेब के सिवा और कुछ नहीं। ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे।

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे हमेशा उसमें रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है और अल्लाह से बढ़कर कौन अपनी बात में सच्चा होगा। (116-122)

जो शख्स एक अल्लाह को पकड़ ले उसके अमल की जड़ें खुदा में कायम हो जाती हैं। उससे वक्ती लज़िश (कोताही) भी होती है। मगर इसके बाद जब वह पलटता है तो दुबारा वह हकी की सिरे को पा लेता है। और जो शख्स अल्लाह के सिवा कहीं और अटका हुआ हो वह गोया उस ज़मीन से महरूम है जो इस कायनात में वाहिद (एक मात्र) हकी की ज़मीन है। बजाहिर अगर वह कोई अच्छा अमल करे तब भी वह खुदा के स्रोत से निकला हुआ अमल नहीं होता। बल्कि वह एक ऊपरी अमल होता है जो मामूली झटका लगते ही बातिल (असत्य) साबित हो जाता है। यही वजह है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ किया हुआ अमल आखिरत में अपना नतीजा दिखाता है और शिर्क (बहुदेववाद) के साथ किया हुआ अमल इसी दुनिया में बर्बाद होकर रह जाता है, वह आखिरत तक नहीं पहुंचता।

इस दुनिया में आदमी का असली मुकाबला शैतान से है। ताहम शैतान के पास कोई ताक़त नहीं। वह इतना ही कर सकता है कि आदमी को लफ़ी वादों का फ़रेब दे और फ़र्ज़ तमन्नाओं में उलझाए। और इस तरह लोगों को हक से दूर कर दे। शैतान की गुमराही की दो खास सूरतें हैं। एक तवह्मपरस्ती (अंधविश्वास) और दूसरे खुदा की तख़्खीक (रचनाओं) में फ़र्क करना। तवह्मपरस्ती यह है कि किसी चीज़ से ऐसे नतीजे की उम्मीद कर ली जाए जिस नतीजे का कोई तअल्लुक उससे न हो। मसलन स्वनिर्मित मान्यताओं की बुनियाद पर अल्लाह के सिवा किसी चीज़ को मामलात में प्रभावकारी मान लेना, हालांकि इस दुनिया में अल्लाह के सिवा किसी के पास कोई ताक़त नहीं। या ज़िंदगी को अमलन दुनिया को हासिल करने में लगा देना और आखिरत के बारे में फ़र्ज़ी खुशख़्बालियों की बुनियाद पर यह उम्मीद कायम कर लेना कि वह अपने आप हासिल हो जाएगी। शैतान के बहकावे का दूसरा तरीका अल्लाह के बताए हुए नक्शे को बदलना है। खुदा ने इंसान को इस फ़ितरत पर पैदा किया है कि वह अपनी तमाम तवज्जोह अल्लाह की तरफ लगाए, इस फ़ितरत को बदलना यह है कि इंसान की तवज्जोहात को दूसरी-दूसरी चीज़ों की तरफ मायल कर दिया जाए। या किसी मक़सद को हासिल करने का जो तरीका फ़ितरी तौर पर मुकर्र किया गया है उसे बदल कर किसी खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तरीके से उसे हासिल करने की कोशिश की जाए। कायनात के खुदाई नक्शे की मुताबिक़त में इंसान को जिस तरह रहना चाहिए उस नक्शे को तलपट कर दिया जाए।

لَيْسَ بِأَمَانِيكُمْ وَلَا أَمَانِي أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۚ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ

دِينًا قَرِيبًا مِّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَابْتَعِدَ لِبُرْهَيْنِ حَنِيفًا وَاتَّخَذَ
اللَّهُ لِبُرْهَيْنِ خَلِيلًا ۖ وَاللَّهُ مَافِي السَّمَوَاتِ وَمَافِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

۱۸
۱۷

न तुम्हारी आरजुओं (कामनाओं) पर है और न अहले किताब की आरजुओं पर। जो कोई भी बुरा करेगा उसका बदला पाएगा। और वह न पाएगा अल्लाह के सिवा अपना कोई हिमायती और न मददगार। और जो शरूअ कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे। और उन पर जरा भी जुल्म न होगा। और उससे बेहतर किस का दीन है जो अपना चेहरा अल्लाह की तरफ झुका दे और वह नेकी करने वाला हो। और वह चले इब्राहीम के दीन पर जो एक तरफ का था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था। और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह हर चीज का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (123-126)

खुदा और आखिरत को मानने वाले लोग जब दुनियापरस्ती में ग़र्क होते हैं तो वे खुदा और आखिरत का इंकार करके ऐसा नहीं करते। वे सिर्फ यह करते हैं कि आखिरत के मामले को रस्मी अकीदे के खाने में डाल देते हैं और अमलन अपनी तमाम महनतें और सरगर्मियां दुनिया को हासिल करने में लगा देते हैं। दुनिया की इज्जत और दुनिया के फायदे को समेटने के मामले में वे पूरी तरह संजीदा होते हैं। इन्हें पाने के लिए उनके नजदीक मुकम्मल जद्दोजहद जरूरी होती है। मगर आखिरत की कामयाबी को पाने के लिए सिर्फ खुशफहमियां उन्हें काफी नजर आने लगती हैं। किसी बुर्जा की सिफारिश, किसी बड़े गिरेह से वाबस्तगी, कुछ पाक कलिमात का विर्द (जाप), बस इस किस्म के सस्ते आमाल से यह उम्मीद कायम कर ली जाती है कि वह आदमी को जहन्नम की भड़कती हुई आग से बचाएंगे और उसे जन्नत के पुरबहार बागों में दाखिल करेंगे। मगर इस किस्म की खुशख्यालियां चाहे उन्हें कितने ही खूबसूरत अल्फाज में बयान किया गया हो, वे किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। अल्लाह का निजम हद दर्जा मोहकम निजम है। उसके यहां तमाम फैसले हकीमता की बुनियाद पर होते हैं न कि महज आरजुओं की बुनियाद पर। अल्लाह की अदालत में हर आदमी का अपना अमल देखा जाएगा और जैसा जिसका अमल होगा ठीक उसी के मुताबिक उसका फैसला होगा। अल्लाह के इंसाफ के कानून के सिवा कोई भी दूसरी चीज नहीं जो अल्लाह के यहां फैसले की बुनियाद बनने वाली हो।

अल्लाह का वह बंदा कौन है जिस पर अल्लाह अपनी रहमतों की बारिश करेगा। इसकी एक तारीखी मिसाल इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। ये वे बंदे हैं जो दुनिया में अल्लाह के मोमिन बनकर रहें। जो अपने आप को हमहतन अपने रब की तरफ यकसू कर लें। जो अपनी वफादारियां पूरी तरह अल्लाह के लिए ख़ास कर दें। उन्होंने दुनिया में अपने मामलात को इस

तरह कायम किया हो कि वे जुल्म और सरकशी से दूर रहने वाले और इंसाफ और तवाज़ोअ (विनम्रता) के साथ ज़िंदगी बसर करने वाले हों। चेहरा आदमी के पूरे वजूद का नुमाइंदा होता है। चेहरा खुदा की तरफ फेरने का मतलब यह है कि आदमी अपने पूरे वजूद को खुदा की तरफ फेर दे।

अल्लाह तमाम कायनात का मालिक है। उसके पास हर किस्म की ताकतें हैं। मगर मौजूदा दुनिया में अल्लाह ने अपने को ग़ैब (अदृश्य) के पर्दे में छुपा दिया है। दुनिया में जितनी भी ख़राबियां पैदा होती हैं इसीलिए पैदा होती हैं कि आदमी खुदा को नहीं देखता, वह समझ लेता है कि मैं आजाद हूँ कि जो चाहूँ करूँ। अगर आदमी यह जान ले कि इंसान के इख्तियार में कुछ नहीं तो आदमी पर जो कुछ कियामत के दिन बीतने वाला है वह उस पर आज ही बीत जाए।

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتِمَّى النِّسَاءِ الَّتِي لَا تَوْلُونَ هُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَرَغِبُونَ أَنْ تَكْدَحُوا هُنَّ وَالسُّتْعَفَيْنِ مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَنْ تَقُولُوا لِيَتِمَّى بِالْقِسْطِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ۖ وَإِنْ أُمْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الْأَنفُسُ الشُّحَّ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۖ وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۖ وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِّن سَعَتِهِ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ۝

और लोग तुमसे औरतों के बारे में हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म देता है और वे आयतें भी जो तुम्हें किताब में उन यतीम औरतों के बारे में पढ़कर सुनाई जाती हैं जिन्हें तुम वह नहीं देते जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो कि उन्हें निकाह में ले आओ। और जो आयतें कमजोर बच्चों के बारे में हैं और यतीमों के साथ इंसाफ करो और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को खूब मालूम है। और अगर किसी औरत को अपने शोहर की तरफ से बदसलूकी या बेरुखी का अंदेशा हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं कि दोनों आपस में कोई सुलह कर लें और सुलह बेहतर है। और हिंस (लोभ) इंसान की तबीअत में बसी हुई है। और अगर तुम अच्छा सुलूक करो और खुदातरसी (ईश परायणता) से काम लो तो जो कुछ तुम करोगे अल्लाह उससे बाख़बर है। और तुम हरगिज औरतों को बराबर नहीं रख सकते अगरचे तुम ऐसा करना

चाहो। पस बिल्कुल एक ही तरफ न झुक पड़ो कि दूसरी को लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह (सुधार) कर लो और डरो तो अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। और अगर दोनों जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी वुस्अत (सामर्थ्य) से बेएहतियाज (निराश्रित) कर देगा और अल्लाह बड़ी वुस्अत वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (127-130)

पूछने वालों ने कुछ समाजी मामलों के बारे में शरीअत का आदेश पूछा था। इस सिलसिले में हुक्म बताते हुए खैर (कल्याण) व इंसाफ और परोपकार व तक्वा पर जोर दिया गया। इसकी वजह यह है कि कोई भी कानून उसी वक्त अपने मकसद को पूरा करता है जब कि उसे अमल में लाने वाला आदमी अल्लाह से डरता हो और फिलवाकैअ इंसाफ का तालिब हो। अगर ऐसा न हो तो कानून की जाहिरी तामील के बावजूद हकीकी बेहतरी पैदा नहीं हो सकती। समाज की वाकई इस्लाह सिर्फ उस वक्त होती है जब कि बुराई करने वाला बुराई से इसलिए डरे कि अस्ल मामला खुदा से है और बुराई करने के बाद मैं किसी तरह उसकी पकड़ से बच नहीं सकता। इसी तरह भलाई करने वाला यह सोचे कि लोगों की तरफ से चाहे मुझे इसका सिला (प्रतिफल) न मिले मगर अल्लाह सब कुछ देख रहा है और वह जरूर मुझे इसका इनाम देगा। जहन्नम का अंदेशा आदमी को जुल्म से रोकता है और जन्नत की उम्मीद उस नुक्सान को बर्दाश्त करने का हौसला पैदा कर देती है जो हकपरस्ताना जिंदगी के नतीजे में लाजिमन सामने आता है।

मियां-बीवी या दो आदमियों के इस्तेलाफ की वजह हमेशा हिंस होती है। एक फरीक (पक्ष) दूसरे फरीक का लिहाज किए बगैर सिर्फ अपने मुतालबात को पूरा करना चाहता है। यह जेहनियत हर एक को दूसरे की तरफ से रैर मुतमइन बना देती है। सही मिजाज यह है कि दोनों फरीक एक दूसरे की माजुरी को समझें और एक-दूसरे की रियायत करते हुए किसी आपसी समाधान पर पहुंचने की कोशिश करें। अल्लाह का मुतालबा जिस तरह यह है कि एक इंसान दूसरे इंसान की रियायत करे, इसी तरह अल्लाह भी अपने बंदों के साथ आखिरी हद तक रियायत फरमाता है। अल्लाह के यहां आदमी की पकड़ उसकी फितरी कमजोरियों पर नहीं है बल्कि उसकी उस सरकशी पर है जो वह जान बूझकर करता है। अगर आदमी अल्लाह से डरे और दिल में इस्लाह (सुधार) का जब्बा रखे तो वह नीयत की दुरुस्तगी के साथ जो कुछ करेगा उसके लिए वह अल्लाह के यहां कबिले माफी करार पाएगा। इसी के साथ आदमी को कभी इस गलतफहमी में न पड़ना चाहिए कि वह दूसरे का काम बनाने वाला है। हर एक का काम बनाने वाला सिर्फ अल्लाह है, चाहे वह बजाहिर एक तरह के हालात में हो या दूसरी तरह के हालात में।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِیْنَ اٰوْتُوْا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِیَّاكُمْ اَنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى

الْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفِيْرًا حَمِيْدًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَ كَفٰی بِاللّٰهِ وَكِیْلًا ۝ اِنْ یَّشَآءْ یُّذْهِبْكُمْ اَیَّهَا النَّاسُ وَیَاْتِ بِاٰخَرِیْنِ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰی ذٰلِكَ قَدِیْرًا ۝ مَنْ كَانَ یُرِیْدْ ثَوَابَ الدُّنْیَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِیْعًا بَصِیْرًا ۝

और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और हमने हुक्म दिया है उन लोगों को जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और तुम्हें भी कि अल्लाह से डरो। और अगर तुमने न माना तो अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है सब खूबियों वाला है। और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और भरोसे के लिए अल्लाह काफी है। अगर वह चाहे तो तुम सबको ले जाए ऐ लोगो, और दूसरों को ले आए। और अल्लाह इस पर कादिर है। जो शख्स दुनिया का सवाब चाहता हो तो अल्लाह के पास दुनिया का सवाब भी है और आखिरत का सवाब भी। और अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है। (131-134)

दुनिया में आदमी को जो नेक जिंदगी इस्तिहार करना है वह उसे उसी वक्त इस्तिहार कर सकता है जब कि वह अंदर से अल्लाह वाला बन गया हो। अल्लाह को मालिके कायनात की हैसियत से पा लेना, सिर्फ अल्लाह से डरना और सिर्फ अल्लाह पर भरोसा करना, आखिरत को अस्ल समझकर उसकी तरफ मुतवज्जह हो जाना, यही वे चीजें हैं जो किसी आदमी को इस कबिल बनाती हैं कि वह दुनिया में वह सालेह (नेक) जिंदगी गुजारे जो अल्लाह को मल्बूब है और जो उसे आखिरत की दुनिया में कामयाब करने वाली है। इसीलिए नबियों की तालीमात में हमेशा इसी पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता रहा है।

मौजूदा दुनिया आजमाइश के लिए है। यहां हर आदमी को जांच कर देखा जा रहा है कि कौन अच्छा है और कौन बुरा। इस मकसद के लिए मौजूदा दुनिया को इस ढंग पर बनाया गया है कि यहां आदमी को हर किस्म के अमल की आजमी हो। यहां तक कि उसे यह मौक़ा भी हासिल हो कि वह अपने स्याह को सफ़ेद कह सके और अपनी बेअमली को अमल का नाम दे। यहां एक आदमी के लिए मुमकिन है कि वह बुराइयों में मुत्तला हो मगर उसे बयान करने के लिए वह बेहतरीन अल्फ़ाज पा ले। यहां यह मुमकिन है कि आदमी एक खुली हुई सच्चाई का इंकार कर दे और अपने इंकार की एक खूबसूरत तौजीह तलाश कर ले। यहां यह मुमकिन है कि आदमी ओहदों की चाहत, शोहरतपसंदी, नफ़ाअंदोजी और मस्लेहत पर अपनी जिंदगी की तामीर करे और इसके बावजूद वह लोगों को यह यकीन दिलाने में कामयाब हो जाए कि वह ख़ालिस हक के लिए काम कर रहा है।

यहां यह मुमकिन है कि एक शख्स खुदा के दीन को अपने दुनियावी और मादूदी मकासिद के हुसूल का जरिया बनाए और फिर भी वह दुनिया में फलता और फूलता रहे। यहां यह मुमकिन है कि आदमी हलाल को छोड़कर हराम जरियों को इख्तियार करे, इंसाफ के बजाए वह जुल्म के रास्ते पर चले और इसके बावजूद उसका हाथ पकड़ने वाला कोई न हो। इन मुखल्लिफ मौकों पर आदमी चाहे तो अपने को हक व सदाकत का पाबंद बना ले और चाहे तो सरकशी और बेइंसाफी की तरफ चल पड़े। हकीकत यह है कि दीन के तमाम अहकाम में अहमियत की चीज यह है कि आदमी अल्लाह से डरता है या नहीं। यह सिर्फ अल्लाह का डर है जो उसे जिम्मेदारना जिंदगी गुजारने के काबिल बनाता है। अगर अल्लाह का डर न हो तो एक ऐसी दुनिया में किसी को बातिल (असत्य) से रोकने वाली क्या चीज हो सकती है जहां बातिल को भी हक के पैराए में बयान किया जा सकता हो और जहां बेइंसाफी की बुनियाद पर भी बड़ी-बड़ी तरकियां हासिल की जा सकती हों। जहां हर जलम को अपने जुल्म को छुपाने के लिए खूबसूरत अल्फज मिल जाते हों।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ
أَنفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ إِن يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أُولَىٰ
بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَن تَعْدُوا وَإِن تَلُوا أَوْ تَعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانُ
بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا

ऐ ईमान वालो, इंसाफ पर खूब कायम रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो, चाहे वह तुम्हारे या तुम्हारे मां-बाप या अजीजों के खिलाफ हो। अगर कोई मालदार है या मोहताज तो अल्लाह तुमसे ज्यादा दोनों का खैरख्वाह है। पस तुम ख्वाहिश की पैरवी न करो कि हक से हट जाओ। और अगर तुम कजी (हेर-फेर) करोगे या पहलूतही (अवहेलना) करोगे तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (135)

इज्तिमाई जिंदगी में बार-बार ऐसा होता है कि आदमी के सामने ऐसा मामला आता है जिसमें एक रास्ता अपने मफाद और ख्वाहिश का होता है और दूसरा हक और इंसाफ का। जो लोग अल्लाह की तरफ से शाफिल होते हैं जिन्हें यकीन नहीं होता कि अल्लाह हर वक्त उन्हें देख रहा है वे ऐसे मौकों पर अपनी ख्वाहिश के रूख पर चल पड़ते हैं। वे इसे कामयाबी समझते हैं कि हक की परवाह न करें और मामले को अपने मफाद और अपनी मस्लेहत के मुताबिक तै करें। मगर जो लोग अल्लाह से डरते हैं, जो अल्लाह को अपना निगरा बनाए हुए हैं वे तमामतर इंसाफ के पहलू को देखते हैं और वही करते हैं जो हक व इंसाफ का तक्काज हो। उनकी कोशिश हमेशा यह होती है कि उन्हें मौत आए तो इस हाल में आए कि उन्होंने किसी के साथ बेइंसाफी न की हो, वे अपने आपको मुकम्मल तौर पर न्याय पर कायम किए

हुए हों।

उनकी इंसाफपसंदी का यह जज्बा इतना बढ़ा हुआ होता है कि उनके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वे इंसाफ से हटा हुआ कोई रवैया देखें और उसे बर्दाश्त कर लें। जब भी ऐसा कोई मामला सामने आता है कि एक शख्स दूसरे के साथ नाइंसाफी कर रहा हो तो वे ऐसे मौके पर हक का एलान करने से बाज नहीं रहते। अगर इंसाफ का एलान करने में उनके करीबी तअल्लुक वालों पर जद पड़ती हो या उनकी अपनी मस्लेहतें प्रभावित होती हों तब भी वे वही कहते हैं जो इंसाफ की रू से उन्हें कहना चाहिए। उनकी जबान खुलती है तो अल्लाह के लिए खुलती है न कि किसी और चीज के लिए। इसी तरह यह बात भी ग़लत है कि साहिबे मामला ताक़तवर हो तो उसे उसका हक दिया जाए और अगर साहिबे मामला कमजोर हो तो उसका हक उसे न दिया जाए। मोमिन वह है जो हर आदमी के साथ इंसाफ करे चाहे वह ज़ेआवर हो या कमज़ोर।

जब कोई आदमी नाइंसाफी का साथ दे तो वह यह कहकर ऐसा नहीं करता कि मैं नाइंसाफी करने वाले का साथी हूँ। बल्कि वह अपनी नाइंसाफी को इंसाफ का रंग देने की कोशिश करता है। ऐसे मौके पर हर आदमी दो में से कोई एक रवैया इख्तियार करता है। या तो वह यह करता है कि बात को बदल देता है। वह मामले की नौइयत को ऐसे अल्फाज में बयान करता है जिससे जाहिर हो कि यह नाइंसाफी का मामला नहीं बल्कि ऐन इंसाफ का मामला है, जिसके साथ ज्यादाती की जा रही है वह इसी का मुस्तहिक है कि उसके साथ ऐसा किया जाए। दूसरी सूरत यह है कि आदमी ख़ामोशी इख्तियार कर ले। यह जानते हुए कि यहां नाइंसाफी की जा रही है वह कतरा कर निकल जाए और जो कहने की बात है उसे जबान पर न लाए। इस किस्म का तर्ज अमल साबित करता है कि आदमी अपने ऊपर अल्लाह को निगरा नहीं समझता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ
رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ
وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا
ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ أُذُوا أَكْفَرًا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرْ لَهُمْ
وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۚ بُشِّرِ الْمُتَفِقِينَ بِأَن لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ الَّذِينَ
يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۗ أَلِيَتَعُونَ عِندَهُمُ الْعِزَّةُ فَإِنَّ
الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۝

ऐ ईमान वालो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले नाजिल की। और जो शरूख इंकार करे अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आखिरत के दिन का तो वह बहक कर दूर जा पड़ा। बेशक जो लोग ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर इंकार में बढ़ते गए तो अल्लाह उन्हें हरगिज नहीं बख्शेगा और न उन्हें राह दिखाएगा। मुनाफिकों (पाखंडियों) को खुशखबरी दे दो कि उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। वे लोग जो मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वे उनके पास इज्जत की तलाश कर रहे हैं, तो इज्जत सारी अल्लाह के लिए है। (136-139)

‘ईमान वालो ईमान लाओ’ ऐसा ही है जैसे कहा जाए कि मुसलमानो मुसलमान बनो। अपने को मुसलमान कहना या मुसलमान समझना इस बात के लिए काफी नहीं कि आदमी अल्लाह के यहां भी मुसलमान करार पाए। अल्लाह के यहां सिर्फ वह शरूख मुसलमान करार पाएगा जो अल्लाह को इस तरह पाए कि वही उसके यकीन व एतमाद का मर्कज बन जाए। जो रसूल को इस तरह माने कि हर दूसरी रहनुमाई उसके लिए बेहकीकत हो जाए। जो आसमानी किताब को इस तरह अपनाए कि उसकी सोच और जब्जात बिल्कुल उसके ताबेअ हो जाएं। जो फरिश्तों के अक्रीदे को इस तरह अपने दिल में बिठाए कि उसे महसूस होने लगे कि उसके दाएं-बाएं हर वक्त खुदा के चौकीदार खड़े हुए हैं। जो आखिरत का इस तरह इक्लार करे कि वह अपने हर कैल व फेअल (कयनी-करनी) को आखिरत की मीजान पर जांचने लगे। जो शरूख इस तरह मोमिन बने वही अल्लाह के नजदीक उस रास्ते पर है जो हिदायत और कामयाबी का रास्ता है। और जो शरूख इस तरह मोमिन न बने वह एक भटका हुआ इंसान है, चाहे वह अपने नजदीक खुद को कितना ही मोमिन और मुस्लिम समझता हो।

मानने और न मानने का यह मअरका आदमी की जिंदगी में हर वक्त जारी रहता है। जब भी कोई मामला पड़ता है तो आदमी का जेहन दो में से किसी एक रुख पर चल पड़ता है। या ख्वाहिशात की तरफ या हक के तक्जिऐ पूरे करने की तरफ। अगर ऐसा हो कि मामले के वक्त आदमी की सोच और जब्जात ख्वाहिश की दिशा में चल पड़े तो गोया ईमान लाने वाले ने ईमान से इंकार किया। इसके बरअक्स अगर वह अपनी सोच और जब्जात को हक का पाबंद बना ले तो गोया ईमान लाने वाला ईमान ले आया। आदमी मुसलमान बन कर दुनिया की जिंदगी में दाखिल होता है। इसके बाद एक हक बात उसके सामने आती है। अब एक शरूख वह है जो ऐसे मौके पर तवाजोअ का रवैया इख्तियार करे और हक का एतराफ कर ले। दूसरा शरूख वह है जिसके अंदर घमंड की नफिसयात जाग उठें और वह उसे ठुकरा दे। पहली सूरत ईमान की सूरत है और दूसरी सूरत ईमान का इंकार करने की। जो शरूख सच्चा मोमिन न हो वह दुनिया की इज्जत व शोहरत को पसंद करता है इसलिए वह उन लोगों की तरफ झुक पड़ता है जिनसे जुड़कर उसकी इज्जत व शोहरत में इजाफा हो, चाहे वे अहले बातिल हों। उसे उन

लोगों से दिलचस्पी नहीं होती जिनसे जुड़ना उसको इज्जत व शोहरत में इजाफा न करे, चाहे वे अहले हक हों।

وَقَدْ سَرَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتَ اللَّهِ يَكْفُرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِثْلُهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۖ الَّذِينَ يَكْرِضُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْنٌ مِنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ مَعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحْذِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۚ

और अल्लाह किताब में तुम पर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की निशानियों का इंकार किया जा रहा है और उनका मजाक किया जा रहा है तो तुम उनके साथ न बैठो यहां तक कि वे दूसरी बात में मशगूल हो जाएं। वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो गए। अल्लाह मुनाफिकों को और मुंकिरों को जहन्नम में एक जगह इकट्ठा करने वाला है। वे मुनाफिक तुम्हारे लिए इंतजार में रहते हैं। अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ से कोई फतह हासिल होती है तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। और अगर मुंकिरों को कोई हिस्सा मिल जाए तो उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे खिलाफ लड़ने पर कादिर (समर्थ) न थे और फिर भी हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया। तो अल्लाह ही तुम लोगों के दर्मियान कियामत के दिन फैसला करेगा और अल्लाह हरगिज मुंकिरों को मोमिनों पर कोई राह नहीं देगा। (140-141)

अल्लाह की पुकार जब भी किसी इंसानी गिरोह में उठती है तो इतनी मजबूत बुनियादों पर उठती है कि दलील के जरिए उसकी काट करना किसी के लिए मुमकिन नहीं रहता। इसलिए जो लोग उसे मानना नहीं चाहते वे उसका मजाक उड़ाकर उसे बेवजन करने की कोशिश करते हैं। जो लोग ऐसा करें वह अपने इस रवैये से यह बता रहे हैं कि वे हक के मामले को कोई संजीदा मामला नहीं समझते और जब आदमी किसी मामले में संजीदा न हो तो उस वक्त उससे बहस करना बिल्कुल बेकार होता है। ऐसे मौके पर सही तरीका यह है कि आदमी चुप हो जाए और उस वक्त का इंतजार करे जब कि गुफ्तगू का विषय बदल जाए और मुखातब इस काबिल हो जाए कि वह बात को सुन सके। जिस मजलिस में खुदा की दावत का मजाक उड़ाया जाए वहां बैठना यह साबित करता है कि आदमी हक के मामले में गैरतमंद नहीं।

मुनाफिक इसकी परवाह नहीं करता कि उसूलपसंदी का तकाजा क्या है बल्कि जिस चीज में फायदा नजर आए उस तरफ झुक जाता है। वह अपने आपको उस हलके के साथ जोड़ता है जिसका साथ देने में उसके दुनियावी हौसले पूरे होते हों, चाहे वह अहले ईमान का हलका हो या ग़ैर अहले ईमान का। वह जिस मजलिस में जाता है उसे खुश करने वाली बातें करता है। मस्तेहतों की बिना पर कभी उसे सच्चे अहले ईमान के साथ जुड़ना पड़े तब भी वह दिल से उनका ख़ैरख़्वाह नहीं होता। क्योंकि सच्चे अहले ईमान का वजूद किसी मुआशिर में हक का पैमाना बन जाता है। इसलिए जो लोग झूठी दीनदारी पर खड़े हुए हों वे चाहते हैं कि ऐसे पैमाने टूट जाएं जो उनकी दीनदारी को संदिग्ध साबित करने वाले हैं। मगर अहले ईमान के बदख़्वाह जो कुछ जोर दिखा सकते हैं इसी दुनिया में दिखा सकते हैं। आखिरत में वे इनके ख़िलाफ कुछ भी न कर सकेंगे।

मुनाफिक वह है जो बजाहिर दीनदार मगर अंदर से बेदीन हो। ऐसे शख्स का अंजाम मुंकिर के साथ होना बताया है कि अल्लाह के नजदीक जाहिरी दीनदारी और खुली हुई बेदीनी में कोई फर्क नहीं। क्योंकि जाहिर की सतह पर चाहे दोनों मुख़लिफ नजर आए मगर बातिन (भीतर) की सतह पर दोनों एक होते हैं। और अल्लाह के यहां एतबार बातिन का है न कि ज़हिर का।

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يُدْرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ مَذْذَبَيْنَ بَيْنَ ذَلِكَ ۖ لَا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۖ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۖ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَجَةِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ۖ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِي اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِكُمْ إِن شَاءَ لَكُمْ تَسْوِفٌ وَأَمَّا الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ فَإِنَّ شَرَّكُمْ لَكُمْ وَشَرُّكُمْ لَكُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۖ

मुनाफिकीन (पाखंडी) अल्लाह के साथ धोखेबाजी कर रहे हैं। हालांकि अल्लाह ही ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और जब वे नमाज के लिए खड़े होते हैं तो काहिली के साथ खड़े होते हैं महज लोगों को दिखाने के लिए। और वे अल्लाह को कम ही याद करते

हैं। वे दोनों के बीच लटक रहे हैं, न इधर हैं और न उधर। और जिसे अल्लाह भटका दे तुम उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। ऐ ईमान वालो, मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को अपना दोस्त न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली हुज्जत क़यम कर लो। बेशक मुनाफिकीन दोष के सबसे नीचे के तबके में हैं और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे। अलबत्ता जो लोग तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें और अल्लाह को मजबूती से पकड़ लें और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लें तो ये लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमान वालों को बड़ा सवाब देगा। अल्लाह तुम्हें अजाब देकर क्या करेगा अगर तुम शुक्रगुजारी करो और ईमान लाओ। अल्लाह बड़ा कद्र करने वाला है सब कुछ जानने वाला है। (142-147)

जो लोग अपने को अल्लाह के हवाले किए हुए न हों वे अपने को अपने दुनियावी मफ़ाद (हित) के हवाले किए हुए होते हैं। दुनियावी मफ़ाद जिससे वाबस्ता हो वे उसी के साथ हो जाते हैं चाहे वह दीनदार हो या बेदीन। ऐसे लोग जबान से इस्लाम के अल्फ़ाज बोलते हैं और कुछ इस्लामी आमाल भी जाहिरी हद तक अदा करते रहते हैं। मगर उनका अमल अल्लाह के लिए नहीं होता। बल्कि लोगों की नजर में मुसलमान बने रहने के लिए होता है। उनका असली दीन मौकापरस्ती होता है मगर लोगों के सामने वे अपने को खुदापरस्त जाहिर करने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोग गोया खुदा को धोखा दे रहे हैं। वे खुदा वाले न होकर अपने को खुदा वाला साबित करना चाहते हैं। वे इस्लाम को सच्चा दीन जानते हैं, इसके बावजूद अपने मफ़ादात (हितों) को छोड़ना नहीं चाहते। इसकी वजह से वे दोनों के दर्मियान लटके रहते हैं, न पूरी तरह अपने अकीदे के लिए एकसू होते और न पूरी तरह अपने मफ़ादात के। ऐसे लोग अल्लाह की मदद से महरूम रहते हैं। क्योंकि अल्लाह की मदद का मुस्तहिक (पात्र) बनने के लिए अल्लाह के रास्ते पर जमना ज़रूरी है। और यही चीज उनके यहां मौजूद नहीं होती। हक को मानने वाले और हक का इंकार करने वाले जब अलग-अलग हो चुके हों तो ऐसी हालत में हक का इंकार करने वालों का साथ देना अपने ख़िलाफ़ खुदा की खुली हुज्जत क़यम करना है। यह किसी के कबिले सजा देने का ऐसा सुबूत है जिसके बाद किसी और सुबूत की ज़रूरत नहीं।

इस किस्म के लोग अपने दिखावे के आमाल की बिना पर खुदा की पकड़ से बच नहीं सकते। इस्लाम की जाहिरी नुमाइश के बावजूद हकीकत के एतबार से वे इस्लाम से दूर थे इसलिए उनका अंजाम भी उनकी हकीकत के एतबार से होगा न कि उनके जाहिर के एतबार से। ताहम किसी की गुमराही की वजह से खुदा उसका दुश्मन नहीं हो जाता। इस किस्म के लोग अगर अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा हों, वे अपनी जिंदगी को बदलें, अपनी तवज्जोहात को हर तरफ से मोड़कर अल्लाह की तरफ लगाएं और एकसू होकर दीन के रास्ते पर चलने लगें तो यकीनन अल्लाह उन्हें माफ कर देगा।

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوِّ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ۖ إِنَّ تَبَدُّوا خَيْرًا أَوْ تَخْفَوْهُ أَوْ تَعْفُوا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمُ أَجْرُهُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

अल्लाह बदगोई (कुवाती) को पसंद नहीं करता मगर यह कि किसी पर जुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। अगर तुम भलाई को जाहिर करो या उसे छुपाओ या किसी बुराई से दगुजर करो तो अल्लाह माफ करने वाला कुदरत रखने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इंकार कर रहे हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के दर्मियान तफरीक (विभेद) करें और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे। और वे चाहते हैं कि इसके बीच में एक राह निकालें। ऐसे लोग पक्के मुंकिर हैं और हमने मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी को जुदा न किया उन्हें अल्लाह उनका अज्र देगा और अल्लाह गफूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) है। (148-152)

किसी शख्स के अंदर कोई दीनी या दुनियावी ऐब मालूम हो तो उसे प्रसारित करना अल्लाह को सख्स नापसंद है। नसीहत का हक हर एक को है। मगर नसीहत या तो किसी का नाम लिए बगैर सामान्य रूप में की जानी चाहिए, या संबंधित शख्स से मिलकर तंहाई में। अल्लाह सुबह व शाम लोगों के जुर्मों को नजरअंदाज करता रहता है। बंदों को भी अपने अंदर यही अख्ताक पैदा करना है अलबत्ता अगर एक शख्स मज्जूम हो तो उसके लिए रुख़सत है कि वह जालिम के जुल्म को लोगों से बयान करे। ताहम अगर मज्जूम सब्र कर ले और जुल्म करने वाले को माफ कर दे तो यह उसके हक में ज्यादा बेहतर है। क्योंकि इस तरह वह साबित करता है कि उसे दुनिया के नुक्सान से ज्यादा आखिरत के नुक्सान की फिक्र है। जो शख्स किसी बड़े गम में मुक्तिला हो उसके लिए छोटे गम बेहकीकत हो जाते हैं। यही हाल उस शख्स का होता है जिसके दिल में आने वाले होलनाक दिन का गम समायी हुआ हो। मक्का के लोग इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत को मानते थे। इसी तरह यहूदी

हजरत मूसा की नुबुव्वत को तस्लीम करते थे और मसीही हजरत ईसा की नुबुव्वत को। मगर इन सबने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत को मानने से इंकार कर दिया। उनमें से हर एक माजी (अतीत) के पैगम्बर को मानने के लिए तैयार था मगर उनमें से कोई वक्त के पैगम्बर को मानने के लिए तैयार न हुआ। हालांकि जिन नबियों को वे मान रहे थे वे भी अपने जमाने में उसी किस्म के मुखालिफ़ना रद्देअमल से दो-चार हुए थे जिससे पैगम्बर अरबी सल्ल० को दो-चार होना पड़ा। इस किस्म की हर कोशिश हकपरस्ती और नफ्सपरस्ती के दर्मियान रास्ता निकालने के लिए होती है ताकि ख्वाहिशात का ढांचा भी टूटने न पाए और आदमी खुदा की जन्नत तक पहुंच जाए।

अस्ल यह है कि माजी (अतीत) की नुबुव्वत एक मानी हुई नुबुव्वत होती है जबकि वक्त के पैगम्बर को मानने के लिए आदमी को नया जेहनी सफर तै करना पड़ता है। माजी (अतीत) की नुबुव्वत जमाना गुजरने के बाद एक तस्लीमशुदा नुबुव्वत बन जाती है। वह पैदाइशी तौर पर आदमी के जेहन का जुज बन चुकी होती है। मगर जमाने का पैगम्बर एक विवादित शख्सियत होता है, वह देखने वालों को महज 'एक इंसान' दिखाई देता है। इसलिए उसे मानने के लिए जरूरी होता है कि आदमी एक नया जेहनी सफर करे। वह खुदा को दुवारा शुऊर की सतह पर पाए। माजी के पैगम्बर को मानना तकलीदी (अनुकरणीय) ईमान के तहत होता है और वक्त के पैगम्बर को मानना इरादी ईमान के तहत। मगर अल्लाह के यहां कीमत इरादी ईमान की है न कि तकलीदी ईमान की।

يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تُنِزَلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا أَرَنَا اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ ظِلْمَهُمْ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ وَإِنَّا مُوسَىٰ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۖ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بِبَيِّنَاتِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝

अहले किताब तुमसे यह मुतालबा (मांग) करते हैं कि तुम उन पर आसमान से एक किताब उतार लाओ। पस मूसा से वे इससे भी बड़ी चीज का मुतालबा कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह को बिल्कुल सामने दिखा दो। पस उनकी इस ज्यादाती के सबब उन पर बिजली आ पड़ी। फिर खुली निशानी आ चुकने के बाद उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया। फिर हमने उससे दगुजर किया। और मूसा को हमने खुली हुज्जत अता की। और हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठाया उनसे अहद (वचन) लेने के वास्ते। और हमने उनसे कहा कि दरवाजे में दाखिल हो सर झुकाए हुए और उनसे कहा कि सव्त (सनीचर) के मामले में ज्यादाती न करना। और हमने उनसे मजबूत अहद लिया। (153-154)

खुदा का पैगम्बर इंसानों में से एक इंसान होता है। वह आम आदमी की सूरत में लोगों के सामने आता है। इसलिए लोगों की समझ में नहीं आता कि वे एक आम आदमी को किस तरह खुदा का नुमाइंदा मान लें। वे कैसे यकीन कर लें कि सामने का आदमी एक ऐसा शख्स है जो खुदा की तरफ से बोलने के लिए मुर्कर हुआ है। चुनांचे वे कहते हैं कि जो कलाम तुम पेश कर रहे हो उसे आसमान से आता हुआ दिखाओ या खुदा खुद तुम्हारी तस्दीक (पुष्टि) के लिए आसमान से उतर पड़े तब हम तुम्हारी बात मानेंगे। मगर इस किस्म का मुतालबा हद दर्जे ग़ैर संजीदा मुतालबा है। क्योंकि इंसान का इस्तेहान तो यह है कि वह देखे बग़ैर माने, वह हकीकतों को उनके अर्थपूर्ण रूप में पा ले। ऐसी हालत में दिखा कर मनवाने का क्या फायदा। साथ ही यह कि अगर कुछ देर के लिए आलम के निजाम को बदल दिया जाए और आदमी को उसके मुतालबे के मुताबिक चीजों को दिखा दिया जाए तब भी वह बेफायदा होगा। क्योंकि यह दिखाना बहरहाल वक़्ती होगा न कि मुस्तकिल। और इंसान की आजादी जो उसे सरकशी की तरफ ले जाती है इसके बाद भी बाकी रहेगी। नतीजा यह होगा कि देखने के वक़्त तक वह सहम कर मान लेगा और इसके बाद दुबारा अपनी आजादी का ग़लत इस्तेमाल शुरू कर देगा जैसा कि देखने से पहले कर रहा था। यहूद की मिसाल इसकी ऐतिहासिक पुष्टि करती है।

तूर पहाड़ के दामन में ग़ैर मामूली हालात पैदा करके यहूद से यह अहद लिया गया था कि वे अपने इबादतख़ाने (खुरूज 19 : 16-18) में तवाज़ोअ (विनम्रता, शालीनता) के साथ दाख़िल हों और खुशूअ के साथ अल्लाह की इबादत करें। और यह कि जीविका के लिए जो जद्दोज़हद करें वह अल्लाह के हुदूद में रह कर करें न कि उससे आजाद होकर। मगर यहूद ने इस किस्म के तमाम अहदों को तोड़ दिया।

‘मूसा को हमने सुल्लाने मुबीन (खुली हुज्जत) दी’ अल्लाह का यह मामला हर पैगम्बर के साथ होता है। पैगम्बर अगरचे एक आम इंसान की तरह होता है मगर उसके कलाम और उसके अहवाल में ऐसी खुली हुई दलीलें मौजूद होती हैं जो उसकी खुदाई हैसियत को पूरी तरह साबित कर रही होती हैं। मगर जालिम इंसान हर खुदाई निशानी की एक ऐसी तौजीह ढूँढ लेता है जिसके बाद वह उसे रद्द करके अपनी सरकशी की जिंदगी को बदस्तूर जारी रखे।

فَمَا نَقْضُ لَهُمْ نَيْثًا قَوْمٌ وَكُفَرُوهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتْلُهُمُ الرِّسَالَةَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلُهُمْ
قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا وَكَفَرُوهُمْ
وَقَوْلُهُمْ عَلَى نَرِيمُ مُهْتَنًا عَظِيمًا وَقَوْلُهُمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ
مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ
اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مِمَّا لَمْ يَكُنْ مِنْهُمْ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعُ الظَّنِّ وَمَا
قَتَلُوهُ يَقِينًا بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا

उन्हें जो सज़ा मिली वह इस पर कि उन्होंने अपने अहद (वचन) को तोड़ा और इस पर कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया और इस पर कि उन्होंने पैगम्बरों को नाहक क़त्ल किया और इस कहने पर कि हमारे दिल तो बंद हैं बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उनके दिलों पर मुहर कर दी है तो वे कम ही ईमान लाते हैं। और उनके इंकार पर और मरयम पर बड़ा तूफ़ान बांधने पर और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह बिन मरयम, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया हालांकि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न सूली दी बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध कर दिया गया। और जो लोग इसमें मतभेद कर रहे हैं वे इसके बारे में शक में पड़े हुए हैं। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ अटकल पर चल रहे हैं। और बेशक उन्होंने उसे क़त्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ उठा लिया और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (155-158)

यहूद पर आसमानी हिदायत उतारी गई थी जिसमें यह बताया गया था कि वे दुनिया में अल्लाह की मर्जी पर चलें तो आख़िरत में अल्लाह उन्हें जन्नत देगा। उन्होंने पहले हिस्से को भुला दिया अलबत्ता दूसरे हिस्से को अपना पैदाइशी हक समझ लिया। यहूद हर किस्म के बिगाड़ में मुब्तिला (लिप्त) हुए। इसके बावजूद अपने नजातयाप्ता होने के बारे में उनका यकीन इतना बढ़ा हुआ था कि उन्होंने समझ लिया कि अब उन्हें नये नबी को मानने की ज़रूरत नहीं। वे बतौर तंज (कटाक्ष) कहते ‘हमारे दिल तो बंद हैं’ उनका यह जुमला रसूल को मानने के बारे में अपनी अक्षमता का इज़हार न था बल्कि इस इत्मीनान का इज़हार था कि वे रसूल के साथ चाहे जो भी सुलूक करें उनकी नजात किसी हाल में संदिग्ध होने वाली नहीं।

जो लोग इस किस्म के झूठे यकीन में मुब्तिला (लिप्त) हों वे हर किस्म के जुर्म पर जरी हो जाते हैं। खुदा पर ईमान उन्हें जिस अहदे खुदावंदी में बांधता है उसे तोड़ना उनके लिए कुछ मुश्किल नहीं होता। अल्लाह की तरफ से जाहिर होने वाली खुली दलीलों के बावजूद वे उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते। हक की तरफ बुलाने वाले जो उनकी ग़ैर खुदापरस्ताना रविश को बेनकाब करते हैं उनके खिलाफ आक्रामक कार्रवाई करने से वे नहीं झिझकते। यहां तक कि झूठे आरोप लगाकर दाओ (आह्वानकर्ता) को बेइज्जत करने से भी उन्हें कोई चीज नहीं रोकती। यहूद ने हज़रत मसीह के ख़िलाफ़ क़त्ल का इक्दाम किया और इसके बाद फ़त्र से कहा कि ‘मरयम का बेटा मसीह जो अपने को रसूल कहता था उसे हमने मार डाला।’ मगर इस किस्म के लोग अल्लाह के दाअियों के खिलाफ जो भी साजिश करें वे कभी कामयाब नहीं हो सकते। अल्लाह की ताक़त और उसका हकीमाना निजाम हमेशा हक के दाअियों की पुष्ट पर होता है। हर साजिश और हर मुख़ालिफ़त (विरोध) के बावजूद वे उस वक़्त तक अपना काम जारी रखने की तौफ़ीक पाते हैं जब कि वे अपने हिस्से का काम मुकम्मल कर लें।

जो लोग हक के मुकाबले में सरकशी का रवैया इख़्तियार करें अल्लाह उनसे हक को कुबूल करने की सलाहियत छीन लेता है। वे अपनी मुख़ालिफ़ाना सरगर्मियों को जारी रखते हैं यहां तक कि खुदा के फरिश्ते उन्हें मुजरिम की हैसियत से पकड़ कर खुदा की अदालत में हाज़िर कर दें हैं।

وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنُوا بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۖ فَيُظْلَمُ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
حَتَّىٰ أَجَلَتْ لَهُمْ وَبَصَدَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۖ وَأَخَذَهُمُ الرِّبَا
وَقَدْ نُهِوا عَنْهُ وَأَكْلَهُمْ أَمْوَالُ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۖ وَاعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ
مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ لَكِنَّ الرَّاغِبِينَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ
يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ
الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

और अहले किताब में से कोई ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उस पर ईमान न ले आए और कियामत के दिन वह उन पर गवाह होगा। पस यहूद के जुल्म की वजह से हमने वे पाक चीजें उन पर हारम कर दीं जो उनके लिए हलाल थीं। और इस वजह से कि वे सूद लेते थे हालांकि इससे उन्हें मना किया गया था और इस वजह से कि वे लोगों का माल बातिल तरीके से खाते थे। और हमने उनमें से मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। मगर उनमें जो लोग इल्म में पुख्ता और ईमान वाले हैं वे ईमान लाए हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतारी गई और जो तुमसे पहले उतारी गई और वे नमाज के पाबंद हैं और जकात अदा करने वाले हैं और अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं। ऐसे लोगों को हम जरूर बड़ा अज्र (प्रतिफल) देंगे। (159-162)

इकरिमा कहते हैं कि कोई यहूदी या ईसाई नहीं मरेगा यहां तक कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए। यहूद व नसारा के पास आसमानी इल्म था ऐसे लोग यह समझने में गलती नहीं कर सकते थे कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) की दावत खालिस खुदाई दावत है। मगर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) को मानना और उनके मिशन में अपना माल और अपनी जिंदगी लगाना उन्हें दुनियावी मस्तेहतों के खिलाफ नजर आता था। इस वजह से उन्होंने आपका साथ देने से इंकार कर दिया। मगर जब मौत आदमी के सामने आती है तो इस किस्म की तमाम मस्तेहतें बातिल होती हुई नजर आने लगती हैं। उस वक़्त आदमी के जेहन से तमाम मस्नूई (कृत्रिम) पर्दे हट जाते हैं और हक अपनी खुली सूरत में सामने आ जाता है। मौत के दरवाजे पर पहुंच कर आदमी उस चीज का इकरार कर लेता है जिसे वह मौत से पहले मानने के लिए तैयार न था। मगर उस वक़्त के इकरार की अल्लाह की नजर में कोई कीमत नहीं।

जब कोई गिरोह खुदाई दीन के बजाए खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) दीन को इख्तियार करता है

तो वह अपनी दीनी हैसियत को जाहिर करने के लिए कुछ खुदसाख्ता निशानात भी कायम करता है। वह अपने मिजाज और अपने हालात के लिहाज से हराम व हलाल के नये कायदे बनाता है और उनका खुसूसी एहतमाम करके साबित करना चाहता है कि वह दूसरों से ज्यादा दीन पर कायम है। ऐसे लोगों का दीन कुछ जाहिरी चीजों के एहतमाम पर आधारित होता है न कि अल्लाह वाला बनने पर। चुनांचे वह इससे नहीं डरते कि अल्लाह के मना किए हुए तरीकों से दुनियावी फायदे हासिल करें और अल्लाह के लिए होने वाले काम का रास्ता रोके। ऐसे लोगों का अंजाम अल्लाह के यहां बेदीनों के साथ होगा न कि दीनदारों के साथ।

यहूदियों में कुछ लोग, अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरह, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए और आपका साथ दिया। जो लोग इंसानी इजाजतों से गुजर कर अस्ल आसमानी दीन से आशना होते हैं, जो विद्वेष, अंधानुकरण और मफादपरस्ती की जेहनियत से आजाद होते हैं उन्हें सच्चाई की समझने और अपने आप को उसके हवाले करने में कोई चीज रुकावट नहीं बनती। वे हर किस्म के जेहनी खेल से बाहर आकर सच्चाई को देख लेते हैं। यही वे लोग हैं जो अल्लाह की जन्नतों में दाखिल किए जाएंगे।

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ وَالذِّكْرِ مِنْ بَعْدِهِ وَأَوْحَيْنَا
إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ
يُوشَعَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ وَآدَمَ وَنُوحًا وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ۝
رُسُلًا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ
بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी है जिस तरह हमने नूह और उसके बाद के नबियों की तरफ 'वही' भेजी थी। और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और औलादे याकूब और ईसा और अय्यूब और यूनस और हारून और सुलैमान की तरफ 'वही' भेजी थी। और हमने दाऊद को जबूर दी। और हमने ऐसे रसूल भेजे जिनका हाल हम तुम्हें पहले सुना चुके हैं और ऐसे रसूल भी जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं सुनाया। और मूसा से अल्लाह ने कलाम किया। अल्लाह ने रसूलों को खुशखबरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुकाबले में कोई हुज्जत बाक़ी न रहे और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (163-165)

अल्लाह ने इंसान को पैदा किया और फिर जन्नत और जहन्नम बनाई। इसके बाद इंसान को जमीन पर बसाया। यहां इंसान को आजादी है कि वह जो चाहे करे। मगर यह आजादी मुस्तकिल नहीं है बल्कि वकती है और इस्तेखान के लिए है। वह इसलिए है ताकि अच्छे और बुरे को छांट जाए। खुदा यह देख रहा है कि लोगों में कौन वह शख्स है जो अपनी आजादी

के बावजूद हकीकतपसंदी का रवैया इस्तिस्नात करता है और अपने को अल्लाह का बंदा बनाकर रखता है। और कौन वह है जो अपनी आजादी का ग़लत इस्तेमाल करके बताता है कि वह एक सरकश इंसान है। दुनिया में दोनों किस्म के लोग मिले हुए हैं। दोनों को यहां समान रूप से ख़ुदा की नेमतों से फ़ायदा उठाने का मौक़ा हासिल है। मगर इस्तेहान की मुफ़र्रह मुद्दत पूरी होने के बाद दोनों ग़िरोह एक दूसरे से अलग कर दिए जाएंगे। पहले ग़िरोह को अबदी तौर पर जन्नत के बाग़ों में बसाया जाएगा और दूसरे ग़िरोह को अबदी तौर पर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

जिंदगी के बारे में अल्लाह का यह मंसूबा इंसान को बड़ी नज़ाकत में डाल रहा है। क्योंकि इसका मतलब यह है कि दुनिया की छोटी-सी जिंदगी का अंजाम दो इंतहाई सूरतों में सामने आने वाला है, या अबदी (अनंत) राहत या अबदी अज़ाब। इसलिए अल्लाह ने रहनुमाई के दूसरे फ़ित्री इंतजामात के अलावा पैग़म्बरों और किताबों के भेजने का इंतजाम किया ताकि कोई शख्स जिंदगी की हकीकत से बेख़बर न रहे और पैसले के दिन यह न कह सके कि हमें इलाही मंसूबे का पता न था कि हम अपनी जिंदगी को उसके मुताबिक बनाते। अल्लाह के इस मंसूबे के लाज़िम मअना यह हैं कि शुरू से आख़िर तक आने वाले तमाम नबियों का पैग़ाम और मंसूबी फ़रीजा एक हो। जब तमाम इंसान एक ही इस्तेहान की तराजू में खड़े हुए हैं तो उनके इस्तेहान का पर्चा एक दूसरे से मुख़लिफ़ कैसे हो सकता है। हकीकत यह है कि तमाम नबियों का पैग़ाम एक था और इसी एक पैग़ाम से उन्होंने तमाम इंसानों को बाख़बर किया। और वह यह कि हर आदमी एक ऐसे नाज़ुक मक़ाम पर खड़ा हुआ है जिसके एक तरफ जन्नत है और दूसरी तरफ जहन्नम। वह एक तरफ चले तो जन्नत में पहुँचेगा और दूसरी तरफ चले तो जहन्नम में जा गिरेगा। तमाम नबियों की दावत एक थी। अलबत्ता देश-काल की ज़रूरत के एतबार से उन्हें ख़ुदा की ताईद मुख़लिफ़ सूरतों में मिली। अल्लाह की यह सुन्नत आज भी बाक़ी है। डराने और खुशख़बरी सुनाने का पैग़म्बराना काम करने के लिए आज जो लोग उठेंगे वे अपने हालात के लिहाज़ से यकीनन अल्लाह की खुसूसी ताईद के मुस्तहिक होंगे। ताकि वे अपनी दावती जिम्मेदारी को प्रभावी रूप से जारी रख सकें।

لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلَكُ يَشْهَدُونَ ه
وَكُفِيَ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا
ضَلَالًا بَعِيدًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرَ لَهُمْ وَلَا
لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۖ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۖ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ فَآمِنُوا
خَيْرًا لَكُمْ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

मगर अल्लाह गवाह है उस पर जो उसने तुम्हारे ऊपर उतारा है कि उसने इसे अपने इल्म के साथ उतारा है और फरिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है। जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका वे बहक कर बहुत दूर निकल गए। जिन लोगों ने इंकार किया और जुल्म किया उन्हें अल्लाह हरगिज़ नहीं बख़्शेगा न ही उन्हें जहन्नम के सिवा कोई रास्ता दिखाएगा जिसमें वे हमेशा रहेंगे। और अल्लाह के लिए यह आसान है। ऐ लोगो, तुम्हारे पास रसूल आ चुका तुम्हारे रब की ठीक बात लेकर। पस मान लो ताकि तुम्हारा भला हो। और अगर न मानोगे तो अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में और जमीन में है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (166-170)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअसत के वक़्त यहूद को आसमानी मजहब के नुमाइंदे की हैसियत हासिल थी। वह मजहब के बड़े-बड़े मनासिब (पदों) पर बैठे हुए थे। उन्हें मंज़ूर न हुआ कि वे अपने सिवा किसी की बड़ाई तस्लीम करें। उन्होंने यह मानने से इंकार कर दिया कि आप अल्लाह की तरफ से उसके बंदों तक उसका पैग़ाम पहुंचाने के लिए भेजे गए हैं। वे समझते थे कि हम दीन के इजारादार हैं। हम जिस शख्स की दीनी सदाकत को तस्लीम न करें वह बतौर वाकया भी ग़ैर तस्लीमशुदा बन जाता है। मगर वे भूल गए कि यह कायनात ख़ुदा की कायनात है और इसका निज़ाम ख़ुदा के फ़रमांबरदार फरिश्ते चला रहे हैं। इसलिए यहां किसी की अस्ल तस्दीक वह है जो ख़ुदा की तरफ से हो और कायनात का पूरा निज़ाम जिसकी ताईद करे। और यकीनन ख़ुदा और उसकी पूरी कायनात अपने पैग़म्बर के साथ है न कि किसी के स्वनिर्मित आडंबर के साथ। ख़ुदा की पुकार के मुकाबले में जो लोग यह रद्देअमल दिखाएं कि वे उसकी उपेक्षा व इंकार करें, वे लोगों को उसका साथ देने से रोकें वे सिर्फ़ यह साबित कर रहे हैं कि वे बंदगी के सही मक़ाम से भटक कर बहुत दूर निकल गए हैं। वे ऐसी बात कहते हैं जिसकी तरदीद (खंडन) सारी कायनात कर रही है। वे एक ऐसे मंसूबे के खिलाफ़ महाज बना रहे हैं जिसकी पुश्त पर जमीन व आसमान का मालिक खड़ा हुआ है। जाहिर है कि इससे बड़ी नादानी इस दुनिया में और कोई नहीं, ऐसे लोग दीन के नाम पर सबसे बड़ी बेदीनी कर रहे हैं। जो लोग अपने लिए इस किस्म का जालिमाना रवैया पसंद करें उनका ज़ेहन एतराफ के बजाए इंकार के रुख़ पर चलने लगता है। वे दिन-ब-दिन हक से दूर होते चले जाते हैं। यहां तक कि अबदी बर्बादी के गढ़ में जा गिरते हैं। ख़ुदा की दावत का इंकार ख़ुद ख़ुदा का इंकार है। ख़ुदा की दावत इतने खुले हुए दलाइल (तर्कों) के साथ होती है कि उसे समझना किसी के लिए मुश्किल न रहे। इसके वाबजूद जो लोग ख़ुदा की दावत का इंकार करें वे गोया ख़ुदा के सामने ढिठाई कर रहे हैं। और ढिठाई अल्लाह के नजदीक सबसे बड़ा जुर्म है। अगर आदमी ने अपने दिल की खिड़कियां खुली रखी हों तो अल्लाह की पुकार उसे ऐन अपनी तलाश का जवाब मालूम होगी। उसे महसूस होगा कि वह हक जो इंसानी बातों में ढक कर रह गया था, अल्लाह ने उसकी बेआमेज़ (विशुद्ध) शक्ल में उसके एलान का इंतजाम

किया है, यह अल्लाह के इल्म और हिक्मत का जुहूर है न कि किसी शख्स के जाती जोश का कोई मामला।

يَا هَلْ الْكِتَابَ لَا تَعْلَمُونَ فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ إِنَّا الْمُسِيحُ
عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ
فَآمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ ۚ إِنَّهُمْ أَحِيدٌ ۚ لَكُمْ إِلَهُ اللَّهُ إِلَهُ
وَاحِدٌ ۚ سُبْحَنَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۚ لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمُسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ
وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ۚ وَمَنْ يَسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُ
إِلَىٰ جَمِيعًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أَجُورَهُمْ
وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۚ

ऐ अहले किताब अपने दीन में गुलू (अति) न करो और अल्लाह के बारे में कोई बात हक के सिवा न कहो। मसीह ईसा इब्ने मरयम तो बस अल्लाह के एक रसूल और उसका एक कलिमा हैं जिसे उसने मरयम की तरफ भेजा और उसकी जानिब से एक रूह हैं। पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि खुदा तीन हैं। बाज़ आ जाओ, यही तुम्हारे हक में बेहतर है। माबूद तो बस एक अल्लाह ही है। वह पाक है कि उसके औलाद हो। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह ही का कारसाज होना काफी है। मसीह को हरगिज़ अल्लाह का बंदा बनने से संकोच न होगा और न मुकर्रब (प्रतिष्ठित) फरिश्तों को होगा। और जो अल्लाह की बंदगी से संकोच करेगा और घमंड करेगा तो अल्लाह जरूर सबको अपने पास जमा करेगा। फिर जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए तो उन्हें वह पूरा-पूरा अज़्र देगा और अपने फज़ल से उन्हें और भी देगा। और जिन लोगों ने संकोच और घमंड किया होगा उन्हें दर्दनाक अजाब देगा और वे अल्लाह के मुकाबले में न किसी को अपना दोस्त पाएँगे और न मददगार। (171-174)

आदमी की यह कमजोरी है कि किसी चीज में कोई विशिष्ट पहलू देखता है तो उसके बारे में अतिरंजनापूर्ण परिकल्पना कायम कर लेता है। वह उसका मकाम सुनिश्चित करने में हद से आगे निकल जाता है। इसी का नाम 'गुलू' है। शिर्क और शख्सियतपरस्ती की तमाम किस्में अस्लन इसी गुलू की पैदावार हैं।

दीन में गुलू यह है कि दीन में किसी चीज का जो दर्जा हो उसे उसके वाकई दर्जे पर न रखा जाए बल्कि उसे बढ़ाकर ज्यादा बड़ा दर्जा देने की कोशिश की जाए। अल्लाह अपने एक बंदे को बाप के बगैर पैदा करे तो कह दिया जाए कि यह खुदा का बेटा है। अल्लाह किसी को कोई बड़ा मर्तबा दे दे तो समझ लिया जाए कि वह कोई माफ़ूक (अलौकिक) शख्सियत है और इंसानी गलतियों से पाक है। दुनिया की चमक दमक से बचने की ताकीद की जाए तो उसे बढ़ा चढ़ाकर सन्यास तक पहुंचा दिया जाए। जिंदगी के किसी पहलू के बारे में कुछ अहकाम दिए जाएं तो उसमें मुबालागा (अतिरंजना) करके उसी की बुनियाद पर एक पूरा दीनी फलसफ़ा बना दिया जाए। इस किस्म की तमाम सूत्रों जिनमें किसी दीनी चीज को उसके वाकई मकाम से बढ़ाकर मुबालागा आभेज दर्जा दिया जाए वह गुलू की फेहरिस्त में शामिल होगा।

हर किस्म की ताकतों सिर्फ अल्लाह को हासिल हैं। उसके सिवा जितनी चीजें हैं सब आजिज और महकूम हैं। इंसान अपने शुऊर के कमाल दर्जे पर पहुंच कर जो चीज दरयापत करता है वह यह कि खुदा कादिर मुतलक (सर्वशक्तिमान) है और वह उसके मुकाबले में आजिजे मुतलक। पैगम्बर और फरिश्ते इस शुऊर में सबसे आगे होते हैं इसलिए वे खुदा की क़ुदरत और अपने इज्ज के एतराफ में भी सबसे आगे होते हैं। यह एतराफ (स्वीकार) ही इंसान का अस्ल इम्तेहान है। जिसे अपने इज्ज का शुऊर हो जाए उसने खुदा के मुकाबले में अपनी निस्वत को पा लिया। और जिसे अपने इज्ज का शुऊर न हो वह खुदा के मुकाबले में अपनी निस्वत को पाने से महरूम रहा। पहला शख्स आंख वाला है जो कामयाबी के साथ अपनी मंजिल को पहुंचेगा। दूसरा शख्स अंधा है जिसके लिए इसके सिवा कोई अंजाम नहीं कि वह भटकता रहे यहां तक कि जिल्लत के गढ़े में जा गिरे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ۚ
فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِنْهُ
وَفَضْلٍ ۚ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ يَسْتَفْتُونَكَ ۚ قُلِ اللَّهُ
يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنْ أَمْرُؤُا هَٰلِكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ
مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِنْ لَمْ يَكُن لَهَا وَلَدٌ ۚ وَإِنْ كَانَتْ اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا
النَّصِيبُ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ
مَا لِلنَّثَرِ ۚ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारे ऊपर एक वाजेह (सुस्पष्ट) रोशनी उतार दी। पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और

उसे उध्मे मजबूत पकड़ लिया उध्मे जल्द अल्लाह अपनी रहमत और फ़र्र में दाख़िल करेगा और उध्मे अपनी तरफ़ सीधा रास्ता दिखाएगा। लोग तुमसे हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें कलाला (जिसका कोई वारिस न हो न ही मां बाप) के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई शख्स मर जाए और उसके कोई औलाद न हो और उसके एक बहिन हो तो उसके लिए उसके तरके का आधा है। और वह मर्द उस बहिन का वारिस होगा अगर उस बहिन के कोई औलाद न हो। और अगर दो बहिन हों तो उनके लिए उसके तरके का दो तिहाई होगा। और अगर कई भाई-बहिन, मर्द-औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए बयान करता है ताकि तुम गुमराह न हो और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (175-177)

अल्लाह की तरफ से जब उसकी पुकार इंसानों के सामने बुलन्द होती है तो वह ऐसी खुली हुई सूरत में बुलन्द होती है जो तारीकियों को ख़त्म करके हकीकतों को आखिरी हद तक रोशन कर दे। इसी के साथ वह ऐसी तार्किक होती है जिसका रद्द करना किसी के लिए मुमकिन न हो। वे उसका मज़ाक तो उड़ा सकते हैं मगर दलील की जवान में उसे काट नहीं सकते। खुदा वह है जो सूरज को निकालता है तो रोशनी और तारीकी एक दूसरे से जुदा हो जाती हैं। खुदा की यही कुदरत उसकी पुकार में भी जाहिर होती है। इसके बाद हक और वातिल एक दूसरे से इस तरह अलग हो जाते हैं कि किसी आंख वाले के लिए इसका जानना नामुमकिन न रहे। ताहम सूरज को देखने के लिए जरूरी है कि आदमी अपनी आंख खोले। इसी तरह खुदा की पुकार से हिदायत लेने के लिए जरूरी है कि आदमी उस पर ध्यान दे। जो शख्स ध्यान न दे वह खुदा की पुकार के दर्मियान रहकर भी उससे महरूम रहेगा।

इसी के साथ यह भी जरूरी है कि हक को मजबूती के साथ पकड़ा जाए। क्योंकि मौजूदा दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। यहां शैतान हर आदमी के पीछे लगा हुआ है जो तरह-तरह के धोखे में डाल कर आदमी को हक से बिदकाता रहता है। अगर आदमी शैतान के वसवसों से लड़ कर हक का साथ देने का फैसला न करे तो यकीनन शैतान उसे दर्मियान में उचक लेगा। ताहम आजमाइश की इस दुनिया में इंसान अकेला नहीं है। जो लोग खुदा की तरफ चलना चाहेंगे उन्हें हर मोड़ पर खुदा की रहनुमाई हासिल होगी। वे खुदा की मदद से मंजिल पर पहुंचने में कामयाब होंगे। जब आदमी का यह हाल हो जाए कि वह सिर्फ हक को अहमियत दे तो अल्लाह की तौफीक से उसके अंदर यह सलाहियत (क्षमता) उभर आती है कि वह खालिस हक पर मजबूती के साथ जमे और दूसरी राहों में भटकने से बचा रहे।

मीरास और तरेके का हुक्म बताते हुए यह कहना कि 'अल्लाह अपना हुक्म बयान करता है ताकि तुम गुमराही में न पड़ो' जाहिर करता है कि मीरास और तरेके का मसला कोई मामूली मसला नहीं है। यह उन मामलों में से है जिसमें अल्लाह के बताए हुए कायदे की पाबंदी न करना आदमी को गुमराही की खुन्दक में डाल देता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ أُحْدِثْ لَكُمْ بِهِمَّةُ الْإِنْفَامِ إِلَّا مَا
يُتْلَى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحْلِي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ
وَلَا الْقُلُودَ وَلَا آمِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانًا
وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا وَلَا يَجْرِمُكُمْ شَنَاَنُ قَوْمٍ أَنْ صَدُّكُمْ عَنْ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ تَعْتَدُوا وَمَتَعْنَا عَلَى الْبَرِّ وَالتَّقْوَى وَلَا تَعَاوَنُوا
عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

आयात 120

सूरा-5 अल-माइदह

रुकूअ 16

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है
ऐ ईमान वालो, अहद व पैमान को पूरा करो। तुम्हारे लिए मवेशी की किस्म के सब
जानवर हलाल किए गए सिवा उनके जिनका जिफ्र आगे किया जा रहा है। मगर एहराम
की हालत में शिकार को हलाल न जानो। अल्लाह हुक्म देता है जो चाहता है। ऐ ईमान
वालो, बेहुरमती न करो अल्लाह की निशानियों की और न हुरमत वाले महीनों की और
न हरम में कुर्बानी वाले जानवरों की और न पड़े बंधे हुए नियाज के जानवरों की और
न हुरमत वाले घर की तरफ आने वालों की जो अपने ख का फख और उसकी खुशी
ढूँढ़ने निकले हैं। और जब तुम एहराम की हालत से बाहर आ जाओ तो शिकार करो।
और किसी कोम की दुश्मनी कि उसने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका है तुम्हें इस पर न
उभारो कि तुम ज्यादाती करने लगो। तुम नेकी और तकवा में एक दूसरे की मदद करो
और गुनाह और ज्यादाती में एक दूसरे की मदद न करो। अल्लाह से डरो। वेशक
अल्लाह सख्त अजाब देने वाला है। (1-2)

मोमिन की जिंदगी एक पाबंद जिंदगी है। वह दुनिया में आजाद है कि जो चाहे करे इसके बावजूद वह अल्लाह की आकाई का एतराफ करते हुए अपने आपको पाबंद बना लेता है, वह अपने आपको खुद अहद की रस्सी में बांध लेता है। अल्लाह का मामला हो या बंदों का मामला, दोनों किस्म के मामलात में उसने अपने को पाबंद कर लिया है कि वह आजादाना अमल न करे बल्कि खुदा के हुक्म में मुताबिक अमल करे। वह उन्हीं चीजों को अपनी खुराक बनाए जो खुदा ने उसके लिए हलाल की हैं और जो चीजें खुदा ने हाराम की हैं उन्हें खाना छोड़ दे। किसी मौके